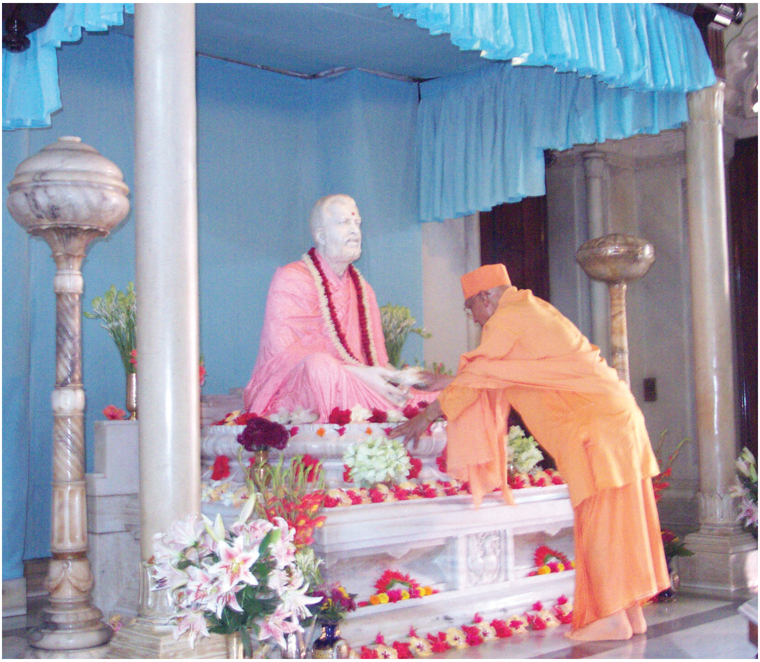


गहन आनन्द चिन्तन

ब्रह्मलीन परम पूज्यपाद स्वामी गहनानन्दजी के
पत्रों का संकलन

संस्कृतभाषायां पत्रम्



कल्याणीये मा...,

मई-मासारम्भे पञ्चमे दिने त्वया लिखितं काँकुडगाछीस्थ-योगोद्यान-लेन-स्थिते रामकृष्णमठे प्रेषितं तव पत्रमेकं जुलाई-मासस्य पञ्चमदिवसे इह उपलब्धमभवत् मया।

पत्रान्ते तव त्वयैतल्लिखितमस्ति यत्त्वं हिन्दीभाषायां, संस्कृतभाषायाम्, आंगलभाषायां च पारंगतासि। न खलु तथाऽहम्। अहं तु वङ्गभाषायाम्, आंगलभाषायां च कथञ्चिदुपायेन कथावाचन-पत्रादिलेखने एव समर्थः। हिन्दीभाषां, संस्कृतभाषां, उडियाभाषां च पठितुमेव शक्नोमि केनापि उपायेन। अतः 'मराठी, गुजराती, हिन्दी, तमिल, तेलुगु, मलयालम्, उडिया' चेत्यादिषु भाषासु शिष्य-भक्तवर्गेण लिखितानां पत्राणां वक्तव्यमहमत्रत्यैः

साधुब्रह्मचारिभिरांगलभाषायां कृतानुवादं पठनानन्तरमेव अधिगन्तुं शक्नोमि, तेभ्यो लिखितेषु पत्रोत्तरेषु मम हस्ताक्षरं च प्रदातुं समर्थो भवामि।

यत्त्वया तव पत्रमध्ये कस्मिंश्चिद्विषये लिखितं तत्समीचीनमेव। भाग्यशालिनी खलु त्वं यदस्मिंच्छतकोट्यधिकजनसंकुले अस्मद्देशे तवेष्टदेवेन तुभ्यमेव त्वादृग्भिः कैश्चिदन्यैः सह स्वीयनाममन्त्रजपार्थम् अधिकारोऽयं परमकृपया समर्पितः। अवश्यमेवायं तव सौभाग्यस्य द्योतकः। परन्तु यत्त्वया स्वकीये विषयासक्तिविषये स्वपत्रे लिखितं तदरुचिकरं मन्ये। यस्य कृपाकटाक्षमात्रेण सहस्रयुगसंचितं यावन्मालिन्यं दूरीभवति यथा एकाऽपि दीपशलाका सहस्रयुगसञ्चितान्धकारापसरणे समर्था भवति, नाविदितचरासि तस्य त्वं महिमानम्।

ममोपदेशमात्रेण तव प्रयोजनं न सेत्स्यति। यथावसरं विवेकानन्दस्वामिनः नवखण्डकानाम् “The Complete Works of Swami Vivekananda” इत्याख्यानां पुस्तकानां पठने, श्रीरामकृष्णोपदेशसम्बलित- ‘‘श्रीरामकृष्णवचनामृतम्’’ इति ग्रन्थस्य पठने च मनस्ते निवेशय। स्वकीयेषु दैनन्दिनकर्मसु च भगवत्पूजाबुद्ध्या एव प्रवर्तस्व। एवमेव हि त्वत्संस्काराः सर्वे शुद्धाः भविष्यन्ति, मनश्च ते ध्यानपरायणं भविष्यति, भगवद्दर्शनयोग्यता च तदा त्वया लप्स्यते।

एतदर्थं तवसामूहिककल्याणार्थं च श्रीरामकृष्णचरणे मयानुदिनं प्रार्थ्यते। इति --

साशीर्वादं स्नेहास्पदं

स्वामि-गहनानन्दः



कल्याणीया मा...,

दिनाँक पाँच मई का तुम्हारे द्वारा लिखा गया और काँकुड़गाछी स्थित रामकृष्ण मठ, योगोद्यान लेन के पते पर भेजा गया पत्र मुझे पाँच जुलाई को प्राप्त हुआ।

पत्र के अंत में तुम्हारे द्वारा लिखा गया है कि तुम हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा में पारंगत हो। लेकिन, मैं उतना पारंगत नहीं हूँ। मैं तो बाँग्ला और अंग्रेजी भाषा में थोड़ा-बहुत प्रयास करके वार्तालाप करने एवं पत्र लिखने में सक्षम हो पाता हूँ। हिन्दी, संस्कृत और उड़िया भाषा में भी कुछ प्रयास करने से पढ़ पाता हूँ। अतः मराठी, गुजराती, हिन्दी, तमिल, तेलगु, मलयालम, उड़िया आदि भाषाओं में शिष्यों एवं भक्तों द्वारा उनके पत्रों में व्यक्त की गई बातों को यहाँ उसी भाषा को जानने वाले साधु व ब्रह्मचारियों के द्वारा अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करवा लेने पर ही उसे पढ़ कर उत्तर देने में सक्षम होता हूँ। और उनसे उत्तर लिखवाने के पश्चात ही लिखे गए पत्रों पर हस्ताक्षर करने में समर्थ हो पाता हूँ।

तुमने तुम्हारे पत्र में जिन विषयों के बारे में लिखा, वे उचित ही जान पड़ते है। वास्तव में तुम बहुत ही भाग्यशालिनी हो, तुम्हारे इष्टदेव ने शत कोटि लोगों के समुदाय में से तुमको स्वीकार कर तुम्हें उनके नाम-मन्त्र के जप का अधिकारी बनाया है। अवश्य ही यह तुम्हारे सौभाग्य का द्योतक है।

परन्तु तुमने अपने पत्र में, अपनी विषयासक्ति के विषय में जो कुछ लिखा है वह मुझे तो अरुचिकर प्रतीत होता है। तुम तो चराचर मे व्याप्त

उनकी महिमा के बारे में तो जानती ही हो, जिनके कृपा-कटाक्ष मात्र से हजारों युगों से संचित मलिनता क्षण भर में दूर हो जाती है, जैसे एक प्रदीप्त शलाका से हजारों वर्षों से संचित अंधकार भी क्षण-भर में गायब हो जाता है।

मेरे उपदेशों-मात्र से ही तुम्हारा प्रयोजन सिद्ध नहीं होने वाला। बीच-बीच में समय निकाल कर "The Complete Works of Swami Vivekananda" के नौ खण्डों को पढ़ो और भगवान श्रीरामकृष्णदेव के उपदेशों का संग्रह ''श्रीरामकृष्णवचनामृत'' जैसे ग्रन्थों को पढ़ने में भी अपना मन लगाओ। अपने दैनन्दिन कार्यों को भगवद्पूजा मानकर करो। इससे तुम्हारे सभी संस्कार शुद्ध होते जाएंगे, तुम्हारा मन भी ध्यानपरायण बनेगा और तुम भगवद्-दर्शन की योग्यता के लायक बन जाओगी।

तुम्हारे सामूहिक कल्याण के लिए भगवान श्रीरामकृष्णदेव के चरणकमलों में प्रतिदिन प्रार्थना करता रहता हूँ।

आशीर्वाद सहित

स्नेहास्पद

स्वामी गहनानन्द

(पाठकों की सुविधा के लिए रामकृष्ण आश्रम, विवेकानन्द विद्यापीठ, नारायणपुर की संस्कृत-अध्यापिका श्रीमती आरती राजपूत ने श्रद्धापूर्वक उपरोक्त संस्कृत पत्र का हिन्दी में पूज्य गुरुदेव के भावानुरूप अनुवाद कर हमें अनुगृहित किया, इस हेतु उन्हें हमारा साधुवाद)।



हिन्दी भाषा के पत्र



(१)

प्रिय ...,

पिचहतर वर्ष की उम्र हो चुकी है अब जहाँ तक हो सके दिन-रात हर घड़ी लगातार प्रभु का नाम जपते रहने की चेष्टा करो। पुस्तकों, पत्रिकाओं में अब तुम्हें क्या मिलना है ? १०-२० वर्ष अब भी समय है, प्रभु का नाम जपा करो।

संसार की, शान्ति की, सब तरह की कामना प्रभु के श्रीचरणों में समर्पित कर दो।

जय मां !!!

तुम्हारा सतत शुभांकाक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२)

प्रिय ...,

तुम मठ में आ गए हो तो श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, हमारे स्वामीजी महाराज तथा उनके गुरुभाइयों के जीवन तथा उनके उपदेशों से परिचित होना तुम्हारा पहला काम समझो, जैसे मन्दिर में प्रवेश करने से पहले लोग गंगास्नान करते हैं। फिर संस्कृत भाषा पर अधिकार-लाभ प्राप्ति की चेष्टा करो। ऐसा तुम्हारे आश्रम के महाराज लोगों से सीखो। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो। मैं तुम्हारे कल्याण के लिये श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



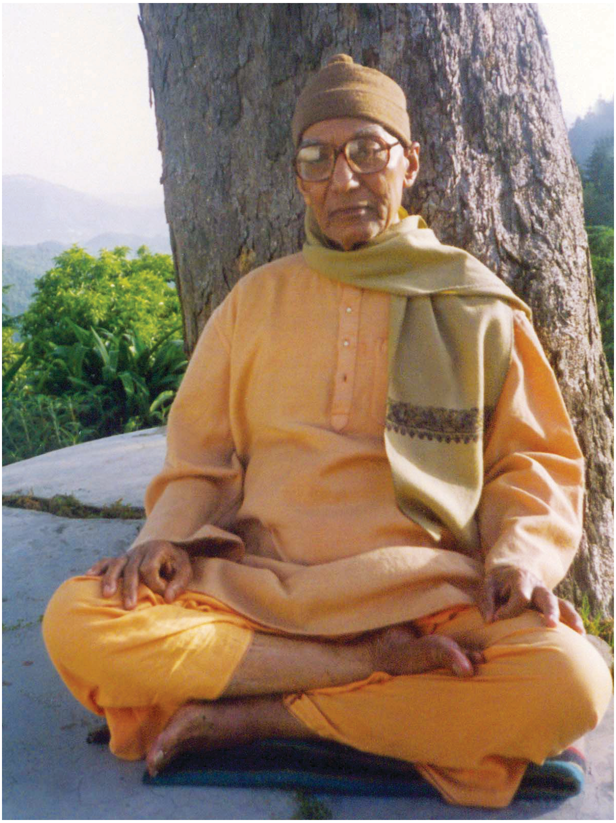
(३)

प्रिय ...,

श्रीश्रीमाँ के अतिरिक्त इस संसार का अस्तित्व ही कहाँ है कि तुमने लिखा है 'माँ ने संभाला', वगैरह। जगत् का आश्रय ही माँ है – सृष्टि, स्थिति, संहारकारिणी माँ हैं, उन्हीं में तुम्हारा, मेरा, सभी की सृष्टि, स्थिति संहार आश्रित है। जो कुछ हुआ माँ के ही आश्रय में रहकर हुआ। तुमने जो कुछ किया, या जो कुछ तुमसे हुआ, या जो कुछ श्रीश्रीमाँ ने तुमसे कराया, समझो उन्हीं के आश्रय में तुमने किया। आवश्यकता उन बातों को मुझे या किसी और को बताने या लिखने की नहीं है, उन्हें भूल जाने की हैं। माँ पर अपना ध्यान केन्द्रित करोगी तो माँ के अतिरिक्त किसी और बात को लेकर सोचना नहीं पड़ेगा। मुझे चिट्ठियाँ लिखा करो। जो काम करती थी, पैर ठीक हो जाने पर उसे शुरू करो। हर घड़ी अपने इष्टमन्त्र को जपने का अभ्यास डालो। समझो कि जिसे तुम गलती मान रही हो वह एक प्रकार की तपस्या थी।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(४)

प्रिय ...,

तुम्हारी १८ अगस्त की चिट्ठी यहाँ २२ अगस्त को पहुँची। ठीक है, तुम्हारा जीवन अभी जैसे चल रहा है, चलने दो। माता-पिता की सेवा जितनी जहाँ तक हो सके करते रहो। काम-धाम जो कुछ कर रहे हो, करते रहो। फिर समयानुसार कहीं से संन्यास ले लोगे। तब निश्चिन्त हो जाओगे।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(५)

प्रिय ...,

आपने जो कुछ लिखा है, वह तो आपके और ॐकार के बीच के सम्बन्ध की बात है। उसमें भला कोई और कैसे प्रवेश पा सकता है ? हाँ, अगर आपके जीवन में ऐसी घटना पहली बार हुई हो तो फिर श्रीॐकार पर ही निर्भर कीजिये, उनकी महिमा देखते रहिये।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(६)

प्रिय ...,

जहाँ तक कर सको अपने इष्टमन्त्र का निरन्तर जप करते रहने का अभ्यास डालो। गिनती रखने की जरूरत नहीं।

मैं तुम सभी के कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(७)

प्रिय ...,

तुमने अपने पत्र में २६ जनवरी को हमारे श्रीश्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन का उल्लेख किया था। शायद इतने दिनों में तुम्हें और भी दर्शन मिले होंगे। जहाँ तक हो सके अपने इष्टमन्त्र का जप मन ही मन हर घड़ी करते रहने का अभ्यास डालो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(८)

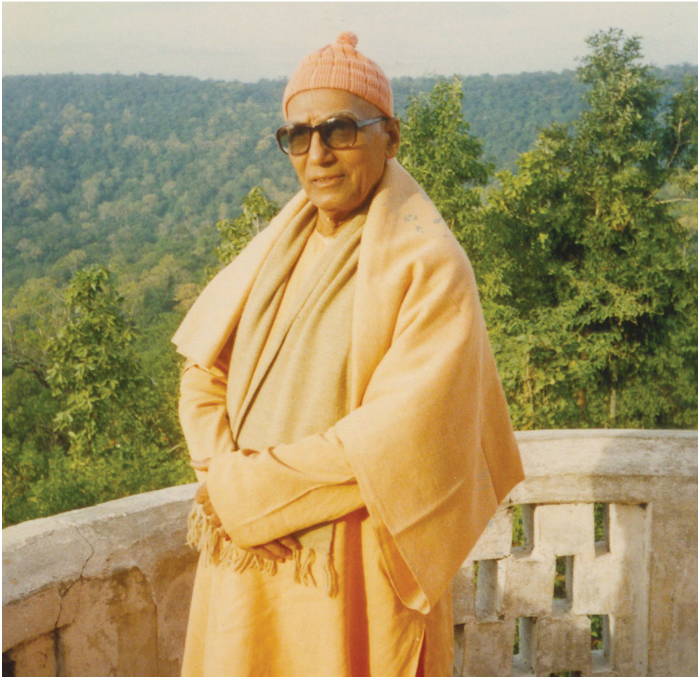
प्रिय ...,

मुझे पता नहीं इस बीच तुम्हारा विवाह हो चुका है या नहीं। तुम्हारे हृदय के अभ्यन्तर में ही तुम्हारे इष्टदेवता का निवास है जो हर घड़ी तुम्हें चलाते रहते हैं। उनकी उपस्थिति को ध्यान में रखते हुए अगर तुम हर घड़ी, जहाँ तक कर सको, अपने इष्टमन्त्र का जप करने का अभ्यास डालोगे, तो तुम्हारा मन शान्त हो जाएगा। वैसे विवाह तो मनुष्य के संस्कारों में एक अन्यतम संस्कार है। इसके लिए चिन्ता मत करो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर को नित्य ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(६)

प्रिय ...,

Shirts, T-shirts आदि manufacture (तुमने MANIFACTURE लिखा है - dictionary देख लिया करो !) करना चाहते तो, धीरज से काम लो। साल-दो साल तक देशभर में कहाँ क्या काम हो रहा है, तुम्हारे products के लिए market का पता लगाओ। पैसे का इन्तजाम करो, फिर आगे बढ़ो, पहाड़ों की ऊँचाईयों पर चढ़ने में कठिनाइयाँ भी होती हैं, उतरने या पहाड़ों पर से फिसलने में न कठिनाई होती है, न ही देर लगती है।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१०)

प्रिय ...,

तुम्हें और किस बात की आवश्यकता है ? श्रीश्रीठाकुर ही तुम्हारा जीवन बन चुके हैं, उन्हीं का नाम लेने में दिन बिताती हो, इससे अच्छा क्या हो सकता है ? खूब नाम जपो, खूब नाम जपो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए उन्हीं से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(११)

प्रिय ...,

पढाई में मन नहीं लगता है ? ठीक ही है, उस मन में जहाँ तक कर सको हर घड़ी अपने इष्टदेवता के नाम को, यानी अपने इष्टमन्त्र को जपते रहने का अभ्यास बनाओ। तुम्हें किन्हीं और दोस्तों की आवश्यकता नहीं है, श्रीश्रीठाकुर को, श्रीश्रीमाँ को, स्वामीजी महाराज को और फिर चाहो तो मुझे अपने दोस्त बना लो। मुझे हर महीने चिट्ठियाँ लिखती रहो। मैं भी जवाब भिजवाता रहूँगा।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१२)

प्रिय ...,

जब कभी तुम्हें फुर्सत मिले मन लगाकर मन ही मन प्रभु का नाम लेते रहो। इसी से प्रभु की सेवा होगी और प्रभु की सेवा से जगत् की भी सेवा होती रहेगी। तुमने पढ़ा होगा कि -

ऊँ प्रीयतां पुण्डरीकाक्षः सर्वयज्ञेश्वरो हरीः।
तस्मिन् तुष्टे जगत्तुष्टं प्रीणिते प्रीणितं जगत्।।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१३)

प्रिय ...,

तुमने लिखा है कि मई तक तुम्हारे परीक्षा परिणाम मिल जाएँगे। परिणाम मिलते ही मुझे बताओ और यहाँ हमारे रामकृष्ण मठ (योगोद्यान) में पहुँचने की तैयारियाँ करो। अच्छा होगा कि परिणाम मिलने के बाद मुझे चिट्ठी लिखो फिर मेरे जवाब मिलने पर यहाँ पहुँचो। तुम सौभाग्यवान हो कि तुम्हारी माँ ने मठ की सेवा के लिए तुम्हें छोड़ने का मन बना लिया है। तुम्हारे चले आने पर तुम्हारे पिता की अनुपस्थिति में तुम्हारी माँ की देखभाल कैसे होगी, कौन करेगा, क्या व्यवस्था होगी ?

मैं तुम्हारी भलाई के लिए सदा ही श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(१४)

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ मार्च की चिट्ठी यहाँ २८ मार्च को पहुँच गई है। तुमने जो कुछ लिखा है, ठीक ही लिखा है - विद्यार्जन के साथ धनार्जन का कोई सम्बन्ध नहीं। तुम्हें घर से बाहर जाकर पैसे के लिए काम करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन देखो बेटी, विचारों की शुद्धता केवल पुस्तकें पढ़ने से ही नहीं आती, कम से कम जैसा कि हमारे स्वामी विवेकानन्द महाराज ने लिखा है, ऐसी पुस्तकों को न पढ़ो जिसके लेखकों को अपने जीवन में भगवद् उपलब्धियाँ न मिल चुकी हों। और उन ग्रंथों को उनके अपने मूल रूप में, यानी अपनी मूल भाषा में पढ़ना है।

जाग्रत, स्वप्न, तथा सुषुप्ति ! हमारे जीवनकाल की तीन अवस्थाएँ हैं। किसी एक अवस्था के अनुभव दूसरी अवस्थाओं के अनुभवों से भिन्न हुआ करते है। इसका अर्थ यही हुआ कि जब हम स्वप्न की अवस्था में होते हैं तो उस अवस्था के अनुभव हमें मिथ्या नहीं मालूम पड़ते, जब हम जाग जाते हैं तो उस जाग्रत अवस्था के अनुभवों के साथ मिला कर स्वप्नावस्था के अनुभवों को हम मिथ्या कहा करते हैं। श्रीश्रीठाकुर के अक्सर सोते समय दर्शन करती हो, इस बात को लोगों से, किसी से भी, न कहो। तुम्हारे स्वप्न का अर्थ श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारी प्रीति ही है। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो। स्वप्नों के बारे में हमारे देश के विचार बहुत ही गम्भीर हैं। मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(१५)

प्रिय ...,

तुम्हारी २ मार्च की चिट्ठी ११ मार्च को पहुंची। M. Sc. में तुम्हें first class मिलने के बाद क्या तुमने पढ़ाई छोड़ने का इरादा बना लिया है ? आगे क्या करोगे ?

श्रीश्रीमाँ से तुम्हारा लगाव है तो इसमें अस्वाभाविक कौन सी बात है ? माँ से किस बच्चे का प्रेम नहीं होता ? ध्यान-जप आदि के बारे में तुम्हें तुम्हारी दीक्षा के अवसर पर दी गई पुस्तिका - उपासना पद्धति में उल्लेखित नियमों का ही पालन करो। हर रोज पहले दीक्षा मंत्र का ही, तुम्हें बताये गए नियमों का पालन करते हुए जप आदि करो, उसके उपरान्त अपने उपनयन-संस्कार के समय मिले गायत्री आदि की उपासना वगैरह करो। याद रखो ध्यान किया नहीं जाता। चित्त के शुद्ध हो जाने पर ही मन ध्यानपरायण होता है, फिर ध्यान अपने-आप होने लगता है। इसलिए फिलहाल जप के मंत्र के उच्चारण पर ही ध्यान दो, उसे ही मन लगाकर करते रहो चित्तशुद्धि कब होगी इसकी चिन्ता न करो, "न ही भ्रूमध्य" आदि में मन को केन्द्रित करने की कोशिश करो।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे कल्याण के लिए निरंतर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

> इस दुर्लभ मनुष्य जन्म को पाकर भी जो इसी जीवन में ईश्वरलाभ के लिए चेष्टा नहीं करता, उसका जन्म लेना ही व्यर्थ है।
>
> – श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(१६)

प्रिय ...,

निश्चिन्त रहो कि मुझसे मिलने की इच्छा जब तीव्र हो जाएगी तब वही तीव्र इच्छा तुम्हें मेरे पास पहुँचाएगी। तब तक श्रीश्रीठाकुर का नाम मन ही मन हर घड़ी जपते रहो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए उनसे निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१७)

प्रिय ...,

देखो ..., तुम कहाँ क्या पढ़ते हो, क्या सुनते हो, जिन्हें पढ़-सुनकर तुम्हारे मन में प्रश्न उठता है तो ये जरूरी नहीं है कि मुझे उन प्रश्नों के जवाब लिखवाने पड़ें। इतना समझ लो कि तीसरी क्लास में पढ़ने वाले बच्चे के मन में ही तीसरी क्लास में पढ़ाए जाने वाले विषयों के बारे में प्रश्न उठ सकते हैं जिनका जवाब मिलने पर वह उन जवाबों को समझ जाता है, केवल इसलिए कि वह तीसरी कक्षा के विषयों से परिचित है। वही बच्चा अगर कहीं से चौथी या छठी कक्षा के विषयों पर प्रश्न जुटा कर तुमसे पूछे तो वह तुम्हारे उत्तर को समझ नहीं पाएगा चूँकि उसने चौथी या छठी कक्षा में पढ़ाये जाने वाले विषयों को पढ़ा नहीं है। प्रश्नकर्ता के प्रश्नों के उत्तर प्रश्नकर्ता के मन में ही अगर नहीं हैं तो तुम्हारे बताने पर भी वह उन्हें समझेगा नहीं।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए प्रभु से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। फिलहाल मन लगाकर ध्यान-जप करते रहो।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(१८)

प्रिय ...,

मन्त्र का जप तुम किसी भी अवस्था में मन में ही कर सकती हो। मन्त्र जप करने का उद्देश्य यही है कि तुम्हारा मन इतना शुद्ध हो जावे कि तुम देखती रहो कि कैसे अपने आप तुम्हारा मन हर घड़ी हर काम के बीच प्रभु का नाम जप रहा है। इसलिए दीक्षा के दिन तुम्हें आसन पर बैठकर दिनभर में तीन बार जपध्यान करने के लिए जैसे बताया गया, इसके अलावा दिन भर के और अवसरों में हर घड़ी मन में ही जप करते रहने की आदत डालो। किसी कारण से आसन पर बैठ कर जप करने में संकोच होता हो तो, आसन का व्यवहार न करो। तुम्हारे घरवालों ने पता नहीं क्या सोचा था, लेकिन यह स्पष्ट है कि उन्हें मालूम नहीं था कि दीक्षा की पुस्तक केवल दीक्षित व्यक्तियों के व्यवहार के लिए है, औरों के लिए नहीं। यह मूर्खता ही है, क्या करोगी ? संसार में मूर्खों को सहन करना ही पड़ता है, तुम्हारे आसपास के लोगों में काफी ऐसे मिल जायेंगे। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो।

मैं हमारे श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

श्रीरामकृष्ण कह गये हैं कि यहाँ के सभी को वे अन्तिम दिन अवश्य दर्शन देंगे तथा अपने साथ ले जाएँगे।

–श्रीमाँ सारदा देवी



(१६)

प्रिय ...,

श्रीश्रीमाँ का नाम सारदा देवी ही है, शारदा नहीं। सारदा का अर्थ 'सार' प्रदान करने वाली है और शारदा शरत् काल में जिनकी पूजा होती है वे दुर्गादेवी हैं।

जय मां !!!

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२०)

प्रिय ...,

तुम सत्ता का अनुभव करना चाहते हो लेकिन तुम्हें इस बात का ख्याल नहीं कि सत्ता के अनुभव करने वाले को सत्ता से भिन्न होना पड़ता है, और अगर वह भिन्न है तो अनुभव करने वाले की सत्ता एक हुई तथा वह सत्ता, जिस सत्ता का अनुभव करेगा वह दूसरी। बात यह है कि जब तक तुम्हारा शरीर स्वस्थ है तब

तक शरीर का तुम्हें बोध नहीं होता। तुम्हारी पीठ का बोध तुम्हें तभी होता है जब उस पर कोई चींटी घूम-फिर रही हो, या उस पर कोई चोट हो। तुम्हारे कान का, आँखों का, दाँतों का बोध तुम्हें तभी होता है जब उनमें कोई कष्ट हो। वैसे मन को आघात लगने पर ही मन का बोध होता है। वैसे ही, जो कहता फिरता है कि मैंने यह किया, वह किया, उसका अहंकार इस प्रकार से जब प्रकाशित होता है, तब उसे अपने अहंकार का बोध होता है तो वह भी अस्वस्थ होता है। इसी तरह सत्ता का अनुभव करने की इच्छा जिस सत्ता को होती है, समझो वह भी अस्वस्थ ही है, क्योंकि स्वास्थ्य का लक्षण ही बोधाराहित्य है। स्वस्थ अवस्था में जैसे, आँख, कान, दाँत, मन इनके बोध नहीं होते वैसे ही सत्ता का भी बोध नहीं होता। सत्ता है, बस सत्ता है।

जब तक श्रीरामकृष्ण की सत्ता और श्रीरामकृष्ण अलग है तब तक श्रीरामकृष्ण की सत्ता अस्वस्थ है, भवरोग से पीड़ित है, इसीलिए स्वस्थ होने के लिए वह श्रीरामकृष्ण की सत्ता से, जो कि सच्चिदानन्द ब्रह्म की सत्ता से अभिन्न है, एक होना चाहता है। उसका उससे तादात्म्य होगा तो होगा, लेकिन इसका अनुभव वह नहीं कर पाएगा क्योंकि, उस अनुभव के लिए वह तो रहा ही नहीं, उसका तो विलय हो गया। श्रीरामकृष्ण की सेवा करते रहना तुम्हारा काम है, जैसे अपने गुरु में ईश्वरबुद्धि रखते हो, उन्हें साक्षात ईश्वर मानते हो, वैसे ही जब तुम्हारी बुद्धि शुद्ध होने लगेगी तब सभी प्राणियों में तुम ईश्वरबुद्धि रखोगे। लेकिन इसके लिए तुम्हें करना कुछ भी नहीं है, कर्ता तो वही है जो करता है। जब तक तुम कर्ता होगे तब तक कुछ नहीं कर पाओगे, कालाकाल के कर्ता जो करेंगे वही होगा। मुझे चिट्ठियाँ लिखा करो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए प्रभु को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२१)

प्रिय ...,

देखो ..., तुमने क्या श्रीमत् स्वामी सारदानन्द महाराज का लिखा श्रीरामकृष्ण लीला प्रसंग या श्रीरामकृष्ण-लीलामृत या बंगला

में श्रीरामकृष्ण लीलाप्रसंग पढ़ा है ? श्रीमाँ सारदा की जीवनी पढ़ी है ? श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, स्वामीजी महाराज तथा उनके गुरुभाइयों की जीवनी तथा उनके उपदेश कुछ काल तक लगातार पढ़ती रहो। फिर तुम पढ़ोगी कि सोच विचार करने के बाद मनुष्य जब कोई काम करता है तो उसे धीर, विचारशील, विवेकशील आदि कहते हैं, और फिर जो मनमानी करता है तो उसे भावप्रवण, जिद्दी, भावनात्मक आदि कहते हैं। मनुष्य के ऐसे दो स्वभाव होते हैं। संसार में विवेकी लोगों का बहुत अभाव है। ईश्वर के सम्बन्ध में मनुष्य का जो भाव है उसे दिव्यभाव कहते हैं, वह अक्सर मनुष्य के विचार करने की क्षमता को नष्ट कर देता है। यह इसलिए कि उसके ईश्वरीय भाव उसके लिए नए होते हैं, अपरिचित होते हैं और उनके इस नएपन के कारण वह इतना आनन्दित होता है कि उसकी विचार-क्षमता नष्ट होने लगती है जैसे एक करोड़पति को एक हजार रूपए मिलने पर जितनी खुशी होती है, उससे सौगुना आनंद उस व्यक्ति को होता है जिसकी तनख्वाह ही एक हजार रूपए है। बात तो यह है कि तुम्हारे भावों की, तुम्हारे ईश्वरीय भावों की तीव्रता ज्यों ज्यों बढ़ेगी, विचार करने की तुम्हारी शक्ति भी उसी अनुपात में बढ़ती रहेगी। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, स्वामीजी महाराज आदि के उपदेशों और उनके जीवन के अध्ययन से हमें इन बातों के बारे में जानकारियाँ मिलती हैं। अपने भाव किसी और को मालूम न हो, ऐसे व्यवहार करो। बहुत शान्त होना तुम्हारा काम है। तुम पढ़ लिख कर एम.ए., पीएच.डी. डिग्री हासिल कर स्वयं को संसार के योग्य बना लो, यही तुम्हारे लिए फिलहाल कर्मयोग है। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२२)

प्रिय ...,

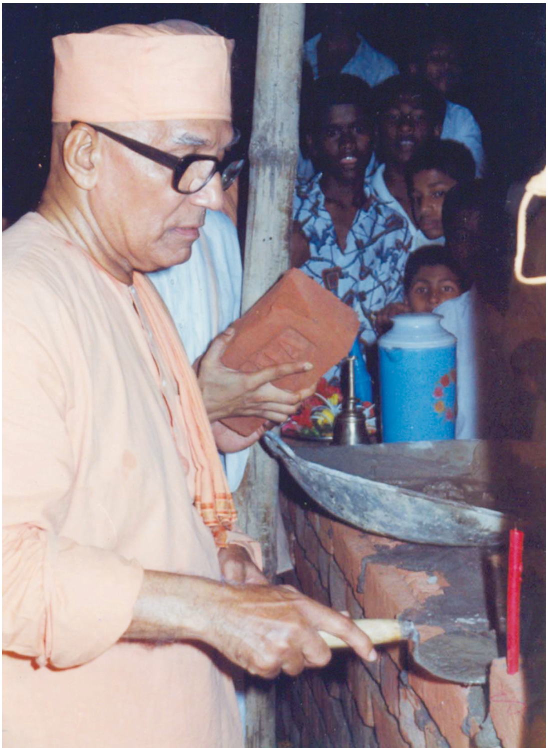
तुम्हारी १० फरवरी की चिट्ठी यहाँ २२ फरवरी को पहुँची।

अपने पति को दीक्षा लेने के लिए न कहो, जो कुछ तुमसे हो सके करती रहो और बाकी श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ पर छोड़ो। अभी तुम्हारा बच्चा तो काफी छोटा है, उसे कुछ और दिनों तक संभालती रहो। जब बड़ा हो जाये तब उससे दर्शन वगैरह की बातें करना।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरंतर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२३)

प्रिय ...,

श्रीश्रीठाकुर ने तुम्हें उनका नाम जपने का अधिकारी बनाया है। वही तुम्हें उनका नाम जपने का सामर्थ्य भी देंगे। उन्हीं पर भरोसा करो। जप नहीं किया, थोड़ा किया, इस तरह की सोच में जो समय लगाते हो, उसे जप करने में लगाओ।

मैं उनसे तथा श्रीश्रीमाँ से सदा ही तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२४)

प्रिय ...,

तुम्हारे इन शोक के दिनों में मेरा यही सन्देश है कि तुम सभी श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करते रहो, श्रीश्रीठाकुर का नाम अनुक्षण जपते रहो। श्रीश्रीठाकुर का नाम जपते रहने के सिवाय मुझे इस संसार में हम लोगों के जीने का कोई और उपाय तो मालूम नहीं है।

मैं तुम्हारे लिए निरन्तर श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

जय मां !!!

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२५)

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ फरवरी की दो चिट्ठियाँ यहाँ पहुँच गई।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। तुम सुधरना चाहते ही नहीं तो कैसे सुधरोगे। तुम अपना जीवन वैसे ही बिताना चाहते हो जैसे बीत रहा है। अगर तुम्हारी इच्छा में परिवर्तन नहीं आया तो मान लो ऐसे ही जीवन बिता लोगे। मुझे तो तुम्हारी इतनी चिट्ठियाँ पढ़ने के बाद ऐसा ही लगता है।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२६)

प्रिय ...,

श्रीश्रीठाकुर के पास कोई मुकदमें में जीत के लिए या ऐसे किसी और काम के लिए पहुँचता तो वे उसे दूर से देखकर ही कहते थे, वह रहा, वह फिर आ रहा है। फिर जब वह करीब आता तो उसे कहते, मेरा यह काम नहीं। पंचवटी पर जाओ। वहाँ तुम्हारा आदमी बैठा हुआ है। स्वामीजी ने भी अपने किसी एक गुरुभाई को लिखी चिट्ठी में लिखा है – 'मांगन भला न बाप से, जब रघुवर राखे टेक।'

और यहाँ तुम ! लड़के की नौकरी के लिए उन्हें मना रही हो! उसके कर्म का क्या होगा ? तुमने माँ बनकर उसको जन्म दिया है, पाल-पोषकर बड़ा किया है, यह तो तुमने उसकी सेवा ही की है। अब उसके बारे में तुम्हे सोचने की जरूरत नहीं, तुम अपना काम करो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर को नित्य ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२७)

प्रिय ...,

तुम्हारी १ मार्च की चिट्ठी यहाँ ७ मार्च को पहुँची।

तुम जानती तो हो कि श्रीश्रीठाकुर सुई के छेद से ऊँट को निकाल देते हैं, फिर भी चमत्कारों की बात करती हो। अभी आगे के दिनों में जब समझोगी कि यहाँ चमत्कार ही चमत्कार है तो फिर कहोगी नहीं, केवल देखती रहोगी। चमत्कारी के चमत्कार पर नहीं, चमत्कारी पर नजर गड़ाओ, माया पर नहीं मायाधीश पर नजर डालो, जादू पर नहीं जादूगर पर निगाह फेरो। श्रीश्रीठाकुर ने कहा है कि जो जादूगर की शरण लेता है उस पर जादू का असर नहीं होता। तुम तो ये बातें जानती ही हो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२८)

प्रिय ...,

तुम्हारी १ मार्च की चिट्ठी ५ मार्च को यहाँ पहुँची। तुमने अपनी चिट्ठी में जिन बातों के लिए प्रार्थनाएँ की हैं, समझ लो कि वे बातें श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ तक पहुँच गई हैं। निश्चिन्त रहो तुम्हारी प्रार्थनाएँ पूरी होंगी। अगली चिट्ठी में लिखो कब तक इधर आना चाहती हो।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे कल्याण के लिए हर घड़ी प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(२६)

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी २८ फरवरी को यहाँ पहुँची थी।

हो सके तो अपनी चिट्ठियों को मुझे भिजवाने से पहले उनकी फोटोकॉपी उतार कर अपने पास रख लिया करो। मेरा उत्तर मिलने पर अपनी चिट्ठी को उनके साथ मिला कर पढ़ सकोगी।

इसके पहले मठ (सारदा मठ) कभी गई नहीं थी क्या? या यहाँ से सीधी वापस लौट गई थी या कामारपुकुर-जयरामबाटी वगैरह के दर्शन करने भी गई थी?

जो कुछ तुमने मुझे अपनी चिट्ठी में लिखा है, समझो की श्रीश्रीठाकुर ने, श्रीश्रीमाँ ने उसे सुन लिया है और जल्दी ही तुम्हारी इच्छाओं को पूरी करेंगे।

मैं उनसे तुम्हारे कल्याण के लिए हर घड़ी प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३०)

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ १२ अप्रैल को पहुँच गई।

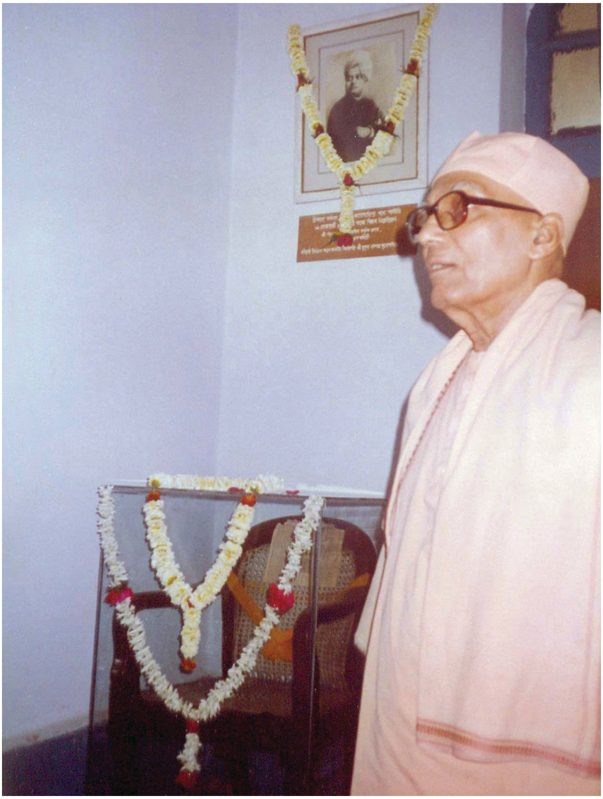
अपनी चिट्ठियों को मुझे भेजने से पहले उनकी फोटोकॉपी बनवा कर एक कापी अपने पास रखकर मुझे भेजो।

ठीक है, घन्टों प्रभु का नाम जपती रही और उसके बारे में मुझे लिखा यह भी ठीक किया। ऐसा समझो कि तुम्हारे इष्टदेवता, श्रीश्रीठाकुर ही तुम्हारे हृदय में बैठकर तुमसे नाम जप करा रहे हैं, और फिर मुझे उस बात के बारे में तुमसे लिखवा भी रहे हैं। तुम प्रभु का नाम जप नहीं कर सकती, जब वे करा लें, तभी कर सकती हो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३१)

प्रिय ...,

तुम्हारी २८ जनवरी की चिट्ठी ८ फरवरी को यहाँ पहुँची। तुम्हारी उम्र २५ वर्ष ६ महीने है, यहाँ मिशन में प्रवेश करने की उम्र २५ वर्ष हैं। लेकिन बड़ी बात वह नहीं है। जरूरी बात तो यह है कि तुम्हारे प्रवेश करने की बात श्रीश्रीठाकुर पर ही छोड़ो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए हमारे प्रभु से हर घड़ी प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३२)

प्रिय ...,

तुम्हारी १८ अप्रैल को दो चिट्ठियाँ यहाँ आ पहुँची। मैंने तुम्हें लिखा था कि चिट्ठियाँ लिखकर पहले उन्हें पढ़ा करो। पहले एक कोरे कागज पर साफ-साफ लिखो, फिर लिफाफे में भर कर या अन्तर्देशीय पत्र पर लिखकर भेजो।

तुम्हारी चिट्ठी पढ़ कर तो यही लगता है कि तुम्हें अवस्था सुधारने की चेष्टा करने की अपेक्षा अपनी अवस्था औरों को सुनाने में ही सुख मिलता है। तुम्हारे जैसे लोग अपना हित नहीं चाहते, औरों पर ही निर्भर रहकर जीवन बिताना चाहते हैं और बिताते भी रहते हैं। मैं तुम्हारे लिए हमारे श्रीभगवान से प्रार्थना करने के सिवाय और कुछ भी नहीं कर सकता। खुदकुशी वगैरह की अनापसनाप बातें लिखकर तुम मुझे क्या समझाना चाहते हो? अगर अपना भला चाहते हो तो मन लगाकर पढ़ो, रिजल्टस् अच्छे करो।

मैं तुम्हारे लिए हर घड़ी श्रीभगवान से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३३)

प्रिय ...,

तुम्हारी १५ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ १८ अप्रैल को पहुँच गई। अपनी अगली चिट्ठी में मुझे अपने घर के बारे में लिखो। अच्छा,

एक बात समझो। मान लो तुम पानी की टोंटी के पास खड़ी हाथ मुँह धो रही हो, इतने में तुम्हें कोई बुलाता है और तुम पानी की टोंटी को खुली छोड़कर जाने लगती हो। तुम्हारा मन तुमसे टोंटी को बंद करके जाने के लिए कहता, लेकिन तुम उसकी अनसुनी कर देती हो, कहती हो - 'अभी तो आ रही हूँ एक मिनट में।' लेकिन लौटती हो ४० मिनट बाद। मन कहता है, 'यह तुमने क्या किया, पानी बरबाद किया ?' तुम फिर उसकी अनसुनी कर देती हो, कहती हो, 'इससे क्या बिगड़ गया ? यह तो होता ही रहता हैं ?'

अब मान लो वही टोंटी पर तुम खड़ी हो, बुलावा आता है और तुम जाने लगती, और वहाँ तुम्हारे गुरुदेव बैठे हैं, कहते हैं - बेटी, टोंटी बन्द कर लो फिर जाओ। तुम उनकी सुनती नहीं हो। और फिर तुम्हारे लौटने पर जब वे तुम्हें टोकते हैं तो तुम उसी तरह उनसे भी वही व्यवहार करती हो जैसा पहले अपने मन के साथ किया था। देखो बेटी इस तरह, जैसे तुम्हारे व्यवहार से तुम्हारे गुरु को चोट पहुँचती है, वैसे तुम्हारा मन भी क्रमशः संकुचित हो जाता है। मेरा कहना यही है कि अपने मन के साथ ऐसा व्यवहार न करो। जब भी तुम्हारा मन जो कुछ भी कहे, तुरंत उसका पालन करो। १०-१५ दिनों तक ऐसा व्यवहार अपने मन के साथ करो, फिर मुझे लिखो। मैं तुम्हें आगे की बातें बताऊंगा। अपने मन के कहने पर सन्देह बिलकुल न करो। मुझे अपनी अगली चिट्ठी में लिखो कहाँ तक तुम मेरे कहने का पालन कर सकी।

मैं तुम सभी की भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(३४)

प्रिय ...,

अपने मन को भटकने से रोकने कि चेष्टा करोगी, यह कैसे होगा ? तुम इतनी ही चेष्टा कर सकती हो कि प्रभु का नाम लेते समय अपने मन को प्रभु नाम उच्चारण में लगाओ और हर घड़ी नाम जपने में लगाओ। लेकिन वह तो नहीं हो पाएगा। क्योंकि अपने मन पर तुमने अपने परिवार का बोझ भी लाद दिया है, तो जब तक तुम इस बात को अच्छी तरह समझ नहीं जाती कि प्रभु ही कर्ता है, तब तक बोझ बना रहेगा। तुम्हारे परिवार के लोगों की भलाई उन्हीं प्रभु पर निर्भर है, जब इस बात की दृढ़ धारणा तुम्हें हो जायेगी तभी तुम्हारा मन तुम्हारी चेष्टा के बगैर ही प्रभु का नाम हर घड़ी लेता रहेगा। तुम्हारे बच्चों का, पति का भविष्य उनकी बुद्धि पर निर्भर है, जब तक उनकी बुद्धि में संसार सवार है तब तक उन्हें सांसारिक सुख-दुःख से गुजरना पड़ेगा, लेकिन फिर भी तुम्हारी उपस्थिति के कारण उन्हें अपनी अपनी अवस्थाओं से परिचय होने लगेगा, तुमसे श्रीश्रीठाकुर श्रीश्रीमाँ के जीवन के बारे में सुनकर, तुम्हारे जीवन में उनके उपदेशों का प्रतिपालन देखकर उन्हें आध्यात्मिक जीवन बिताने के लिए उत्साह मिलने लगेगा। निश्चिन्त रहो। मैं तुम सभी के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

> धर्म वह वस्तु है, जिससे पशु मनुष्य तक और मनुष्य परमात्मा तक उठ सकता है।
>
> – स्वामी विवेकानन्द



(३५)

प्रिय ...,

तुम्हारी १८ मार्च की चिट्ठी यहाँ ३० मार्च को पहुँची।

तुम्हें किसी भी और की सेवा नहीं करनी है। इतना ही समझो कि तुम्हारे पुराने कर्म के अनुसार तुम्हें यह जीवन मिला है और फिर श्रीश्रीठाकुर का नाम जपने का भी अधिकार मिला है। अभी प्रभु का नाम ही निरन्तर जपते रहो, चलते-फिरते, हर काम करते हुए प्रभु का नाम मन में जपने का अभ्यास करो। मुझे चिट्ठियाँ लिखा करो।

मैं तुम्हारे लिए हमारे श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३६)

प्रिय ...,

मुझे लिखी अपनी चिट्ठियों की फोटोकॉपी उतरवा कर मुझे भेजा करो, जिससे मेरे जवाब के साथ अपने प्रश्नों को मिलाकार पढ़ सको। तभी मेरी चिट्ठियों का तुम्हारी मानसिक प्रक्रिया पर कोई असर पड़ेगा। अच्छा होगा कि जब मुझे लिखते हो तो अपनी चिट्ठी के साथ मेरी भेजी हुई चिट्ठी की भी फोटोकॉपी साथ भेजा करो ताकि मुझे मालूम पड़े कि तुमसे कैसी बातें हुई थी।

अपनी पुरानी चिट्ठियों को पढ़ा करो, फिर देखोगे श्रीश्रीठाकुर तुम्हें कहाँ से कहाँ लाये हैं और फिर प्रत्यक्ष होगा कि अभी काफी आगे जाना है।

मैं तुम लोगों की भलाई के लिए उनसे निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३७)

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी यहाँ यथा समय पहुँची। फिलहाल संन्यास लेने की बात छोड़ो। तुमने देख तो लिया ही है कि तुम उस जीवन के लायक नहीं हो, जैसा तुम्हीं ने लिखा है कि बीमारियाँ हैं, आदि।

संन्यास लेना, संन्यास-आश्रम में रहकर संन्यास न लेकर भी संन्यासी सा जीवन बिताना और, संन्यास आश्रम में रहे बिना भी तुम एक शुद्ध और पवित्र जीवन बिता सकती हो। सारदा मठ की प्रतिष्ठा होने से पहले हमारे देश में इसी तरह कुछ महिलाओं ने जीवन बिताया था और उन्हीं को आगे चल कर सारदा मठ के परिचालन करने का भार सौंपा गया।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीमाँ तथा श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३८)

प्रिय ...,

तुम्हारी ५ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ पहुँची।

गुजरात में तीर्थ दर्शन के लिए गए थे, अच्छे दर्शन हुए, पढ़कर मुझे अच्छा लगा। इस तीर्थयात्रा के समय जैसे तुम्हे प्रतीत हुआ कि सभी कुछ किसी के द्वारा पूर्व-योजनाबद्ध किया गया था, अपने जीवन की हरेक बात पर ऐसा ही समझो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर को हमेशा मना रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३६)

प्रिय ...,

मेरी ११ नवम्बर की चिट्ठी को तुम फिर से पढ़ो। उसे बारंबार पढ़ा करो। यही है कि तुम्हे एक प्रकार का पागलपन का रोग (schizophrenia) लग गया है। तुम्हे इस रोग से बारम्बार मुक्त होना है। जो लोग तुम्हें पागल कहते हैं उनके बारे में सोचोगे तो देखोगे कि वे ही लोग पागल हैं। अपने आपको स्वस्थ समझो और डॉक्टरी की पुस्तकों को पढ़ने में मन लगाओ। अपने मन के साथ बातें करो, उसे एक बच्चे की तरह समझाते रहो, कुछ दिनों में वह तुम्हारी बातें सुनने लगेगा। मेरी बात मानों, तुम्हे कोई रोग नहीं है।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(४०)

प्रिय ...,

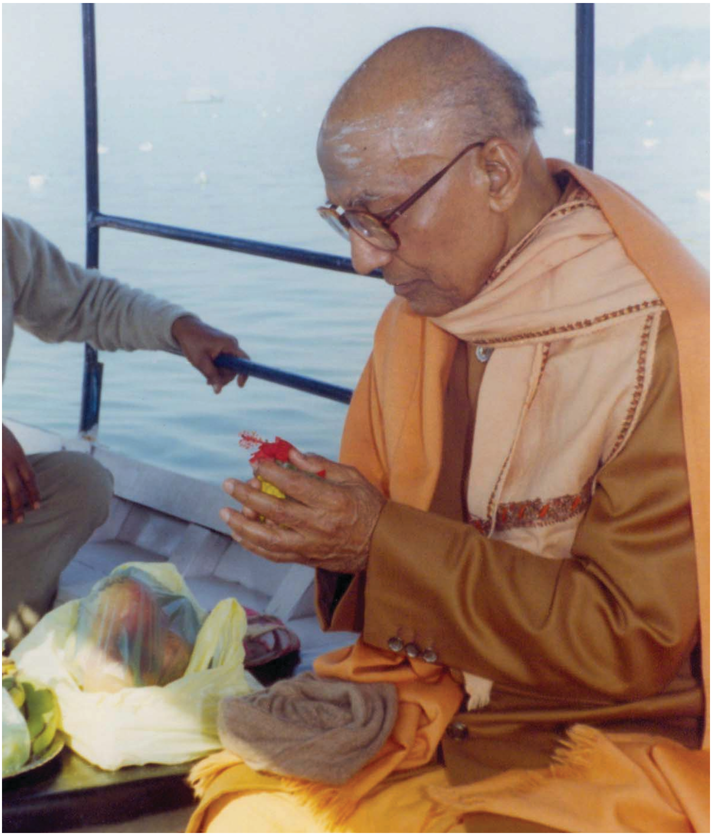
तुम लोगों को श्रीश्रीठाकुर की सेवा करनी है, जिसके लिए उन्होंने तुम्हारी रक्षा की। कहीं भी जाती हो तो श्रीश्रीमाँ का एक छोटासा चित्र अपने साथ रखा करो, अपने माता-पिता से भी कहो ऐसा करें।

मैं भूल गया हूँ कि तुम किस क्लास में चौथे स्थान पर आई हो। अपने अगले पत्र में मुझे लिखकर बताओ।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(४१)

प्रिय ...,

निश्चिन्त रहो, तुमने अपने पत्र में जो प्रार्थनाएँ लिखी हैं वे सभी उन्हें मन्जूर होंगी, लेकिन तब तक प्रभु का नामजप आदि यथानियम करते रहो।

मैं तुम्हारे सामूहिक कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(४२)

प्रिय ...,

तुम्हारी दूसरी आँख को क्या हो गया, फिर से शल्य चिकित्सा कराओगी क्या ? शुद्धभक्ति को छोड़कर इस संसार में तुम्हारे माँगने लायक रह ही क्या गया है ?

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारी प्रार्थना की मन्जूरी के लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(४३)

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर मुझे खुशी हुई। परीक्षाएं कब हैं ? परीक्षाओं के बाद घर पहुँचने पर क्या करोगे ? संयुक्त प्रवेश परीक्षा के लिए तैयारियाँ करोगे ? जो कुछ भी करो, स्वामी विवेकानन्द महाराज की पुस्तकों को पढ़ते रहने का अभ्यास डालो। अपनी अगली चिट्ठी में मुझे लिखो कि तुमने सम्पूर्ण विवेकानन्द साहित्य पढ़ना शुरू कर दिया है।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिंतक

स्वामी गहनानन्द



(४४)

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी यहाँ २५ जनवरी को पहुँची।

मुझे जो बातें लिखते हो, उन्हें ही श्रीश्रीठाकुर को कहो। वैसे उन्हें कहने की आवश्यकता नहीं है, वे अन्तर्यामी हैं। उनके जीवन का अध्ययन करो और फिर अपनी ओर नजर डालो। यही प्रक्रिया तुम्हें शुद्ध करेगी।

मैं तुम्हारे लिए निरंतर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(४५)

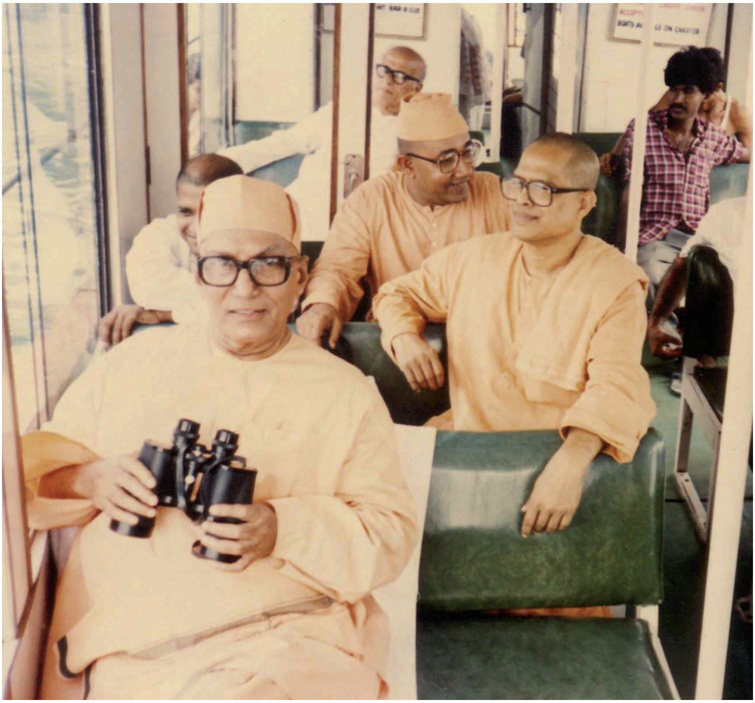
प्रिय ...,

तुम दोनों को श्रीश्रीठाकुर ने अपना नाम जपने का अधिकारी बनाया है। दिन-रात जहाँ तक हो सके उनका नाम लेती रहो और उसी में अपना कल्याण समझो।

मैं तुम्हारे लिए उनसे निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(४६)

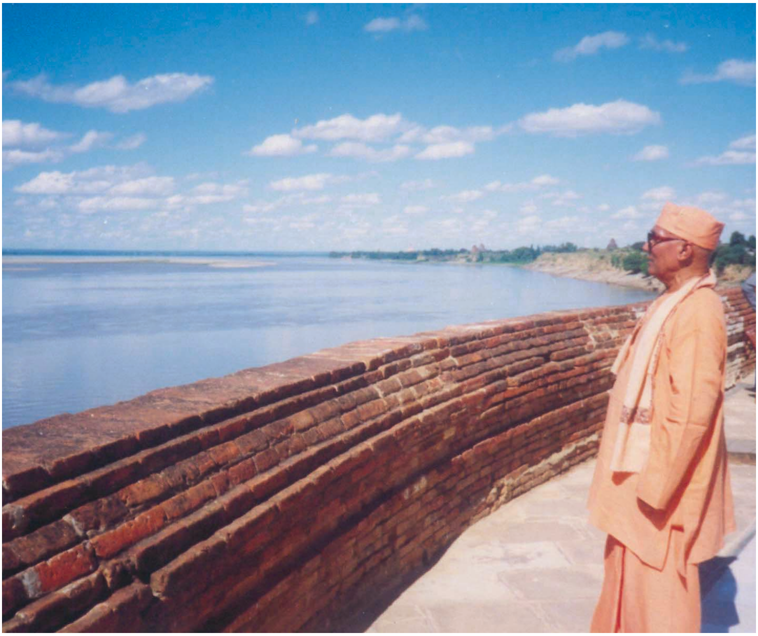
प्रिय ...,

क्या तुम्हें यह अनुभूति हर रोज हुआ करती है ? ठीक है, इसे कुछ अस्वाभाविक न समझो, न किसी और से इसके बारे में चर्चा करो। अध्यात्म के पथ पर ऐसी बातें होना कोई नई बात नहीं हैं। ध्यान-जप-उपासना का अपना कार्यक्रम चलाते रहो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। उनकी जीवनियों को पढ़ते रहो और फिर अपने दैनन्दिन आचरणों पर नजर डालो, यही प्रक्रिया तुम्हारे मन को शुद्ध करती जाएगी।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(४७)

प्रिय ...,

जब किन्हीं स्वामीजी को प्रणाम करो तो उनसे मांगना कुछ भी नहीं है। किसी से कभी कुछ भी न मांगो। श्रीश्रीठाकुर ने तुम्हें अपने नाम जपने का अधिकारी बनाया है, उन्हें तथा श्रीश्रीमाँ को मालूम है तुम्हे कब क्या चाहिए। उनसे भी प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है। छोटा बच्चा अपनी माँ से क्या कुछ मांगता रहता है ?

सप्तर्षि महाराज वगैरह को अलग चिट्ठियाँ लिखो। मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(४८)

प्रिय ...,

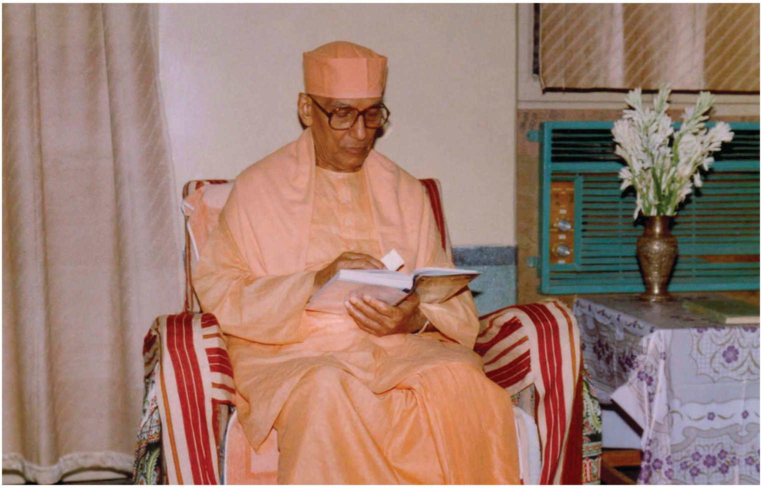
तुम्हारी ७ फरवरी की चिट्ठी यहाँ १८ फरवरी को पहुँची।

अपने आध्यात्मिक अनुभवों को या स्वप्न आदि के बारे में किसी भी दूसरे व्यक्ति से चर्चा न करो। अपनी अगली चिट्ठी में मुझसे पूछो, मैं बताऊंगा। अभी इतना ही कह देता हूँ कि ऐसा करने से प्रशंसा मिलने पर मन फूल जाता है, अहंकृत हो जाता है और तिरस्कार मिलने पर मन को दुःख पहुँचता है। तुम्हारी अवस्थाओं को तुम्हारे गुरु तथा तुम्हारे इष्ट को छोड़कर कोई भी समझ नहीं सकता।

मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो। मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ को हर घड़ी मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(४६)

प्रिय ...,

तुम्हारी २६ जनवरी की चिट्ठी २८ जनवरी को यहाँ पहुंची। अपनी माँ को जब कोई बच्चा 'माँ', 'माँ' कहकर पुकारता है तो क्या उसे 'माँ' शब्द का अर्थ मालूम होता है, या जानने की इच्छा होती है ? वह तो केवल अपनी माँ को ही चाहता है। वैसे ही तुम्हे अपने मन्त्र का अर्थ जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। इतना तो तुम समझते ही होंगे कि तुम्हारे मन्त्र जप का उद्देश्य इष्टदेव का दर्शन करना है। जप करते रहो। पहले तो जप करने में मन ही एकाग्र नहीं हो पाएगा। फिर कुछ वर्षों में कुछ कुछ एकाग्र होगा। फिर इष्टदर्शन के लिए व्याकुलता होगी और जप करने ही में आनंद होगा, फिर तुम निरन्तर जप करते रहने में आनंदित होओगे, तुम्हारा मन भी शुद्ध, निर्मल हो जाएगा और इष्टदर्शन के योग्य बनेगा। फिलहाल जप करते रहो। मैं तुम्हारे मन्त्र को लिखवा कर तुम्हें भिजवा रहा हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(५०)

प्रिय ...,

जब जप ध्यान करने के लिए बैठने पर तुम्हारे मन में तरह तरह के विचार आते हैं तो तुम उन्हें रोक नहीं सकते। तुम्हारा काम है नियमित समय पर जप ध्यान के लिए विधियों का पालन करते हुए जप ध्यान करते रहना। जैसे नींद अगर चार घन्टे तक

न भी आवे तो भी बिस्तर पर पड़े रहना तुम्हारा काम है। ध्यानादि के समय जो विचार आते हों उन्हें रोको नहीं - उन्हें आने दो। नियमित रूप से बैठकर जप ध्यान करने का मतलब इन विचारों से तुम्हारा परिचय होना है। कुछ महीनों में देखोगे कि अपने कुछ विचारों से तुम्हारा परिचय हो चुका है और तुमने उन्हें दो भागों में बाँट दिया है, अपनी कामना-वासनाएँ तथा उन्हीं से सम्बद्ध-काम-क्रोध-लोभ आदि मन के विकार। अब मान लो तुम्हारे मोहल्ले में एक नया पुलिस-स्टेशन खुल जाता है और नया थानेदार कोई बहुत ही कड़ा अफसर आता है। तो बताओ कि मोहल्ले के गुण्डे-बदमाश मोहल्ला छोड़कर भागेंगे या नहीं ? इसी तरह तुम अपने विचारों पर कड़ाई से निगरानी करोगे तो वे भी भाग जाएँगे। कभी कभी वे आक्रमण करने आ सकते हैं, तुम पर, लेकिन अगर तुम सचेत होगे, सजग होगे तो वे भाग ही जाएँगे। और जब किसी क्लास से बदमाश लड़कों को शिक्षक महाशय निकाल देते हैं। तब उस क्लास में पढ़ाई अच्छी होती है और बाकी छात्र अच्छी तरह पढ़कर पास हो जाते है, उसी तरह काम-क्रोधादि से मुक्त होकर तुम्हारा मन भी यथा इच्छा जपध्यान करने के लिए स्वतन्त्र हो जाता है। समझ गए होंगे। इसलिए विचारों को आने दो, केवल उन पर नजर रखो। मुझे चिट्ठियाँ लिखो।

मैं श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

ईश्वर स्वयं ही मनुष्य के रूप में लीला करते हैं। वे बड़े जादूगर हैं - यह जीव-जगत्-रूपी इंद्रजाल उन्हीं के जादू का खेल है। केवल जादूगर ही सत्य है और जादू मिथ्या।

- श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(५१)

प्रिय ...,

अपनी बेटी से कह दो कि तुम्हारी अवस्थाओं को समझने की कोशिश करे और ऐसी अवस्थाओं में खींचातानी न करे। कुछ देर तक यों ही बैठी रहोगी तो हाथ-पैर स्वाभाविक हो जायेंगे फिर बोलने भी लगोगी। सबसे अच्छा है बिलकुल न बोलना, हिलना-डुलना भी नहीं।

अपनी इस अवस्था को वहम क्यों कहती हो ? यह तो तुम्हारे प्रयासों का, श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ के प्रति तुम्हारे लगन का फल है कि तुम्हारा मन शुद्ध, निष्काम, निर्मल हो चला है। कभी कभी वहाँ के पहाड़गंज रामकृष्ण मठ में जाकर मन्दिर में श्रीश्रीठाकुर को प्रणाम करो। सारदा मठ भी जाती हो क्या ?

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(५२)

प्रिय ...,

तुम्हारे पिता मुझे कई बार तुम्हारे पुनर्विवाह के लिए लिख चुके हैं। मुझे नहीं मालूम तुम्हारे पिता तुम्हारी इच्छाओं से अच्छी

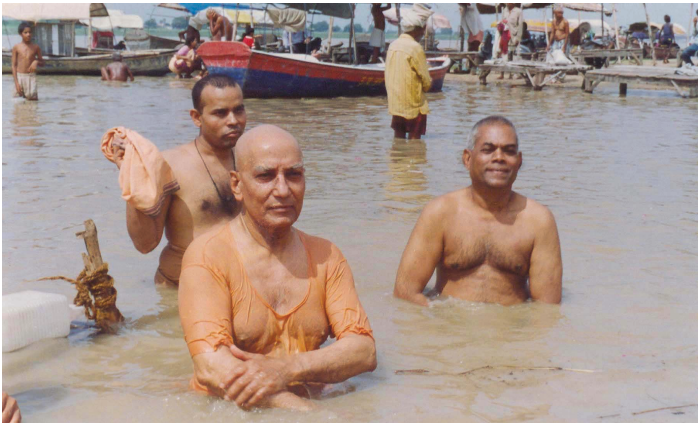
तरह परिचित होने की वजह से ऐसी इच्छा कर रहे हैं, शायद ऐसा हो सकता है। तुमने नौकरी की बात लिखी है। पढ़ाई तुमने कहाँ तक की है, मुझे याद नहीं वरना समझने की कोशिश करता कि तुम्हें कैसा काम मिल सकता है। तुम्हारी उम्र क्या है ? लेकिन सबसे बड़ी बात तो यह है कि निर्णय लेने की जो बात तुमने लिखी है तुम्हे पहले देखना पड़ेगा कि निर्णय तुम किस विषय पर करोगी, किस बात का निर्णय करोगी, फैसला करोगी, इससे पहले तुम्हे देखना पड़ेगा तुम्हारे आगे कौन कौन से रास्ते खुले है। निर्णय तुम्हें ही लेना पड़ेगा। तुम्हारी दीक्षा तो हो चुकी है। शोक मनुष्य को ईश्वर के करीब लाता है। या इसे इस प्रकार समझो की शोक कि पराकाष्ठा अशोक है, आनंद है। श्रीश्रीठाकुर के, श्रीश्रीमाँ के, श्रीश्रीस्वामीजी महाराज तथा उनके गुरुभाइयों के जीवनचरित पढ़ो तथा उनके जीवन में दुःख की मात्रा को देखो। श्रीश्रीमाँ ने सहने कि लिए भी कहा हैं, कि वर्णमातृका में तीन सकार हैं यानी तीनो बारम्बार जैसे कह रहे है, सहती रहो, सहती रहो, सहती रहो। हमारे शास्त्र कहते है सहनं सर्वदुःखानाम, सारे दुःखों को सहन करना, झेलती रहना और उनके निराकरण करने की चेष्टा न करना, इसे 'तितीक्षा' कहते हैं। जिसका मतलब 'तेजस्विनी होने की इच्छा' है। शारीरिक व्यायाम जिस प्रकार शारीरिक तेज प्रदान करता हैं, 'शोक' मन को शुद्ध करता है।

अगर आवश्यक समझो मुझे चिट्ठियाँ लिख सकती हो वरना अपने हृदयाभ्यन्तर में समासीन श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ पर निर्भर, उन पर पूरी तरह निर्भर रहो, उनका कहना मान कर चलो, फिर जीवन के शेष दिन बिता लेना कठिन नहीं होगा।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारी भलाई के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(५३)

प्रिय ...,

तुम्हारी १८ मई की चिट्ठी २८ मई को यहाँ पहुँच गयी। त... को कोई बीमारी नहीं है लेकिन तुम लोगों की शांति के लिए गोलियाँ वगैरह खिलाते रहो जैसा डाक्टर लोग कहते हों। अगर वह नियमित रूप से मुझे चिट्ठियाँ लिखता रहे तो वह ठीक हो जावेगा, निश्चिन्त रहो। अगर न भी लिखे तब भी ठीक हो जायेगा पर कुछ देर लगेगी जैसे इन्दौर से कलकत्ते का मार्ग जिसे मालूम है और जिसे मालूम नहीं है दोनों रेलगाड़ी वगैरह से कलकत्ता पहुँच तो जावेंगे ही लेकिन जिसे मार्ग मालूम नहीं होगा उसे काफी तनाव भुगतना पड़ेगा, फर्क इतना ही है।

चलो त... के बहाने तुमने भी मुझे चिट्ठियाँ लिखना शुरू कर दिया। अच्छी बात हैं तुम्हारे माध्यम से उसकी पार्टी मनाना बंद हो जावेगा, गुस्सा भी नियन्त्रित होगा, उसे कुछ समय चाहिए।

मैं तुम सब के लिए हमारे प्रभु से, हमारी माँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(५४)

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी यहाँ २६ मई को पहुँच गई। जिसे तुम अपने आप को 'दो पाटों के बीच टूटते तथा पीसते हुए पाया' कहते हो मैं तो उसे ही श्रीश्रीठाकुर का तुम्हें दिया गया वरदान समझता हूँ कि संसार की असारता का तुम्हारा ज्ञान पक्का होता जा रहा है।

लेकिन अभी काफी दूरी तय करना बाकी है, क्योंकि तुम्हें दुःख है कि तुम्हारी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा तुम्हारे भाई ने अपने नाम कर लिया है, और तुम अब भी सोचते हो कि तुमने कोई गलती नहीं की। इन बातों से अपने आप को सर्वथा अलग कर लो। रामकृष्ण मिशन से प्रभावित होने की जगह अगर तुम श्रीरामकृष्णदेव से प्रभावित होते तो शायद तुम्हारी यह हालत न होती। चलो, तुमने तथा तुम्हारी पत्नी ने प्रभु का नाम जपने का अधिकार हासिल कर लिया है, यही लगता है तुम पर रामकृष्ण मिशन का प्रभाव है। अब हर काम करते हुए मन में जहाँ तक कर सको दिनरात प्रभु का नाम तुम दोनों लेते रहो। गिनतियाँ केवल तभी रखो जब आसन पर बैठकर विधिपूर्वक जपध्यान आदि करते हो। मानसिक जप में गणना की आवश्यकता नहीं है। याद रखो, संसार के सम्बन्ध में बिलकुल न सोचो, प्रभु के बारे में सोचो। रामकृष्ण मठ से प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन करो।

मैं तुम दोनों की आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रभु को निरन्तर ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

> यदि शान्ति चाहती हो तो बेटी, किसी के दोष मत देखना। दोष स्वयं के देखना। जगत् को अपना बना लेना सीखो। कोई पराया नहीं है बेटी, जगत् तुम्हारा अपना है।
>
> –श्रीमाँ सारदा देवी



(५५)

प्रिय ...,

तुम्हारी १७ मई की चिट्ठी आज ही यहाँ पहुँची।

युक्ताक्षरों को लेकर इतना परेशान क्यों होने लगी हो, अगर गलतियों की शंका हो तो पहले एक कोरे कागज पर चिट्ठी का ड्राफ्ट बना लो, युक्ताक्षरों को जाचँ लो। इसमें परेशानी क्या है ? जितनी देर करोगी उतना ही आत्मविश्वास आने में विलम्ब होगा।

ठीक है, मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो, मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर को नित्य ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(५६)

प्रिय ...,

तुम्हारी ३ मई की चिट्ठी २१ मई को यहाँ मिली। मुझे लगता है कि तुम्हें अगर संन्यास का जीवन बिताने कि इच्छा है तो पुणे के सारदा मठ में चिट्ठी लिखकर और उनसे वहाँ जाकर बात कर सकती हो, वे क्या कहती हैं। अगर तुम्हारी यही इच्छा है। यदि वे तुम्हें सारदा मठ में योग देने के योग्य समझती है, तो प्रभु से प्रार्थनाएँ करो कि तुम आजीवन शुद्ध रह कर चराचरव्याप्त अपने इष्टदेवता की आराधना करो, बड़ों के कहने के अनुसार चल कर जीवन बिता सको। इस चिट्ठी को पढ़ने के बाद तुमने क्या निश्चय किया? सारदा मठ में चिट्ठी लिखी? वहाँ गई या नहीं? मुझे लिखो, फिर मैं तुम्हें चिट्ठी लिखूंगा।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(५७)

प्रिय ...,

हायर सैकण्डरी में फेल हो गयी तो क्या हुआ, ऐसी कौन सी गजब की बात हुई ? वेस्ट बंगाल (पश्चिमी बंगाल) में इस बार माध्यमिक परीक्षा (दसवीं कक्षा) में करीब ढाई लाख परीक्षार्थी फेल

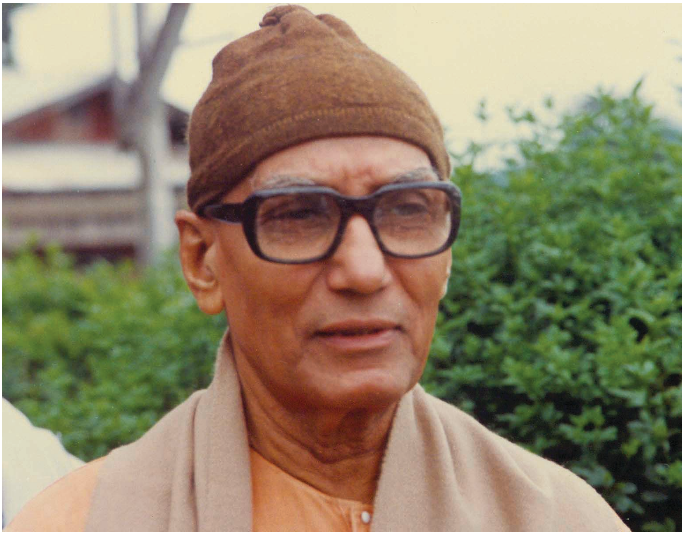
हुए हैं ! उनके बारे में तुम क्या करोगी ? या तुम्हारे पड़ोस के लोग भी क्या कर सकते हैं। आज की दुनिया में हमें हायर सैकेण्डरी परीक्षाओं में अच्छे अंक लेकर पास होने वाले लड़के लडकियाँ तमाम मिल जावेंगी लेकिन रोशनी की तरह स्वामीजी की विचारधारा से उत्प्रेरित लड़के-लड़कियों की आवश्यकता है। लेकिन तुम आर्ट्स क्यों पढ़ना चाहती हो ? साइन्स तो तुमने पढ़ा है, पुनः उसी विषय को पढ़ने से परीक्षाओं के फल क्या अच्छे नहीं होंगे ? आर्ट्स के विषय तो नए सिरे से पढ़ने पड़ेंगे। लोगों के बहकावे में न पड़ो। प्रभु का नाम दिन-रात मन में जप किया करो। मुझे बराबर चिट्ठियाँ लिखा करो तथा पढाई एम.ए. तक जारी रखो, चाहे आर्ट्स में हो या साइन्स में। आत्महत्या की बात लिखकर तुमने मुझे अत्यन्त कष्ट पहुँचाया है, ऐसा न लिखो। (न करो)।

मैं तुम्हारी सद्बुद्धि के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरंतर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकांत शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द





(५८)

प्रिय ...,

'प्रभु नाम' हर घड़ी मन में हर काम करती हुई करो। मन में और किसी भी बात को स्थान न दो। इस प्रकार से अपने शुद्ध मन को पहचानो, तुम्हारा मन ही शुद्धचैतन्य है, जो कि श्रीश्रीठाकुर का, श्रीश्रीमाँ का स्वरूप, उसी शुद्धचैतन्य स्वरूप को तुम कह रही हो कमियाँ है, बुद्धिहीन है, आदि। समझती तो हो, लिखती जाती हो। ठीक है, चिट्ठियाँ जरूर लिखा करो लेकिन प्रभु का नाम भी हर घड़ी जरूर लेती रहो। आसन पर बैठकर 'उपासना-पद्धति' के नियमों का पालन करती हुई सुबह-शाम जब नाम-जप-ध्यान-उपासना करती हो, उन अवसरों को छोड़कर जब मन ही मन लगातार जप करो तो गिनती रखने कि आवश्यकता नहीं हैं। जब भी तुम्हें प्रभु याद पड़े उनका नाम जपा करो। मैं तुम्हारे लिए उन्हें मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(५६)

प्रिय ...,

तुम्हारी २७ मई की चिट्ठी कल ही यहाँ पहुँची। तुमने जीवन त्यागने की बात लिखी है लेकिन यह काम इतना आसान नहीं है,

तुम्हारा कर्म तुम्हें बारम्बार उसी परिस्थिति में लाएगा जिस में तुम आज हो, जब तक तुम तुम्हारी परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार होते हो, तब तक तुम्हें बारम्बार जन्म लेते ही रहने पड़ेंगे। आत्महत्या से तुम सोच सकते हो कि तुम्हें छुट्टी मिलेगी लेकिन होगा यही कि तुम्हारे कष्टों में आत्महत्या करने के बाद का जो जीवन है, उस जीवन के कष्ट भी जुड़ जावेंगे। इसलिए आत्महत्या कभी भी, किसी के लिए भी जीवन की समस्याओं का समाधान नहीं है। जीवन की समस्याएँ तो दुःस्वप्न-सी होती हैं, उनसे तो मुक्ति तब होती है जब किसी को संसार की असारता का पक्का ज्ञान होता है और उसका मन संसार से कुछ भी नहीं चाहता है। उस समय में उसकी अन्तरात्मा उसकी सहायता करती है, वह भी अपनी अन्तरात्मा से ही प्रेरित होकर अन्तरात्मा के लिए ही, उसी की सेवा के लिए जीता रहता है और मृत्यु की इच्छा जब पक्की होती है तब वैसे ही दो-चार दिनों में साधारण से ज्वर से पीड़ित होकर ही वह मर जाता है, उसे आत्महत्या नहीं करनी पड़ती है।

तुमने भला क्या किया था कि तुम्हारा प्रवेश रद्द हो गया और कागजात भी तुम्हे पैसे के बगैर वापस नहीं मिल रहे हैं ? श्रीश्रीठाकुर से, अपनी अन्तरात्मा से रो-रो कर कहते रहो, वे ही रास्ता निकालेंगे, जब तक यह नहीं होता धीरज रखो। मुझे चिठ्ठियाँ लिखते रहो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीमाँ तथा श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(६०)

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ मई कि चिट्ठी १५ मई को यहाँ पहुँच गई। नववर्ष की तुम्हारी चिट्ठी पता नहीं यहाँ पहुँची या नहीं, मेरे पास तो आई नहीं।

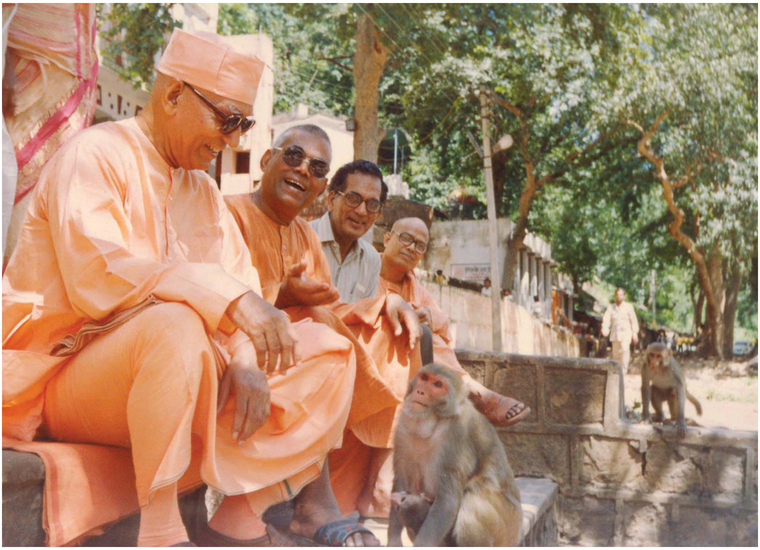
तुम सारदा माँ के जीवन के बारे में क्यों नहीं सोचती ? सारदा माँ ने किस सारदा मठ में प्रवेश किया था ? पहले तो जयरामबाटी में थी, फिर श्रीश्रीठाकुर के पास, फिर जैसे श्रीश्रीठाकुर ने उनसे कहा था, कामारपुकुर में ही रहने लगी थी, बिलकुल अकेली। सब्जियाँ तो दूर रहीं, नमक तक नहीं मिलता था। श्रीश्रीठाकुर ने १८८६ में शरीर त्याग किया, १८९३ में स्वामीजी अमेरिका गए। कम से कम इसी काल के बारे में सोचो कि माँ का जीवन कैसे बीता होगा ? वैसे चाहो तो तुम भी श्रीश्रीठाकुर को लेकर जीवन बिता सकती हो। श्रीश्रीठाकुर को ही अपने हृदय में बैठे हुए देखोगी तो भविष्य कि चिन्ता कौन करेगा ? गौरी माँ के बारे में पढ़ा नहीं तुमने ? वह किस सारदा मठ में गई थी ? गोपाल की माँ कहाँ गई थी ? निवेदिता, जोसेफिन मैकलाउड, ओलीबुल को सारदा मठ कहाँ मिला ? अभी पढ़ाई फिर से शुरू करो।

देर न करो, कहाँ तक पढ़ा था तुमने ? आगे क्या पढ़ोगी मुझे लिखो। सारदा मठ से पत्र व्यवहार, वहाँ आना-जाना जारी रखो। पहले अपने पैरों पर खड़ी हो, फिर बाहर से उनकी सेवा करोगी।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि कपट से जगत् में कोई महान् कार्य नहीं होता। — स्वामी विवेकानन्द



(६१)

प्रिय ...,

तुम्हारी अक्तूबर की चिट्ठी १ नवम्बर को यहाँ पहुँची।

स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज का जीवनचरित पढ़ोगी तो तुम्हें मिलेगा कि वे कभी श्रीश्रीठाकुर से स्वयं कह रहे हैं, कुछ भी अच्छा नहीं लगता। आपको भी अच्छा नहीं लग रहा है, आदि। अध्यात्म जीवन में हमारे स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज ने ज्वार-भाटे की बात कही है। उनकी पुस्तक का नाम 'धर्मप्रसंग में स्वामी ब्रह्मानन्द', पढ़ी न हो तो पढ़ लेना। 'स्वामी तुरियानन्द महाराज के पत्र', 'स्वामी अद्भुतानन्द' आदि कुछ और जरूरी पुस्तकें हैं, पढ़ लेना। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए हमारे प्रभु से, हमारी माँ से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा कल्याणाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(६२)

प्रिय ...,

तुम्हारे लिए सबसे अच्छा रहेगा कि अपने आज के अनुभवों को, अपने मन कि भावनाओं से, शंकाओं से अच्छी तरह परिचित होती चलो कि आज से ४०-५० वर्षों के बाद जब श्रीश्रीठाकुर की कन्याएँ तुम्हारे पास सारदा मठ के किसी केन्द्र में प्रवेश करने के लिए पहुँचेंगी तो उनकी अवस्था से तुम परिचित रहो। इसके अलावा तुम्हारी शंकाओं का कोई और कारण मुझे तो नहीं दिखता। अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखो तो सही, कहाँ से प्रभु ने तुम्हें उठाकर कहाँ पहुँचाया है। उन्ही पर भरोसा रखो, जैसे वलसाड के लिए रेलगाड़ी पर सवार होने के बाद ट्रेन के ड्राइवर के भरोसे पर रातभर सोती रही। एक ड्राइवर पर भरोसा कर सकती हो, और यहाँ प्रभु स्वयं तुम्हारे ड्राइवर ठहरे, फिर भी शंकाएं कैसी ? बेफिक्र रहो।

मैं तुम्हारे मठ के सभी के आध्यात्मिक कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ तथा स्वामीजी महाराज से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(६३)

प्रिय ...,

गृहप्रवेश के निमन्त्रण पत्र के साथ तुम्हारी चिट्ठी यहाँ १३ फरवरी को ही पहुँच पाई।

तुमने अल्पशिक्षा की दुहाई कैसी दी है ? तुम्हें नहीं मालूम स्वयं श्रीश्रीठाकुर ने अपने आप को मूर्खोत्तम कहा था ? ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय, तुमने तो पढ़ा ही होगा। शिक्षा की बात छोड़ो। प्रभु का नाम लेते-लेते ही जीवन बिताने का संकल्प करो, फिर प्रेम उपजेगा तुम्हारे हृदय में प्रभु के लिए और फिर तुम्हें धारणा होगी कि प्रभु ने क्यों अपने आप को मूर्खोत्तम कहा था।

मैं तुम्हारी और सभी की सार्विक भलाई के लिए सदा ही प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(६४)

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी जिस पर तुमने तारीख नहीं लिखी थी, यहाँ १६ अगस्त को पहुँची।

पढ़ाई का जो कार्यक्रम तुमने बनाया है ठीक है, उसी के अनुसार पढ़ाई करो। हैदराबाद मठ में आना-जाना, पढ़ना सब ठीक है, लेकिन अधिक समय अपनी डिग्री की पढ़ाई के लिए लगाओ। बहुत अधिक परिश्रम करो। मठ के पुस्तकालय से अंग्रेजी साहित्य की पुस्तकें लेकर पढ़ो अगर तुम अपनी अंग्रेजी सुधारना चाहते हो। अपनी हिंदी को भी सुधारो। तुम्हारी मातृभाषा क्या है ?

मैं तुम्हारी भलाई के लिए प्रभु से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(६५)

प्रिय ...,

तुम्हारी १६ सितम्बर की चिट्ठी २४ सितम्बर को यहाँ पहुँच गई थी।

मूर्तियाँ बनाने के काम में लगी हो और अंग्रेजी पढ़ने में भी, बड़ी अच्छी बात है। तुम मन-ही-मन श्रीश्रीठाकुर के, श्रीश्रीमाँ के साथ एक-दो दिन अकेले में रहने की बात क्यों नहीं सोचती ? मैं कोलकाता में काँकुड़गाछी के मठ में भी रहता हूँ तो मेरे चारों तरफ साधुओं, ब्रह्मचारियों, भक्तों की दिनभर भीड़ लगी रहती है। दीक्षा का दिन हुआ तो शाम के आठ-साढ़े आठ बजे तक मुझे छुट्टी नहीं मिलती। फिर टेलीफोन पर बातें करना पड़ता है, दुनियाभर से साधु-भक्त टेलीफोन करते रहते हैं। भक्तों की सैकड़ों चिट्ठियों का जवाब लिखवाना, दस्तखत करना पड़ता है। ठीक है जब यहाँ पहुँचोगी तो अपनी आँखों से मेरी अवस्था देखोगी।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए प्रभु को नित्य ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी
स्वामी गहनानन्द



(६६)

प्रिय ...,

तुम्हारी ३ सितम्बर की चिट्ठी यहाँ २४ सितम्बर को पहुँच गई थी।

तुम्हें तुम्हारे आध्यात्मिक जीवन के सम्बन्ध में तुम्हारे अपने हृदय में बैठे श्रीश्रीठाकुर से ही दिशा-निर्देश मिलते रहेंगे, निश्चिन्त रहो। फिलहाल अपनी पढ़ाई मन लगा कर करो। मैं कब कहाँ किस शहर में रहता हूँ पहले से मालूम नहीं रहता। देशभर में दीक्षा के काम पर घूमता रहता हूँ। इसलिए तुम्हारी यहाँ आकर मुझसे मिलने की इच्छा का पूर्ण होना मुश्किल ही लगता है।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(६७)

प्रिय ...,

तुम्हारी १-१०-०३ की चिट्ठी यहाँ २३-१०-०३ को पहुँची।

मैं हमारे प्रभु श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए तथा उनके प्रति तुम्हारी भक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए हर रोज हर घड़ी प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ। तुम निश्चिन्त हो कर जो चाहो करो।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(६८)

प्रिय ...,

तुम्हारी तारीख-विहीन चिट्ठी तुम्हारे नव वर्ष के बधाई पत्र के साथ २४ दिसंबर को यहाँ पहुँची।

तुमने अपना परिचय तो दे दिया लेकन अभी अर्थशास्त्र में एम.ए और उसके बाद पी.एच.डी. वगैरह फिलहाल मन लगाकर कर लो और सुविधानुसार मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो। अधिक ध्यान पढ़ाई पर ही लगाओ।

मैं तुम सभी के कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(६६)

प्रिय ...,

तुम्हारी १८ दिसंबर की चिट्ठी व..., की चिट्ठी तथा नव वर्ष के बधाई पत्र के साथ यहाँ २४ को पहुँची।

तुमने श्रीश्रीठाकुर का नाम जपना अभी प्रारम्भ ही किया है, इसलिए समस्याओं को समस्याएँ न समझो, वे तो तुम्हारी प्रतीतियाँ हैं। श्रीश्रीठाकुर ने अपना नाम जपने के लिए योग्य समझा है यही सबसे बड़ी बात है। अपनी साधना वगैरह के सम्बन्ध में गुरु के सिवाय औरों से चर्चा न करो। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो।

तुम्हारे कल्याण के लिए मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(७०)

प्रिय ...,

तुम्हारी ७ दिसंबर की लिखी चिट्ठी २० को यहाँ पहुँची।

तुमने अपनी चिट्ठी में जो बातें लिखी हैं ऐसा समझो कि श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ ही ने तुमसे ऐसा लिखवाया है। बात तो तुम्हारे मन में ही छिपी हुई थी और उनका न तुम्हें पता था न किसी और को। तुम तो निश्चिन्त ही रहो कि अपने बच्चों की सेवा कर लेने के उपरान्त तुम्हारा मन श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ की ध्यान-धारणाओं में लगा रहता है, मुझे सुविधानुसार चिट्ठियाँ लिखते रहो।

मैं हमारे श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(७१)

प्रिय ...,

तुम्हारी १० सितम्बर की चिट्ठी १६ सितम्बर को यहाँ पहुँच गई थी।

श्रीश्रीठाकुर ने तुम्हें उनके पावन नाम को जपने की अधिकारिणी बनाया है, सारदा मठ में योग देने के लायक बनाया है, बताओ तो सही, इसके लिए तुमने अपने तरफ से क्या किया है ? वैसे ही निश्चिन्त होकर अपने जीवन के साथ श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ की लीला को देखती रहो जैसे माँ जब अपने बच्चे को खिलाती-पिलाती, नहलाती, सुलाती है तो बच्चा अपनी माँ के मुखड़े को ही देखता रहता है, मुस्कराता रहता है। उन्हीं पर सब कुछ न्योछावर करो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए उनसे अनुक्षण प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(७२)

प्रिय ...,

दस दिसम्बर की तुम्हारी चिट्ठी मिली।

जो लोग किसी पहाड़ी नदी के ठण्डे पानी में नहाना चाहते हैं, वे अगर सोचने लगे कि पानी ठण्डा है, कैसे नहायें आदि, वे नहा नहीं पाते। जो लोग सचमुच नहाना चाहते हैं वे नदी के तट पर पहुँचते ही नदी में उतर पड़ते हैं और डुबकियाँ लगाते रहते हैं, फिर उन्हें ठण्ड का अनुभव नहीं होता। ऐसे ही अपने संकल्पों के बारे में समझो। जब संकल्प कर लो तो फिर शंका, संशय, सन्देह के फेरे में न पड़ो। संकल्प के अनुसार काम करो।

स्वामी विवेकानन्द महाराज की पुस्तकें मूल अंग्रेजी में पढ़ो; श्रीश्रीठाकुर का श्रीरामकृष्ण वचनामृत पढ़ो, श्रीश्रीमाँ के उपदेश पढ़ो। वरिष्ठ अनुभवी साधुओं से मिलो, उनसे उपदेश ग्रहण करो। श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करते रहो और इतना समझ लो कि अगर संन्यास की तुम्हारी वास्तविक इच्छा है तो उसके आगे कोई भी बात रूकावट नहीं डाल सकती है। यह तो पूरी तरह तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है। जितनी दृढ़ तुम्हारी बुद्धि होगी, उतनी ही दृढ़ तुम्हारी इच्छा होगी और उतनी ही जल्दी तुम संन्यास-जीवन के लिए तैयार हो जाओगे। श्रीश्रीठाकुर ही तुम्हारे संन्यास के संकल्प की रक्षा करेंगे। निश्चिन्त रहो।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा सदा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

ध्यान मन में, वन में, या कोने में करना चाहिए।

– श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(७३)

प्रिय ...,

तुम्हारी बगैर तारीख कि चिट्ठी मिली।

क्या तुम अपने मन से परिचित हो ? अगर नहीं तो तुम कैसे कह सकते हो कि तुम्हारा मन चंचल है ? तुम्हारा मन तो उसके अपने स्वभाव से ही स्वच्छ है, साफ है, निर्मल है, शुद्ध है, सच्चिदानंद-स्वरूप है। यह तो तुम्हारी सोच ही है कि तुम सोचते हो कि तुम्हारा मन चंचल है। आज ही उस सोच को बदल डालो और फिर देखो कि श्रीश्रीठाकुर क्या तुम्हारे मन को तुम्हारे इष्टमन्त्र को जपते रहने के लिए योग्य समझते, अगर उन्हें मालूम होता कि तुम्हारा मन चंचल है ? ऐसा न सोचो। श्रीश्रीठाकुर के बारे में सोचो, वही तुम्हें तुम्हारे मन के शुद्ध रूप से तुम्हें परिचित कराएगें। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो। जब मुझे लिखो अपनी चिट्ठी का फोटोस्टेट प्रति अपने पास रखकर मूल-पत्र को मुझे भेजो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(७४)

प्रिय ...,

बगैर तारीख की तुम्हारी चिट्ठी यहाँ २८ दिसम्बर को पहुँची।

तुमने अपनी चिट्ठी, चिट्ठी पर के डाकमुहर के अनुसार, २१ दिसम्बर को डाक में डाला और वह २७ दिसम्बर को यहाँ पहुँची। मैं २६ को लिख रहा हूँ, शायद वह ५-६ जनवरी को तुम्हारे पास पहुँचे और तुमने २८ दिसम्बर से दो व्यक्तियों के रहने की व्यवस्था करने के लिए मुझसे आग्रह किया है। में क्या कर सकता हूँ। अतिथिशाला तो बेलुड़मठ में है, यहाँ तो वैसी कोई विशेष व्यवस्था है ही नहीं।

मैं श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(७५)

प्रिय ...,

तुम्हारी ३० अक्टूबर की चिट्ठी १०० रु. के डी.डी. के साथ ३ नवम्बर को यहाँ पहुँची।

इस चिट्ठी के जवाब में तुम मुझे स्वामी भूतेशानन्दजी महाराज से तुम्हें जो दीक्षामन्त्र मिला था उसे एक छोटे से कागज के टुकड़े पर साफ-साफ लिखकर भेजो, जब तक मेरा उत्तर तुम्हें नहीं मिल जाता तब तक केवल अपनी मातृभाषा में ही श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से हर व्यक्ति, हर पशुपक्षी आदि के कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ करते रहो। दीक्षामन्त्र के अलावा और कौन-कौन से मन्त्रों का जप और किन-किन ग्रंथों का पाठ आदि करते हो, अपनी चिट्ठी में मुझे लिखो।

तुम्हें कुछ हुआ नहीं है, तुम्हारे स्वप्नों से तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है। तुम्हें इधर आने की भी जरूरत नहीं। साधना वगैरह भी करने की जरूरत नहीं है। तुम क्या साधना करोगे ? श्रीश्रीठाकुर की जीवनी 'श्रीश्रीरामकृष्ण-लीलामृत' पढ़कर देखो श्रीश्रीठाकुर ने किस प्रकार साधना की। हर घड़ी श्रीश्रीठाकुर का स्मरण करो, इसी से तुम्हें उनकी साधनाओं का फल मिलेगा। फिलहाल अपने मातापिता की सेवा करो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

भगवन्नाम का बीज कितना छोटा है! पर समय आने पर उसी से भाव, भक्ति, प्रेम आदि कितनी बातें हो जाती हैं।

-श्रीमाँ सारदा देवी



(७६)

प्रिय ...,

तुम्हारी सितम्बर की चिट्ठी यहाँ २ अक्टूबर को पहुँची।

तुम निश्चिन्त रहो – तुम्हारी समस्याएँ कोई खास समस्याएँ नहीं हैं, जिनसे तुम परेशान हो जाओ। मुझे चिट्ठियाँ बराबर लिखती रहो, मैं तुम्हारे कल्याण के लिए हमारे श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। अपनी चिट्ठियों में अपना पिनकोड लिखा करो।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(७७)

प्रिय ...,

संस्कृत में दीक्ष् एक धातु है। तुम्हें मालूम है कि धातु और प्रतिपादकों के बाद ही प्रत्यय लगाए जाते हैं, जिसके बाद ही वे पद बनते हैं जिनका वाक्यों में प्रयोग होता है, दीक्ष् धातु का अर्थ दिया गया है दीक्ष् मौण्डयेज्योपनयननियमव्रतादेशेषु। मौण्डय तुम जानती हो सिर मुढ़ाना, इज्या भी जानती हो जिसे यज्ञ कहते हैं, देवता के लिए किसी द्रव्य का त्याग करना। उपनयन का मतलब विद्यारम्भ के लिए गुरु के पास पहुँचना, नियम को भी यम, नियम आदि के साथ तुमने पढ़ा होगा। व्रत का अर्थ भी जानती हो, कोई संकल्प करना। किसी पवित्र कार्य के लिए अपने आप को पवित्र करने के लिए किए गए अनुष्ठान को भी दीक्षा कहते हैं तथा किसी भी कर्म के आरम्भ करने की क्रिया को दीक्षा कहते हैं।

मैं समझता हूँ कि इतने दिनों में तुम समझ गई हो कि यह कहना निरी कल्पना ही नहीं है कि श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ ने तुम्हारा अपने काम के लिए चयन किया है और तुम्हें हर घड़ी तुम्हारा हाथ पकड़ कर एक-एक दिन गुजारने में तुम्हारी सहायता करते रहते हैं। तुम्हें किसी बात को लेकर चिन्तित होने की जरूरत नहीं है, पूरा भरोसा श्रीश्रीठाकुर और श्रीश्रीमाँ पर ही रखो। दीक्षा के लिए तुम्हें किसी प्रकार कि तैयारियाँ नहीं करना है, माँ से कहती रहो और दीक्षा के बाद मुझे सुविधानुसार लिखो।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे कल्याण के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी
स्वामी गहनानन्द

(७८)

प्रिय ...,

तुम्हारी १२ दिसंबर की चिट्ठी १७ को यहाँ पहुँची।

ध्यान करने की, षड्रिपुओं की बात छोड़ो। तुम्हें श्रीश्रीठाकुर का नाम लेने का अधिकार प्राप्त हुआ है, इसी में खुशियाँ मनाती रहो। एकाग्र मन से जहाँ तक हो सके जप करती रहो। हर घड़ी जप करती रहो तुम्हारे मन को जप करते रहने का अभ्यास हो जायेगा और फिर षड्रिपुओं की चिन्ता से मुक्त होकर तुम्हारा मन निर्मल हो जायेगा फिर जैसे बिना प्रयास के तुम्हारा मन जप करेगा, उसी तरह वह क्रमशः स्थिर, एकाग्र होते होते ध्यानस्थ भी होता रहेगा। जल्दी का काम नहीं है, धीरज धरो। निश्चिन्त रहो कि श्रीश्रीठाकुर की इच्छा से ही तुम्हारी दीक्षा हुई है, वैसे ही उन्हीं की इच्छा से तुम्हारा मन निर्मल होगा। फिर तुम ध्यानस्थ भी होने लगोगी। तुम्हें किसने कहा कि अध्यात्म में सब शून्य है अगर सब शून्य है तो श्रीश्रीठाकुर का क्या करोगी ? शून्य कहो या पूर्ण कहो, दोनों मानवबुद्धि की कल्पना है वस्तु जो है वह अनिर्वचनीय ही है, जैसे श्रीश्रीठाकुर ने कहा है और अपने अनुभव से कहा है।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

> निःस्वार्थता ही धर्म की कसौटी है। जो जितना अधिक निःस्वार्थ है, वह उतना ही अधिक आध्यात्मिक और शिव के समीप है...। और यदि वह स्वार्थी है, तो उसने चाहे सभी मन्दिरों में दर्शन किये हों, चाहे सभी तीर्थों का भ्रमण किया हो, ...फिर भी वह शिव से दूर है।
>
> – स्वामी विवेकानन्द



(७६)

प्रिय ...,

दीपावली के उपलक्ष्य में भेजा गया तुम्हारा कार्ड २ दिसंबर को यहाँ पहुँचा।

कलकत्ता पहुँचने से पहले टेलीफोन के माध्यम से मेरे कार्यक्रम के सम्बन्ध में पता कर लेना, फिर ऐसा न हो कि तुम योगोद्यान मठ पहुँचो और मैं वहाँ न रहूँ। वैसे तुम्हारी इच्छा अगर तीव्र होगी तो समझो कि वह पूरी भी हो जाएगी।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(८०)

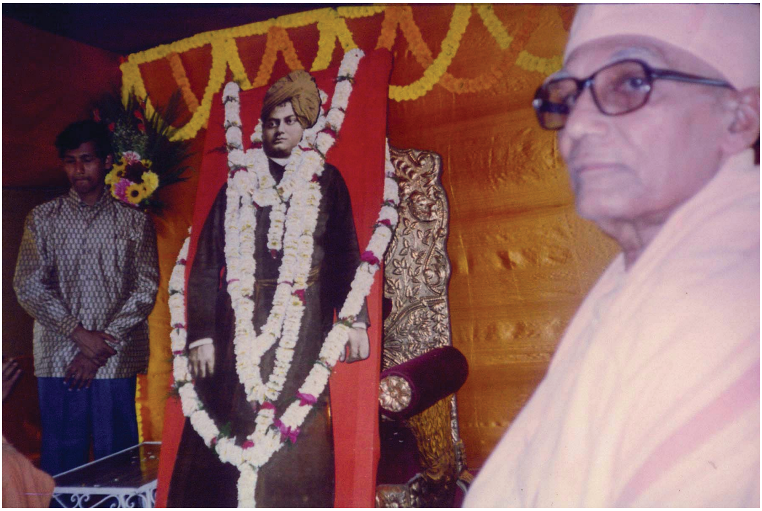
प्रिय ...,

तुम्हारी २४ नवम्बर की चिट्ठी १ दिसंबर को यहाँ पहुँच गई थी। संगीत सीख रही हो तो सीखती रहो, उसमें गलतियाँ होती हैं तो छोड़ देने की बात क्यों करती हो ? यही तुम्हारी कमजोरी है कि तुम बहुत जल्दी सफलता चाहती हो। तुम जानती तो हो कि कर्म ही में तुम्हारा अधिकार है, तुम कर्म ही कर सकती हो विधिपूर्वक उनके अनुष्ठान कर सकती हो, लेकिन उस कर्म के फल में तुम्हारा कभी भी अधिकार नहीं है, और ये बातें तुम श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में पढ़ चुकी होगी, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(८१)

प्रिय ...,

तुम्हारी २३ सितम्बर तथा २६ नवम्बर की चिट्ठियाँ यहाँ २८ सितम्बर तथा ४ दिसंबर को पहुँची।

तुमने काशी विश्वनाथ की बात लिखी है। ऐसा समझो कि तुम्हारे लड़के के मन में विश्वनाथ के प्रति बड़ा लगाव है और इसीलिए बीएचयू (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) में वह दाखिल हुआ है कि उसे विश्वनाथ के दर्शन होते रहें। ऐसे जप में संख्या रखने की जरूरत नहीं है। इस प्रकार तुम्हारा मन क्रमशः निर्मल होता जावेगा यानी उससे काम-क्रोधादि चले जावेंगे और फिर देखोगे तुम्हारा मन तुम्हारी चेष्टाओं के बगैर ही जप में लगा होगा।

श्री श्री माँ के उत्सव में आ रहे हो, अच्छी बात है।

मैं तुम सभी के लिए यथापूर्वक श्रीश्री ठाकुर से तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(८२)

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ नवम्बर की चिट्ठी १६ नवम्बर को यहाँ पहुँच गई। तुम्हें अपने जीवन को लेकर सोचने की आवश्यकता नहीं है। साधुओं की पहचान यही है कि वे सोचते नहीं कि जीवन के पथ पर चलते हुए कहाँ पहुँचे, न ही ये सोचते हैं कि कहाँ से कहाँ जाना है। उनका जीवन औरों के लिए है, उनका अपना कोई उद्देश्य नहीं, गन्तव्य स्थल नहीं। यही उनका गन्तव्य-स्थल है कि जब वे जिस घड़ी में उपस्थित हो वही, उसी घड़ी में औरों की सेवा करते रहें। तुम्हारी गाड़ी चल रही है श्रीश्रीमाँ, श्रीश्रीठाकुर पर तुम्हें पूरा भरोसा है, वैसे ही जैसे कोई अपनी गाड़ी के पुराने ड्राइवर पर भरोसा करता है, उसी के भरोसे गाड़ी में जो चाहे करता है, वैसे ही अपने जीवन के सम्बन्ध में समझो। जो कुछ बीत चुका, ठीक है; जो आनेवाला है वह भी ठीक ही होगा, क्योंकि तुम्हें उसका प्रयोजन है। प्रयोजन का अर्थ योग भी लगाया जाता है, जैसे माँ से बेटे का योग जिसे हम बेटे को माँ का प्रयोजन कहते हैं। वैसे ही तुम्हारे भविष्य से तुम्हारा चूँकि योग है, इसलिए तुम्हें उसका प्रयोजन है। जब तुम एक ही रह जाओगी, जैसे कि श्रीश्रीठाकुर समाधि में होते थे तब फिर किसी बात का प्रयोजन नहीं रह जायेगा। फिलहाल अपने जीवन को लेकर प्रभु की लीला देखती रहो।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारी बुद्धि को ऊँचाई, उसकी शुद्धता, पवित्रता की चोटी पर पहुँचने के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(८३)

प्रिय ...,

तुम्हारी २० सितम्बर की चिट्ठी यहाँ २६ सितम्बर को पहुँची।

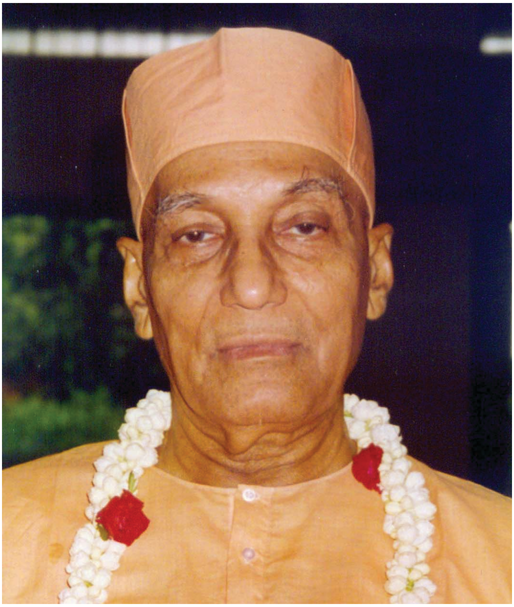
तुमने अपना इलाज नहीं कराया, इतना तो तुमने अपने पत्र में लिखा है, लेकिन तुम्हारी तबीयत कैसी है क्यों नहीं लिखा ? कर्ज और तान्त्रिक वगैरह की बात भूल जाओ। तुम्हें हमारे श्रीश्रीठाकुर का नाम जपने का अधिकार प्राप्त हुआ है, इसी में अपनी भलाई, अपना कल्याण समझो। निश्चिन्त रहो, कर्ज का पैसा तुम धीरे धीरे चुका ही दोगे, लेकिन तान्त्रिक लोग तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। परेशान होने की आवश्यकता नहीं। इतना समझो कि इस संसार में सीधे-सादे, सच्चे, सत्यपरायण लोगों को ही ठगा जाता है, उन्हें जीवन में कष्ट उठाना पड़ता है। और वे कष्ट उठाते भी हैं क्योंकि ऐसे लोग संसार से कुछ भी नहीं चाहते है। वे तो केवल श्रीभगवान को चाहते हैं। तुमने पढ़ा भी होगा,

सुखदुःख या संसार में सब काहू को होय।
ज्ञानी काटे ज्ञानसे, मूरख काटे रोय।।

मैं श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(८४)

प्रिय ...,

तुम्हारी ३० अगस्त की चिट्ठी यहाँ ६ सितम्बर को ही पहुँच गई थी लेकिन उसका जबाब भिजवाने में देर हो रही है।

अपने अगले पत्र में मुझे लिखो कि तुम्हारी यात्रा कैसी रही, किन किन तीर्थस्थानों के तुमने दर्शन किये, योगोद्यान मठ में पहुँच सके थे या नहीं, उधर रात्रिवास कहाँ किया था, आदि। यहाँ भक्तों की भीड़ लगी रहती है इसलिए काफी पहले से पत्रव्यवहार या टेलीफोन आदि के माध्यम से यहाँ रहने की व्यवस्था करनी पड़ती है।

मैं तुम लोगों के सामूहिक कल्याण के लिए हमारे श्रीश्रीठाकुर से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(८५)

प्रिय ...,

तुम्हारी ३० अक्टूबर की चिट्ठी २ नवम्बर को यहाँ पहुँची थी।

यही तो तुम्हारा भ्रम है कि संसार के लोग सभी तुम्हारी रुचि के अनुसार होंगे और इस भ्रम का कारण यही है कि तुम्हें अभी

इस संसार से सुख मिलने की आशा है। जरा श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ और स्वामीजी महाराज के जीवन को लेकर सोचो तो और मुझे बताओ कि संसार से सुख की कितनी आशा वे करते थे, या कितना सुख उन्हें मिला ? इतना समझ लो कि इस संसार में तुम्हें समझने के योग्य एक भी व्यक्ति नहीं है। वह केवल तुम्हारे हृदयाभ्यन्तर में विराजमान श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ ही हैं जो तुम्हें समझते हैं। इसलिए संसार से सुख की आशा न करो, ऐसी आशा न करो कि कोई तुम्हें समझेगा और उस समझ से तुम्हारे प्रति व्यवहार करेगा। ऐसा साधुचरित्र व्यक्तियों के जीवन में न कभी हुआ है, न कभी होगा। तुम त्याग का जीवन बिताना चाहती हो तो लोगों के दुर्व्यवहार से, अपमान से तुम्हें निर्विकार रहना पड़ेगा। श्रीमाँ कहती थी, वर्णमाला में तीन 'स' है, इसका प्रयोजन है सहती रहो, सहती रहो, सहती रहो। मतलब यह हुआ कि किसी से कुछ भी आशा न करो लेकिन सामर्थ्यानुसार सभी की सेवा करती रहो। फिर तुम उत्तेजित न होगी।

तुम्हारे पिता ने जो कहा है, वही बातें स्वामी विवेकानन्द महाराज ने भी कही हैं, आनेवाले दिनों के साधुओं के सम्बन्ध में। स्वामीजी ने कहा है की आगामी दिनों में देश की सरकार (Government) ही जनकल्याण के कार्य किया करेगी। इसलिए Distress & Relief (बाढ़, भूकम्प, सूखा आदि) या शिक्षा के क्षेत्रों में काम करने के लिए साधुओं की आवश्यकता नहीं होगी। इसके अलावा साधुओं को भिक्षा देने वाले लोगों का भी अभाव होगा। इसलिए अच्छा होगा अगर ऐसे लोग बैंक में पैसे रखकर उसकी आय से अपना जीवननिर्वाह करे और साधना में लगे रहे।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(८६)

प्रिय ...,

ब्रह्मचर्य दीक्षा हमारे मठ में, मठ के प्रेसिडेन्ट महाराज उन ब्रह्मचारियों को देते हैं जो लोग मठ के किसी केन्द्र में २-३ वर्ष रहकर दो वर्षों के लिए मठ के शिक्षण केन्द्र में पढ़ाई कर लेते हैं और मठ के कर्ता-लोग जिन्हे ब्रह्मचर्य-दीक्षा लेने योग्य समझते हैं। समझ लो, मैं कैसे तुम्हारे लिए यह काम कर सकता हूँ। ब्रह्मचर्य दीक्षा का मतलब कुछ संकल्प ग्रहण करना, जैसे मनसा वाचा कर्मणा पवित्र जीवन बिताने का संकल्प करना आदि। स्वामीजी की पुस्तकें पढ़ो। श्रीश्रीमाँ के जीवन को देखो। सबसे बड़ी बात है श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करती रहो और निःशंक होकर धीरज धरो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(८७)

प्रिय ...,

तुम्हारी २ नवम्बर की चिट्ठी ५५०/- रूपयों के तुम्हारे डी डी नं०६७२०४६/२.११.०४ के साथ यहाँ ६ नवम्बर को पहुँची।

श्रीश्री ठाकुर ने तुम्हें अपना नाम जपने का अधिकारी बनाया है यही सबसे खुशी की बात है। अब अपने उस अधिकार का प्रयोग करो, हर घड़ी, प्रभु का नाम जप करो और हर काम उनसे कह कर करने की चेष्टा करो। अपनी अगली चिट्ठी में अपने घर के लोगों के बारे में मुझे बताओ।

मैं तुम सभी की भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(८८)

प्रिय ...,

तुम्हारी जुलाई की चिट्ठी यहाँ ६ अगस्त को पहुँच गई। सतारा जाने की खबर तुमने कहाँ से जुटाई ? सितम्बर में मैं आसाम जाऊँगा, तुम्हारी तरफ तो नहीं ! फिर दुर्गापूजा के लिए यहीं रहूँगा। तुम पुणे मठ के स्वामी भौमानन्द महाराज से सम्पर्क करो, वे तुम्हें इस बारे में बताएंगे।

मैंनें तुम्हें पहले भी लिखा था कि अपने मन को ऐसे अपना लो जैसे किसी दो-तीन साल के बच्चे को अपना लेती हो। उसे डाँटो-फटकारो नहीं। उससे प्यार से उससे एकान्त में बात करो। जब भी अकेली हो तो उस पर नजर रखो, देखती रहो वह कहाँ जाता है, क्या-क्या सोचता हैं। उसे कभी रोको नहीं। उसके साथ-साथ रहो। फिर तुम भी जहाँ-जहाँ जाओ, जो कुछ करो उसे साथ रखो। मन को करने के लिए काम दो, सुबह नींद से उठना है, रात को कह कर सोओ। कोई बात भूलने की सम्भावना हो तो उसे कहो कि वह याद दिला दे। इस तरह उससे सम्पर्क बनाओ लेकिन मन की बातों का भी पालन करो। अगर पालन नहीं कर सकती हो तो उससे क्षमा प्रार्थना करो कि मुझमें इतना सामर्थ्य नहीं कि मैं तुम्हारी बातों का पालन करूँ। यह मेरी दुर्बलता है। इस प्रकार मन से एक दृढ़ सम्बन्ध बनाओ। पढ़ने बैठती हो तो उसे सुनाकर पढ़ो, बीच बीच में उससे पूछती रहो कि उसने सुना है या नहीं। आवश्यकता होने पर फिर से उसे पढ़कर सुनाओ। एक महीने तक ऐसा करो, फिर मुझे लिखो।

ध्यान, अवसाद आदि के बारे में फिर से लिखूंगा। ग्रहों पर भी। इन बातों पर ध्यान देने कि आवश्यकता नहीं है।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(८६)

प्रिय ...,

तुमने श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, स्वामीजी महाराज तथा उनके गुरुभाइयों की जीवनी पढ़ी नहीं ? उन्हें क्या लोगों ने कहीं कम कष्ट पहुँचाया ? श्रीरामचन्द्र, सीताजी, कौशल्या, उर्मिला के जीवन में, पाण्ड़वों, द्रौपदी, कुन्ती के जीवन में क्या कम कष्ट था ? लेकिन कष्ट का बोध उन्हें नहीं था। माँ बच्चे को पेट में धारण करती है, उसे कष्ट भी होता है, लेकिन उसे कष्ट का बोध नहीं होता। बच्चे का मुख देखने की उसकी इच्छा ही उसे उन तमाम कष्टों को सहने की शक्ति देती है। इसी प्रकार तुम्हें भी श्रीश्रीठाकुर के दर्शन करने की इच्छा है और वही इच्छा तुम्हें इन कष्टकर परिस्थितियों में से होकर दिन गुजारने की शक्ति जुटा दे रही है। मेरी पहले की चिट्ठियों को पढ़ती रहो।

तुम्हारे पैसे तुम्हें वापस मिलें, इसके लिए वहाँ के मठ के साधुओं से संम्पर्क बनाकर रखो, पुलिसवालों से भी, मुझे भी खबर भेजती रहो। बेलूड मठ, पैसे की व्यवस्था हो जाने के बाद आवोगी। सांस की तकलीफ के लिए दवाएँ लेती हो क्या ?

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(६०)

प्रिय ...,

ल... को श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, तथा स्वामीजी महाराज की पुस्तकें पढ़ने के लिए दिया करो। उसे श्रीश्रीठाकुर के पास प्रार्थनाएँ करने के लिए कहो।

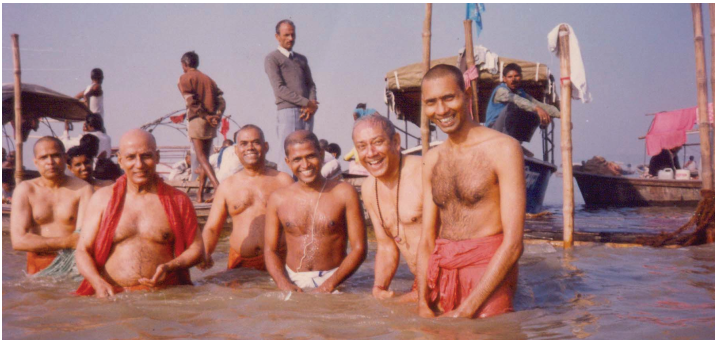
तुम्हारी बेटी का नाम 'रीती' नहीं 'रीति' है। रीति शब्द का अर्थ 'गति' समझो, 'धारा समझो, 'नदी' समझो, परंपरा में प्राप्त नियम, शिष्टाचार समझो।

व्रत आदि जो मन चाहे करो - साथ ही साथ 'उपासना पद्धति' के नियमों का भी पालन करते रहो।

में तुम्हारे लिए, ल... के लिए, री... के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(६१)

प्रिय ...,

तुम लोगों ने वचनामृत का वाचन शुरू किया है, ठीक है, लेकिन तुम लोग स्वामी विवेकानन्द महाराज की कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग, ज्ञानयोग, प्राच्य व पाश्चात्य, वर्तमान भारत, परिव्राजक, स्वामी-शिष्य-संवाद, उनके अमेरिका तथा भारत में दिए गए व्याख्यानों का संग्रह तथा उनकी चिट्ठियों को पढ़ो। इसके अलावा स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, स्वामी तुरियानन्दजी महाराज, स्वामी शिवानन्दजी महाराज, स्वामी अद्भुतानन्दजी महाराज की पुस्तकें भी पढ़ो। फिर श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन करो। इस प्रकार चलो। कहीं कोई बात हो तो मुझे लिख सकती हो। हर रोज जब वाचन खत्म होता हो, पुस्तक में पढ़े हुए विषय को लेकर आपस में विचार विनिमय के लिए कुछ समय रख छोड़ो। पूजा-आरती में समय अधिक न लगाकर इस कार्य में अधिक समय लगाओ। ख्याल रखो इन अवसरों पर राजनीति की चर्चा या किसी की निंदा न होने दो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएं करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(६२)

प्रिय ...,

'और जो कुछ तुमने लिखा ठीक है। इस बात का ध्यान रखो तुम्हारे हृदय के मध्य तुम्हारे इष्टदेवता बैठकर दिन-रात, की हर घड़ी, तुम्हारे हरेक हरकत पर नजर रखे हुए हैं और ऐसा समझो उनकी सहमति के अलावा तुम कुछ भी नहीं कर सकती। कहीं गाड़ी से जाना चाहती हो तब अगर प्रभु की सम्मति न हो तो, देखोगी रवाना होने के पहले गाड़ी खराब हो जाती है। इसलिए कभी भी मौका मिले, श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के तस्वीरों पर नजर पड़े, या मन में कोई उल्टी सीधी बात सता रही हो, तब मन में प्रभु का नाम जपना शुरू कर दो। जब भी प्रभु का स्मरण हो नामजप करो, इष्टमन्त्र का मन में जप करो, गिनतियाँ रखने की जरूरत नहीं।

मुझे चिट्ठियाँ लिखा करो। मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(६३)

प्रिय बेटी अ ...,

तुम्हारी २३ अगस्त, १८ नवम्बर की दो चिट्ठियाँ यहाँ ३० अगस्त तथा २२ नवम्बर को पहुँच गई।

तुम अपने पति तथा बच्चों के बारे में क्यों सोचने लगी हो ? तुम्हें तो श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ का ध्यान लगाना है, अपना इष्टमन्त्र जपने में मन लगाना है। तुम्हें अपने पति की, बच्चों की सेवा करनी है, यह तुम्हारा कर्त्तव्य कर्म है, उन्हें करती रहो। उन्हें करते रहना ही तुम्हारा कर्तव्य है। उनके बारे में सोचना नहीं। कमरा गन्दा है उसे साफ करने में लगना कर्तव्य कर्म है, उसे लेकर सोचने की आवश्यकता नहीं। तुम्हारे पति, तुम्हारे बच्चे संसार में जन्मे हैं कुछ पुराने संस्कार लेकर, वही संस्कार उनकी बुद्धि के रूप में उन्हें चलायेंगे फिर बुद्धि में निखार आयेगा नए नए अनुभवों के जरिये फिर नए संस्कार बनेंगे, नए जन्म मिलेंगे, ऐसा क्रम चलता रहेगा। तुम क्या करोगी? अध्यात्म जीवन तो सभी के लिए है। इसलिए अपना कर्तव्य करती रहो और प्रभु का नाम लेती रहो। किसी की बातों को लेकर परेशान न हो। जो कुछ चाहे, जो कुछ कहे, जो कुछ करे, चाहने दो, कहने दो, करने दो। परेशान न हो। उन सब की अनसुनी, अनदेखी करो। केवल प्रभु का नाम जपने में मन लगाओ, उन्हीं पर निर्भर हो, उन्हीं पर निर्भर रहो।

मैं तुम्हारे मन की दृढ़ता के लिए प्रभु को नित्य मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(६४)

दिसम्बर १३, २००३

प्रिय रा ...,

तुम्हारी अक्टूबर, ५ नवम्बर, तथा बगैर तारीख की एक चिट्ठी यहाँ १ नवम्बर, १३ नवम्बर तथा २८ नवम्बर को मिली।

श्रीभगवान ने जैसे युद्ध के प्रारम्भ होने से पहले ही अर्जुन को गीता के उपदेश दिए थे और फिर उसके सारथी के रूप में उसकी रक्षा, उसका संचालन करते हुए उसे विजयी बनाया था, वैसे ही अपने बारे में समझो। अपने मातृगर्भ में रहकर ही तुम्हें श्रीश्रीभगवान के अमृतोपम उपदेश मिले थे और तुम्हारे जन्म के साथ ही साथ श्रीभगवान तुम्हारे रथ की डोर संभाल कर तुम्हारी रक्षा तथा तुम्हारा संचालन करते रहे हैं। यहाँ रथ का अर्थ 'इच्छा' भी होता है, ऐसा समझो श्रीभगवान ने तुम्हारी दीक्षा लेने की

इच्छा को समझा था जिसके फलस्वरूप तुम्हें स्वामी गहनानन्द मिल गए। अब केवल इस बात का अनुभव करते रहो कि प्रभु तुम्हारे मनोरथों का संचालन करते हुए तुम्हारी रक्षा करते रहे हैं। संसार में अगर समस्याएँ न हो तो लोग श्रीश्रीभगवान की तरफ मुड़कर देखेंगे ही नहीं।

सुख-दुःख या संसार में सब काहू को होय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय।।

– तुमने पढ़ा होगा।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से सदा की भाँति निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द





(६५)

दिसम्बर १२, २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ५ नवम्बर की चिट्ठी यहाँ १५ नवम्बर को पहुँच गई।

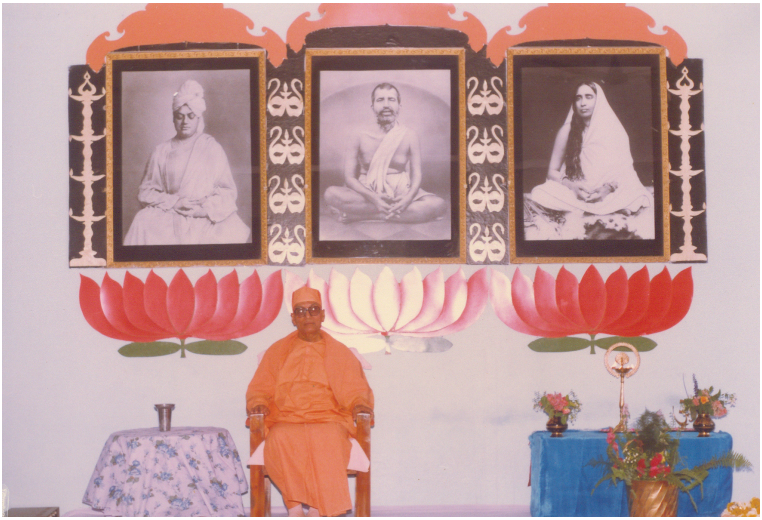
१ से ३ जनवरी तक तुम लोग बेलुड़ मठ के गेस्ट हाउस में ठहरोगी, अच्छी बात है। हो सका तो २३३४-२६२८ नम्बर पर टेलीफोन कर पता कर लेना १ से ३ जनवरी कहाँ रहूँगा।

तुम्हारी बेटी ने सही कहा है, तुम चिंता मत करो। तुमसे जहाँ तक हो सके उसकी सेवा करो फिर उसे परिणीत होने की छुट्टी दो। उसकी दीक्षा हो चुकी है, उसका दायित्व श्रीश्री ठाकुर पर है, जो उसके हृदय में बैठकर उसे 'ऐसा कर, ऐसा न कर' कहते हुए उसे चलाते रहते हैं ! मैं जानता हूँ।

मैं तुम सभी के कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ के चरणों में नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(६६)

दिसम्बर १३, २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २१ सितम्बर की चिट्ठी यहाँ १५ नवम्बर को पहुंची थी।

नदी में जो उतर चुका होता है उसके लिए तैराकी के पाठ की आवश्यकता नहीं होती। तुमने अधिकृत रूप से अपने आप को श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ के हवाले कर दिया है, तुम उन्हीं की हो गई हो। अब केवल इस बात का बोध होना शायद कुछ बाकी है। विवाह के पश्चात लड़कियाँ पराए घर जा कर उसे कितनी जल्दी अपना घर बना लेती हैं, और यहाँ तुम तो पराए घर से अपने घर आ गई हो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(६७)

२५ जुलाई २००२ / १ अगस्त २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ४ जून की चिट्ठी यहाँ २४ जून को पहुंची क्योंकि दरियापुर डाकखाने की उस पर १४ जून की मुहर लगी हुई थी।

तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर मुझे मालूम हुआ कि तुम्हें जगह-जगह से दीक्षा लेने की आदत बन गई है और अपने आध्यात्मिक अनुभवों को यानी, आखों में आँसू आना, शरीर का घूमते रहना, वगैरह, जिन्हें तुम आध्यात्मिक समझती हो, उन्हें लोगों से कहने में आनंद मिलता है। अब तक कितनी बार दीक्षा ले चुकी हो और कितनी बार और लेने की इच्छा हैं ? मेरी चिट्ठियों को कितने लोगों को पढ़ाती हो ?

तुमने अपनी पहली चिट्ठी में तुम्हारी किसी और जगह से दीक्षा लेने की बात लिखी नहीं थी। देखो बेटी, ऐसा न करो, अपना दिमाग खराब न करो। आध्यात्मिक जीवन के साथ खिलवाड़ न करो। अपना भला चाहती हो तो केवल एक ही इष्टदेवता का आश्रय लो। जैसे पति एक ही होता है, माता एक ही होती है, पिता एक ही होते हैं, तुम भी एक ही हो, इसी प्रकार तुम्हारे इष्टदेवता भी एक ही हैं, बाजार से पचास इष्टदेवता खरीद कर उनकी सब्जियाँ न बनाओ। अपने आध्यात्मिक अनुभवों को लेकर गर्व का अनुभव करना छोड़ दो। अपने पत्र में मुझे लिखो तुम चाहती क्या हो ? अगर तुम्हें श्रीश्रीठाकुर से भिन्न कहीं और रूचि हो तो लिखो।

मैं हमारे प्रभु से तुम्हें सद्‌बुद्धि देने के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकांत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

पुनः :- १३ जुलाई (गुरुपूर्णिमा) को मैंने काश्मीर स्थित अमरनाथ महादेव के तुषालिंग के दर्शन किये तथा तुम्हारे लिए उनसे प्रार्थनाएँ की है।



(६८)

१२ अप्रैल २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २१ मार्च की चिट्ठी ३० मार्च को यहाँ पहुँच गई थी। उपासना-पद्धति में बताये गए नियमों का पालन करती हुई ध्यान-जप की प्रक्रिया तो चलाती ही रहती हो, इसके अलावा दूसरे

अवसरों पर भी मन ही मन लगातार हर घड़ी अपने इष्ट मन्त्र के जप करते रहने का अभ्यास बनाओ। साथ ही साथ देखती रहो किस तरह तुम्हारा (मन) जप करना छोड़कर दूसरी बातें सोचने लगता है, लेकिन उसे रोको नहीं, उसे वह जो कुछ सोचता है, सोचने दो, केवल तुम उसे देखती रहो कि वह क्या सोच रहा है फिर देखो वह किस प्रकार जप करने में लग जाता है, फिर भटक जाता है, फिर जप करने में लगता है। इस प्रकार तुम अपने मन के स्वभाव से परिचित होती रहोगी, अपने मन की अच्छाइयों तथा बुराइयों से परिचित हो जाओगी फिर समझ जाओगी इस जीवन में तुम्हारी कौन-कौन सी कामनाएँ, वासनाएँ, इच्छाएँ, महत्त्वाकांक्षाएँ हैं, जिन्हें तुम पूरी करना चाहती हो। फिर देखोगी कि किन-किन चीजों से, लोगों से, वस्तुओं से, बातों से तुम्हें नफरत है, किस बात पर तुम खफा हो जाती हो, किस पर खुश हो जाती हो, किस बात पर तुम्हें दुर्बलताएं हैं, कौन सी बातें हैं, दुर्बलताएं हैं जिनका लोग शोषण कर सकते हैं, दुरुपयोग कर सकते हैं, तुम्हारी दुर्बलताओं को समझ कर तुमसे गलत काम भी करा सकते हैं, इन सारी बातों से तुम परिचित होती रहोगी। परीक्षाओं के बाद इस तरह से अभ्यास करती रहो फिर एक महीने के बाद मुझे लिखो, इस चिट्ठी की एक फोटोकॉपी साथ भेजो। लेकिन इसे अपने माता-पिता के अलावा किसी को पढ़ने न दो। मैं तुम्हारे लिए निरन्तर प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

यदि तुम्हारे भीतर ईश्वर के प्रति ठीक ठीक अनुराग हो, उन्हें जानने की स्पृहा उत्पन्न हो, तो अवश्य ही वे तुम्हें सदगुरु से मिला देंगे। साधक को गुरु के लिए चिंता नहीं करना पड़ती।

– श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(६६)

१३ दिसम्बर २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ३ नवम्बर की चिट्ठी यहाँ १३ नवम्बर को पहुँच गई थी।

पढ़ाई खूब मन लगाकर करो, प्रभु के नाम का जप भी मन लगाकर करती रहो। इसके अलावा जब भी प्रभु की याद आए, उनकी तस्वीर की तरफ या श्रीश्रीमाँ की छबि की तरफ देखो, मन में जप करना शुरू करो। गिनतियाँ रखने की आवश्यकता नहीं हैं। जहाँ तक हो सके, जब भी मन में इधर-उधर की बातें आती हों, तभी मन में जप करती रहो। इस प्रकार तुम्हारा मन शुद्ध होगा, फिर वह तुम्हारी सहायता भी करेगा।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारी भलाई के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१००)

६ मार्च, २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १५ दिसंबर की चिट्ठी नए साल की मंगलकामना लिए हुए सुन्दर कार्ड के साथ यहाँ पर ५ जनवरी को पहुँच गई थी।

तुम्हारा मन भला क्षुब्ध क्यों होने लगा? तुम समझती क्यों नहीं कि तुम्हारे श्रीश्रीठाकुर ने तुम्हारे मन पर पूरी तरह अधिकार कर लिया है, और तुम्हे एक यन्त्र मात्र बनाकर तुम्हारा कार्यक्रम चला रहे हैं। यन्त्र का काम तो गुलाम की तरह हुआ करता है। उसका मन कहाँ है कि काम का उसके मन के साथ सम्बन्ध हो ? यन्त्र कि भाँति ही तो तुम्हें सब काम करना है जैसा कर रही हो, क्षोभ किस बात का ? प्रभु ही तो तुम्हारा एकमात्र भरोसा है, उनसे प्रार्थनाएँ भी करती रहो कि तुम्हारी बच्चियों को पढ़ा लिखा कर तुम उन्हें अपने पैरों पर खड़ी होने में मदद करती रहो। उन्हीं पर भरोसा रखो।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए सदा कि भाँति प्रभु को सदा ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१०१)

७ मार्च २००३

प्रिय ...,

तुम्हारी १४ दिसंबर की चिट्ठी यहाँ ६ जनवरी को पहुँच गई थी।

मुझे खुशी हुई कि तुम पढाई पूरी कर काम पर लग गए हो, भाई ने भी कारोबार शुरू किया है। हमारे प्रभु के साथ, जननी सारदादेवी के साथ सम्पर्क बनाए रखो, उनसे सारी बातें हर घड़ी कहते रहो, हर घड़ी उन्ही को अपने जीवन का अवलम्बन बनाकर चलो यही मेरी उनसे प्रार्थना है।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द

(१०२)

७ मार्च २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २१ दिसंबर की चिट्ठी यहाँ १६ जनवरी को पहुँच गई थी। जवाब भिजवाने में कुछ देर हो रही है।

श्रीश्रीठाकुर के जीवन का और अध्ययन करोगी तो तुम्हें पता चलेगा कि स्वामी विवेकानन्द महाराज ने कहा है कि जिस रोज उनका जन्म हुआ उसी दिन से सत्ययुग की शुरुआत हुई है। इसका मतलब यह हुआ कि हमारे शास्त्रों में सत्ययुग के मनुष्यों का जो चित्रण मिलता है श्रीश्रीरामकृष्णदेव का चरित्र उसके अनुरूप था और जैसे तुम जब एक camera से कोई चित्र जब लेती हो तो उसका negative तो एक ही होता है लेकिन prints हजारों बनाए जा सकते है। उसी प्रकार श्रीश्रीठाकुर जब अवतरित हो गए तो तुम्हारी, हमारी, जगत-ब्रह्माण्ड के हरेक व्यक्ति को मानो अपनी शुद्धतम सत्ता का साक्षात्कार हो गया, जिसे ब्रह्मकुण्डलिनी का जागरण कहा गया है। ऐसे ही श्रीश्रीठाकुर के शिष्य स्वामीजी थे। ऐसे मनुष्यों की वाणी ही शास्त्र हुआ करता है, उनका हरेक उच्चारण हम अल्पबुद्धि मनुष्यों के लिए अनुकरणीय होता है, अपनी भलाई के लिए, सत्ययुग के सत्य से युक्त होने के पथ पर बढ़ने के लिए। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो। फिलहाल मैं हमारे श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, तथा स्वामीजी महाराज से तुम्हारे कल्याण के लिए निरन्तर प्रार्थनाएं कर रहा हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द

(१०३)

प्रिय ...,

तुम्हारा २३ फरवरी २००३ का पत्र २६ फरवरी को मिल गया।

मुझे यह जानकर के बहुत खुशी हुई कि तुम अपने इष्ट-देवता का नाम निरन्तर जप कर पा रही हो।

तुमने जो दो प्रश्न किए हैं उस सन्दर्भ में मेरा यही कहना है कि 'उपासना पद्धति' पुस्तक में लिख गये दिशा-निर्देशों को पढ़ने के बाद उसी प्रकार जितना कर सकती हो करो। यह सम्भव है कि तुम वो सब देखोगी जैसे जैसे साधना में अपने इष्ट देव की ओर बढ़ोगी। असल बात यह है कि श्रीरामकृष्ण देव ने भी अपने साधना काल में वो सब देखा था। यह जरूरी भी नहीं है कि तुम्हें भी वे सब दिखलाई पड़े। इसीलिए दिशा-निर्देश इसी प्रकार दिये गये हैं।

तुमसे जो आज्ञा की जाती है कि दिन में तीन बार आसन पर बैठकर उपासना करने के अतिरिक्त भी बाकी समय में लगातार दिन-रात उनके नाम का निरन्तर जप करती रहो। जब तुम अन्य समय में जप करती हो तो जप संख्या रखने की कोई आवश्ययकता नहीं हैं, बस मन्त्र के शब्दों की ओर ध्यान देना है। वहाँ के साधुओं से तुम जान लो कि मैं कब बैंगलोर आऊँगा।

मैं गुरु महाराजजी से नित्य प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा सर्वांगीण मंगल हो।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द

मन्त्र के द्वारा देह शुद्धि होती है। भगवान् का मन्त्र जपकर मानव पवित्र हो जाता है।

-श्रीमाँ सारदा देवी

(१०४)

१४ अगस्त २००१

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १८ जुलाई की चिट्ठी यहाँ ३० जुलाई को पहुँची थी। मुझे आशा है तुम लगन के साथ नियमित रूप से 'उपासना पद्धति' में लिखित नियमों का पालन करती हुई ध्यान-जप करती रहती हो। इन नियमों का पालन करने के बाद जब तुम घर के या स्कूल के और काम करती हो मन में अपने इष्टदेवता का नाम (अपना इष्टमन्त्र) जपा करो। ऐसे जप में गिनतियाँ मत रखो। केवल लगन के साथ जप करती रहो। तुम्हारा जीवन तुम्हें संसार के अनित्य होने की, असार होने की बात हर घड़ी सिखा रहा है। जब तुम समझ जाओगी की जीवन भर इससे छुटकारा मिलना नहीं है, तब ही तुम्हें श्रीभगवान पर, श्रीश्रीठाकुर पर, श्रीश्रीमाँ पर पूरा भरोसा होगा। जहाँ तक इस संसार से तुम्हें थोड़ी सी भी सुख की आशा होगी, इच्छा होगी, तब तक न तो सुख मिलेगा, न भगवान। तुम रामकृष्ण मिशन में जा कर श्रीश्रीमाँ का जीवनचरित पढ़ो। श्रीमत् स्वामी गम्भीरानन्द महाराज की लिखी 'श्रीश्रीमाँ सारदादेवी' नाम की पुस्तक में ग्यारहवें अध्याय (भार समर्पण) में दानाकाली (कालीपद घोष) की पत्नी का श्रीश्रीमाँ से अपने पति के कारनामों के बयान करने की कहानी पढ़ो। समझ जाओगी तुम्हें क्या करना है। अपने बच्चे से कहो मुझे चिट्ठियाँ लिखे, तुम भी बराबर लिखो। मैं तुम्हारी हर तरह की भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१०५)

प्रिय ...,

तुम्हारी ७ जुलाई की चिट्ठी यहाँ १४ जुलाई को पहुँच चुकी है।

रामकृष्ण मठ, (बेलुड़ मठ) में अतिथि-निवास में रहने के लिए हमारे स्वामी प्रमेयानन्दजी महाराज को पत्र लिखो, कितने दिनों के लिए वहाँ रहना चाहते हो। उनकी अनुमति मिलने पर कामारपुकुर तथा जयरामबाटी के अध्यक्षों को भी पत्र लिखो तथा रेलगाड़ी में स्थान का आरक्षण करा लो। फिर मुझे लिखो कि मैं कब यहाँ रहता हूँ। वैसे स्वामीजी महाराज की जन्मतिथि पर तो मैं रहूँगा ही।

तुम्हारे अपने बारे में तुम्हें कुछ भी नहीं मालूम, फिर भी तुमने अपने आपको 'संसारी' आदि लिख डाला है ऐसा न करो। जहाँ तक कर सको 'उपासना-पद्धति' के अनुसार ध्यान-जप की प्रक्रिया जारी रखो। ध्यान तो होने में काफी समय लगेगा। इसके लिए हर घड़ी अपने इष्टमन्त्र का जप करना आवश्यक होगा। करो, जहाँ तक कर सको।

मैं तुम्हारे लिए हमारे प्रभु को सदा ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सदैव कल्याणप्रार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१०६)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारा ४ जुलाई का गुरुपूर्णिमा के अवसर पर लिखा पत्र १७ जुलाई को यहाँ पहुँचा।

दृढ़ निष्ठा के लिए तुम अपने दैनन्दिन जीवन के हर छोटे बड़े कर्म को दृढ़ निष्ठा के साथ करने का अभ्यास करो। अपने बड़ों की आज्ञाओं का पालन दृढ़निष्ठा के साथ करो। भविष्य के बारे में न सोचो। हमेशा वर्तमान में रहो। सन्तुष्ट हो जाओगी। किसी का हाथ पकड़ने की आवश्यकता न होगी। अभी अपने मन से अकेले में बातें करती रहो, वही तुम्हे अध्यात्म मार्ग के अन्त तक पहुँचाएगा। धीरज रखो। निश्चिन्त रहो। प्रभु की कृपा पर भरोसा रखो। श्रीश्रीमाँ ही तुम्हारे मन में हैं, अपने मन से बातें करती रहो, वह सब श्रीश्रीमाँ ही सुन रही हैं, जवाब दे रही हैं, ऐसा समझो। समझने लगोगी तो तुम्हारी समझ साफ होती जाएगी। तुम्हारा मन शुद्ध होता जाएगा। फिर तुम्हें श्रीश्रीमाँ के तथा श्रीश्रीठाकुर के दर्शन हुआ करेंगे।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से, श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ जैसा कि तुम्हें विदित है।

तुम्हारा एकान्त कल्याणप्रार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१०७)

७ मार्च २००३

प्रिय ...,

तुम्हारी २५ जनवरी की चिट्ठी २६ जनवरी को यहाँ पहुँच गई थी।

तुम्हें किसी बात को लेकर परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, स्वामीजी महाराज जैसे आश्रम के मन्दिर में हैं, वैसे ही उनका पूर्ण अधिकार तुम्हारे हृदय पर भी है, ऐसा समझो। इस बात को, इस सत्य को समझ पाना, गहराई के साथ समझ पाना ही साधुओं की साधुता है ऐसा समझो। और इस सत्य की गहराइयों में ज्यों ज्यों उतरोगे त्यों त्यों तुम्हारे चरित्र में बुद्धि का प्रकाश होगा जिसके फलस्वरूप श्रीश्रीठाकुर के हाथों में तुम एक यन्त्र के समान काम करोगे।

मैं श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएं करता रहता हूँ कि वे तुम्हें इसके लायक बनावें।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द

(१०८)

२७ जून, २००४

प्रिय बेटी ई ...,

तुम्हारी १६ मार्च तथा २८ अप्रैल की दो चिट्ठियाँ यहाँ १६ मार्च और ५ मई को पहुँची।

२८ मई की तुम्हारी परीक्षा तो हो गई होगी ? अब परीक्षा का परिणाम कब तक निकलेगा ? जब तक परीक्षा फल न निकल जाय, तब तक दिनभर हर घड़ी मन में श्रीश्रीठाकुर के नाम महामन्त्र को जपती रहो, गिनती रखने की जरूरत नहीं है।

तुमने जो कुछ अपने पहले पत्र में लिखा है मैं उससे सहमत नहीं हूँ। विज्ञान, धर्म, अध्यात्मवाद ये सब बेकार की बातें हैं। जीवन से उनका कोई सरोकार, कोई सम्बन्ध नहीं है और यह भी याद रखो कि तुम्हारा यह जीवन केवल तुम्हारा है, अकेले तुम्हारा ही जीवन है। उसमें साझा करने की बिल्कुल भी जगह नहीं है। जो है वह यहीं है कि किसी आदर्श के लिये या किसी की सेवा के लिए तुम अपने जीवन का त्याग कर सकती हो जैसे श्रीश्रीठाकुर ने, श्रीश्रीमाँ ने, हमारे स्वामीजी महाराज ने, भगवान श्रीकृष्ण ने, जगन्माता सीताजी ने, गौतम बुद्ध ने किया था। अभी अपने जीवन को केवल पढ़ाई में ही पूर्णता से लगा दो। किसी ओर झुकना ठीक नहीं होगा, पढ़ाई के बाद के विवाह संस्कारों की भी आवश्यकता समझोगी तो वह भी त्याग और सेवा का ही जीवन होगा। जीवन को लेकर परीक्षण न करो, जीवन अमूल्य है उससे छेड़खानी न करो। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१०६)

२ जून २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १० मई की चिट्ठी १५ मई को यहाँ पहुँच गई।

प्रभु का नाम हर घड़ी मन ही मन हर काम करती हुई करती रहो। मन में और किन्हीं भी बातों को स्थान न दो। इस प्रकार से अपने शुद्ध मन को पहचानो। तुम्हारा मन ही शुद्ध चैतन्य है, जो की श्रीश्रीठाकुर का, श्रीश्रीमाँ का स्वरुप है, उसी शुद्धचैतन्यस्वरूप को तुम कहती हो कमियाँ हैं, बुद्धिहीन है, आदि। समझती तो हो नहीं, लिखती जाती हो। ठीक है, चिट्ठियाँ जरूर लिखा करो लेकिन प्रभु का नाम भी हर घड़ी जरूर लेती रहो। आसन पर बैठकर 'उपासना पद्धति' के नियमों का पालन करती हुई सुबह-शाम जब नामजप-ध्यान-उपासना करती हो उन अवसरों को छोड़कर जब मन में लगातार जप करो तो गिनती रखने की आवश्यकता नहीं है। जब भी तुम्हें प्रभु याद पड़े उनका नाम जप करो। मैं तुम्हारे लिए उन्हें मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(११०)

७ मार्च २००३

प्रिय बेटी ...,

... की चिट्ठी के साथ तुम्हारी २७ फरवरी की चिट्ठी यहाँ ६ मार्च को पहुँची।

तुमने यह काम ठीक नहीं किया कि सारदा माँ को फूल चढ़ाना बन्द कर दिया और घूमने चली गई। इधर रियाज भी नियमित रूप से नहीं करती। फिर तो तुम लोग आम लड़कियों-सा ही व्यवहार कर रही हो, मुझे तो कोई भी अन्तर दिखाई नहीं देता। बड़ा ही अफसोस है। मुझसे क्षमा माँगने से तुम्हारा क्या बनेगा, क्या बिगड़ेगा। पहले अपने आप को सुधारो फिर चिट्ठियाँ लिखो। 'हिमालय पर्वत, वशिष्ठ गुफा बहुत अच्छा लगी' तो तुमने लिखा है लेकिन व्यवहार में, दिनचर्या में मुझे कोई अन्तर तो नहीं दिखता।

चलो, तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर, तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करते रहना मेरा काम है, वह तो मैं करता ही हूँ, करता भी रहूँगा।

तुम्हारा सतत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१११)

१२ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारा ७ जून का जबाबी पत्र यहाँ ५ जुलाई को पहुँच गया था। जप के फल से तुम्हारा क्या लेना-देना ? क्या श्रीभगवान ने गीता में नहीं कहा है कि 'कर्माणि एव अधिकारः ... ने मा फलेषु कदाचन' ? तुम्हारा अधिकार जप करने भर तक का है। वे तो और लोग हैं जो जप का फल चाहते हैं, जप करना तो मठ के साधु-भक्तों का नित्यकर्म है। नित्यकर्म का फल नहीं होता, मगर न करने पर बुरा होता है जिसे प्रत्यवाय कहते हैं। इसे लेकर अपना दिमाग खराब न करो। प्रभु का नाम निरन्तर लेते रहने का प्रयास करते रहो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए प्रभु को सदा ही मनाता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(११२)

११ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी ६ जुलाई को यहाँ पहुँची।

तुमने ध्यान न होने की बात लिखी है। दीक्षा के दिन मिली 'उपासना पद्धति' के अनुसार ही जपध्यान की प्रक्रिया चलाते रहो, किसी मनमाने प्रकार से नहीं। कुछ काल तक मन लगाकर जपध्यान करते रहो। ध्यान किया नहीं जा सकता। मन से दुनियादारी यानी सांसारिक सुख की वासना ज्यों ज्यों घटती जाती हैं त्यों त्यों मन साफ होता रहता है और उसी समय ध्यान में श्रीश्रीठाकुर का दर्शन हो सकता है। आज्ञाचक्र पर मन को स्थिर करने का प्रयास निष्फल ही होगा। यह तुम्हारे शारीरिक प्रयास की बात नहीं है। बहुकाल तक प्रभु की कृपा पर एकान्तरूप से ही निर्भर रह कर हर घड़ी दिन-रात प्रभु का नाम जप करते रहो। अनंत धैर्य के साथ जप करते रहो। 'उपासना पद्धति' में बताये गए नियमों का पालन करने के बाद दूसरे अवसरों पर भी मन में जप करते रहो। प्रभु से प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है, वे सर्वान्तर्यामी हैं। फिर भी अगर बहुत व्याकुल होने पर प्रार्थनाएँ कर सकते हो। दिन-रात जप करते रहो। फिर ज्ञान, भक्ति, वैराग्य आदि से तुम्हारा परिचय होगा। पाँच वर्षों तक तो करो। फिर मुझे बताना।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए सदा ही प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

> धर्म कल्पना की नहीं, प्रत्यक्ष दर्शन की चीज है। जिसने एक भी महान् आत्मा के दर्शन कर लिये, वह अनेक किताबी पण्डितों से बढ़कर है।
>
> – स्वामी विवेकानन्द

(११३)

१४ जुलाई २००१

प्रिय ...,

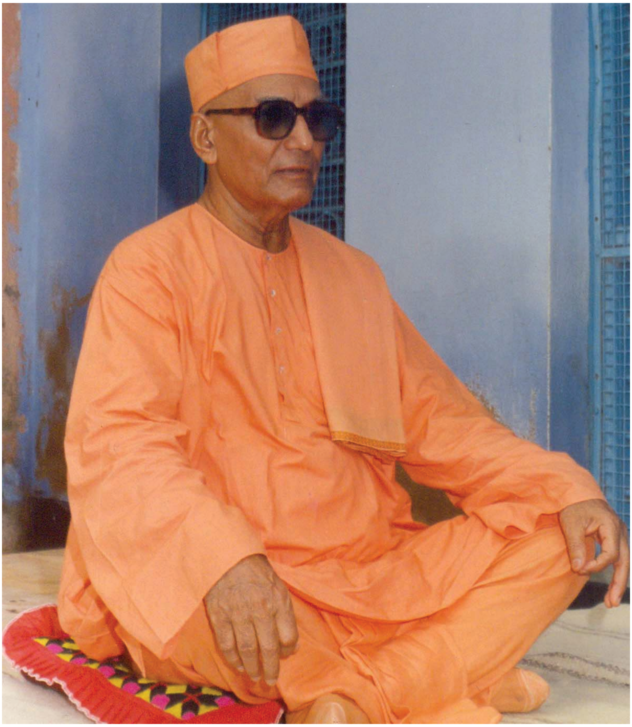
तुम्हारी ३ जुलाई की चिट्ठी यहाँ पहुँच गई है। इस पत्र के साथ तुम्हारे भेजे हुए पैसों की रसीद भेजी जा रही है।

तुमने अपनी लम्बी चिट्ठी में जो कुछ लिखा है उससे यह तो बात साफ है कि तुम अपनी स्थितियों से परिचित हो। तुम्हें मालूम होगा बीमार व्यक्ति को अपने रोग के बारे में जब पता लग जाता है कि रोग क्या है तब आरोग्य होने में उसे देर नहीं लगती। इसलिए अपनी स्थिति को जहाँ तक सुधारने की आवश्यकता हो उतना ही प्रयास करो, स्थिति सुधर जाएगी। अपनी माँ से इसे लेकर सोच में पड़ जाने की जरूरत नहीं है। मन को श्रीभगवान के चरणों में लगा दो। तुम्हारी पत्नी के बारे में मैंने जो कुछ लिखा, लगता है उसी के जबाब में तुमने अपनी रामकहानी लिख भेज दी है। इसकी जरुरत नहीं थी। संसार में कहानियाँ सभी एक ही प्रकार की हैं। संसार में रहकर श्रीरामकृष्णदेव, श्रीश्रीमाँ सारदा देवी, आदि को आदर्श मानकर चलने में ही हम सब का मंगल है। अगर सचमुच मंगल चाहते हो तो अपनी पत्नी के सम्बन्ध में पचास बार मूर्ख, मूर्ख मत सोचा करो। जिस चिट्ठी को तुमने भेजा है, मैं उसे ही तुम्हें भेज रहा हूँ, उसमें, लिखी बातों के अनुसार काम करो।

मैं तुम सब की भलाई के लिए हमारे प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(११४)

१२ जुलाई २००१

प्रिय ...,

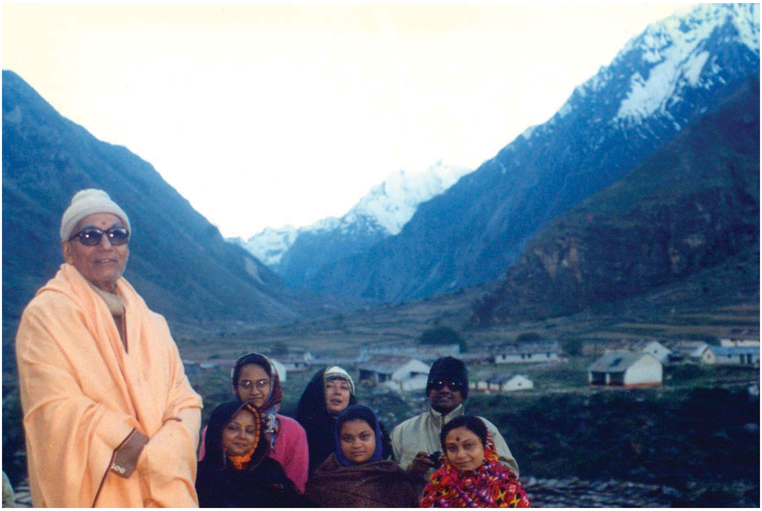
तुम्हारी १० जून की चिट्ठी यहाँ २१ जून को पहुँच गई थी।

तुम्हारे पत्र में लिखे सभी प्रश्नों के उत्तर तुम्हें पटना-स्थित रामकृष्ण-मिशन के संन्यासियों से ही मिल जायेंगे। तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम वहाँ आना-जाना शुरू करो। तुम्हारे मन में स्थिरता का अभाव है। साधुओं से मिलो, पुस्तकें पढ़ो, तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर मिल जायेंगे।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(११५)

१२ जुलाई २००१

प्रिय ...,

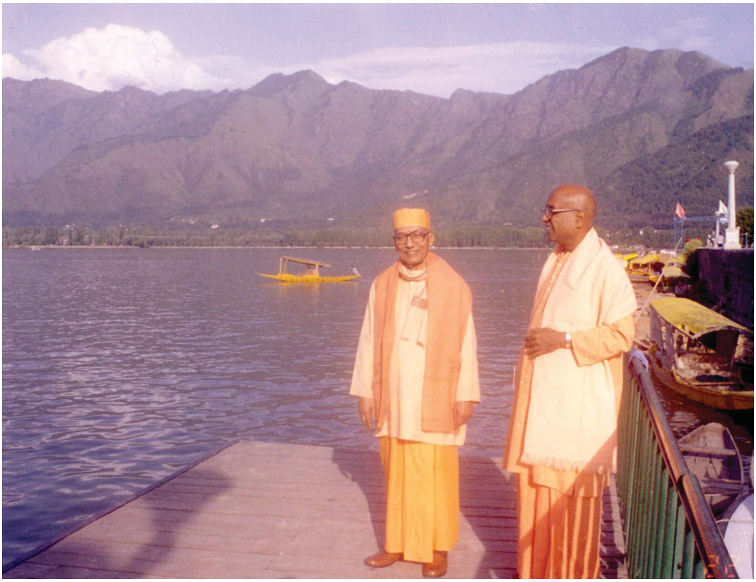
तुम्हारी १७ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ २५ अप्रैल को पहुँच चुकी थी।

अपने इष्टदेवता का ही मन्त्र निरन्तर मन लगाकर हर घड़ी जप करते रहो और उन्हीं पर पूरी तरह निर्भर रहो। वैसे भी वे तुम्हारी प्रत्येक मनोवाँछाओं को पूरा अवश्य ही करेंगे लेकिन अगर तुम उनके लिए अत्यधिक व्याकुल हो तो उनसे प्रार्थनाएँ कर सकते हो। इससे भी उनकी पूर्ति होगी। मन्दिर में कालीमाता की पूजा करते हो, उन्हें अपने इष्ट देवता से अभिन्न समझो। मेरे लिए तन्त्र-मन्त्र सब हमारे प्रभु ही हैं। मुझे और कुछ नहीं मालूम है। पुस्तकों के लिए पास के रामकृष्ण आश्रम में पता करो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(११६)

प्रिय ...,

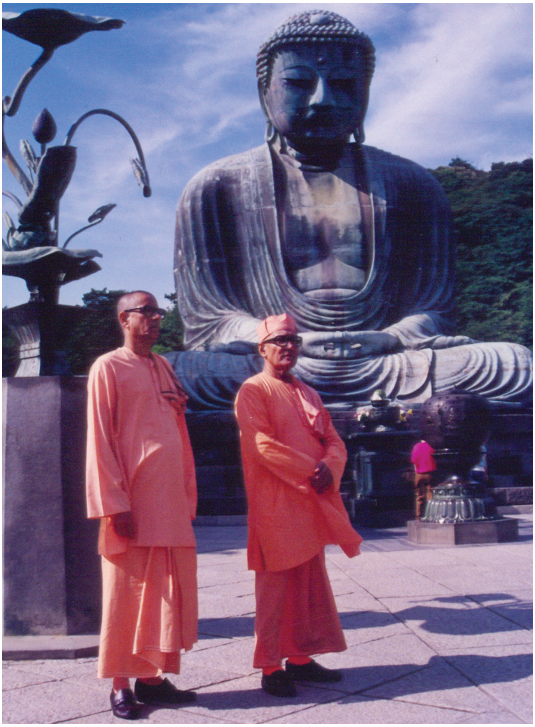
तुम्हारी चिट्ठी यहाँ ६ जुलाई को पहुँची है।

फिलहाल भविष्य की चिन्ता छोड़कर जो काम कर रहे हो, पूरे मन से, लगन से उसी को करो तथा पढ़ाई की तैयारियाँ करो। फिर परीक्षा में बैठो। तुम्हारे लिए अभी पढ़ाई में मन लगाना अधिक जरूरी है। प्राणायाम आदि न करो। 'उपासना पद्धति' में जिस तरह ध्यान-जप की प्रक्रिया बताई गई है उसी का पालन करो। वैसे जब भी अकेले रहते हो मन में अपने मन्त्र का हर घड़ी जप करो, जहाँ तक कर सको।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(११७)

१४ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी १० जून की चिट्ठी २१ जून को यहाँ पहुंची थी। 'उपासना पद्धति' के अनुसार ध्यान-जप आदि जहाँ तक कर सको करते रहो। जप-ध्यान लगन के साथ निःसन्देह होकर जब कर सकोगे तभी तुम्हारा मन क्रमशः निर्मल होता जावेगा। रामकृष्ण-विवेकानन्द साहित्य जहाँ तक हो सके पढ़ा करो।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। अपने मन्त्र में 'नमः' अपने मन से मत जोड़ो।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(११८)

१२ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी २ जुलाई की चिट्ठी यहाँ ६ जुलाई को पहुँच गई। यथाशक्ति अपने इष्टमन्त्र का यथानिर्देश जप करते रहो। जहाँ तक हो सके मन में हर घड़ी जप करो। इससे सांसारिक चिन्ताएँ तुम्हें पीड़ा नहीं पहुँचा सकेंगी। जहाँ तक कर सको करते रहो।

मैं तुम सब की भलाई के लिए निरन्तर प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(११६)

१४ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी ७ मई की चिट्ठी यहाँ २२ मई को पहुँच गई थी। तुमने मुझे जो कुछ लिखा है उन्हें अपनी इष्टदेवता से कहो, उन्हीं से प्रार्थनाएँ करो। मैं तो उन्हीं को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी के दाता समझता हूँ। ''जाकी रही भावना जैसी'', –उसे वैसा ही फल मिलता है।

मैं तुम्हारे लिए उन्हीं से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(१२०)

११ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी २५ मई की चिट्ठी यहाँ १६ जून को पहुँच गई थी।

अन्तिम वर्ष की परीक्षा के लिए अभी तैयारी करना शुरू करो। छात्रों के लिए अध्ययन ही सर्वोत्तम तप है। अर्थशास्त्र का अन्तिम वर्ष बी.ए.का या एम.ए का तुमने नहीं लिखा! अच्छी तरह मन लगाकर पढ़ो। मुझे चिट्ठियाँ लिखो।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकता शुभचिंतक

स्वामी गहनानन्द

(१२१)

७ नवम्बर २००१

बेटी ...,

तुम्हारी २७ अगस्त की चिट्ठी १ सितम्बर को तथा २५ अगस्त की ३० अगस्त को यहाँ पहुँची।

संसार में तुम अपनी बुद्धि किसी को दे नहीं सकती और फिर भी उस पर बलपूर्वक आग्रह करती हो कि किसी की बुद्धि तुम्हारी इच्छानुसार हो तो यह कभी हो नहीं सकता, ऐसे प्रयत्नों का फल अच्छा नहीं होता। हठकारिता का भी आश्रय न लो। जब अकेली हो तो श्रीश्रीठाकुर से, श्रीश्रीमाँ से, व्याकुलता के साथ प्रार्थनाएँ करती रहो। साथ ही साथ उसकी प्रत्याशाओं को पूरी करती चलो, तुम्हारा धर्म ही यही है। तुम समझती होगी कि तुम्हारे व्यवहार के कारण वह कहीं और अपने सुख का सन्धान कर सकता है, जो बात तुमसे कही भी गयी है, जिसका फल अच्छा नहीं भी हो सकता है।

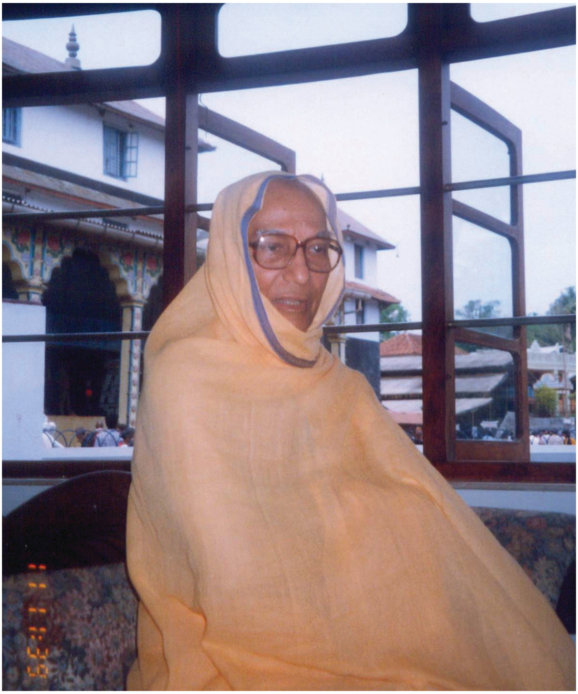
संसार का स्वरूप अच्छी तरह देख लो। इसका अर्थ है कि अपने मन के स्वरुप को, अपने संस्कारों को अच्छी तरह देख लो उनसे परिचित हो जाओ। शांत रहो, और अपने मन की वृत्तियों का अवलोकन करती रहो। रात का अन्धकार जब घनघोर मालूम पड़ता है तभी भोर होने का प्रारम्भ भी हुआ करता है, ऐसा समझो। मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

इस कलियुग में कोई यदि ईश्वर के लिए तीन दिन भी व्याकुल होकर रोए तो ईश्वर की कृपा से वह सिद्ध हो सकता है।

– श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(१२२)

प्रिय ...,

तुम्हारी ४ सितम्बर की चिट्ठी यहाँ ११ सितम्बर को पहुँची।

मेरी धारणा है कि तुम्हारे शरीर के ये दाग ३०-४० वर्ष की आयु में शरीर पर सफेद या काले दाग उभर आते हैं, उनमें दर्द वगैरह नहीं होता न ही छुड़ाने के लिए कोई दवा है। ऐसा हमने सुना है। मेरा ख्याल है उन्हें यों ही सह लो, छेड़खानी न करो। पैसा भी ख्वामख्वाह उन पर बर्बाद न करो।

मुझे तुम्हारे घर के लोगों के बारे में जानकर खुशी हुई। मैं तुम सब के कल्याण के लिए प्रभु से प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१२३)

७ नवम्बर २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी यहाँ २२ सितम्बर को पहुँच गई थी।

मुझे तुम्हारी बुरी आर्थिक अवस्था के बारे में जानकर बड़ा ही कष्ट हो रहा है, बहुत ही दुःखद बात है कि अपने परिवार के पालनपोषण में भी तुम्हें दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। स्वाभाविक ही है कि तुम्हारा मन पूजापाठ, मन्त्रजाप आदि में नहीं लगता। मेरी धारणा है, वे अवश्य ही तुम्हारी विनती सुनेंगे।

मैं भी उनसे तुम्हारी अवस्था सुधारने के लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(१२४)

७ नवम्बर २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी १ सितम्बर की चिट्ठी ५ सितम्बर को यहाँ पहुँची थी।

लापरवाही के प्रति तुम सचेत हो तो निश्‍चिन्त रहो कि लापरवाही तुमसे होगी नहीं। पोरबन्दर में स्वयंसेवकों को क्या करना पड़ता है ? कितने लोगों को इस प्रकार से रहने की अनुमति मिलती है ?

मन्त्र का जप यान्त्रिक न करो। ऐसा करने पर मन में एक अभिमान होता है। जप तो इस भाव से करना चाहिए जैसे कोई एक माँ अपने खोये हुए बच्चे का नाम लेकर दिनरात रोया करती है। जप करने का उद्देश्य भी यही है, भगवान से, श्रीश्रीठाकुर से उस प्रकार का लगाव उत्पन्न होना। वह भी तब ही हो पावेगा जब तुम्हारा मन संसार के कूड़ा-करकट से हटकर शुद्ध होगा। फिलहाल अंगुलियों से ही जप करो। जप का उद्देश्य मन को व्यवस्थित करना है, इसलिए जप के हरेक आवृत्ति के हरेक वर्ण के उच्चारण में शरीर, मन, बुद्धि आदि अपनी सत्ता के सारे अंगों का जहाँ तक सम्भव हो उपयोग करना चाहिए। जैसे कपड़े को रंगते समय देखा जाता है कि कपड़े का हर भाग रंगा गया या नहीं, इसी प्रकार अपने जप करने के प्रयासों में अपनी पूरी सत्ता को लगा दो कि वह उन्हीं के रंग में रंग जावे।

जैसे चित्र देखना चाहते हो देख लो। मन को दिखाओ जब तक तुम्हारा मन ऊब न जावे। फिर वह उन्हें नहीं चाहेगा।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए भगवान से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१२५)

७ नवम्बर २००१

कल्याणिया ...,

तुम्हारी १४ सितम्बर की चिट्ठी यहाँ २६ सितम्बर को पहुँची थी।

श्रीश्रीठाकुर की कृपा तो तुम पर है ही कि एक दिन पहले तुम्हें मालूम हो गया कि दूसरे दिन गुरुपूर्णिमा है। तुमने श्रीश्रीठाकुर की परीक्षा ली और वो पास हो गए। लेकिन इसी प्रकार उन पर अपनी निर्भरता को बढ़ाओ। हर काम में उन्हीं पर निर्भर रहो, देखोगी वे कभी नहीं चूकते, कभी भी फेल नहीं करते।

मैं तुम्हारे नए पते को लिख लेने के लिए यहाँ के मठ के साधुओं से कह रहा हूँ। यह तो बड़ी दुःखद बात है कि दो वर्षों में तुम्हारा नया पता नोट नहीं किया गया।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से सदा ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(१२६)

१४ अगस्त २००३

प्रिय गि ...,

तुम्हारा ५ मई का पत्र यहाँ ६ मई को पहुँच गया था। पिछले दो-तीन महीनों से मैं कभी केरल तो कभी त्रिपुरा के केन्द्रों में दीक्षा के काम पर घूमता रहा इसलिए तुम्हारी चिट्ठी का जबाब लिखवाने में देरी हुई।

तुम्हारे अनुभव बड़े ही सुखद हैं। लेकिन उन्हें भूल जाओ और आगे बढ़ते रहो। वैसे, तुम्हें आगे बढ़ने के लिए करना कुछ भी नहीं है। श्रीश्रीठाकुर की, श्रीश्रीमाँ की यही महिमा है कि तुम उनको पसन्द हो, तुम उनके लाड़ले हो, उनकी कृपा से तुम्हें ऐसे अनुभव हो रहे हैं। रेलगाड़ी किसी स्टेशन पर जब रूकती हो, वहाँ कोई मेला लगा हो और तुम यदि मेले के लिए रेलगाड़ी से उतर पड़ते हो तो तुम्हारा आगे बढ़ना रूक जाता है। समझ गये होगें। लेकिन तुम मुझे मन-ही-मन बता सकते हो, कि मैं समझ जाऊँगा। कभी कभी लिख भी सकते हो। न लिखना ही अच्छा है क्योंकि मेले को छोड़कर गाड़ी में बैठा व्यक्ति आगे बढ़ता हुआ यदि मेले के बारे में ही सोचता रहेगा तो वह आगे तो गाड़ी के साथ बढ़ता रहेगा लेकिन उसका मन मेले में ही अटका रहेगा। आगे बढ़ने का बोध उसे नहीं होगा।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीमाँ से हमारे प्रभु से प्रार्थनाएँ करता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

अभ्यास में कितनी शक्ति है। जप का अभ्यास करते करते मनुष्य सिद्ध हो जाता है - "जपात् सिद्धिः, "जपात् सिद्धिः, "जपात् सिद्धिर्न संशयः।"

-श्रीमाँ सारदा देवी



(१२७)

प्रिय ...,

तुम्हारी १७ जुलाई की चिट्ठी यहाँ २१ जुलाई को पहुँच गई। मल्टी मीडिया पाठ्यक्रम में अब तक भर्ती हो गई हो क्या ? मैं श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ तथा स्वामीजी महाराज से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ कि वे तुम्हारी इच्छाओं को पूरी करें और तुम्हें स्वावलम्बी बना दें। भूखे गरीबों को खिलाने की इच्छा का त्याग करो, उस इच्छा को श्रीभगवान के दर्शन करने की इच्छा में बदल दो। श्रीभगवान से व्याकुल होकर उनसे हर रोज प्रार्थनाएँ करती रहो। मुझे चिट्ठियाँ लिखना छोड़ो नहीं। तुम्हारे पिता तो अब अपनी अगली यात्रा पर चल पड़े। अब श्रीभगवान के सिवाय तुम्हें प्यार कौन करेगा ?

मैं तुम्हारी हर तरह की भलाई के लिए श्रीभगवान से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा कल्याणार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१२८)

१४ अगस्त २००१

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १८ जुलाई की चिट्ठी यहाँ ३१ जुलाई को पहुँची थी।

तुमने श्रीश्रीठाकुर के चरणों में अटूट भक्ति की प्रार्थना की हैं लेकिन (बेटी), पहले संसार के अनुभवों से अपने मन को खाली किये बिना वह कैसे सम्भव होगा ? श्रीश्रीठाकुर का नाम (अपना इष्टमन्त्र) हर रोज के ध्यानजप को छोड़कर बाकी समय पर हर घड़ी मन में जपा करो। ऐसे जप में गिनती रखने की आवश्यकता नहीं है। साथ ही साथ प्रभु से प्रार्थनाएँ करती रहो कि वे तुम्हें संसार के बन्धनों से छुट्टी दें। व्याकुल होकर जो भी कुछ उनसे माँगोगी तुम्हें प्राप्त होगा, निःशंक रहो।

मैं तुम्हारे परिवार के तथा तुम्हारे लिए प्रभु को हर घड़ी मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त कल्याणप्रार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१२६)

५ जुलाई २००१

प्रिय स ...,

तुम्हारी १८ अप्रैल की चिट्ठी २८ अप्रैल को यहाँ पहुँची थी।

पहली बात तो यह है कि गुरुमहाराज हमारे रामकृष्ण मठ के साधु तथा भक्त सभी लोग श्रीश्रीठाकुर, अर्थात भगवान श्रीरामकृष्णदेव को कहते हैं। स्वामी विवेकानन्द महाराज से लेकर आज तक सभी उन्हें 'गुरुमहाराज' ही कहते हैं। श्रीश्रीमाँ उन्हें 'ठाकुर' कहा करती थी, उनके अनुसार श्रीश्रीठाकुर भी कहे जाते हैं।

अभी २०-२५ वर्षों तक प्रभु का नाम जप करते चलो। तुम्हें इस बारे में घबराने की या २५ वर्षों का योजना बनाने की आवश्यकता नहीं है। जिनका नाम तुम्हें जप करने के लिये मिला है, उन्हीं की दया से तुम कर लोगे। मुझे चिट्ठियाँ लिखो तो अपना परिचय आदि भी लिखा करो।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(१३०)

५ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारे हृदय में लौकिक कोई आकांक्षा नहीं, तुमने लिखा है। लेकिन वास्तव में बात ऐसी नहीं है। अगर वास्तव में ऐसी बात होती तो तुम्हें समाधि लग गई होती। तुम्हीं ने लिखा है सैकड़ों प्रकार के विचार मन में निरन्तर चलते रहते हैं।

संन्यास के लिए मैंने मेरी पहले की चिट्ठियों में तुम्हें लिखा है। मैंने तुम्हें कनखल सेवाश्रम से सम्पर्क करने के लिए लिखा था। अब तुम्हें किन सामग्रियों की जरूरत होगी, लिखने के लिए कहा है। कलकत्ता में कैलाश आश्रम की तरह रामकृष्ण मठ से सम्बद्ध किसी संस्था के बारे में मुझे नहीं मालूम जो तुम्हें संन्यास दिलवा सकता हैं। मैं यह भी नहीं जानता किस प्रकार मेरे सान्निध्य में तुम्हारा संन्यास हो सकता हैं। ऐसा नहीं हो सकता। मेरी पहले की चिट्ठियों को पढ़ो और उनके अनुसार काम करो। मैं तुम्हारे संन्यास के सम्बन्ध में और कुछ लिख नहीं सकता हूँ।

तुम्हारे हृदय में ध्यानमूर्ति नहीं आती, बहुत प्रयास करने पर भी, तुमने लिखा हैं। इस सम्बन्ध में भी मैंने तुम्हे अपने विचारों का लगातार अनुसरण करने के लिए लिखा है। लेकिन तुम्हें जल्दी है और इस जीवन में धैर्य की आवश्यकता है। धीरज धरो, प्रभु पर निर्भर रहो, उनका दिन भर नाम लेते रहो, जो चाहते हो सब मिल जायेगा। देखो, क्या कर सकते हो। मैं, प्रभु से तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१३१)

१२ जुलाई २००१

प्रिय ...,

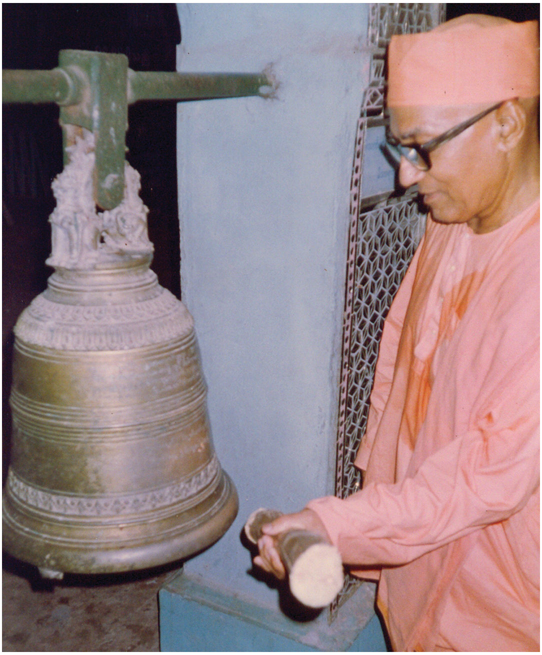
तुम्हारी २१ मई की चिट्ठी यहाँ २६ मई को पहुँची थी।

तुमने वृन्दावन सेवाश्रम में साधु बनने के लिए योग दिया है, अच्छी बात है। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, तथा स्वामीजी से हर घड़ी प्रार्थनाएँ करते रहो कि वे तुम्हें हमारे संघ के योग्य बना लें। ध्यान-जप, कर्म आदि विधिवत करो जहाँ तक कर सको।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए नित्य ही प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१३२)

१२ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी यहाँ ५ जुलाई को पहुँच गई।

तुमने लिखा है तुम चाहती तो बहुत कुछ हो पर कर कुछ नहीं पाती। क्या यह अच्छा नहीं होगा कि बहुत कुछ से घटा कर अपनी इच्छाओं को एक ही इच्छा पर केन्द्रित करो, फिर उसको पूर्ण करो फिर अगली इच्छा कि पूर्ति में लग जाओ। तुम मन नहीं लगा पाती क्योंकि परिश्रम से कतराती हो। इसलिए परिश्रम ही तुम्हारा कर्तव्य है।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१३३)

१२ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारा मन इधर उधर भागता है इसका कारण यही है कि मन का स्वभाव ही संकल्प करना और फिर उसका विकल्प करना, निश्चय करना नहीं है। निश्चय बुद्धि करती है। मेरे पास कोई उपाय नहीं है। सोच लो, विचार कर लो, लोगों से सलाह कर लो, फिर तय कर लो, फैसला कर लो कि तुम क्या चाहते हो। एक बार निश्चय कर लेते हो तो उस निश्चय से हटो नहीं। अगर हट जाते हो तो इसका मतलब है कि तुम्हारा निश्चय दृढ़ नहीं था। एक बार निश्चय कर लो फिर उस निश्चय के अनुसार काम करो।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकांत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१३४)

३ जुलाई २००१

प्रिय बेटी,

तुम्हारा पत्र १६ जून को हमारे योगोद्यान मठ में पहुँचा। मुझे प्रसन्नता है कि तुम नियमित जप और रामकृष्ण वचनामृत के पांच पृष्ठों का पठन प्रतिदिन कर रही हो। गुरु महाराज दिन प्रतिदिन तुम्हें अपनी ओर खींच रहे हैं। निश्चिन्त रहो ! इस बात को अच्छी तरह समझने में तुम्हें अभी कुछ ओर साल लग जायेंगे। बेटी आगे बढ़ते रहो।

तुम्हें ज्ञान और भक्ति की प्राप्ति के लिए मैं अपने गुरु महाराज, माँ सारदा और स्वामीजी को प्रार्थना कर रहा हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१३५)

प्रिय ...,

तुम्हारा पत्र पा कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

यह बहुत ही अच्छा है कि तुम श्रीरामकृष्ण वचनामृत के पाठ अपने जप के साथ साथ नियमित रूप से कर रही हो। यह निश्चिन्त मानों कि तुम्हारे इष्ट-देवता ने अपने पवित्र नाम को जपने का तुमको कृपावश अवसर दिया है। वे ही तुम्हें ऐसा नियमित करते रहने की शक्ति भी प्रदान करेंगे। वे ही अपनी शक्ति से तुम्हें ईश्वर प्रेरित जीवन जीने की प्रेरणा देंगे, जिसकी तुम्हें इच्छा है। जैसे एक अध्यापक अपनी कक्षा में शरारती छात्रों पर दृष्टि रखता है तो वे शरारत नहीं कर पाते हैं वैसे ही तुम भी अपने अन्दर उठते हुए खराब विचारों की ओर जब तक दृष्टि रखोगी तब तक तुम्हें भय नहीं है।

मुझे पूर्ण विश्वास है निरन्तर ईश्वरीय चिन्तन में निमग्न रहने से दया, धीरज, विनय, पर दोष दर्शन का अभाव और अन्य सद्गुणों को, समझने में देर नहीं लगती।

मैं श्रीश्री गुरु महाराज से तुम्हारे आध्यात्मिक उन्नयन के लिए प्रार्थना करता हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(१३६)

१४ अगस्त २००३

प्रिय बेटी चे ...,

तुम्हारा १४ जुलाई का पत्र यहाँ २६ जुलाई को पहुँच गया था।

६ साल की एक बच्ची से तुम क्या उम्मीद रखती हो ? उसकी माँ उसके लिए सब कुछ करती है, उसे नहलाती है, खिलाती-पिलाती है, सुलाती है, पढ़ाती है, उसके कपड़े धोती है, उसके बीमार पड़ने पर बैचेन होकर छटपटाती रहती है, उसे अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देती है, बच्ची कहीं स्कूल वगैरह जाती है तो हर घड़ी उसके लौटने की राह देखती है, यह सब तुम्हें मालूम है। लेकिन क्या उस बच्ची के मन में अपनी माँ के लिए जो उस पर न्योछावर है उसके प्रति थोड़ी सी भी प्रेम की, श्रद्धा की और भक्ति की भावना है ? क्या उसे मातृत्व की महिमा का ज्ञान है ? कुछ नहीं है। उसे तो यह भी नहीं मालूम की माँ की अनुपस्थिति में उसका जीना बहुत कठिन हो सकता है। वैसे ही श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के साथ जिनके हम बच्चे हैं, हमारी भी वही हालत समझो। हमारे मन में उनके प्रति श्रद्धा, भक्ति की वही दशा है जैस उस बच्चे के मन में उसकी माँ के प्रति है। लेकिन उसकी माँ के साथ उसके सम्बन्ध को क्या कोई भी अस्वीकार कर सकता है ? क्या कोई कहेगा कि उन दोनों की सत्ता एक ही सत्ता नहीं हैं ? इसी तरह तुम भी श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के साथ अभिन्न ही हो, फिलहाल उनकी सेवा ग्रहण करती रहो। फिर समय आने पर तुम भी माँ बन जाओगी।

मैं श्रीश्रीमाँ तथा श्रीश्रीठाकुर से यही प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(१३७)

१४ अगस्त २००१

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १६ जुलाई की चिट्ठी १ अगस्त को यहाँ पहुँची।

श्रीश्रीठाकुर को अपना आश्रय बना लेने के बाद भी निराशा तुम्हें क्यों सता रही है ? संसार से सुख की कामना मत करो (बेटा)। कर्म को केवल कर्त्तव्य ही मानकर करती रहो। क्योंकि कर्म में ही, "कर्माणि एवं, तुम्हारा अधिकार है, अधिकारः ते। न फलेषुकदाचन", कर्म के फलों में कभी नहीं, श्रीभगवान ने अर्जुन को कहा नहीं था ? प्रभु ने, तुम्हारी अन्तरात्मा ने तुम्हें तुम्हारी ही इच्छाओं के अनुसार कर्म दिया है। जब तक इन कर्मों को अच्छी तरह निभा नहीं लेती हो, जब तक संसार के असार होने की बात तुम्हारी बुद्धि में घर नहीं कर लेती है, वह धारणा जब तक पक्की नहीं हो जाती है तब तक तुम भगवान की ओर बढ़ नहीं पाओगी। संसार के ये सारे झंझट तुम्हें इसके खोखलेपन के पाठ पढ़ाने के लिए है। प्रभु से निरन्तर प्रार्थनाएँ करती रहो, हर घड़ी मन-ही-मन उनका नाम लेती रहो।

मैं भी तुम्हारे लिए निरन्तर प्रभु से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१३८)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ११ जून की चिट्ठी यहाँ १८ जून को पहुँच गई। एम.सी.ए. में तुम्हारी बेटियों का प्रवेश हो गया होगा। जिन्हें तुम कीड़े वगैरह समझती हो, वे वस्तुतः श्रीनारायण के ही स्वरूप हैं। स्वामीजी का वचन याद होगा तुम्हें – प्रत्येक आत्मा मूलतः दिव्य है, इसे ही अपनी तपस्या समझो। अपना जन्म ही तुम्हें इसी तपस्या के लिए मिला है। मेरी पहले की चिट्ठियों को पढ़ा करो, हर घड़ी प्रभु का नाम लेती रहो। किसी से कुछ भी प्रत्याशा न रखो। हर व्यक्ति की सेवा करती रहो, जैसे करती रही हो, मन को प्रसन्न रखो कि प्रभु ने कृपा से तुम्हें उनका नाम लेने का अधिकारी बनाया है, लोगों की सेवा करने का अधिकार दिया है, मुझे चिट्ठियाँ लिखने का आनन्द दिया है, क्या यह सब कोई कम बात हुई ?

मैं तुम्हारे लिए हमेशा ही प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त कल्याणार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१३६)

१४ अगस्त २००१

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १७ जुलाई की चिट्ठी यहाँ ११ अगस्त को पहुँची है। तुम भूल जाती हो कि श्रीश्रीठाकुर के सिवाय तुम्हारे मार्गदर्शक कोई भी नहीं। मैं भी नहीं। इसलिए श्रीश्रीठाकुर की कृपा से, जो तुम्हारी अन्तरात्मा, तुम्हें जो दर्शन, स्वप्न, आदि हुआ करते हैं, उन्हें अपने आप तक ही रखो, किसी भी व्यक्ति से उनकी चर्चा इसलिए न करो कि जो दर्शन आदि तुम्हें होते हैं, श्रीश्रीठाकुर यानी तुम्हारी आत्मा उन्हें तुम्हारे ही लिए दिखाते हैं, औरों के साथ करने के लिए नहीं। एक बात और है, जो कोई तुम्हारे दर्शनादि के सम्बन्ध में सुनता है, अगर वह तुम्हारी प्रशंसा करता है तो तुम्हारे अहंकार को प्रश्रय मिलता है, और अगर नहीं प्रशंसा कर पाता तो तुम्हें दुःख हो सकता है। स्वामी विवेकानन्द महाराज की ग्रन्थावलियों के प्रथम भाग में 'राजयोग' नाम का अध्याय है। उसमें पतंजलि महाराज का एक योगसूत्र है जिसमें कहा गया है कि ऐसे दर्शन या स्वप्न मिलें तो उन्हें सही मान कर उन पर ध्यान करना चाहिए। उस पुस्तक को अकेले में पढ़ लो। आध्यात्मिक जीवन अकेले ही होता है।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१४०)

१४ अगस्त २००१

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १६ जुलाई कि चिट्ठी यहाँ २७ जुलाई को पहुँची, पढ़कर मुझे अत्यन्त आनन्द हुआ।

तुम्हारा यह संकल्प कि 'अब मैं दुःख को अपने पास फटकने नहीं दूंगी', "हर समय अपने कर्म में व्यस्त रहूंगी", बड़ा ही अच्छा संकल्प हैं। श्रीमद्‍भागवत् पुराण में कुन्ती ने श्रीकृष्ण की स्तुति 'अकिञ्चनवित्राय' कह कर की है, कि श्रीभगवान् अकिंचनों के मित्र हैं। तुमने लिखा है, "स्वामीजी अभी भी मेरे पास कुछ साधन नहीं है" - तो श्रीश्रीठाकुर को, श्रीमाँ को ही अपने साधन समझो, वे भी अकिंचनों के मित्र ही हैं।

मैं उनसे निरन्तर तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ, मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामीं गहनानद



(१४१)

४ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारा १५ मई का पत्र २२ मई को यहाँ पहुँचा।

तुम्हारी याददास्त कम नहीं है, अपने मन को जैसे अपनी एक सहेली को पढ़ाती हो उसी तरह पढ़ाओ। हमारे पूज्यपाद स्वामी शिवानन्द महाराज (महापुरुष महाराज) ने कभी लिखा था (एक पत्र में) कि श्रीश्रीचण्डी का जब पाठ करते हो तो माँ दुर्गा को बैठने के लिए एक आसन बिछाओ और फिर माँ से कहो, माँ इस आसन पर बैठो, और मैं अभी श्रीश्रीचण्डी का पाठ करूँगा, तुम सुनो।

इसके उपरान्त एक श्लोक पढ़ो, फिर देखो माँ सुन रही है या नहीं। उनसे पूछो। अगर नहीं सुना तो उन्हें फिर सुनाओ। इस प्रकार से श्रीश्रीचण्डी का पाठ करो। तो (बेटी), तुम भी ऐसे ही पढ़ाई करो, तुम अपनी पढ़ाई सारदा माँ को बैठाकर सुनाओ। फिर अगर तुम भूल भी जाती हो तो माँ तुम्हें याद करा देगी।

प्रार्थनाओं के साथ,

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१४२)

४ जून २०००

प्रिय ...,

तुम्हारी १४ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ १ मई को पहुँच गई थी।

अंग्रेजी भाषा पर अधिकार जमाना चाहती हो, ठीक है। लेकिन सोच कर बताओ कि जब उस भाषा पर अच्छा-सा अधिकार बन

जाए तो उस अधिकार का प्रयोग किसलिए, किस काम के लिए करोगी ? एक इंजीनियर को भी अंग्रेजी में छपी पुस्तकों को पढ़ने के लिए या अपने शोध पत्र को लिखने के लिए, किसी सेमीनार में अपने विषय पर बोलने के लिए अंग्रेजी सीखना पड़ता है। लेकिन तुम केवल एक भाषा पर ही अधिकार लेकर क्या करोगी ? स्वामी विवेकानन्द महाराज को अंग्रेजी भाषा पर अधिकार था, उन्होंने उस भाषा का प्रयोग अमेरिका में तथा इंग्लैण्ड में जाकर अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों पर प्रकाश डालने के लिए किया था। तुम क्या करोगी ? सोच कर मुझे लिखो।

जपमाला, अगर हो सके तो एक नई माला लेकर मेरे पास भेज दो। मैं उसका शोधन करने के बाद भेज दूंगा। नहीं तो यहाँ भी मालाएँ उपलब्ध हैं, मैं यहाँ से भी नई माला तुम्हें शोधन करने के बाद तुम्हें भेज सकता हूँ। जैसा चाहती हो, लिखो।

'उपासना-पद्धति' नाम की छोटी-सी पुस्तिका जो तुम्हें दीक्षा के समय मिली थी, उसमें दी गई विधियों का पालन करती हुई ८-१० वर्षों तक जप-ध्यान, उपासना, आदि करती रहो। साथ ही साथ मन लगाकर पढाई करो व जहाँ तक हो सके हर घड़ी श्रीश्रीठाकुर का नाम मन में लगातार जप करती रहो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

> परोपकार ही धर्म है; परपीड़न पाप। शक्ति और पौरुष पुण्य है, कमजोरी और कायरता पाप। स्वतन्त्रता पुण्य है, पराधीनता पाप। दूसरों से प्रेम करना पुण्य है, दूसरों से घृणा करना पाप। परमात्मा में और अपने आप में विश्वास पुण्य है; सन्देह ही पाप है। एकता का ध्यान पुण्य है; अनेकता देखना ही पाप। – स्वामी विवेकानन्द



(१४३)

४ जुलाई २००१

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ७ जून की चिट्ठी १२ जून को यहाँ पहुँची थी।

अभी कर-जप करती रहो। लोगों से ऐसे विषयों पर बातचीत न करो। तुम्हारे मन में बैठे श्रीश्रीठाकुर की बातें सुनने का अभ्यास करो और उसके अनुसार ही काम करती रहो। मन को जहाँ तक हो सके प्रभु के चरणों में ही लगाओ। तुम्हारा मन उन्हीं में लगाओगी तो फिर तुम्हारे संसार की व्यवस्था उन्हीं से हो जावेगी। प्रभु का नाम लेती हुई जीवनधारण करती रहो। मैं तुम्हारे लिए प्रभु को नित्य ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभेच्छु

स्वामी गहनानन्द

(१४४)

३ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी १६ अप्रैल की चिट्ठी मिली।

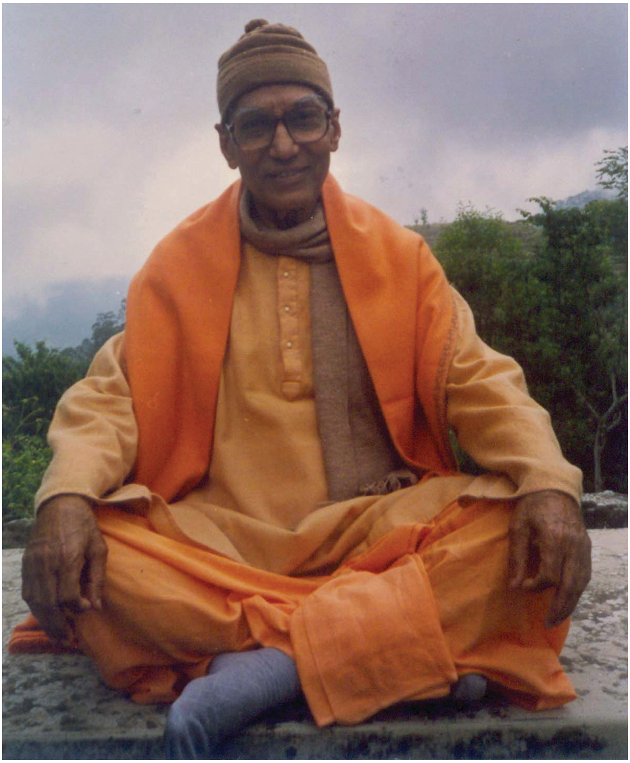
जप ध्यान के सम्बन्ध में तुम्हें किसी उपदेश की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें जपध्यान के लिए अधिकाधिक प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें अपने हृदयकमल में श्रीश्री ठाकुर तथा माँ को बैठाने के लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है। अपने मन को तुम्हें अति चंचल करने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें केवल एक ही काम करना है। वह है एम.कॉम. उत्तरार्द्ध की परीक्षा प्रथम श्रेणी लेकर उत्तीर्ण होना। फिर उसके बाद सी.ए वगैरह पढ़ोगी ? क्या करोगी ? ई.कॉमर्स ? पढाई का सिलसिला खत्म कर लो, फिर मन लगाकर मनभर जप-ध्यान करो। भगवान श्रीकृष्णचैतन्यदेव प्रतिदिन अपने इष्टमन्त्र का ढाई लाख जप करते थे। उनके शिष्य हरिदास भी इसी संख्या में जप करते थे। लेकिन इस तरह जप करने के लिए अपने मन को अति चंचल कहकर उसे और भी चंचल बना देने से अच्छा है कि कोई अपनी वासनाओं से मन को मुक्त करे। तभी मनोनिग्रह की आवश्यकता नहीं होती, मन ही तुम्हारा सहायक हो जाता है। मुझे चिट्ठियाँ लिखा करो।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक सफलता के लिए निरन्तर प्रभु से प्रार्थनाएं करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

> जिसमें विश्वास है उसमें सब है; विश्वास नहीं तो कुछ भी नहीं।
> – श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(१४५)

१४ अगस्त २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी राखियाँ तथा तुम्हारी चिट्ठी यहाँ ३१ जुलाई को पहुंची। राखी तो दोनों बड़ी अच्छी थी। मैं श्रीश्रीठाकुर को निवेदन करने के बाद उन दोनों को प्रसाद के तौर पर तुम्हें ही भेज रहा हूँ, वे तुम्हारे पास हिफाजत से रहेंगी। मेरी चिट्ठी का जवाब तुमने अभी तक नहीं भेजा है। कब लिखोगी ?

मैं तुम्हारे लिए हमारे प्रभु को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकांत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१४६)

६ अप्रैल १९९१

प्रिय ...,

तुम्हारी २१ मार्च की चिट्ठी १ अप्रैल को यहाँ पहुँची थी। तुमने जो कुछ किया उसका तुम्हारी अन्तरात्मा के साथ के सम्बन्ध में फर्क कुछ भी नहीं पड़ा। अपनी अन्तरात्मा के साथ तुम्हारा परिचय नहीं था, मैंने वह परिचय करा दिया, अब तो तुम दोनों का सम्बन्ध है। मुझे उसमें लेना देना कुछ भी नहीं, ऐसा समझो। प्रभु का नाम दिन-रात हर घड़ी मन-ही-मन लिया करो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर मनाता रहता हूँ ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द

(१४७)

२० मार्च २००२

प्रिय ...,

तुम्हारी २० फरवरी की चिट्ठी ५ मार्च को यहाँ पहुँच गई थी।

फिलहाल परमार्थ को छोड़कर अपने व्यापार में पूरा मन लगा कर आर्थिक स्थिति को कुछ ठीक कर लो, फिर परमार्थ में मन लगाओ। अपनी अगली चिट्ठी में अपने घर के बारे में लिखो कि वहाँ कौन-कौन लोग तुम्हारे साथ रहते हैं, वे सब क्या करते हैं, आदि।

मन में बुरे विचार आते हैं तो उन्हें देखते रहो, उन्हें रोकने की कोशिश न करो। केवल उनसे परिचित हो जाओ कि तुम्हारे मन में कौन-कौन से बुरे विचार हैं। उन सभी विचारों से जब भली-भाँति तुम्हारा परिचय हो जायेगा तो वे तुमसे भागने लगेंगे जैसे परिचित चोर तुम्हारे घर पर चोरी नहीं करता। तुम्हारे मन के विचारों से परिचित हो जाने के बाद जब वे तुम्हारे मन से दूर हो जाएंगे, तब तुम्हारा मन ही तुम्हें ऐसा करो, ऐसा न करो, इस तरह हर बात में तुम्हें परिचालित करेगा। परिचालन तो तुम्हारा वह अब भी करता है लेकिन तुम्हें उसकी बातों को सुनने, समझने की आदत या अभ्यास नहीं है। अगर आज ही अपने मन के निर्देशों का पालन करने लगो तो तुम्हारे सारे कष्ट चले जाएंगे।

मैं श्रीरामकृष्णदेव से तुम्हारी भलाई के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१४८)

२० मार्च २००२

प्रिय ...,

तुम्हारा १६ फरवरी का पत्र ५ मार्च को यहाँ पहुंचा।

फिलहाल मुझे चिट्ठियाँ लिखा करो तथा रामकृष्ण मठ के द्वारा प्रकाशित पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन करते रहो। मराठी तथा हिंदी पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं के अलावा अंग्रेजी पुस्तकों तथा पत्रिकाओं को पढ़ा करो। पहले स्वामी सारदानंद महाराज के द्वारा लिखित श्रीरामकृष्ण-लीलाप्रसंग (Sri Ramakrishna, The Great Master) का अच्छी तरह अध्ययन करो। फिर स्वामी विवेकानन्द के पत्रों तथा व्याख्यानों को उनके Complete Works में पढ़ो। इस तरह तुम्हारी बुद्धि प्रखर होती जाएगी और फिर प्रभु की सेवा के योग्य बन जाओगे। फिलहाल में तुम्हारे लिए श्रीश्रीगुरुमहाराज से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता हूँ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(१४६)

प्रिय ...,

तुम्हारा १५ जुलाई का लिखा पत्र २१ जुलाई को पहुँचा। तुमने अपने पत्र में जो कुछ लिखा है, ठीक लिखा है, लेकिन उपासना-पद्धति के अनुसार लगातार नियमित रूप से ध्यानादि करना जारी रखो तथा हर घड़ी प्रभु का नाम व्याकुलता तथा आन्तरिकता के साथ लेते रहो। हमारे शास्त्रों में साधकों के जीवन में उन्नति के लक्षण का हर जगह ही विस्तार से वर्णन किया गया है तथा श्रीश्रीठाकुर के जीवन से हम सब कुछ समझ सकते हैं। श्रीश्रीठाकुर ने भी चलते रहने की बात की है। आत्मसाक्षात्कार बड़े दूर की बात है। अभी ऐसे ही चलते रहो तथा अपने मन की गतिविधियों पर निगरानी करते रहो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए प्रभु को सदैव मनाता रहता हूँ। अपने लिखे पत्रों की फोटोकॉपी अपने पास रखते हो क्या ? तुम्हें क्या याद है जो कुछ तुमने लिखा था ?

तुम्हारा कल्याणार्थी

स्वामी गहनानन्द

(१५०)

७ नवम्बर २००१

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १४ अगस्त की चिट्ठी १८ अगस्त को यहाँ पहुँच गई थी।

तुम्हारे बच्चे की चिट्ठी का जवाब मैंने लिखवा दिया है और तुम्हारी इस चिट्ठी के साथ भेज रहा हूँ। तुम उसकी फिक्र न करो। अगर तुम्हें बच्चे को ढंग से संगीत की शिक्षा दिलवानी है तो वह गुरु-परम्परा से ही मिल सकती है, म्यूजिक स्कूल में नहीं, वह तो उस शिक्षा से तुम्हारा बच्चा संगीत शिक्षक बन सकता है संगीतज्ञ नहीं, यह तो तुम भी जानती ही हो। लेकिन अभी संगीत वगैरह की बात न करो। उसे पढ़ने दो और दो एक वर्ष और बीतने दो। तुमने नहीं लिखा, कि उसकी क्या उम्र है, किस क्लास में पढता है। उसे उसके बीमार दादा के पास अधिक जाने की जरूरत नहीं है। मैंने उसे उनके बारे में सोचते रहने के लिए मना किया है।

दिल्ली के रामकृष्ण मिशन से ही वहाँ पहुँच कर या टेलीफोन से वहाँ मेरे पहुँचने के सम्बन्ध में जानकारी हासिल कर सकती हो, मेरे लिए हरेक दीक्षित या दीक्षिता शिष्य-शिष्या को सूचना देना मुश्किल काम है। आमने-सामने बैठकर बातें करना चाहती हो, श्रीश्रीठाकुर से कहो। मैं तुम्हारी भलाई के लिए उन्हें मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द

> मृत्यु का जब कोई निश्चित समय नहीं है, तो मौका मिलते ही, काल-अकाल की परवा न करके सत्कार्य कर लेना उचित है।
>
> -श्रीमाँ सारदा देवी



(१५१)

७ नवम्बर २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी १४ अगस्त की चिट्ठी यहाँ १८ अगस्त को पहुँच गई थी। अपनी अगली चिट्ठी में मुझे अपनी आयु तथा अपने क्लास के बारे में लिखो। तुमने अतिरिक्त अध्ययन के बारे में लिखा है, वह क्या है जिसके लिए तुम्हारी माँ तुम्हें डाँटती है ? गृह-कार्य तो करना ही है, वह तो पहला काम है। मुझे लिखो तुम कब स्कूल जाते हो, लौटते कब हो वहाँ से, फिर दिनभर क्या करते हो ? दीक्षा के लिए अभी व्यस्त न हो। उसके बारे में तुम्हें फिर लिखूंगा। दीक्षा क्यों लेते हैं, लेने पर क्या होता है, तुम दीक्षा क्यों लोगे, न भी लोगे तो क्या बिगड़ेगा, इन सब प्रश्नों के उत्तर तुम्हारे पास होने चाहिए, तभी तुम दीक्षा ले सकोगे। अभी मुझे चिट्ठियाँ ही लिखते रहो, मैं तुम्हें इन बातों को बताता रहूँगा।

तुम्हारे दादा की यह हालत तुम्हारी शिक्षा के लिए है कि वृद्धावस्था में मनुष्य को किस प्रकार के कष्ट झेलने पड़ते हैं। अपनी माँ से पूछो श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, स्वामीजी महाराज का, उनके गुरुभाइयों का, मठ के संन्यासियों का देहावसान कैसे हुआ

था। उनके अन्तिम दिन कैसे थे ? उन्हीं की तरह तुम्हें जब ऐसा अनुभव होगा कि मन के पीछे, जिस मन से तुम सोचते हो, तुम्हारा जो मन कभी गुस्से से भर जाता है, कभी कुछ मांगता है, लोभ करता है, घृणा करता है, प्यार करता है, घमंड करता है, दुःखी होता है, सुखी होता है, उसी मन के पीछे तुम्हारी अन्तरात्मा है। जिसे हम कभी श्रीश्रीठाकुर कहते है, कभी श्रीश्रीमाँ इत्यादि। मन ही तुम्हारी मानसिक अवस्थाओं को देखता रहता है और तुम्हें सही या गलत रास्ते से जाने से रोकता भी है लेकिन तुम्हें मन की बातें सुनने, समझने की आदत नहीं है, इसलिए तुम्हें गुस्सा आता है कभी, तो कभी उब जाते हो, कभी दुःखी हो जाते हो।

अभी पढाई में ही मन लगाओ। दादा की सेवा जहाँ तक हो सके करो लेकिन उनके बारे में सोचो नहीं, वह इसलिए कि तुम्हारे उनके बारे में सोचने से उन्हें कोई लाभ नहीं होगा लेकिन तुम्हारी हानि होगी कि तुम अपनी पढाई में मन नहीं लगा पाओगे।

जब पढ़ने बैठो तो जैसे कोई अपने किसी सहपाठी को पढ़ाता है वैसे ही अपने मन को पढ़ाओ। उससे बातें करो। पूछो उसने समझा की नहीं। उसकी परीक्षा लो कि पाठ उसे याद हुआ है या नहीं। स्वयं छात्र बनो, मन को शिक्षक बनाओ, फिर स्वयं शिक्षक बनो फिर मन को छात्र बनाओ। मन से इस प्रकार एक प्रगाढ़ सम्बन्ध बनाओ। जब ऐसा सम्बन्ध बन जावे तो फिर जब कभी तुम्हारे मन में कोई बात आती है, जब तुम्हारा मन तुम से कुछ कहता है, उसका पालन करो। उसके कहने की अनदेखी न करो। एक महीने तक ऐसा करो फिर मुझे लिखो। गिटार वगैरह के सम्बन्ध में तुम्हारा मन ही तुम्हें बतायेगा, वही जुटा भी देगा, निश्चिन्त रहो।

श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द



(१५२)

२० मार्च २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २८ फरवरी की चिट्ठी यहाँ १४ मार्च को पहुँच गई।

जंगलों में सबसे ऊँचे पेड़ों को ही आँधी-तूफानों का सामना करना पड़ता है, उनसे लड़ना पड़ता है। अपने जीवन को ऐसे ही समझो। प्रभु का नाम ले रही हो, तुम्हारे जीवन को तुम्हारे प्रभु अपने साँचे में ढाल रहे हैं, जलभुन कर प्रभु के लायक बन जाओगी। बच्चों की चिन्ता मत करो, प्रभु पर निर्भर रहो, उन्हीं का नाम लेती रहो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए उन्हीं को हमेशा मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१५३)

२० मार्च २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी तीन चिट्ठियाँ यहाँ पहुँच चुकी हैं। तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर लिखवाने में समय लगेगा इस लिए अगली चिट्ठी में मैं उनके उत्तर लिखवाऊंगा। किसी के डाँटने से घबराती क्यों हो ? डाँट तो वही सकता हैं जिसका तुमसे आन्तरिक सम्बन्ध है। अगर मुझसे तुम्हारा सम्बन्ध है तो मेरे शासन को तुम कष्ट का कारण नहीं समझोगी। कुछ काल की और अपेक्षा करो, तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर तुम्हें मिल जावेंगे।

मैं श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी,

स्वामी गहनानन्द



(१५४)

४ जुलाई २००१

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १३ जून की चिट्ठी यहाँ १६ जून को पहुँच गई।

मन को उदास क्यों होने देती हो ? अपने मन के विचारों पर निगाह रखो। पहले मुझे अभी कुछ काल तक बराबर चिट्ठियाँ लिखो। जहाँ रहती हो वहाँ कौन कौन है, कौन क्या करता है, तुम दिनभर क्या करती हो ? अपने जीवन को अपना किस तरह व्यतीत करना चाहती हो, आदि, मुझे लिखो। अभी तुम्हारी आयु क्या है, स्टॅडीज कहाँ तक की है तुमने ? कहीं किसी यूनिवर्सिटी या स्कूल वगैरह में पढ़ाओगी, क्या करोगी ?

जल्दी से अपने जीवन का एक प्रोग्राम बना लो, फिर शान्ति के साथ प्रभु का नाम ले सकोगी। हमारे श्रीश्रीठाकुर कहते हैं, भूखे पेट से धर्मकर्म नहीं हो पाता। इसलिए मैंने यह सब कुछ तुमसे लिखा है। मैं तुम्हें लेकर चिंतित रहता हूँ। श्रीश्रीमाँ, श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारे लिए हर घड़ी प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा सदैव मंगलाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१५५)

यह पत्र मूल अग्रेंजी भाषा से अनुवादित हुआ है।

३ जुलाई २००१

तुम्हारा पत्र यहाँ २५ जून २००१ को पहुँच गया।

मुझे पत्र प्राप्त कर अति प्रसन्नता हुई। जब भी तुमको इच्छा हो और समय हो तो मुझे लिख सकते हो। तुम श्रीश्री गुरुमहाराज की कृपा से अभी और भी अनुभव प्राप्त करोगे। यह उनकी असीम कृपा ही है जिसने तुमको उनके पास ला दिया है। मैं तुम्हारे आध्यात्मिक उन्नयन के लिए अपने गुरु महाराज और माँ सारदा देवी को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१५६)

यह पत्र मूल अग्रेंजी भाषा से अनुवादित हुआ है।

३ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारा पत्र पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

यह श्री गुरु महाराजजी की कृपा ही है जो तुम्हें उनकी कृपा प्राप्त करने लायक बनाया। यह उनकी कृपा ही है, तुमको प्रतिदिन बीस हजार जप करने की प्रेरणा दी। उनकी कृपा से ही तुम इतना जप अच्छी तरह कर पाओगे। कोई अपने पिता को अच्छी तरह न पुकारे तो भी पिता सुनते है। बोलो सुनते है कि नहीं ! और तुम्हें उनकी कृपा बिना याचना के ही मिल गई, तुम जैसे भी हो, चाहे अपने परिपक्व तरीके से ही हो, उनकी कृपा की प्रतीक्षा करो और पुकारते रहो। ऐसी कृपा तुम पा ही चुके हो इसलिए मेरे पास और तुमको देने के लिए कुछ नहीं है, तुम उनकी कृपा से भरपूर हो चुके हो।

उन्हीं पर आश्रित रहो। इसी बीच मैं तुम्हारे आध्यात्मिक उन्नयन के लिए प्रार्थना करता हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१५७)

यह पत्र मूल अग्रेंजी भाषा से अनुवादित हुआ है।

११ जुलाई २००१

प्रिय ...,

मुझे तुम्हारा पत्र पाकर खुशी हुई, मैं यहाँ २१ जून को पहुँचा।

जब तुम अपनी आध्यात्मिक उपासना बताए गए नियमों के अनुसार प्रतिदिन समाप्त कर लेती हो तब भी इष्ट मन्त्र जप सब समय पर करने का प्रयन्त करते रहो। तुम्हें उनकी जप संख्या रखने की कोई आवश्यता नहीं है। ऐसा जप कार्य कर रही हो अथवा कार्य से अवकाश के समय करती रहो ।

मैं अपने श्री गुरुमहाराज से तुम्हारे आध्यात्मिक उन्नयन के लिए प्रार्थना करता रहता हूँ ।

तुम्हारा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१५८)

३० अगस्त २०००

प्रिय ...,

तुम्हारी ७ अगस्त की चिट्ठी यहाँ पहुँची।

अपनी जबाबी चिट्ठी में मुझे लिख भेजो कि तुम्हारी आयु क्या है, क्या करते हो, घर पर कौन कौन हैं, घर का खर्च कैसे चलता है, रामकृष्ण मठ की अल्मोड़ा स्थित शाखा में आते-जाते रहते हो या नहीं ? तुम्हारी मन्त्रदीक्षा कब और कहाँ हुई थी ? घर पर किसी और की दीक्षा हुई हैं या नहीं ? इन सब बातों की जानकारी मिलने पर मैं तुम्हारी अवस्था को समझ सकूंगा।

मान लो तुम्हारे पिता को महसूस होता है कि तुम्हारे घर में जगह कि कमी हो रही है और वे एक बड़ा मकान बनवाने के लिए वास्तुविद् को बुलाकर उनसे कहते हैं कि नए मकान में वे अपने लिए एक पूजाघर तथा एक पुस्तकालय, अपने लड़कों के लिए टेबल टेनिस खेलने की जगह वगैरह वगैरह चाहते हैं और वास्तुकार महोदय कुछ महीनों में मकान का नक्शा बनाकर लाते हैं और फिर सालभर में मकान बन जाता हैं और फिर गृहप्रवेश के बाद वे उसमें रहकर पुराने गृह में जो कुछ कार्य कर नहीं सकते थे यहाँ उन्हें पूरा करते हैं। ऐसे ही हम पुराने शरीर को छोड़ते

समय नए शरीर का नक्शा बना लेते हैं और फिर उसमें प्रवेश करने के बाद शेष कर्म करने लगते हैं।

पिछले जन्म में ही मृत्यु से पहले हम नए जीवन के बारे में सब कुछ प्रोग्राम बना लेते हैं। कहाँ जन्म होगा, माता-पिता कौन होंगे, सब कुछ प्रयोजन के अनुसार ठीक कर लेते हैं, जैसे कोई किसी काम से यूरोप या अमरीका जाना चाहता हैं तो पहले से ही उसे ठीक कर लेना पड़ता हैं कि वह वहाँ क्या करेगा, कहाँ रहेगा, उसकी वहां रहने की जिम्मेदारी (sponsorship) कौन संभालेगा, यह सब कुछ वहां पहुँचने से पहले ही उसे तय कर लेना पड़ता है। इसलिए तुम्हारा कथन सही है कि हमारा वर्तमान जीवन पूर्वजन्म के कर्म का ही फल है, लेकिन इस जन्म में भी कर्म करने की छूट तो हमें है ही। लेकिन एक जन्म में हम एक ही कर्म कर सकते हैं और इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम अच्छी तरह देख ले और सोच लें, विचार कर लें कि हम क्या चाहते हैं। वैसे उसकी जरूरत है भी नहीं क्योंकि हमारा वर्तमान जीवन एक सुनियोजित कार्यक्रम के अनुसार तो चल ही रहा है। हमारे मन के पीछे जो अपना कारण शरीर है वही हमारे कर्म का साक्षी है, द्रष्टा है। वही सुख स्वरूप है। इसलिए मन जब चिन्तारहित होकर शान्त होता है तो हमें कारण शरीर का ही अवभास होता है और इसी को हम सुख कहते है । लेकिन फिर जब मन में वासनाएँ आ जाती हैं तो उन्हें मिटाने कि इच्छा के कारण हम दुःख उठाते हैं। बात यही है। इसी साक्षी या द्रष्टा का ही नाम तुम्हारे इष्टदेवता का नाम है, इसे ही आत्मा कहते हैं।

पत्रोत्तर के बाद फिर इस बारे में तुम्हें लिखूंगा। मुझे इस पत्र का एक नकल फोटोकॉपी करा कर अपने पत्र के साथ भेजो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीरामकृष्ण परमहंसदेव से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभचिन्तक
स्वामी गहनानन्द

(१५६)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारा ८ अक्टूबर का पत्र यहाँ १८ अक्टूबर को पहुँच चुका था।

मेरे पिछले पत्र में जो कुछ लिखा है उन्हें समझ लेने की कोशिश न करो। जहाँ तक हो सके उन बातों को जो कुछ मैंने लिखा है, करने में समय लगाओ। जो कोई जो कुछ तुमसे करने के लिए कहता है उसका पालन करने की चेष्टा करती रहो, यही साधना है। श्रीश्रीठाकुर की तरह जब सर्वभूत में नारायण देखती रहोगी तभी तुम हर व्यक्ति का कहा हुआ काम बेहिचक कर सकोगी, इसलिए उस अवस्था की प्राप्ति के लिए तुम्हें श्रीश्रीठाकुर के आचरण के अनुकरण के माध्यम से अपने मन को निर्मल बनाना पड़ेगा। यही कारण है कि बच्चों को बड़ों के आदेशों का पालन, उनके आचरणों का अनुकरण करने के लिए कहा जाता हैं।

फिलहाल हर घड़ी मन्त्र जप करती रहो। भूल जाती हो तो ठीक है, फिर जब याद आवे तब करो। धैर्य के साथ काम लो। भूल जाती हो तो दिमाग खराब करने की जरूरत नहीं है। मन पर नजर रखने की बात के सम्बन्ध में ही ऐसा समझो। मन में ऐसी धारणा बनाओ कि तुम्हें ये काम करने हैं, इसी से क्रमशः कभी न कभी तुम्हें इसमें सफलता मिलेगी, निश्चिन्त रहो।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से निरन्तर प्रार्थनाएं करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

> सदा विस्तार करना ही जीवन है और संकुचन मृत्यु। जो अपना ही स्वार्थ देखता है, आराम-तलब है, आलसी है, उसके लिए नरक में भी जगह नहीं है। — स्वामी विवेकानन्द



(१६०)

प्रिय ...,

तुम्हारी २२ जुलाई की चिट्ठी (डी.डी.नं ३५६२७८ रूपये. ७००/- के साथ) यहाँ २६ जुलाई को पहुँची। रुपयों की रसीद इस पत्र के साथ तुम्हें मिल जायेगी ।

श्रीश्रीठाकुर के नाम जपने का अधिकार श्रीश्रीठाकुर ही की कृपा से तुम्हें प्राप्त हो गया है, चाहो तो कह सकते हो अपने पहले के किये पुण्यकर्म के फलस्वरूप। अब यह भी समझ लो तुम्हारी गाड़ी चल पड़ी है अब इसे उत्तरोत्तर गति ही पकड़ना है, निश्चिन्त रहो, प्रभु ही तुम्हारी निगरानी बराबर कर रहे हैं, उन्हीं पर पूरा भरोसा रखो वे तुम्हारे साथ हैं, तुम्हारे हृदयाभ्यन्तर में सदा समासीन रहकर तुम्हें दिशानिर्देश दे रहे हैं हर घड़ी। यह बात और है कि उनकी हर बात पर तुम अमल नहीं करते। ठीक ही है। हर घड़ी, हर काम के मध्य अगर प्रभु के नाम लेने का अभ्यास ज्यों ज्यों बनेगा त्यों त्यों समझो तुम दोनों का जीवन धन्य होता जायेगा।

मैं श्रीश्रीठाकुर से तुम दोनों के कल्याण के लिए हमेशा प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१६१)

प्रिय ... तथा ...,

तुम्हारे पुत्र चि. कृ... (चि. रा...जी) के उपनयन संस्कार के उपलक्ष्य में भेजा गया तुम्हारा पत्र २० फरवरी को यहाँ पहुँच चुका था। मुझे कोई सन्देह नहीं है कि तुम लोगों पर श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, तथा स्वामीजी महाराज की अशेष करुणा है और तुम्हारी भी उन पर अथाह भक्ति है।

प्रभु का नाम लेते रहो और वे ही जिस तरह तुम्हारे जीवन को चलावे, उसी तरह चलते रहो।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए उन्हें निरन्तर मनाया करता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(१६२)

२० मार्च २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ६ फरवरी की चिट्ठी १२ फरवरी को यहाँ पहुँच गई थी। मेरे स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कुछ लिखने को तो रहता नहीं। स्वास्थ्य ठीक ही है, देशभर में श्रीश्रीठाकुर की इच्छा से घूमता रहता हूँ।

पहले कम्प्यूटर की कक्षाओं में अच्छी तरह इस विद्या को सीख लो। फिर कोई काम करना। ध्यान करने के लिए मन का शान्त होना आवश्यक है। फिलहाल जहाँ तक कर सको प्रभु के नाम का जप करती रहो। तुम्हारी दीक्षा हो चुकी हैं ? कब हुई ? अभी इधर आने की बात छोड़ो। पहले कम्प्यूटर का कोर्स पूरा करो, फिर किसी काम में लगो। फिर इधर आओगी, चाहो तो अकेले ही आ सकती हो। अभी संसार छोड़ने की बात मत सोचो। कुछ काल तक संसार में रहकर इसके स्वरुप से भली-भाँति परिचित हो जाओ जिससे संसार से तुम्हें प्रत्याशाएँ, उम्मीदें न रह जावें। तभी तुम्हारा मन शुद्ध होगा और फिर कहीं भी रहोगी, किसी भी अवस्था में रहोगी तब भी तुम्हारा मन प्रफुल्लित रहेगा। आनंद के साथ वह प्रभु का नाम लेगा, प्रभु के स्वरुप के ध्यान में डूबा ही रहेगा। तब तुम धन्य हो जाओगी। प्रभु की कृपा पर, श्रीश्रीमाँ की कृपा पर भरोसा रखो। वे ही तुम्हें तुम्हारे हृदय में उपस्थित रहकर तुम्हें चला रहे हैं।

मैं तुम्हारे लिए उनसे प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ, तुम भी करो।

तुम्हारा सदैव शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१६३)

३ जुलाई २००१

प्रभुकृपाभिलाषिणि बेटी ...,

तुम्हारी २५ फरवरी की चिट्ठी तुम्हारी और चिट्ठियों के साथ यहाँ पहुंची थी। यह तुम जानती हो। तुम यहाँ अगर आती भी हो तो देखो, तुम्हें मालूम ही है कि मैं यहाँ आश्रम (योगोद्यान मठ) में बहुत ही कम दिनों के लिए रह पाता हूँ, और जब रहता हूँ तो दीक्षा के उपलक्ष्य में लोगों कि भीड़ लगी ही रहती है। अच्छा तो यही होगा कि कुछ काल और धैर्य धरो, पढ़ाई का सिलसिला खत्म कर लो, फिर ताई के साथ प्रोग्राम बनाकर इधर आओ।

साधु के जीवन में और तुम्हारे जीवन में क्या फर्क है ? मेरा जीवन तो तुमने पुणे के मठ में देखा ही है, पुणे के मठ के साधुओं का जीवन भी देखा है। अपना जीवन तो देख ही रही हो। कह सकती हो कि बड़े साधु लोग संसार के लोगों की ईश्वरबुद्धि से सेवा करते हैं। जैसे जिसकी नींद खुल गई है वही वैसे लोगों को जगाने में लग जाता है जैसे किसी जलते हुए घर में सोए हुए होते हों।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से सदा कि भाँति निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। म... के लिए भी।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(१६४)

यह पत्र मूल अग्रेंजी भाषा से अनुवादित हुआ है।

११ जुलाई २००१

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारा २० जून २०१२ का पत्र २३ जून २००१ को यहाँ पहुँचा।

मुझे तुम्हारे पत्र से यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि दीक्षा प्राप्ति से ही तुम श्री गुरु महाराज और करूणामयी माँ सारदा कि असीम कृपा से आध्यात्मिक उपासना नियमित रूप से करती हो। जैसे एक छोटा बच्चा अपनी माँ की गोद में जाने के लिए कैसे रो रो कर उसे पकड़ लेता है वैसे ही तुम भी उनको पकड़ लो और जप करती रहो। जैसे हमारे श्री गुरु महाराज माँ काली पर सब समय निर्भर रहते थे, माँ की इच्छा के अनुसार ही चला करते थे। ऐसे ही तुम भी उन पर पूर्ण निर्भर रहो और माँ तुम्हें जैसा चलाती है, चलो।

मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ तुम्हें आध्यात्मिक अभ्युदय प्रदान करें।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(१६५)

५ जुलाई २००१

प्रिय ...,

तुम्हारी १० जून की चिट्ठी यहाँ २१ जून को पहुँच गई थी।

मुझे लगता है कि मुझे चिट्ठियाँ लिखने के बाद तुम उन्हें पढ़ा नहीं करते, लिखने के बाद सीधे ही लेटरबॉक्स में डाल देते हो। तुम्हें प्रभु का नाम लेते हुए कितने दिन हुए ? लेकिन प्रभु तुम्हारे मन का ही शुद्ध स्वरुप हैं, तुम्हारे ही आत्मस्वरूप हैं, यह बुद्धि, ऐसी धारणा, ऐसा विश्वास, तुमसे अभी बहुत ही दूर है लगता है। तुम अभी भी 'डूबा-डूबा' महसूस करते हो, 'सांसारिक कार्यों में अरुचि' आदि बातों को लेकर सोचना, बातें करना, लिखना आदि में ही रुचि है, इसलिए आनन्द की आशा, प्रार्थना तो कर रहे हो, लेकिन स्वयं निरानन्द का प्रसार कर रहे हो। चाहते सुख हो, दुःख का वितरण कर रहे हो। आध्यात्मिक जगत की कोई बात अभी भी क्या तुमसे छिपी हुई है ? सभी बातें तुम्हें मालूम हैं पुस्तकें भी शायद सभी पढ़ चुके हो। तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर कोई भी कहेगा की बहुत ही निराशाजनक चिट्ठी है। अब से निराशा का इस प्रकार प्रचार न करो। प्रभु का नाम ले रहे हो लेकिन तुम अभी भी निराशा से घिरे हो। अपने मन को देखो, उसकी परीक्षा करो, कुछ ऐसा चाहते होंगे जो मिलना कठिन है और जिसे तुम पूरे मन से चाहते भी नहीं हो। यही तुम्हारी स्थिति मुझे लगती है। इस अवस्था का विश्लेषण कर लो, जब अपनी हालत को समझ लोगे तो मन ठीक हो जावेगा।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१६६)

५ फरवरी २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १६ जनवरी की चिट्ठी यहाँ १२ जनवरी को पहुँच गई। अंग्रेजी में अपनी पकड़ बढ़ाने के लिए तुम्हें १०–१५ उपन्यास (novel) पढ़ने पड़ेंगे। बिना रुके पढ़ जाओ और कोई ऐसा शब्द मिले जिसका अर्थ समझ नहीं पाती हो तो dictionary देख लो। अच्छा Oxford University Press का छपा Advanced Learners' English Dictionary या Concise Dictionary की जरूरत पड़ने पर सहायता लो। अंग्रेजी तेजी से पढ़ने के लिए Drama तथा detective stories पढ़ा करो। फिलहाल अपने syllabus की किताबों को ही पढ़कर परीक्षा की तैयारियां कर लो। Master's degree के लिए आगे सोचोगी।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(१६७)

प्रिय ... तथा ...,

तुम्हारी १७ जनवरी की चिट्ठी यहाँ २८ जनवरी को पहुँची।

मुझे पहली बात तो यही लिखवानी है कि तुम लोगों को भेजी हुई चिट्ठियों को मैं मेरे सहकारी संन्यासियों से ही लिखवाया करता हूँ जिनमें मेरा नाम ही केवल मैं लिख देता हूँ।

दूसरी बात यह है कि तुम्हारे गुरु महाराज श्रीरामकृष्ण देव ही है जो कि तुम्हारे इष्टदेवता भी हैं। हमारे मठ में सभी लोग इस बात को जानते हैं। श्रीश्रीमाँ भी जब किसी को दीक्षित करती थी तो कहती थी कि श्रीश्रीठाकुर ही गुरु हैं, वे ही इष्ट हैं और श्रीश्रीठाकुर पर लिखी गई 'श्रीश्रीरामकृष्ण लीलाप्रसंग' आदि पुस्तकों को ध्यान लगाकर पढ़ोगी तो शायद धीरे धीरे श्रीश्रीठाकुर की महिमा का तुम्हें कुछ आभास मिलने लगेगा। नए भगवान, पुराने भगवान, आदि तुम्हारी बातों को लेकर मैं कुछ कहना नहीं चाहता। अच्छा है ऐसी बातें न करो। ८-१० वर्षों तक निष्ठा, लगन और व्याकुलता के साथ श्रीश्रीठाकुर का नाम जप करती रहो। जैसे अपनी माँ से बिछुड़ा हुआ बालक अपनी माँ के लिए 'माँ, माँ' पुकार कर रोता, बिलखता है, उस प्रकार जब तुम हर घड़ी श्रीश्रीठाकुर का नाम लेने लगोगी, तभी तुम्हें उनका नाम लेने में आनन्द मिलेगा। मुझे चिट्ठियां लिखती रहो। आध्यात्मिक जीवन में धैर्य की बड़ी आवश्यकता है। मैं तुम दोनों के लिए हमारे प्रभु से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१६८)

२० मार्च २००२

प्रिय ..., ..., ..., तथा ...,

तुम्हारे पूज्य पिता के निधन का संवाद २२ जनवरी को यहाँ पहुँचा। चिट्ठियों के ढ़ेर में से तुम्हारा कार्ड अभी-अभी मेरे पास पहुँच पाया। तुम सब .... शर्माजी के योग्य उत्तराधिकारी हो तुम्हें तो श्रीभगवान के वचन ज्ञात ही हैं कि, वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति तुम्हें पिता के लिए शोकाकुल होना शोभा नहीं देता। तुम लोगों ने द्वादशादिकृत्य अच्छी तरह कर लिए होंगे, यही मेरी आशा है।

मैं तुम लोगों की भलाई के लिए निरन्तर श्रीभगवान को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(१६६)

२० मार्च २००२

कल्याणीया बेटी श्र ...,

तुम्हारी ७ नवम्बर की चिट्ठी १६ नवम्बर को यहाँ पहुँच गई थी।

अपने मन के सम्बन्ध में ऐसे समझो कि तुम्हारे मन के शुद्ध स्वरुप का नाम 'सारदा देवी' है, 'श्रीरामकृष्ण' है, और उसके अशुद्ध स्वरुप का नाम श्र... है। इसलिए जब भी तुम अपनी अशुद्धियों, कामना-वासनाओं के बारे में सोचती हो तब तुम्हारा मन उन्हीं में रम जाता है। इसलिए अपने शुद्ध मन का ही ध्यान करो, चिन्तन करती रहो। तुम्हारा शुद्ध मन तुम्हारा स्वरुप है और तुम्हारा अशुद्ध मन तुम्हारे पुराने संस्कारों की समष्टि। जैसे जैसे तुम उन अशुद्धियों से परिचित होती जाओगी, वे तुमसे दूर भागने लगेंगी।

अपने पुराने संस्कारों के फलस्वरूप ही तुम्हें यह जन्म मिला है, प्रभु के नाम जपने का अधिकार मिला है, इसलिए अपने आप को धन्य समझो, कृतकृत्य समझो, और बड़े लोगों का कहना मानती हुई, अपने हृदयस्थ श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के निर्देशों का पालन करती हुई जीवन बिताओ।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए निरन्तर उनसे प्रार्थनाएं करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

ब्रह्मचर्यपालन किये बिना, वीर्यधारण किये बिना सूक्ष्म आध्यात्मिक तत्त्वों की धारणा नहीं होतीं। – श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(१७०)

६ फरवरी २००२

प्रिय ...,

तुम्हारी जनवरी की चिट्ठी यहाँ पहुँच गई।

तुमने अपनी चिट्ठी में अपनी समस्याओं के बारे में लिखा है लेकिन तुम्हारी आयु क्या है, तुम क्या करते हो, तुम्हारे घर पर कौन कौन लोग हैं, घर का खर्च कैसे चलता है, पढाई तुमने कहाँ तक की है, आदि के बारे कुछ नहीं लिखा। मुझे तुम अपने अगले पत्र में ये बातें लिखो।

मन को एकाग्र करना मुश्किल है क्योंकि जिसे हम मन कहते हैं उसका स्वभाव ही है एक संकल्प करना फिर तुरन्त उसका विकल्प करना। मन में एक बात आती है फिर उसे हटाकर दूसरी एक बात आती है। इस प्रकार ऐसी बातों का क्रम चलता रहता है। इसे रोकने के लिए तुम्हें अपने मन के विचारों से परिचित होना पड़ेगा। मुझे लिखो, फिर मैं तुम्हें लिखकर बताऊंगा।

फिलहाल मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से नियमित प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(१७१)

यह पत्र मूल अग्रेंजी भाषा से अनुवादित हुआ है।

२६ अक्टूबर २०००

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारे दो पत्र क्रमशः ६ अगस्त और ६ अक्टूबर के यहाँ १६ अगस्त और १३ अक्टूबर को प्राप्त हुए।

परीक्षाओं में सफलता प्राप्ति हेतु बधाई। तुम्हारी परीक्षाओं के क्या विषय रहे थे, दर्शन या संस्कृत ? क्या तुम अब अंग्रेजी में एम.ए.करोगे ? या पी.एच.डी करोगे ?

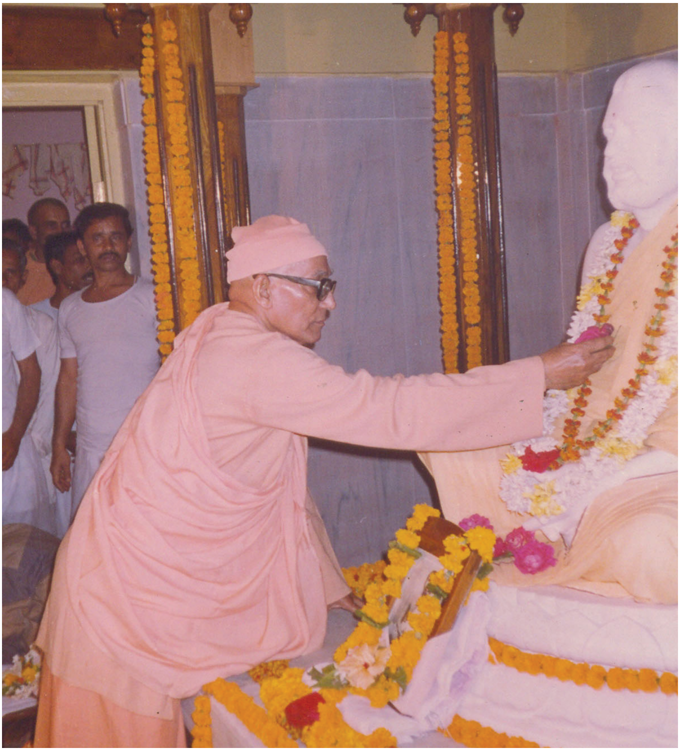
मन्त्र दीक्षा के समय जैसा बताया गया है वैसा ही करते जाओ। उससे अधिक और कुछ करने मत जाओ और अपनी भावनाओं को अत्यधिक दबाने की भी आवश्यकता नहीं है। लोगों का ध्यान आकर्षित न करो कि तुम आध्यात्मिक जीवन जी रहे हो। एक सामान्य जीवन जीओ। समाज से अकेले न रहो और न ही उन लोगों का विरोध करो। अपना कुछ समय कभी, कभार अपने आस-पास के लोगों के साथ भी बिताओं और उनकी संगत का आनन्द उठाना सीखो।

मैं श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

> कर्म तो करना ही चाहिए। कर्म करते-करते कर्म का बन्धन कट जाता है। तभी निष्काम - भाव का उदय होता है। एक क्षण के लिए भी कर्म छोड़कर रहना उचित नहीं।
>
> -श्रीमाँ सारदा देवी



(१७२)

यह पत्र मूल अग्रेंजी भाषा से अनुवादित हुआ है।

२० अक्टूबर २०००

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारा १६ सितम्बर को लिखा हुआ पत्र मठ में २७ सितम्बर २००० को प्राप्त हुआ।

शुभ दीपावली। तुम दीपावली किस प्रकार मनाने जा रही हो। ऐसे शुद्ध दिवसों पर तुम अपना मन ज्यादा से ज्यादा इष्ट मन्त्र का जप करने में लगाओ और अध्यात्म सम्बन्धी कुछ अध्ययन करने का प्रयास भी करो। पीएचडी में तुम्हारा विषय क्या है और डिग्री पाने के बाद तुम क्या करोगी क्या कॉलेज में अध्यापिका

बनोगी इसमें ज्यादा तो मेहनत नहीं है, तुम इससे भी उच्च शिक्षा की डिग्री क्यों नहीं हासिल करती ?

अपने देश में गरीबों के लिए कुछ करने की योजना बनाने से पहले तुम स्वामी विवेकानन्द और भगिनी निवेदिता के व्याख्यानों एवं पत्रों का अध्ययन करो। तुम तो पहले से निःस्वार्थी हो और निःस्वार्थता में किसी भी प्रकार के स्तर नहीं रहते, या तो तुम निःस्वार्थी हो, नहीं हो। तुम्हारा मन तुम्हारे इष्ट देवता का स्थान है। यदि तुम्हारा मन पवित्र नहीं होता तो तुम्हारे इष्ट देवता वहाँ कैसे रहते और तुमने अपना शरीर, मन और बुद्धि उनके चरण कमलों में दे दिया है तो तुम्हारा चरित्र कैसे अपवित्र हो सकता है। तुम केवल यह देखती रहो कि वे तुम्हें आस पास के लोगों के हित के लिए कैसे काम में लेते हैं।

अन्त में तुम्हारे जीवन में कोई भी अनिश्चितता हो ही नहीं सकती है क्योंकि तुम उनका नाम अनवरत लेती रहती हो। उनकी सेवा ही तुम्हारे जीवन का भविष्य है और यही निश्चिन्तता है।

तुम तो पगली हो, मेरी पगली बेटी। पर तुम्हें इसके लिए किसी प्रकार से गौरव करने की आवश्यकता नहीं है। हर एक व्यक्ति दुनिया में पागल है, कोई इसके लिए कोई उसके लिए। तुमने श्रीश्रीठाकुर को ऐसा बोलते हुए श्रीरामकृष्ण वचनामृत में पढ़ा ही होगा।

तुम इस बात को समझ ही सकती हो कि इस पगली बेटी के पिताजी को कैसा अनुभव हो रहा होगा जब तुम पगली हो गई होगी।

मैं श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमां और स्वामीजी से प्रार्थना करता हूँ कि वे तुम्हारे जीवन को उनकी सेवा में लगाने के लिए तुम्हारे मन को शक्ति प्रदान करे।

तुम्हारा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(१७३)

१५ नवम्बर २०००

प्रिय ...,

तुम्हारी १६ अक्तूबर की चिट्ठी यहाँ १८ अक्तूबर को पहुँची थी।

तुम्हारे साथ जो घटनाएँ घट रही है उनके साक्षी तो तुम्ही हो, फिर तुम्हें मेरे या किसी और के समर्थन की आवश्यकता क्यों पड़ने लगी ? आध्यात्मिक जीवन में ऐसी बहुत सी घटनाएँ साधकों के साथ हुआ करती हैं, प्रथमतः जीवन में वे निराले ही लगते हैं। लेकिन उनके जीवन में जब स्थिरता आती है तो, जैसे तुमने पढ़ा भी होगा की गहरे जलाशय में हाथी के डूब जाने पर भी पता नहीं चल पाता है। इसी प्रकार तुम्हारे लिए उचित यही होगा की इन घटनाओं से विचलित न हो कर साक्षी के रूप में इनको देखते रहो। तुम्हें अभी काफी अधिक दूर जाना है।

मुझे नहीं लगता कि मैं तुम्हें तुमसे बातें करने के लिए अधिक समय दे पाऊँगा, आज ही मैं गुजरात कि यात्रा पर मुम्बई के लिए रवाना हो रहा हूँ। वहां से लौटते वक्त १३ से १५ दिसम्बर दिल्ली में रहकर १६ की शाम को वहाँ से रवाना हो कर यहाँ वापस आऊँगा। हो सके तो दिल्ली में मुझे मिलो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएं करता रहता हूँ

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

अपने स्नायु को बलवान् बनाओ। हमें लोहे के पुट्ठे और फौलाद के स्नायु की आवश्यकता है। हम लोग बहुत दिन रो चुके। अब और रोने की आवश्यकता नहीं है। अब अपने पैरों पर खड़े हो जाओ और मनुष्य बनो।
– स्वामी विवेकानन्द



(१७४)

यह पत्र मूल अग्रेंजी भाषा से अनुवादित हुआ है।

२५ अक्टूबर २०००

प्रिय... (ब्रह्मचारी को लिखा पत्र)

तुम्हारा १० सितम्बर का लिखा पत्र यहाँ १६ सितम्बर को पहुँच गया।

तुम्हारे पिताजी क्या करने की कोशिश कर रहे हैं इस विषय में तुम्हें अपना दिमाग लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुमने श्रीश्रीठाकुर के शिष्यों के जीवन में ऐसी घटनाएँ अवश्य पढ़ी होगी। सबसे अच्छा यही रहेगा कि तुम उनके भले के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ कर सकते हो, मैं तुम्हारे आध्यात्मिक उन्नयन के लिए श्रीरामकृष्णदेव को प्रार्थना करता हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१७५)

यह पत्र किसी ब्रह्मचारिणी को लिखा मूल अग्रेंजी भाषा से अनुवादित।

१६ अक्टूबर २०००

प्रिय ...,

मुझे तुम्हारे तीनों पत्र समय पर प्राप्त हुए। लौट जाना ही अन्तिम निर्णय है, यही निर्णय है तो ? यही तुम्हारे पत्रों से मुझे

समझ में आया। मुझे लगता है कि तुमने सारदा मठ में प्रवेश पाने के लिए बहुत कष्ट उठा लिए। तो फिर तुम घर लौट ही जाओ, अच्छा लगे या ना लगे, अपने परिवार के साथ एक दो महीने रहने से प्रेम हो ही जायेगा, अपना स्वास्थ्य ठीक करो और अच्छे से सोचो और निर्णय लो कि तुम्हें अपना जीवन अब किस प्रकार जीना चाहिए। फिर तीन चार महीने में अपने जीवीकोपार्जन के लिए कोई कार्य ढूंढ़ सकती हो और रहने के एक स्थान की भी व्यवस्था कर सकती हो, जहाँ तुम अपना जीवन सारदा मठ में रहने के समय जैसे व्यतीत कर रही थी वैसा ही बना लो।

मै अभी कूच बिहार एवं भारत के उतर पूर्वी प्रदेशों की यात्रा के लिए २८ अक्टूबर को जा रहा हूँ और २० नवम्बर को राजकोट और फिर एक सप्ताह में भुज के लिए रवाना होऊँगां तब हम लोग बातचीत कर सकेंगे। तब तक मुझे यह लगता है कि तुम अपने घर वापस जाओ। तुमको यह तपस्या कितनी भी कठिन क्यों न लगे कुछ समय के लिए ऐसे ही करती जाओ और फिर कुछ स्वस्थ होकर अपना नया जीवन शुरू करो।

मैं हमेशा की तरह ही श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ और स्वामीजी से यह प्रार्थना करता रहता हूँ तुमको तुम्हारे कष्ट के दिनों में शक्ति प्रदान करे और उच्चतम पथ की ओर ले जायें।

तुम्हारा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द





(१७६)

२५ अक्तूबर २०००

प्रिय ...,

तुम्हारी बगैर टिकट, बगैर तारीख की एक चिट्ठी ३० अगस्त को मिली।

तुम क्या पढाई कर रहे हो, घर पर कौन कौन हैं, घर की आर्थिक अवस्था कैसी है, दैनन्दिन खर्च कैसे चलता है आदि मुझे विस्तार से लिखो। फिर मैं तुम्हें लिखूंगा। तुम्हारा लक्ष्य बेसब्री से नहीं, धैर्य से पूरा हो सकता है। बचपना न करो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। तुमने बी. ए. पास किया है या नहीं, लिखो।

तुम्हारा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१७७)

यह पत्र मूल अग्रेंजी भाषा से अनुवादित हुआ है

मार्च ६, २००३

प्रिय ..., मेरी बेटी,

तुम्हारा ५ फरवरी का लिखा पत्र ११ फरवरी को यहाँ पहुँचा।

क्या तुमने अपने इस भेजे हुए पत्र की प्रतिलिपि करवाकर रखी है ? मुझे नहीं लगता है कि तुमने ऐसा किया। अब तुम वैसा ही करो जैसा मैं तुम्हें करने को कहूँ। अभी तुम अपने उसी पत्र को अपनी स्मृति से दुबारा लिखने की कोशिश करो या मैं तुमको वह पत्र वापिस भेज सकता हूँ, और मुझको तुम उन सब पत्रों के सम्भावित उत्तर लिख कर भेजो। तुम्हारे उत्तर मुझको तुम्हारी मनोस्थिति को समझने में मदद करेंगे।

प्रश्न और उत्तर दोनों लिखने में शीघ्रता करो।

मैं तुम्हारे सर्वांगीण मंगल के लिए श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ और स्वामीजी से सदैव प्रार्थना करता रहता हूँ।

तुम्हारा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१७८)

३० अगस्त २०००

प्रिय ...,

तुम्हारी १३ जुलाई की गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में लिखी चिट्ठी यहाँ १६ जुलाई को पहुंची।

देखो...., अपने मन के बारे में तुम्हें कुछ भी नहीं मालूम, तुमने पढ़ा भी है कि मन ही गुरु है फिर भी तुम मन को शान्त करना चाहते हो। मन तुम्हारा शान्त ही है केवल उसमें सांसारिक संस्कार भरे पड़े हैं जिन्हें हटाने में समय लगेगा। जैसे जैसे तुम्हें जप करने में रुचि होगी वैसे वैसे तुम्हारा मन साफ होता जायेगा।

फिलहाल पढाई में ही पूरा मन लगाओ, कोर्स की ही किताबें पढ़ो अन्य किताबें पढ़ने की अभी आवश्यकता नहीं है। हर रोज पढाई पूरी कर लेने के बाद ही ध्यान-जप के लिए थोडा सा समय निकालो। हर समय मन ही मन लगातार जप किया करो, प्रार्थनाएँ श्रीश्रीठाकुर से ही करो वे तुम्हारे ही हृदयस्थ रहकर तुम्हारी प्रार्थनाएँ सुनेंगे। मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१७६)

३० अगस्त, २०००

प्रिय ...,

तुम्हारा १८ जुलाई का पत्र यहाँ २८ जुलाई को पहुँच गया था।

पेपर कठिन था यह मत सोचो, यही कहो कि परीक्षा की पढ़ाई तुमने अच्छी तरह की नहीं थी। अब से दिनरात केवल पढ़ाई ही करो। मित्रों के साथ भी पढ़ाई करो, जिन विषयों में तुम्हें अच्छे नम्बर नहीं मिले उन्हें और जिन विषयों को समझने में तुम्हें कठिनाइयाँ हो रही हैं, उन्हें सुलझा लो। उन विषयों का अभ्यास लिख लिख कर करो। साथ ही तृतीय वर्ष की पढ़ाई भी लगातार करते रहो। हर रोज १०-१२ घन्टों तक यह दैनन्दिन कार्यक्रम बनाकर पढ़ाई करो। सात दिनों की पढ़ाई के बाद आठवें दिन केवल ध्यान जप में समय व्यतीत करो, उस दिन भी पढ़ना हो तो २-३ घन्टे पढ़ सकते हो।

एक महीने तक ऐसे पढ़ाई करने के बाद मुझे लिखो। बेचैनी की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है परिश्रम करने की।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(१८०)

३० अगस्त २०००

प्रिय ...,

तुमने अपनी चिट्ठी में तारीख नहीं डाली जो यहाँ २० जुलाई को पहुँची थी, गुरुपूर्णिमा के चार दिन बाद। तुम्हें नहीं मालूम श्रीश्रीठाकुर ही हम सब के गुरु हैं और हम उन्हें ही श्रीश्रीगुरुमहाराज कहा करते हैं, यद्यपि वे चाहते नहीं थे कि उन्हें कोई गुरु, बाबा वगैरह कह कर पुकारे। इसलिए उन्हें 'श्रीश्रीठाकुर' भी कहते हैं, जैसे श्रीश्रीमाँ कहा करती थी।

तुमने जब अपनी चिट्ठी लिखना प्रारम्भ किया था तभी तुम्हारा गुरुपूर्णिमा का प्रणाम उनके पास पहुँच गया था और उनके माध्यम से मेरे पास भी। इसलिए तुम निश्चिन्त रहो। तुम जब किसी को पैसे देना चाहते हो तो उसके बैंक खाते में पैसे जमा करा देते हो, तुम निश्चिन्त रहते हो कि वह पैसा उसे मिलेगा। वैसे ही प्रणाम के सम्बन्ध में समझो।

जब से तुमने श्रीश्रीठाकुर का मन्त्र जपना शुरू किया हैं, तुम उन्हीं के हो गए हो, वे भी तुम्हारे हो गए हैं, केवल इस बात को समझने में तुम्हें कुछ देर होगी, जल्दी क्या है।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

> जैसे काँच में यदि पारा लगा हुआ हो तो उसमें चेहरा दिखाई देता है, वैसे ही ब्रह्मचर्यपालन के द्वारा वीर्यधारण करने से ब्रह्मदर्शन हो सकता है।
>
> – श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(१८१)

६ मार्च २००३

प्रिय ...,

३ जनवरी की तुम्हारी चिट्ठी यहाँ ११ जनवरी को पहुँच गई।

तुम्हें शायद अब तक ये बात मालूम नहीं हो पाई है कि अगर तुम्हारे मन में बहुत आसक्ति है, संशय है तो तुम्हारे सिवाय दुनियाभर में और कोई भी तुम्हें इस अवस्था से निकाल नहीं सकता। इसकी वजह यही है कि तुम्हें तुम्हारी वर्तमान अवस्था ही अच्छी लगती है। तुम्हें मालूम है कि लोगों को जो बातें अच्छी लगती हैं वे उसी की चर्चा रातदिन करते रहते हैं। वैसे ही तुम्हें अपनी आसक्तियों के बारे में लिखने में आनंद ही मिलता है।

अपना भला चाहते हो तो आसक्ति, संशय आदि शब्दों को भूल जाओ। पढ़ाई में मन लगाओ, लगन के साथ प्रभु से प्रार्थनाएँ करो।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१८२)

२६ अक्तूबर २०००

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ अक्तूबर की चिट्ठी १८ को यहाँ पहुँची।

ठीक ही है, तुम अपनी माँ की ही सेवा करो। तुम्हारी तीस वर्ष तक की आयु तक ही तुम इस दुविधा में रहकर कष्ट अनुभव करोगे कि रामकृष्ण मठ में योगदान करें या अपने माँ की सेवा करें। फिर उससे मुक्त हो जाओगे।

साधुओं का जीवन बड़ा ही कठिन जीवन है तुम जैसे नवयुवकों के लिए। बाहर से इस जीवन का कुछ पता नहीं चलता है। तुम्हारे मन में संकल्प की वह दृढ़ता नहीं है कि वह सिद्ध हो। चलो प्रभु का नाम लेते लेते दृढ़ता आ जायेगी।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१८३)

६ मार्च २००३

प्रिय ...,

तुम्हारी २४ दिसम्बर की डाक मुहर वाली चिट्ठी ३ फरवरी को यहाँ पहुँची।

जिस समय तुम बहुत चिन्तित होते हो उस समय मन में अपने इष्टदेव के नाम का जप करना शुरू कर दो, तुम्हारी चिन्ताएँ भाग जायेंगी। प्रभु से प्रार्थनाएँ बराबर व्याकुल होकर करो, इस तरह करो कि आँखों में पानी आ जावे। तभी प्रभु तुम्हारी प्रार्थना सुनेंगे।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, तथा स्वामीजी महाराज से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(१८४)

३० अगस्त २०००

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारा ११ जुलाई का पत्र यहाँ १८ जुलाई को पहुँचा था, मैं हर रोज हमारे श्रीश्रीगुरुमहराज से तथा श्रीश्रीमाँ से तुम सभी के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। गुरुपूर्णिमा के अवसर पर भी तुम्हारे कल्याण के लिए मैं उनसे प्रार्थनाएँ करता रहा हूँ।

तुम्हें नहीं मालूम हमारे मठों के साधु तथा भक्तलोग सभी श्रीश्रीरामकृष्णदेव को ही श्रीश्रीगुरुमहाराज कहते हैं, दीक्षा गुरुओं को गुरुदेव, गुरुजी, गुरुमहाराज कहने की प्रथा नहीं है। मुझे तुम केवल 'महाराज' कहकर सम्बोधित कर सकती हो। सभी साधुओं को ऐसा कह सकती हो या फिर नाम के आगे 'जी' लगाकर भी सम्बोधित कर सकती हो। लेकिन अपने दीक्षागुरु के लिए ऐसा सम्बोधन उचित नहीं है। श्रीश्रीगुरुमहाराज को हम 'श्रीश्रीठाकुर' भी कहते हैं। रामकृष्ण-विवेकानन्द साहित्य पढ़ती रहो, ये बातें क्रमशः साफ हो जाएँगी, और तुम्हें अपने रिश्तेदारों का संग क्रमशः असहनीय मालूम पड़ता जायेगा और तुम श्रीश्रीठाकुर का, श्रीश्रीमाँ का, स्वामीजी तथा उनके गुरुभाइयों का, उनके भक्तों के संग की कामना करती रहोगी।

अपने इष्टमन्त्र का जप मन में हर घड़ी जपने का अभ्यास करो। एक महीने बाद मुझे लिखो।

मैं प्रभु से तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ करता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(१८५)

१ मार्च २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी जनवरी की चिट्ठी ४ फरवरी को यहाँ पहुँच गई थी। श्रीश्रीमाँ के स्मरण मात्र से ही तुम्हारी उलझने दूर हो जाती है, पढ़कर मैं आश्वस्त हुआ।

क्या चाहती हो ? जिसे कहने का साहस नहीं है ? तुम कैसा जीवन बिताना चाहती हो, मुझे क्यों नहीं लिखती ? मैं इतना तो अवश्य जानता हूँ कि अगर तुम सचमुच किसी एक विशेष प्रकार से अपने जीवन को बिताना चाहती हो तो उसमें कोई भी बाधा नहीं डाल सकता। इसलिए तुम निःशंक कह सकती हो। इच्छा बुद्धि पर निर्भर होती हैं, बुद्धि अपने पुराने कर्म से उत्पन्न संस्कारों पर निर्भर करती है, इसलिए अगर तुम्हारी इच्छा दृढ़ है तो इसका अर्थ यही हुआ कि तुम्हारी उस इच्छा के पीछे तुम्हारी बुद्धि का सहारा है। तुम्हारे इच्छा के दृढ़ होने का अर्थ यही है कि वह पूर्ण होने वाली है जैसे रात जब बहुत घनी, गहरी हो जाती है तो लोग समझ जाते हैं कि सुबह करीब है। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो। जवाब भिजवाने में देर हो सकती है पर जवाब मैं अवश्य ही भिजवाऊँगा।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, तथा स्वामीजी महाराज से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

सत्संग करो, सत्प्रयास करो, धीरे-धीरे सब हो जाएगा।

–श्रीमाँ सारदा देवी

(१८६)

६ मार्च २००३

प्रिय ...,

तुम्हारी १८ फरवरी की चिट्ठी यहाँ २६ फरवरी को पहुँची।

जपमाला तुम्हें मिल गई, तुमने पैसे मनीआर्डर से भेज दिए, ठीक किया। तुम एक काम और करो, समय निकल कर हमारे अलमोड़ा शहर के आश्रम चले जाओ। वहाँ का पता है – Ramakrishna Kutir, Bright End Corner, P.O. & Dist-Almora २६३६०१, और वहाँ का टेलीफोन नम्बर है, (०५९६२) ३०६६७ तथा ३४५७३, अगर चाहो वहाँ पहुँचने से पहले वहाँ के साधुओं से टेलीफोन पर बात भी कर सकते हो। वरना हरिद्वार भी जा सकते हो। हरिद्वार में हमारे आश्रम का पता इस प्रकार है – Ramakrishna Math and Ramakrishna Mission Sevashrama, P.O. Kankhal, Dist- Hardwar PIN २४६४०८, टेलीफोन नम्बर (०१३३) ४१६१४१, या ४१४१७६, या ४२२१८३, यहाँ भी टेलीफोन से बात कर सकते हो, मेरी चिट्ठी का भी हवाला दे सकते हो। अलमोड़ा या हरिद्वार के साधु लोगों से जप करने की विधि पूछ लोगे तो वे तुम्हें बताएंगे। इस चिट्ठी को साथ ले जाना। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

> धन जिसके लिए दास की तरह है वही ठीक ठीक मनुष्य है। जो धन को योग्य रीति से उपयोग करना नहीं जानता वह 'मनुष्य' कहलाने लायक नहीं है।
> – श्रीश्रीरामकृष्णदेव

(१८७)

२५ अक्टूबर २०००

प्यारी बेटी ...,

तुम्हारी १० अगस्त की चिट्ठी यहाँ २४ अगस्त को मिली थी। जवाब भिजवाने में देर हो रही है।

चलो अच्छा हुआ कि घर पर ही रह कर जप कर रही हो। जहाँ तक कर सकती हो एक ही आसन पर बैठ कर संख्या रखती हुई जप करो। तुमने १०८ की बात की है, तुम्हें नहीं मालूम श्रीचैतन्य महाप्रभु दो लाख जप किया करते थे, उनकी पत्नी विष्णुप्रिया ढाई लाख। हमारे साधुओं में स्वामी विरजानन्द महाराज किसी समय एक लाख आठ हजार तक गिनती रखकर जप किया करते थे, अब समझ लो ! श्रीमूर्ति का ध्यान तुम्हारे मन की निर्मलता पर निर्भर है। अपने मन में आते हुए विचारों के क्रम से परिचित होने की कोशिश करती रहो, जैसे कमरे को साफ करने से पहले उसमें कहाँ कहाँ गन्दगी है उससे परिचित होती हो और फिर उसे साफ करने में देर नहीं लगती। अपने मन की वासनाओं से परिचित जो जाओ। ये बातें तुम्हें मैंने पहले भी लिखी थी। तुम्हें याद होगी।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, तथा स्वामीजी महाराज से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

> जिसमें आत्मविश्वास नहीं, वही नास्तिक है। प्राचीन धर्मों में कहा गया है, जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता वह नास्तिक है। अभिनव धर्म कहता है, जो आत्मविश्वास नहीं रखता वहीं नास्तिक है।
>
> – स्वामी विवेकानन्द



(१८८)

२६ अक्तूबर २०००

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १८ अगस्त की चिट्ठी यहाँ २४ अगस्त को पहुँच चुकी थी तुम्हें जवाब लिखवा कर भिजवाने में देर हो गई है।

जब तुमने श्रीश्रीठाकुर के नाम को अपना आश्रय बनाया है तो तुम्हारे लिए सबसे अच्छा उपाय यही है कि संसार कि चिंता उन्हीं पर छोड़ो। उनके फोटोग्राफ के सामने अकेली बैठकर उनसे कहो, "हे प्रभु इन सब झमेलों से मुझे निकालो, मैं दिनरात हर घड़ी तुम्हारा नाम जपना और मेरा तन-मन-धन तुम पर न्यौछावर करना चाहती हूँ। हे प्रभु मुझसे तो और सहा नहीं जाता।" इस प्रकार उन्हें खूब मनाया करो। तुम्हारी प्रार्थना अत्यन्त व्याकुल होने पर वे अवश्य सुनेगें। निश्चिन्त रहो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ तथा स्वामीजी महाराज से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१८६)

२६ अक्टूबर २०००

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी अगस्त की चिट्ठी यहाँ १३ अगस्त को पहुँची थी।

जब तक तुम समझती हो कि वेदान्त, आदि तुम्हारे बस की बात नहीं, तब तक वैसा ही रहेगा। संसार से निपट लेने के बाद उनके सम्बन्ध में जब जिज्ञासा उत्पन्न होगी तो उपनिषद पढ़ाने के लिए आचार्य भी तुम तक पहुँच जाएँगे।

फिलहाल एक हाथ से संसार को संभालो और दूसरी हाथ से श्रीश्रीठाकुर की जहाँ तक हो सके सेवा करती रहो।

म... से कहो स्वामी विवेकानन्द के फोटोग्राफ देखकर उसकी study करे फिर जब उनका चित्र बनाने बैठे तो पहले स्वामीजी से उस चित्र में अपने आप को प्रकाशित करने के लिए प्रार्थनाएँ करे।

म... तथा पी... को मेरी तरफ से दीपावली की greeting और शुभकामनाएँ कहना।

मैं तुम सब की भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१६०)

यह पत्र मूल अंग्रेंजी भाषा से अनुवादित हुआ है

२६ अक्टूबर २०००

प्रिय... आनन्द,

दिनांक २५ अगस्त २००० को लिखा तुम्हारा पत्र यहाँ २८ अगस्त २००० को पहुँच गया। इसके लिए धन्यवाद। तुम यह जानते ही हो और हम लोगों को भी ऐसा ही विश्वास है कि रामकृष्ण मिशन के... केन्द्र के संचालक के रूप में तुमको श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ और स्वामीजी महाराज का अनुमोदन प्राप्त है।

तुमने अब तक बहुत ही कुशलता से कार्य किया और अब इसी प्रेरणा से सेवा कार्य करते जाओ।

मैं तुम सब की भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१६१)

प्रिय ...,

तुम्हारी २२ जनवरी की चिट्ठी यहाँ २८ जनवरी को पहुँची। अपने परम्परागत व्यवसाय पर मन लगाओ उसी में भला हो बुरा हो, उसे छोड़ो नहीं। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो, श्रीश्रीठाकुर का नाम हर घड़ी मन ही मन जप करते रहो और इस प्रकार से जैसे जैसे तुम्हारा मन तुम्हारे इष्टदेवता के प्रति लगने लगेगा, तुम्हारे सांसारिक कर्म का निर्वाह अनायास होने लगेगा।

मैंने यह पत्र हिन्दी में ही लिखवाया है क्योंकि मराठी में अनुवाद कराने में देर होती। शायद तुम्हें पढ़ने तथा समझने में दिक्कत नहीं होगी। अपनी अगली चिट्ठी में मुझे लिखो की हिन्दी तुम समझ लेते हो या नहीं। अगर नहीं पढ़ पाते हो तो मराठी में ही पत्र भिजवाया करूँगा।

मैं तुम सभी के लिए हमारे प्रभु से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१६२)

५ फरवरी, २०००

प्रिय ...,

तुम्हारी १७ जनवरी की चिट्ठी यहाँ २४ जनवरी को पहुँची।

श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करते रहो। व्याकुल हो कर प्रार्थना करने पर वे सुनते हैं। मैं तुम्हारे परिवार के लिए उनसे निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१६३)

१ फरवरी २००२

प्रिय शिष्या ...,

तुम्हारी १५ दिसम्बर की चिट्ठी ३१ दिसम्बर को यहाँ पहुँची।

अपनी चिट्ठी में जप करते समय के अनुभवों के बारे में तुमने जो लिखा था क्या अब भी वैसे अनुभव तुम्हें हुआ करते हैं ? इस पत्र के उत्तर में तुम मुझे अपने स्वास्थ्य के बारे में लिखो। कभी कभी स्वास्थ्य के कारणों से ऐसे अनुभव हो सकते हैं। लेकिन इसमें परेशान होने की कोई बात नहीं। मुझे लिखो दिनरात में तुम कितनी संख्या में जप करती हो तथा कितनी देर तक ध्यान करती हो। मुझे यह भी लिखो कि तुम्हारे घर पर कितने और कौन कौन लोग हैं तथा दिनभर में तुम क्या क्या करती हो। जप ध्यान रोको नहीं।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(१६४)

३० मार्च २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ३१ दिसम्बर तथा २१ फरवरी की दो चिट्ठियाँ यहाँ पहुँची।

जो लोग अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले होते हैं वे ज्यों ज्यों उस मार्ग पर आगे बढ़ते हैं सारे संसार के दुःख, सारे संसार के कष्ट उनके सर पर चढ़ जाते हैं। श्रीश्रीठाकुर का जीवन देख लो। आठ साल की ही उम्र में ही पितृवियोग सहना पड़ा। फिर थोड़े ही दिनों में रोजगार करने के लिए कलकत्ते आना पड़ा। दक्षिणेश्वर में भी क्या हृदयराम से लेकर उन्हें कष्ट नहीं सहना पड़ा ? सारदा माँ का जीवन, जानकी माँ का जीवन, जिन्हें जन्मदुःखिनी कहते हैं, तुमने देखा नहीं ? इनके बावजूद भी सारदा माँ का, जानकी माँ का जीवन तो भारतीय नारी का आदर्श जीवन ही तो है ? अगर है तो तुम्हें दुःख में, कष्ट में पीड़ा किस बात की ? तुम्हें नहीं मालूम, "सुख-दुःख या संसार में सब काहू को होय। ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय।।" ? अपने ही कष्टों से घबरा जाओगी तो संसारियों के कष्ट के निवारण के लिए अपनी योग्यता कैसे बढ़ा पाओगी ? प्रभु का नाम लेती हो और शोक-दुःख से घबराती भी हो। माँ सारदा, माँ जानकी, इनके जीवन में तो ऐसा नहीं हुआ।

रामकृष्ण-सारदा पर ही भरोसा रखो और प्रबल उत्साह के साथ काम-काज करते रहो। मैं उनसे तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द



(१६५)

२० मार्च २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ११ फरवरी की चिट्ठी यहाँ १८ फरवरी को पहुँच गई थी।

तुम्हारी माँ तथा तुम्हारे भाई ली... से कहो कि तुम्हारे पिता ने यह समझ कर ही कि उनकी अनुपस्थिति में तुम लोग तुम्हारे परिवार का दायित्व संभालने में समर्थ होगे, अपने शरीर का त्याग किया है। किसी व्यक्ति की अकालमृत्यु की वजह यही होती है कि वह अपनी वर्तमान अवस्था में ४०-५० वर्ष और व्यतीत नहीं करना चाहता और जब उसकी अन्तरात्मा उसे बताती है कि उसकी पत्नी काफी धीर-स्थिरमती वाली महिला है, शोकातुर नहीं हो जाती, तब वह उसके कन्धों पर अपना बोझ उतार कर चला जाता है।

मुझे चिट्ठियाँ लिखा करो। अपनी माँ से, ली...से, छोटी बहन से कहो मुझे पत्र लिखे।

मैं तुम्हारे सभी के लिए श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, तथा स्वामीजी महाराज से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(१६६)

३० जनवरी २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १३ जनवरी की चिट्ठी २२ जनवरी को यहाँ पहुँच गई थी।

तुमने मन्त्र दीक्षा इसलिए नहीं ली थी कि इतनी बार मन्त्र का जप करोगी तो श्रीभगवान दौड़कर तुम्हारे पास आकर तुम्हें दर्शन

देंगे। एक-डेढ़ साल का बच्चा अपनी माँ से जब अलग हो जाता है तो वह माँ-माँ कहकर बेतहा रोता है। वह बिलख-बिलख कर रोता ही रहता है जब तक उसकी माँ उसे नहीं मिल जाती। श्रीश्रीठाकुर ने भी कहा है अगर दो ही दिन कोई श्रीभगवान के लिए वैसी व्याकुलता के साथ रोता है तो उसे उनके दर्शन मिलते हैं। इसलिए इतने दिनों में या इतना बार जप करने से मुझे श्रीभगवान के दर्शन मिलेंगे, ऐसा न सोचो।

स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज का कहना है कि श्रीभगवान के दर्शन के बाद आध्यात्मिक जीवन का शुभारम्भ होता है। जो बालक सचिन तेंदुलकर को देखने के लिए उतावला होता है लेकिन तेंदुलकर जैसा cricketer बनना नहीं चाहता उसके उतावला होने का अर्थ ही क्या है ? तुम्हें पूर्व कि ओर बढ़ना हो तो पश्चिम को तो पूरी तरह ही पीछे छोड़ना पड़ेगा। इसी तरह तुम्हारी बुद्धि से तुम्हारे इष्टदेवता की भावना के अलावा और सारी भावनाएँ निकल जायेंगी तब तुम्हारी बुद्धि शुद्ध हो जावेगी, तुम्हारा मन शुद्ध हो जायेगा, उस शुद्ध मन में तुम्हें आत्मदर्शन होगा। फिलहाल तुम्हारे हृदयस्थ श्रीभगवान जैसे तुम्हें चला रहे हैं वैसे ही अपनी दिनचर्या का पालन करती रहो। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रभु से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। इस विषय पर किसी से बातें न करो, न ही किसी को मेरी चिट्ठियाँ पढ़ने दो।

तुम्हारा सतत शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द

> प्रसाद और प्रभु में कोई भेद नहीं है, मन में ऐसा दृढ़ विश्वास रखना।
>
> -श्रीमाँ सारदा देवी



(१६७)

मार्च २०, २००२

प्रिय ...,

तुम्हारी ७ मार्च की चिट्ठी १४ मार्च को यहाँ पहुँच गई। बीच के अक्षर को ... इन, अक्षरों के संयोग से उत्पन्न समझो। ... आदि शब्दों में ह्रस्व-इकार का उच्चारण होता है - ... में दीर्घ ईकार का उच्चारण करो। संसार से दिल जब वास्तव में हट जायेगा तब तुम्हारे इष्टदेवता तुम्हें अपने संसार के कर्म में संसारियों की सेवा में लगाएंगे। फिलहाल उनका नाम लेते रहो।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रभु को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(१६८)

२० मार्च २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १० नवम्बर की चिट्ठी तुम्हारे दीपावली के Greeting card के साथ १८ नवम्बर को ही यहाँ पहुँचकर कहीं दब कर रह गई थी।

अब तक तो समझ गई हो कि इस संसार में तुम्हारा अपना कुछ भी नहीं, यहाँ तक कि तुम भी श्रीश्रीठाकुर की, श्रीश्रीमाँ की हो चुकी हो, उनके हाथों की पुतली बन चुकी हो। वे ही अब तुमसे जो कुछ करा लेते है, करती रहो और इस तरह प्रसन्नचित्त होवो। उन्होंने ही तुम्हें पी..., म... की, तुम्हारे पति के देखभाल में तुम्हें नियोजित किया है, तो उनकी सेवा में उनकी देखभाल करती रहो। फिर देखना, तुम्हें इस कर्म में, हर कर्म में आनन्द मिलेगा।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम सब की भलाई के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ, जो कि तुम्हें मालूम है।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(१६६)

५ फरवरी २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २४ जनवरी की चिट्ठी १ फरवरी को यहाँ पहुँची।

तुमने लिखा है कि - "अपना समय, इस जीवन का पल-पल निकला जा रहा है; क्या करूं" लेकिन बात तो यही है कि तुम कर कुछ भी नहीं रही हो। घटनाएँ घट रही हैं और कुछ घटनाएँ तुम्हें विचलित कर देती हैं, जैसे सिनेमा-हाल में कोई फिल्म देखती हो और वहाँ भी किसी बात पर तुम रो पड़ती हो, - तो कभी प्रसन्न भी होती हो। बात इतनी-सी है। संसार में सुख कि आशा कैसे करती हो ? तुम्हारे इतने अनुभवों के बाद भी संसार के

स्वरुप को लेकर तुम्हें संदेह रह गया है ? श्रीश्रीमाँ के, श्रीश्रीठाकुर के, स्वामीजी महाराज के, उनके गुरुभाइयों के, मठ के आज तक के सारे साधुओं-संन्यासियों के जीवन में तुम्हें क्या कहीं सांसारिक सुख देखने को मिला है ? अगर वे प्रसन्नचित्त मालूम पड़ते हैं तो वह इसलिए कि सांसारिक दुःख उन्हें परेशान नहीं करते। वे सभी संसार के स्वरुप से परिचित हैं। रामायण-महाभारत के महान चरित्रों को देखो, श्रीराम, श्रीलक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, जानकीमाता, उर्मिला, कौशल्या, कुंती, पंचपांडव, द्रौपदी आदि चरित्रों के बारे में सोचो और मुझे बताओ कि क्या इन्हें अपने जीवन में सुख मिला ? श्रीचैतन्य को, मीराबाई को, गौतम बुद्ध को, नानकदेव को, कबीरदास को, ईसा मसीह को संसार में कौन सा सुख मिला था ?

इसलिए फिलहाल जो काम कर रही हो, जिन लोगों की सेवा का अधिकार तुम्हें मिला है, ईश्वर ही की सेवा कर रही हो, इस बुद्धि से उनकी सेवा करो। तुम्हारी बुद्धि इस बात पर दृढ़ हो जाने पर तुम निश्चिन्त हो जाओगी। संसार से मिलना कुछ भी नहीं, तुम्हें उसकी अपने सामर्थ्य के अनुसार सेवा भर करनी है, यही प्रभु की सेवा है।

ऐसा अहंकार कभी न करो कि प्रभु की लीला समझ जाओगी। दिलोजान से सबकी सेवा करो। श्रीराम ने, श्रीकृष्ण ने, श्रीचैतन्य ने, श्रीरामकृष्ण आदि सभी ने यही किया, तुम्हें भी यही करना है। उड़ीसा में दो साल पहले तूफान आया था, तबाही मच गई थी। लेकिन लोगों ने तूफान से पीड़ित लोगों की सेवा भी की, तुम भी तूफानों से घबराओ नहीं।

मैं हमेशा की तरह श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२००)

२० मार्च २००२

प्रिय ...,

तुम्हारी १ मार्च की चिट्ठी १४ मार्च को यहाँ पहुँची।

मन्त्र को जैसे तुमने लिखा है वैसे ही उच्चारण करो। जैसे व... कह कर जब कोई तुम्हारे आसपास खड़े होकर पुकारता है तो भले ही उसे व... शब्द का अर्थ न मालूम हो, वह तुम्हारा ध्यान आकर्षित करने में सफल हो जाता है। व..., शब्द के अर्थ से तुम्हारे व्यक्तित्व से, व्यक्ति सत्ता से कोई सम्बन्ध नहीं। मन्त्र तो देवताओं के शरीर होते हैं, बारम्बार जपते रहने से तुम्हारे मन में नए संस्कार पनपेंगे, फिर इन बातों को तुम और अच्छी तरह समझोगे। कहीं भी रहो हर घड़ी प्रभु का नाम जप करने की कोशिश करो।

मैं तुम्हारे लिए निरन्तर प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२०१)

२० मार्च २००२

प्रिय ...,

तुम्हारा २८ जनवरी का पोस्टकार्ड ५ फरवरी को यहाँ पहुँचा।

... की कमी महसूस कर रही हो, उस कमी को दूर करने के लिए अपने प्रभु, इष्ट देवता का नाम मन में हर घड़ी लिया करो। मुझे लगता है तुम्हारी बुद्धि से संसार की आसक्ति गई नहीं है, अब तुम शादी करने की बात जो करती हो। अकेली कैसे जिओगी ? भगवान पर बिलकुल ही भरोसा नहीं है क्या तुम्हें ?

मैं तुम्हारी भलाई के लिए प्रभु को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२०२)

१८ अप्रैल २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ३० मार्च की चिट्ठी यहाँ पहुँच गई थी। जिस किसी ने तुम्हारे लिफाफे पर मेरा नाम लिखा है उसके लिए मैं मेरा नाम लिख रहा हूँ। मेरा नाम अंग्रेजी अक्षरों में इस प्रकार लिखा जाता है—Swami Gahanananda (SWAMI GAHANANANDA) और देवनागरी अक्षरों में, स्वामी गहनानन्द। तुम भी इसे याद कर लो।

अपनी चिट्ठी में तुमने अपने मन के आनन्द का जिस तरह बयान किया है मुझे बड़ी खुशी हुई। 'उपासना-पद्धति' के नियमों के अनुसार ध्यान-जप-उपासना बराबर कर रही होगी। इसके अलावा जब भी फुरसत मिले मन में हर घड़ी जप करने का अभ्यास बना डालो। प्रभु के नाम जपने में रूचि आ जाये तो देखोगी किस लगन के साथ तुम जप करोगी और तब समझोगी की आनन्द किसे कहते हैं, जीवन की गति को तीव्रता से बदलना किसे कहते हैं, प्रभु का नाम खूब जपती रहो।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक इच्छा के पूर्ति लिए हर घड़ी प्रभु को, श्रीश्रीमाँ को तथा स्वामीजी महाराज को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारे सतत शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द



(२०३)

१८ अप्रैल २००२

प्रिय ...,

तुम्हारा पत्र यहाँ ३० मार्च को पहुँचा जिस पर तुमने तारीख नहीं डाली थी। मेरे नाम को स्वामी गहनानन्द लिखा करो, तुमने इसे गलत ढंग से लिखा है।

तुमने लिखा है कि तुम्हारे मन में शान्ति नहीं है, मन कि इच्छाएँ पूरी नहीं होती। लेकिन देखो ..., तुम सोच रहे हो कि मन की तुम्हारी वर्तमान इच्छाएँ पूरी हो जावें तो तुम्हारा मन शान्त हो जावेगा, ऐसा सोचना गलत होगा। आज तक जो कुछ भी इच्छाएँ तुम्हारे मन में उत्पन्न हुई हैं, दो चार अगर पूरी नहीं हुई हो तो कुछ दिनों में हो जावेंगी, लेकिन ..., मन उससे शान्त नहीं होगा। शान्त इसलिए नहीं होगा कि तुम्हारा शान्ति से परिचय नहीं है। शान्ति तो तब आती है जब तुम्हारे मन में इच्छाओं का उत्पन्न होना बन्द हो जावे। यह तो तुम्हें अभी होना नहीं है, इसलिए फिलहाल अपने दीक्षामन्त्र का 'उपासना-पद्धति' के नियमों का पालन करते हुए जप करते रहो, और दूसरे अवसरों पर भी यथाशक्ति हर घड़ी मन में जप करो।

मैं प्रभु से तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(२०४)

१८ अप्रैल २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ ८ अप्रैल को पहुँच गई। अपने आप को छोटी न समझो। तुम्हारी बुद्धि में तथा तुम्हारी उम्र में कोई सम्बन्ध नहीं है। बुद्धि का उत्कर्ष तो इस बात पर निर्भर करता है कि किसी व्यक्ति ने अपने वर्तमान जीवन तथा पूर्व जीवनों से क्या कुछ सीखा है।

स्कूल का होमवर्क तो तुम्हें करना ही पड़ेगा लेकिन अगर हो सके तो तुम्हारी माँ जो काम करने के लिए कहती है उसे कुछ आगे-पीछे कर लो। वैसे उस काम को भी मन लगाकर फुर्ती के साथ करोगी तो काम जल्दी खत्म कर लोगी। सुबह का समय जप-ध्यान के लिए अच्छा होता है, मन कुछ शान्त होता है, इसलिए आसन पर बैठकर अधिक से अधिक समय नियमानुसार ध्यान-जप करती रहो। अगर तुम मन में अपने इष्टमन्त्र को हर घड़ी जपने का अभ्यास बना लेती हो तो तुम्हें अपने मन को शान्त करने के लिए और कुछ करना नहीं पड़ेगा। अपने मन के साथ तुम सम्बन्ध भी बना सकती हो, उससे बातें भी कर सकती हो, तुम्हें मालूम होगा शुद्ध मन ही शुद्ध आत्मा है, तुम्हारा शुद्ध मन तुम्हारी शुद्ध आत्मा है। इसी मन को इसके शुद्ध हो जाने पर तुम श्रीरामकृष्ण के रूप में, अपने आदर्श स्वरुप से जानोगी। फिलहाल अपने मन पर निगरानी रखो, देखती रहो कि वह हर घड़ी क्या क्या सोचता रहता है। जब भी अकेली होती हो, अपने मन को देखो वह क्या सोच रहा है, इस प्रकार एक महीने तक करती रहो फिर मुझे लिखो।

मैं तुम्हारे लिए प्रभु से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२०५)

२० मार्च २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ४ तथा ६ फरवरी की चिट्ठियाँ मिलीं। प्रभु ही तो अनुक्षण तुम्हारे साथ हैं, चिन्ता तुम्हें किस बात की है। बच्चों के बारे में, अपने पति के बारे में जो कुछ चाहती हो वही होगा, केवल श्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के प्रति भरोसा रखो। रामदाना यहाँ मिलता भी है क्या ? मुझे तो नहीं मालूम।

मैं तुम सभी लोगों के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२०६)

२० मार्च २००२

प्रिय ...,

जयपुर से प्रकाशित ५ फरवरी के सायंकालीन 'समाचार-जगत' का तुम्हारा 'विवेकानन्द और भारतमाता' शीर्षक लेख अच्छा रहा।

हमारे रामकृष्ण मठ तथा मिशन के आठवें अध्यक्ष समय विशुद्धानन्दजी महाराज एक कहानी कहा करते थे, कभी किसी समुद्रयात्रा के मध्य में एक पानी का जहाज एक भारी समुद्री तूफान में फंस गया था। सभी लोग बहुत परेशान थे, लगता था की अभी सब की वही जल-समाधि होने वाली है। ऐसे समय में एक औरत ने देखा की उसका पति शान्त भाव से खड़ा है व समुद्र को देख रहा है। वह अपने पति की ऐसी प्रशान्त मुद्रा देखकर घबरा गई और पूछा, तुम इस तरह शान्त कैसे खड़े हो ? तुम्हें डर नहीं लग रहा की जहाज अब किसी भी वक्त डूब सकता है ? जवाब में उसके पति ने अपने जेब से रिवाल्वर निकालकर अपनी पत्नी को निशाना बनाया। पत्नी ने कहा, यह क्या है? इसका क्या मतलब ? पति ने कहा कि तुम्हें डर नहीं लग रहा कि अब तुम किसी भी वक्त मर सकती हो ? पत्नी ने कहा, तुम्हारे हाथों मरने में मुझे डर किस बात का हो ? पति ने फिर उसे समझाया, तुम मुझे प्यार करती हो, इसलिए मेरे हाथों मरने से नहीं डरती हो। वैसे ही मैं उस करुणानिधान परमात्मा से प्यार करता हूँ, उनके हाथों मरने में मुझे किस बात का डर ?

ऐसे ही वर्तमान की समस्याओं के बारे में समझो। प्रभु पर भरोसा रखो। होइ वही जो राम रचि राखा।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए निरन्तर प्रभु को मनाया करता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

पुनः :- तुमने 'रामकृष्ण मिशन' के छपे हुए लिफाफे में अपना लेख भेजा है। 'मिशन' की लेखन सामग्री का इस प्रकार उपयोग मुझे ठीक नहीं लगा।

स्वामी गहनानन्द

(२०७)

१८ अप्रैल २००२

प्रिय रा ...,

तुम्हारा १८ मार्च का पत्र ३ अप्रैल को यहाँ पहुँचा।

अपनी माँ से बिछुड़ा हुआ बालक अपनी माँ को चाहता है, उसका नाम लेता रहता है, नाम लेकर पुकारता है, रोता रहता है, व्याकुल होकर पुकारता रहता है। प्रार्थना का मतलब प्रकृष्ट रूप से अभ्यर्थना, अर्थ का अर्थ हुआ प्रयोजन। बालक अपनी माँ से बिछुड़ तो गया है लेकिन उसकी माँ उसकी अपनी सत्ता में ओतप्रोत है, वह हरघड़ी माँ की ही बात सोचता रहता है। ठीक वैसे ही श्रीश्रीठाकुर के प्रति तुम्हारी प्रार्थनाओं के सम्बन्ध में समझो। तुम्हारी अपनी सत्ता श्रीश्रीठाकुर की सत्ता से ही पूर्णतः ओतप्रोत है, जैसे बालक की सत्ता उसकी माँ से। इस बात को तुम्हें समझना पड़ेगा, समझ जाओगे तो फिर उस बालक की तरह ही व्याकुल होकर पुकारोगे फिर तुम्हें एकाग्रता की तलाश में भटकना नहीं पड़ेगा। प्रभु के साथ अपने सम्बन्धों को आनुष्ठानिक, औपचारिक न बनाकर, स्वाभाविक बनाओ। वास्तव में प्रभु तुम्हारे आदर्श स्वरुप है, अभी अगर तुम्हें समाधि लग जावे तो, पहले अपने आदर्श, शुद्ध, निर्मल, पवित्रतम स्वरुप का श्रीश्रीठाकुर के रूप में दर्शन करोगे, तब ही समाधि लगेगी। अभी फिलहाल हर घड़ी मन में प्रभु का नाम लेने का अभ्यास बना डालो।

मैं उनसे तुम्हारी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ करता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२०८)

१७ अप्रैल २००२

प्रिय ...,

तुम्हारी २१ मार्च की चिट्ठी यहाँ ३ अप्रैल को पहुँची थी।

दीक्षा के अवसर पर तुम्हें दी गई 'उपासना-पद्धति' नाम की पुस्तिका में बताई गई विधि के अनुसार प्रतिदिन नियमपूर्वक ध्यान-जप-उपासना कर लेने के बाद १०८ बार अपने पुराने मन्त्र का जप करो, उस मन्त्र का मैंने शोधन कर दिया है, तुम उसे गलत ढंग से उच्चारण करते थे। ... - ऐसे उच्चारण करो - इकार का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए। ... - इस प्रकार उच्चारण करो।

इसके अलावा श्रीश्रीठाकुर के मन्त्र का हर घड़ी मन ही मन जपते रहने का अभ्यास करो तथा रामकृष्ण मठों से प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन भी जारी रखो।

मैं तुम्हारे मन्त्र लिखे कागजों को इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ। याद हो जाने पर इन कागजों को नष्ट कर दो ताकि किसी के हाथ न लगे।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२०६)

१७ अप्रैल २००२

प्रिय ...,

तुम्हारा १ फरवरी का पत्र यहाँ १२ फरवरी को पहुँच गया था। तुम्हें अपनी बुद्धि के अनुसार किसी देवता की पूजा करने से पहले तुम्हारे लिए उचित है कि दीक्षा के दिन प्राप्त 'उपासना-पद्धति' के अनुसार यथाविधि उपासना-ध्यान-जप का क्रम पूरा करो। इसके अलावा हर घड़ी मन में श्रीश्रीठाकुर के नाम को जपते रहने का अभ्यास बना लो।

अपनी चिट्ठियों में तारीख डाला करो और अपने पिन कोड के साथ अपना पूरा पता भी लिखा करो। गलती हो तो माफ करना लिखो, लेकिन गलती न हो ऐसी चिंता ऐसे प्रयास से अत्यधिक आवश्यक है। पुणे मठ के रामकृष्ण-विवेकानन्द साहित्य की पुस्तकें लेकर उसका अध्ययन करो।

मैं श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारी भलाई के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(२१०)

१७ अप्रैल २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २६ मार्च की चिट्ठी यहाँ १ अप्रैल को पहुँच गई थी। तुम्हारी आयु कितनी हो गई ? समाज शास्त्र (आनर्स) की डिग्री मिल जाने के बाद क्या करोगी ? अगर एम.ए.(समाज शास्त्र) करती हो तो उसके बाद क्या करोगी ? तुम्हें विवाह करने या न करने को लेकर बड़ी चिन्ता है और शायद इस सम्बन्ध में साधुओं से मार्गदर्शन मांगती रहती हो। अपने आध्यात्मिक जीवन को मुझे लगता है कि अभी तक तुम गम्भीरतापूर्वक नहीं ले पाई हो, तुम्हें शायद यह जीवन एक सामाजिकता मात्र ही लगता है। मुझे तो सन्तोष तब होगा जब मैं देखूंगा कि ३-४ महीनों में ... हर घड़ी मन में अपने इष्टमन्त्र के जप का अभ्यास कर लिया है। परीक्षाएँ हो जावें तो मन लगाकर हर घड़ी जप करती रहो। नयी दिल्ली के रामकृष्ण मिशन में जब जाओ तो सारा समय मन्दिर में श्रीश्रीठाकुर के पास बैठकर ध्यान करने तथा पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर पढ़ने के लिए ही बिताया करो। फिलहाल केवल जप करने में ही लग जाओ, जप करने में रुचि आ जाने पर तुम्हारा मन किसी भी बात पर लगेगा नहीं।

मैं श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएं करता रहता हूँ कि वे तुम्हारे मन को दुनियादारी से अनासक्त कर उनके नाम रटने में लगा दें।

तुम्हारा सतत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(२११)

१८ अप्रैल २०००

प्रिय ...,

तुम्हारी बगैर तारीख की चिट्ठी यहाँ १६ फरवरी को पहुँच चुकी थी।

जो बालक तीसरी कक्षा में पढ़ता हो, उसके मन में एम.ए. क्लास के प्रश्न तो नहीं उठ सकते ! वैसे प्रश्न उसके मन में तभी उठ पाएँगे जब वह एम.ए. क्लास में पढ़ रहा होगा। इसका अर्थ क्या यही नहीं हुआ कि प्रश्नकर्ता के प्रश्नों का उत्तर प्रश्नकर्ता के ही मन में हुआ करता हैं ? अगर ऐसा न हो तो किसी के बताने पर भी वह उन प्रश्नों के उत्तर समझ नहीं पायेगा। इसलिए तुम्हारे प्रश्नों का हल तुम्हें ही निकालना पड़ेगा। जैसे कोई तुमसे कहे कि तुम्हारे मुँह पर एक धब्बा लगा है। उसे सुनकर तुम परेशान हो जाते हो और जब तक उसे हटा नहीं लेते तुम्हें बेचैनी रहती है। उसे हटाने के लिए तुम एक आइने के, दर्पण के सामने उपस्थित होते हो जिसमें तुम्हारा धब्बा लगा चेहरा प्रतिबिम्बित होता है और फिर तुम धब्बे को मिटा देते हो। यहाँ तुम्हारे हृदयस्थित तुम्हारे इष्टदेवता ही तुम्हारे लिए वह आइना या आदर्श या दर्पण हैं जिनके सम्मुख उपस्थित होने पर, जिनका ध्यान करने पर तुम्हें तुम्हारे प्रश्न तथा उनके उत्तर दोनों अलग अलग देखने को मिल जाते हैं। इसलिए फिलहाल एक महीने तक हर घड़ी लगातार अपने इष्टमन्त्र का मन में जप करते रहने का अभ्यास करने में लग जाओ, संख्या रखने की आवश्यकता नहीं। फिर मुझे लिखो।

मैं तुम्हारे लिए हमारे प्रभु को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२१२)

१७ अप्रैल २००२

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २६ जनवरी की चिट्ठी २ फरवरी को ही यहाँ पहुँच गई थी लेकिन न जाने क्यों मेरे पास वह आज ही आई। इस पत्र में पूरी बात तो अभी मैं लिख नहीं पा रहा हूँ, लेकिन तुम अभी कुछ दिनों तक लगातार मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो, मैं तुम्हें बताता रहूँगा कि तुम्हें कोई तकलीफ, कोई मनोरोग आदि नहीं हैं।

मूल अवधारणा के बारे में स्पष्ट धारणा बहुत ही कम लोगों को होता है, इसमें घबराहट कि कोई बात नहीं हैं। जिन कम्पनियों में काम करती रही, वहाँ क्या करना पड़ता था ? तुम्हारी उम्र क्या है ? क्या अपने सुधार के लिए किसी और डिप्लोमा वगैरह के लिए पढ़ना चाहती हो ? श्रीश्रीठाकुर का विस्मरण होने की बात भूल जाओ। फिलहाल दो-तीन महीनों तक केवल इलेक्ट्रोनिक्स की किताबें पढ़कर मुझे चिट्ठियों में लिख कर बताओ की तुमने क्या क्या पढ़ा। अपनी अगली चिट्ठी के साथ मेरे इस पत्र की एक फोटोकॉपी भेज देना।

मैं तुम्हारी हर तरह की भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(२१३)

१८ अप्रैल २००२

प्यारी बेटी ...,

तुम्हारी ३ अप्रैल की चिट्ठी ४ अप्रैल को यहाँ पहुँच गई।

अपने जीवन की छोटी-छोटी बातों को लेकर परेशान क्यों हो जाती हो ? तुमने लिखा है कि तुम श्रीश्रीठाकुर की छवि को हमेशा के लिए हृदय में बिठा लेना चाहती हो, लेकिन तुम्हें इस बात की परेशानी नहीं है, तुम इस बात पर परेशान नहीं होती कि तुम्हारे हृदय में हमेशा के लिए श्रीश्रीठाकुर की छवि को बिठाने लायक जगह नहीं है, तुम्हारे हृदय में तो तुम्हारे सास-ससुर, तुम्हारा फ्लेट, तुम्हारा ठाकुरघर, तुम्हारा लड़का - इन्हीं लोगों ने जगह बना ली है। श्रीश्रीठाकुर के लिए तुम क्या जगह बनाओगी? जगह तो वे ही तुम्हारे हृदय में बना लेंगे जब तुम्हें पता चल जाएगा कि इस सांसारिक नाटक या ड्रामा की आलेखक या लेखिका तुम्हीं, हीरोइन भी तुम हो, और देखनेवाली भी तुम ही हो। क्रिकेट का कोई खिलाड़ी पहले सोच लेता है, निश्चित कर लेता है कि किस प्रकार उसे खेलना है, फिर उसकी बारी आने पर खेलता है, और अन्त में वीडियो में अपने खेल को दुबारा देखता है। फिलहाल श्रीश्रीठाकुर पर ही पूरी तरह निर्भर रहो, उन्हीं की सोचो, किसी और के बारे में नहीं। वे ही तुम्हें किसके लिए कब, कहाँ, क्या करना पड़ेगा बताएँगे और करवा भी लेंगे तुम्हें जो कुछ करवाना होगा। मन ही मन निरन्तर प्रभु का नाम लेती रहो। मैं तुम्हारी भलाई के लिए प्रभु को हरघड़ी मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२१४)

१६ जुलाई २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १ जुलाई की चिट्ठी यहाँ ८ जुलाई को पहुँच गई।

तुम्हारी चिट्ठी का जिसका उल्लेख तुमने किया है जवाब अब तक मिल गया होगा। तुम्हारे पूर्णविश्वास का ही दूसरा नाम भगवान् श्रीरामकृष्ण समझो - पूर्णविश्वास मिल गया मतलब वही मिल गए।

तुम दोनों के लिए मैं श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२१५)

१६ जुलाई २००४

प्रिय ...,

तुम्हारी ३ जुलाई की चिट्ठी यहाँ ७ जुलाई को पहुँची।

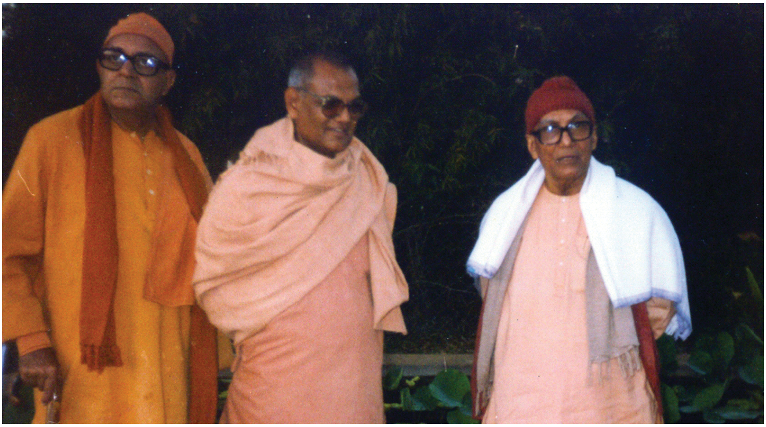
एक और चिट्ठी में जपमाला के बारे में लिखो कि जपमाला तुम्हें कहीं से मिल गई है या नहीं। सुदर्शन महाराज का अपनी चिट्ठी में तुमने नाम लिखा है क्या उनसे जपमाला के सम्बन्ध में तुमने बात की थी ? सुदर्शन महाराज हमारे संघाध्यक्ष स्वामी रंगनाथानन्द महाराज के सचिव हैं। मेरे सचिव का नाम स्वामी आत्मनिष्ठानन्द या सप्तर्षि महाराज है। उपासना पद्धति इस पत्र के साथ भिजवा रहा हूँ।

वि... को पुत्रशोक भूलने के लिए कैसे कहूं। उसे इस तरह कहो कि श्रीश्रीठाकुर का नाम वह जी भर ले सके, हर घड़ी ले सके, जैसे ले रही है, श्रीश्रीठाकुर की ही यह निर्मम व्यवस्था है। चिंता मत करो वह शान्त हो जावेगी।

मैं तुम लोगों की भलाई के लिए हमारे प्रभु, हमारी माँ को नित्य ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२१६)

२८ जून २००४

प्रिय ...,

तुम्हारी चार चिट्ठियाँ - २२ मार्च की एक, २५ मार्च की दो, तथा २६ मई की एक यहाँ पहुँची, पहली तीन ३१ मार्च को तथा अन्तिम ५ जून को।

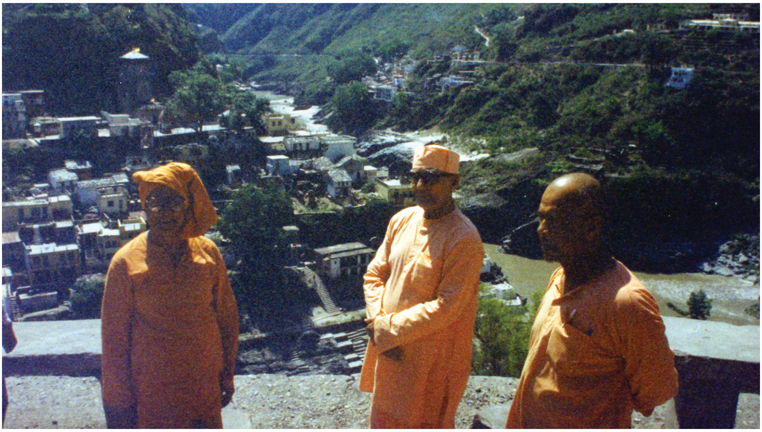
मुझे लगता तो नहीं की तुम्हारे में कोई खराबी या कमी या कमजोरी या दोष है। बात इतनी ही है कि जो कुछ तुम प्रकट में अर्न्तमन में कहते या सोचते हो उसे तुम चाहते नहीं हो। तुम्हारे इरादे पक्के नहीं होते। अगर थोड़ी देर तक अकेले में बैठकर अच्छी तरह सोच लो कि क्या चाहते हो और उस विषय में पक्की राय बना लो तो उस लक्ष्य तक पहुँचने में तुम्हें देर नहीं लगेगी।

मुझे मिलने की बात अलग रखो, पहले मुझे दिखाओ कि तुम ग्रेजुएशन पूरी कर सकते हो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करते रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२१७)

८ जुलाई २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १५ जून की चिट्ठी २१ को यहाँ पहुँची।

ऐसी क्या आफत आ पड़ी ? समय व्यर्थ कहाँ होता है ? लगन तो इसे कहते हैं कि दो साल में दाखिला नहीं मिला तो अगले साल के लिए तैयारियाँ करेंगे। Medical नहीं मिला तो Engineering, वह नहीं तो Pathology, यह कोई बात हुई ? उसे पढ़ने दो। वैसे शायद Pathology में आगे चलकर भी पढ़ाई की जा सकती है, पता कर सकती हो।

... ने भी पत्र लिखा है, लेकिन इस बारे में कुछ नहीं लिखा। मैं उसके लिए जवाब लिखवा चुका हूँ। तुम्हें मालूम है, होई है वही जो राम रची राखा। इसलिए अपने बच्चे के लिए परेशान न हो। प्रभु का नाम जपती रहो, इसी में अपनी भलाई है, जगत् की भी।

मैं तुम लोगों कि भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारे एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(२१८)

८ जुलाई २००४

प्रिय ...,

तुम्हारा ८ मार्च का फैक्स ठीक तरह से पहुँचा। तुम्हारी ७ और ८ मार्च की चिट्ठियाँ १३ मार्च को, २२ अप्रैल की चिट्ठी ८ मई को, २१ फरवरी की चिट्ठी १३ मार्च को, १० मई की चिट्ठी २० मई को तथा १३ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ २० मई को पहुँच गई। तुमने श्रीरामदरबार में श्रीराम के साथ जानकी माता, महावीर आदि के दर्शन किये, सौभाग्यवान हो। संसार के संस्कार जिन्हें

बहुत अधिक होते हों वे ही ऐसे दर्शनों के सम्बन्ध में सन्देह करते हैं, क्या देखा, सही देखा, गलत देखा, स्वप्न में देखा, लेकिन जब जिसने देखा उन क्षणों में उसके मन में ये प्रश्न तो उठे नहीं। तुम जब फोटोग्राफिक पेपर पर छपी श्रीश्रीठाकुर की तस्वीर के आगे प्रणाम कर सकते हो, प्रार्थनाएँ कर सकते हो, क्या तुम्हें यह बोध नहीं होता कि श्रीश्रीठाकुर ही के आगे प्रार्थनाएँ आदि कर रहे हो, या ऐसे भी सोचते हो कि क्या सही है, गलत है, वगैरह ? औरों की, सन्देह की बातों को छोड़ो। तुमने भी तो पवित्र आचरण की ही प्रार्थना की है, ऐसा कोई सांसारिक संस्कारों के वश में रहकर नहीं करता।

क... की बेटी की शादी हो गई, तुम्हारा फैक्स भी यहाँ पहुँच गया था, लेकिन हिन्दी पढ़ने वाले लोग योगोद्यान में नहीं ही हैं समझ लो, इसलिए लोग पढ़ नहीं पाए। लगता है मैं भी यहाँ नहीं था। क... तुम्हारी बेटी की शादी के बाद कहाँ रहेगी, क्या करेगी ?

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

इस मन्त्र को इस प्रकार लिखो और पढ़ो।

सुख-दुःख लेकर ही जीवन बीतता है, तुमने अपने जीवनकाल में श्रीश्रीठाकुर का नाम लेने का अधिकार अर्जन कर लिया है, इसी में तुम्हारी कामयाबी रही है। पुरानी बातें भूल जाओगे, ज्यों ज्यों श्रीश्रीठाकुर की भावना से ओतप्रोत हो जाओगे, भरपूर हो जाओगे।

मै तुम्हारे कल्याण के लिए हमारे प्रभु से, हमारी माँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द

(२१६)

१६ जुलाई २००४

बेटी ...,

तुम्हारी २ जुलाई की लिखी चिट्ठी यहाँ कल ही पहुँची। तुमने ठीक ही लिखा है कि जप करे तो वही सबसे बड़ी सेवा है। आन्तरिकता के बोध होने की बात तुमने लिखा है, लेकिन सोचो भी तो कि तुम्हारी निद्रा तो बहुत आन्तरिक ही हुआ करती है, लेकिन उसका तुम्हें बोध होता है क्या ? बोध के चक्कर में न पड़ो। इसीलिए स्वामीजी महाराज ने कर्मयोग की बात कही है। कर्मयोग का मतलब है छोटे-बड़े किसी भी यथाप्राप्त कर्म करना, जैसे बच्चियाँ तुम्हारे यहाँ आती है, उनसे कोई तुम्हारा लगाव तो नहीं होता, फिर भी उनकी सेवा में किसी तरह की लापरवाही तो नहीं करती। नारायण-ज्ञान से, शिवज्ञान से ही तो उनकी सेवा करती हो। इसी प्रकार छोटे-बड़े किसी भी कर्म के प्रति उसी मनोयोग, उसी श्रद्धा का भाव रखना। ऐसे भाव कि जब कोई कर्म करो, उसी में पूरी लगन लगा दो। मजे की बात है कि स्वामीजी ने जहाँ पूरे लगन को लगाने की बात कही है वहीं आवश्यकता होने पर सर्वस्व त्याग के लिए भी तत्पर रहने के लिए कहा है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक ही है, मैं १८ जुलाई से २१ अगस्त तक यूरोप के इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रान्स, स्विट्ज़रलेण्ड देशों के लिए १८ जुलाई को रवाना हो रहा हूँ। मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा हितैषी

स्वामी गहनानन्द

> एक ही गुरु कितने लोगों को मन्त्र देते हैं, पर सभी लोग क्या समान होते हैं? जो जैसा आधार है, उसमें वैसा ही विकास होता है।
>
> -श्रीमाँ सारदा देवी



(२२०)

१६ जुलाई २००४

बेटी ...,

तुम्हारी २३ जून की चिट्ठी यहाँ ७ जुलाई को पहुँची।

मन्त्र को फिर तुमने गलत लिखा, गुरूर्ब्रह्मा नहीं गुरुर्ब्रह्मा लिखो। "रू" और "रु" - पहले रकार में दीर्घ ऊकार की मात्रा है जैसे, कू, चू, टू, तू, पू वैसे ही रू। दूसरे रकार में ह्रस्व उकार की मात्रा हैं - जैसे कु, चु, टु, तु, पु वैसे ही रु। गुरु लिखो गुरू नहीं। इसी एक स्थान पर गलती हुई है, शेष ठीक है।

व्यावहारिक जगत् बड़ा कठिन है, इसीलिए तो साधु संन्यासी, श्रीभगवान् के पार्षद, भक्त सभी संसार को छोड़कर भगवान को ही आश्रय बनाते हैं। तुम्हें करना कुछ नहीं है, प्रभु का केवल नाम लेती रहो और जगत् के तमाशे को देखती रहो, उसे ऐसे देखो जैसे कोई व्यक्ति जो जानता है कि मरीचिका या मृगतृष्णा क्या है वह मृगतृष्णा के पानी को अपनी आँखों से लगातार देखते रहने पर भी उसे वास्तविक नहीं मानता।

गुरुपूर्णिमा के अवसर पर मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर यथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ की थी। अब भी सदा की भाँति प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२२१)

११ जुलाई २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ७ मार्च की चिट्ठी यहाँ पहुँच गई।

श्रीश्रीठाकुर से, श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ तो करती ही रहती हो, वे भी तो तुम्हारी देखभाल कर रहे हैं। प्रभु का नाम लेने में समय बिताओ, अपनी कठिनाइयों के बारे में सोचकर नहीं।

मैं तुम लोगों के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा ही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(२२२)

प्रिय बेटी ...,

किसी बात को लेकर कष्ट हो तो उसे अपने दिमाग में जगह मत दो, कष्ट तो बराबर रहते नहीं लेकिन हम उनकी आलोचना करना पसंद करते हैं। कष्टों को भूलकर पढ़ाई में मन लगाओ, कष्ट भूल जाओगी। अपनी माँ के बारे में तुम्हें सोचने की आवश्यकता नहीं है, तुम पूरे मन से पढ़ाई करो, ४ - ६ वर्षों तक पढ़ाई कर लेने के बाद अपने पैरों पर खड़ी हो जाना तुम्हारा पहला काम है। इसे अच्छी तरह समझ लो और पढ़ाई करो।

मैं तुम दोनों बहनों के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा ही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(२२३)

३० जून २००४

प्रिय त ...,

तुम्हारी १६ मार्च तथा बगैर तारीख की एक चिट्ठी २ अप्रैल तथा २५ फरवरी को पहुँची थी। निराकार ब्रह्म के ही साकार रूप श्रीश्रीठाकुर हैं, सच है। जैसे छबिगृह में उसके जिस पर्दे पर चलचित्र प्रदर्शित किए जाते हैं, वह पर्दा ही सच है, फिल्में बदलती रहती हैं। वैसे ही त... अपने आप को जो कुछ सोच समझ रहा है वह बदलता रहता है, जो कुछ देखता है, सुनता है आदि सब परिवर्तन से भरा हुआ है। अपने जन्म-जन्मान्तरों से तुमने असंख्य शरीरों में जन्म लेकर जीवन को भिन्न-भिन्न रूपों में अनुभव किया है। जैसे कोई डरावना सपना देख कर नींद खुल जाने पर भी एक व्यक्ति डर से काँपता रहता है, वैसे ही पूर्व-पूर्व जन्मों के संस्कार हमारे इस जीवन की बुद्धि को प्रभावित करते रहते हैं। श्रीश्रीठाकुर के, श्रीश्रीमाँ के बारे में जितना अधिक हम अपने मन को लगाने में समर्थ होते हैं उतना ही मन शुद्ध पवित्र होता रहता है। श्रीश्रीमाँ, श्रीश्रीठाकुर आदर्श हैं और आदर्श आइने को कहते हैं जिसे देखकर हम अपने चेहरे को देखते हैं और साफ करते रहते हैं या यूँ कहो चेहरा साफ होता रहता है। चूँकि इस मैल को हम बड़े चाव से दिनों, महीनों, सालों, जन्मों तक इकट्ठा करते रहते हैं, इसलिए दूर करने में देर होती है, शायद इनसे लगाव भी हो गया है। अपने मन के सोचों को देखते रहो और घटनाओं को भी। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो। मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(२२४)

१५ जुलाई २००४

प्रिय सं ...,

तुम्हारी ७ अप्रैल की चिट्ठी १७ अप्रैल को यहाँ पहुँच गई।

अपनी चिट्ठी में अनन्य प्रेम अद्वैत-साधना आदि के सम्बन्ध में जो बात तुमने लिखी हैं उन बातों को लेकर अभी माथापच्ची न करो। अपने इष्टमन्त्र का जहाँ तक हो सके मन लगाकर जप करते रहो। पहले जब जप करने में तुम्हें कष्ट नहीं, आनन्द का अनुभव होगा, फिर इन सब विषयों को लेकर तुम सोच सकते हो लेकिन अभी जरूरत नहीं होगी। जो नाव गंगा में बहती चली जा रही है, उस पर बैठे व्यक्ति को न गंगा की गहराई वगैरह जानने की जरूरत है, न सागर से उसकी दूरी की। निश्चिन्त होकर प्रेम से प्रभु का नाम लेते रहो। शरीर हिलने लगता है तो दो-चार मिनट के लिए चहलकदमी करो, फिर आसन पर बैठकर जप करो। मन्त्रवर्णों के अर्थ शब्दों के माध्यम से नहीं, जप करते करते अपने अनुभव से तुम्हें मालूम पड़ेगा। रूद्राक्ष की माला चाहते तो यहाँ अलग पत्र लिखो, मैं तुम्हें मेरी जप करके शुद्ध की हुई माला भिजवाऊँगा। तब तक कर (अंगुलियों में ही) जप करते रहो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२२५)

१५ जुलाई २००४

प्रिय सु ...,

तुम्हारी २५ नवम्बर की चिट्ठी १ दिसम्बर को यहाँ पहुँच गई। चिट्ठी मराठी में लिखी थी उसे अंग्रेजी में अनुवाद कराने के बाद उसके जवाब को फिर मराठी में लिखवाना था और वह हो नहीं पाया। मराठी में लिखवाने में और देर लगती। इधर मैं १७ जुलाई को यूरोप जा रहा हूँ, अगस्त के अन्त तक लौटूंगा। इसलिए हिन्दी में ही लिखवा रहा हूँ। हिन्दी तो पढ़ ही लेते होंगे।

अपनी चिट्ठी में जिस समस्या के सम्बन्ध में तुमने लिखा है वह कोई ऐसी समस्या नहीं है। प्रभु का नाम मन में लेने की विधि है, उसी विधि का पालन करो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(२२६)

१५ जुलाई २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १४ जून की चिट्ठी १७ जून को यहाँ पहुँची।

मैं १८ जुलाई को यूरोप के लिए रवाना हो रहा हूँ, अगस्त के अन्त तक श्रीकृष्णजन्माष्टमी के पहले वापस लौट आऊंगा। श्रीश्रीठाकुर ने स्वामीजी महाराज के बारे में कहा था कि उसे जब पता लग जाएगा कि वह कौन है तो फिर वह नहीं रहेगा। ऐसा ही अपने सम्बन्ध में समझो। तुम कौन हो इस समझ की आवश्यकता होने पर यह समझ तुम्हें मिलेगी लेकिन तब तक जहाँ तक कर सको अपने संस्कारों के अनुसार, सुविधानुसार जगत् की सेवा करने में मन लगाओ।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२२७)

४ जुलाई २००४

प्रिय पी ...,

तुम्हारी २४ मार्च की चिट्ठी और ५०० रुपयों का ड्राफ्ट ३० मार्च को यहाँ पहुँचे। तुम्हें जवाब लिखवाने में देर हुई क्योंकि मई–जून के महीने में मैं दक्षिण भारत गया था। अभी १८ जुलाई को यूरोप के लिए रवाना हो रहा हूँ, अगस्त के अन्त तक वापस आ जाऊँगा।

श्रीश्रीठाकुर को ही तुम भिन्न भिन्न रूपों में देखते हो, उन्हें तुम्हारी अरूप आत्मा के ही रूप ध्यान–जप आदि करते रहते हुए क्रमशः समझने लगोगे। निश्चिन्त रहो। राह पर निकल पड़े हो, लक्ष्य पर पहुँच जाओगे।

मैं तुम सभी के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(२२८)

१५ जुलाई २००४

प्रिय बेटी ई ...,

तुम्हारी १० मार्च की चिट्ठी १६ मार्च को यहाँ पहुँची।

मन अशान्त रहता है, इस अशान्त मन को देखता कौन है कि यह अशान्त है ? क्या वह भी जो तुम्हारे अशान्त मन को देखता है, अशान्त है या शांत है ? अगर वह भी अशान्त है तो वह तो दूसरे को समझेगा। दो रेलगाड़ियाँ साथ साथ अगल बगल की पटरियों पर एक ही रफ्तार से चलती हों तो दो व्यक्तियों को जो उन दो गाड़ियों में बैठे हों, गाड़ियां चलती हुई मालूम पड़ेगी, या खड़ी ? अपने मन को अशान्त न कहो, उसका काम सोचना है। उसे श्रीश्रीठाकुर के बारे में सोचने में लगाओ। साथ ही साथ श्रीश्रीठाकुर का नाम जप करती रहो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा सदा हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(२२६)

११ जुलाई २००४

प्रिय बेटी भा ...,

तुम्हारी जून की चिट्ठी यहाँ १७ जून को पहुँची। पैसों की रसीद यहाँ के दफ्तर के साधु-महाराज लोग अलग से भेजेंगे।

तुम्हारे नाम के अनुसार चिट्ठी में लिखी तुम्हारी भावनाएँ भी बड़ी अच्छी है, तुम वस्तुतः श्रीश्रीमाँ की ही बेटी हो। मैं तुम्हारी बेटी ई..., तथा और घरवालों के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(२३०)

२ अप्रैल २००४

प्रिय बेटी रु ...,

तुम्हारी २३ मार्च की चिट्ठी यहाँ ३० मार्च को पहुँच गई। तुम दोनों बहनें डिग्री या डिप्लोमा के लिए पढ़ रही हो ? Final कब हैं ? आगे भी पढ़ोगी तो अच्छा रहेगा। M. Tech वगैरह कर लोगी तो अच्छे पैसे कमा सकोगी। आई को भी पढ़ा सकोगी।

दी... की दीक्षा हो ही जायेगी। नित्य अनित्य की बातें छोड़ो। नित्य के बारे में कुछ भी सोचा, समझा या कहा नहीं जा सकता। उसका व्यवहार हम केवल अनित्य से छुट्टी पाने के लिए ही करते हैं। जब हम श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ जैसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में पढ़ते, सुनते हैं तो लगता है कि ये लोग नित्य होंगे, नित्य के सान्निध्य में होंगे, आदि। लेकिन जब तक श्रीश्रीठाकुर की तरह, उनके निर्विषय शुद्ध मन की तरह तुम्हारा मन शुद्ध निर्विषय नहीं हो जाता, तब तक नित्य की बातें करना निरर्थक है। अभी केवल अपने मन की गति को उसकी हरकतों को जहाँ तक हो सके हरघड़ी देखती रहो, परिवीक्षण करती रहो। इस तरह जैसे जैसे मन तुम्हारा शुद्ध होता रहेगा वैसे वैसे तुम नित्यता का अर्थ अनुभव करने लगोगी।

फिलहाल अपनी पढाई पूरी करो, M. Tech वगैरह दोनों बहनें कर लो। इस बीच तुम्हारे हृदयस्थ श्रीश्रीठाकुर तुम्हारे मन को शुद्ध करने में तुम्हारी मदद करते रहेंगे, निश्चिन्त रहो।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२३१)

१५ जुलाई २००४

प्रिय ...,

तुम्हारी २५ फरवरी की चिट्ठी यहाँ १५ मार्च को पहुँच गई थी। तुम्हारी एक और चिट्ठी का उत्तर अभी मैं लिखवा कर तुम्हें भिजवा चुका हूँ। फिलहाल कर्ज, पढ़ाई, business, संसार, ध्यान-जप सभी को लेकर चलते रहो। Problems नहीं तो संसार कैसा। शादी में फँसना पड़ा, ऐसा न लिखो, इससे तुम्हारी पत्नी का असम्मान होता है। वही तो घर की लक्ष्मी है, सावधान रहो उसे किसी तरह से कष्ट न पहुँचे। प्रभु से प्रार्थनाएँ करते रहो, उन्होंने ही कहा है व्याकुल होकर प्रार्थनाएँ करने पर वे उन्हें सुन लेते हैं। अपनी पत्नी की दीक्षा को लेकर चिंतित न हो, यथासमय उसकी भी दीक्षा होगी, पहले उसके मन में दीक्षा लेने की इच्छा होगी।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२३२)

११ जुलाई २००४

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी तुम्हारे पैसों के साथ २८ जून को यहाँ पहुँच गई।

हर घड़ी हमारे प्रभु का नाम लेते रहने का अभ्यास डालो, जब भी प्रभु याद हों। गिनतियाँ रखने की जरुरत नहीं है।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएं करता रहता हूँ।

तुम्हारे स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(२३३)

प्रिय ...,

तुम्हारी जुलाई की चिट्ठी १२ जुलाई को यहाँ पहुँच गई।

तुम काशी गए थे लेकिन काशीनाथ विश्वनाथ के दर्शन किए नहीं किए, इस बारे में कुछ नहीं लिखा। अपने लड़के से कहो हर महीने में एक-दो बार विश्वनाथ के दर्शन करे।

निरन्तरता के साथ ध्यान-जप-उपासना नहीं कर पाते, कोई बात नहीं। जब तक मन चिन्ता शून्य निर्मल नहीं हो जाता तब तक ध्यान-जप तो होते ही नहीं इसलिए लोग ध्यान-जप के लिए नियमित रूप से बैठते हैं कि अपने विचारों से परिचित हों, गन्दे विचार मन से निकल जावें, जैसे पकड़ा गया चोर दुबारा उस घर में चोरी नहीं करता। गन्दे विचारों से मुक्त होने पर शुभ वासनाएँ जल्दी पूरी हो जाती हैं, फिर मन वासनामुक्त होकर निर्मल होता है। मन के निर्मल होने पर जप-ध्यान से मन में एकाग्रता होती है और निर्मलता की वृध्दि के साथ साथ एकाग्रता में भी वृध्दि होती है। लिखना तो आसान है, पढ़ना भी, लेकिन करने के लिए, आजमाने के लिए धैर्य और लगन कि आवश्यकता है। इसलिए निरन्तरता भी आवश्यक है। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ का आगमन इसलिए नहीं हुआ कि उनके नाम से मठ बनेंगे, मिशन बनेंगे। उनका आगमन इसलिए हुआ कि हम-तुम सभी उनके आचरणों को अपने जीवन में यथासम्मान उतारें।

मैं तुम लोगों के कल्याण के लिए उनसे प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(२३४)

८ जुलाई २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २५ जून की चिट्ठी २ जुलाई को ही यहाँ पहुंची।

तुम जब अपनी चिट्ठी मुझे लिख रही थी तुमने ख्याल नहीं किया हमारे प्रभु तुम्हारे हृदय में बैठकर तुम्हारी हरकतों को देखते हुए मुस्करा रहे थे। प्रार्थनाएँ उनसे करो, वे सब कुछ जानते तो हैं फिर भी तुम्हारा रोना, गिड़गिड़ाना उन्हें पसन्द है। श्रीराम की कहानी श्रीश्रीठाकुर ने कहा है, कि पम्पा सरोवर में एक मेढ़क रहता था जब श्रीराम ने अपना धनुष भूमि पर गाड़ा तो उसके नीचे आ गया। श्रीराम ने पूछने पर कि चिल्लाया क्यों नहीं, तो उसने कहा, जब देखा कि श्रीराम ही मार रहे हैं तो फिर किसे पुकारता ? ऐसे ही कष्ट हो तो वे चाहते हैं कि उनसे कष्ट के बारे में कहा जाए।

आगे तो बढ़ ही रही हो। उन्हें क्या नहीं मालूम कि तुम उनके सिवाय और कुछ नहीं चाहती ? इसी निर्वासना में क्रमशः प्रतिष्ठित होती जाओगी फिर देखने लगोगी कि सचमुच तुम कुछ नहीं करती, सब कुछ तुमसे कराया जाता है। जैसे स्वामीजी ने कुछ नहीं किया, जो कुछ श्रीश्रीठाकुर ने कराया वही किया। अभी तो करीब दो महीनों के लिए यूरोप जा रहा हूँ, अगस्त के अन्त तक शायद लौट आऊँगा, इसका मतलब तो यही हुआ कि मेरा स्वास्थ्य ठीक है। राजकोट के साधुओं से ही तुम्हें पता लग जायेगा जब मेरा वहाँ जाने का प्रोग्राम बन जाएगा। मौसी के लिए मैं श्रीश्रीठाकुर से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ जैसे तुम्हारे लिए भी।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(२३५)

११ जुलाई २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ३० जून की चिट्ठी ३ जुलाई को यहाँ पहुँची।

तुम्हारे लड़के का B.Sc. पढ़ने में मन नहीं है, तुमने लिखा है। लेकिन जिसमें उसका मन है उस medical course में सिर्फ भर्ती होने के लिए उसने दो-साल और पता नहीं कितने पैसे खर्च किए। अब अगर admission होने के बाद भी उसका उसमें मन नहीं रहेगा तो कितने साल लगेंगे उसे B.Sc. पूरी करने में। B.Sc. पढ़ने में अगर Medical के लिए तीसरे वर्ष भी तैयारियाँ करने के बाद वह नाकाम रहता है, तब वह क्या करेगा ? Test के लिए कोई कितनी बार बैठ सकता है ? इन सब बातों पर विचार करो। Medical test में अगर अच्छे नम्बर न आवें तो ऐसे कॉलेज में शायद दाखिल होना पड़े जिसमें हर साल लाखों रूपए लगते हों। सरकारी कॉलेजों में शायद पैसे कम देने पड़ते हैं। यह भी सोचो कि B.Sc. करने के बाद वह क्या करेगा ? B.Sc. में उसका admission किस विभाग में हुआ है ? Physics, Chemistry, Maths, Physics, Chemistry, Biology, Physics, Chemistry, Geology इनमें से किसमें ?

मैं तुम लोगों की भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर को हर घड़ी मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

> मनुष्य अल्पायु है और संसार की सब वस्तुएँ वृथा तथा क्षणभंगुर है; पर वे ही जीवित हैं, जो दूसरों के लिए जीते हैं, शेष सब तो जीवित की अपेक्षा मृत ही अधिक हैं। – स्वामी विवेकानन्द



(२३६)

११ जुलाई २००४

प्रिय बेटी श्रु ...,

तुम्हारी २४ जून की चिट्ठी यहाँ २ जुलाई को ही पहुँच गई। गुरुपूर्णिमा के अवसर पर मैं तुम सभी के कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहा।

अपनी चिट्ठी में तुमने 'शत् शत् प्रणाम' लिखा है। सही रूप में शत-शत प्रणाम लिखो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(२३७)

१० जुलाई २००४

प्रिय ...,

तुम्हारी २६ जून की चिट्ठी ५ जुलाई को यहाँ पहुँची। तुम्हें मानसिक कष्ट होने का कोई कारण नहीं है। शायद तुम चाहते हो कि रातों रात तुम्हें अपने आध्यात्मिक जीवन में सफलता मिले। फल वासना से रहित होना ही आध्यात्मिक जीवन बिताना है। इसलिए ध्यान में कैसी मूर्तियां देखते हो यह बड़ी बात नहीं है, बात तो यह है कि तुम्हारे व्यवहार में, तुम्हारे आचरणों में क्या परिवर्तन आता है। स्वामीजी ने यही कहा है।

मन्त्र शब्द का अर्थ हिंदी या अंग्रेजी में बताने पर क्या समझोगे ? 'अर्थ' शब्द का अर्थ यहाँ प्रयोजन समझो, प्रयोजन का मतलब प्रयोजन, प्रकृटरूप से जोड़ना या जुड़ा होना, सम्बद्ध होना। मन्त्र का अर्थ हमारे श्रीश्रीठाकुर है, उनका जीवन है, उनके उपदेश हैं, उनके आचरण हैं। वही तुम्हारे हृदय में समासीन तुम्हारे इष्टदेवता हैं जिन्हें मन्त्र के उच्चारण के जरिए तुम पुकार रहे हो, जैसे सोई हुई माँ को बच्चा जगाता है। माँ तो जगी ही है, उसकी रक्षा हर घड़ी कर रही है, पर बच्चे की सोच है, जैसे तुम्हारी, कि मन्त्र का अर्थ जानना चाहते हो। हर घड़ी जहाँ तक हो सके, प्रभु का नाम जपते रहो। नदी को समुद्र का अर्थ नहीं मालूम होता, लेकिन वह समुद्र तक पहुँच जाती है, समुद्र ही बन जाती है। हर घड़ी जप करने में गिनतियाँ रखने की जरूरत नहीं है।

मैं तुम्हारे लिए हमारे प्रभु, हमारी माँ से निरन्तर प्ार्थनाएँ करता रहता हूँ। मेरी चिट्ठियों को पढ़ने के लिए लोगों को न दिया करो।

तुम्हारा ही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(२३८)

१० सितम्बर २००४

प्रिय ...,

तुम्हारी २१ अगस्त की चिट्ठी ३० अगस्त को यहाँ पहुँच गई थी।

तुम एक काम करो। रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम (रायपुर) के अध्यक्ष स्वामी सत्यरूपानन्द से तुम्हारी जान पहचान तो होगी। फिर नारायणपुर के रामकृष्ण मिशन केन्द्र के अध्यक्ष स्वामी निखिलात्मानन्द को भी तुम जानते होंगे। इन साधुओं से मिलो और इनसे अपनी इच्छा व्यक्त करो। वे अपने आश्रम की आवश्यकता तथा तुम्हारी योग्यता के अनुसार ही अपना निर्णय लेंगे, निशंक रहो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से सदा ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२३६)

१० सितंबर २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १२ अगस्त की चिट्ठी १७ अगस्त को यहाँ पहुँच गई थी। जो कहते हैं तुमसे कि गायत्री तो सभी जपते हैं उनसे चाहो

तो कह सकती हो, कि बाजारों में दवाएँ भी मिल जाती हैं, तरह तरह की मिल जाती हैं लेकिन दुकानदारों पर मनाही होती है कि रजिस्टर्ड डाक्टरों के prescription के बगैर वे कुछ दवाओं को बेच नहीं सकते। इसी तरह किताबों में, अखबारों में, पत्रिकाओं में छपे मन्त्रों को पढ़कर इन्हें जपने का रिवाज आजकल खूब चल पड़ा है जैसे विज्ञापन देखकर दवाएँ लेने का। समझ लो कि जैसे दवा के पर्चे के बगैर दवाएँ लेते रहना जान लेवा हो सकता है उसी तरह अपने गुरु के मुख से किसी मन्त्र का जब तक उच्चारण कोई सुन न ले तब तक वह मन्त्र किसी काम का नहीं होता। मन्त्रों का शुद्धिकरण भी आवश्यक होता है। केवल किसी का अगर मन शुद्ध है तो वह व्यक्ति कोई भी मन्त्र जप सकता हैं लेकिन ऐसे लोगों के पास देवताओं का आवागमन हमेशा ही चलता रहता है।

मन्त्र को लेकर किसी से बातें न करो। 'ओम्' शब्द का आखिरी अक्षर मकार उसके बाद अगर व्यूंजनवर्ण हो तो अनुस्वार में, या फिर ङ, ञ, ण, न, म, उनमें से किसी एक में बदल जाता है। इसलिए ओम् का उच्चारण तुम 'ओं' अथवा 'ओङ' कर सकती हो वैसे ही ह्रिम् का ह्रीं या ह्रिङ।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानंद

> यह ठीक है कि बाघ के भीतर भी परमेश्वर विद्यमान है, पर इस कारण उसके सामने नहीं चले जाना चाहिए। उसी प्रकार यद्यपि अत्यंत दुर्जन व्यक्तियों के भीतर भी ईश्वर विराजमान हैं, तथापि उनकी संगति करना उचित नहीं। – श्रीश्रीरामकृष्णदेव

(२४०)

२१ अगस्त २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २२ जुलाई की चिट्ठी २८ जुलाई को पहुँची।

दु:ख का मतलब क्यों नहीं समझती कि दुःख ही तुम्हारे अपनेपन की छवि को देखने में सहायता करता है। श्रीश्रीठाकुर का कहना है कि ज्यों ज्यों तुम पूर्व की ओर बढ़ोगी त्यों त्यों पश्चिम पीछे छूटता जावेगा। ज्यों ज्यों तुम्हारा अपना स्वरुप तुम्हारे पास साफ होने लगेगा, ज्यों ज्यों तुम्हें ऐसा लगेगा कि तुम्हें कुछ करना नहीं है, त्यों त्यों देखोगी कि यह दुःख ही है। संसार का मतलब यही है कि तुम समझो कि इससे तुम्हारा लेना देना कुछ है नहीं। ज्यों ज्यों इस बात को समझोगी, अनुभव करोगी, त्यों त्यों तुम्हें यह भी एहसास होने लगेगा, मैं हूँ। लेकिन अगर पूछती हो कि 'मैं कौन हूँ, मैं क्या हूँ ?' तो फिर प्रश्न बेबुनियाद होंगे, क्योंकि तुम्हारे सिवाय कुछ है ही नहीं। लेकिन अपने जीवन में इस अनुभव को पाना मुश्किल काम है लेकिन ऐसा नहीं कि ऐसा होता ही नहीं। श्रीश्रीठाकुर को हर घडी ऐसे अनुभव हुआ करते थे, श्रीश्रीमाँ को, स्वामीजी तथा उनके गुरुभाइयों को, फिर आज तक हमारे इस मठ के बहुतों को अपने जीवनकाल में ही ऐसे अनुभव हुए हैं। निश्चिन्त रहो, जब से तुमने मुझे चिट्ठियाँ लिखना शुरू किया, यह बात तो तभी पक्की हो गई थी कि तुम दीक्षा ग्रहण करोगी अभी फार्म भरो, आज तक जो कुछ तुमने चाहा सभी तो मिल गए, दीक्षा भी हो जायेगी। अपनी इच्छा को अपने अगले पत्र में फिर से लिखो। तुम्हारे लिए मेरी प्रार्थनाओं के साथ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२४१)

१० सितंबर २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी अगस्त की चिट्ठी यहाँ १ सितंबर को पहुँच गई। २३ मार्च की लिखी तुम्हारी चिट्ठी का उत्तर मैंने २ अप्रैल को लिखवा कर भिजवाया था। न जाने क्यों वह तुम्हें मिली नहीं। वैसे उसकी एक फोटोकॉपी तुम्हें इस पत्र के साथ भिजवा रहा हूँ। अबसे अपनी चिट्ठियों की फोटोकॉपी अपने पास रखकर मुझे चिट्ठी भेजा करो।

पढ़ाई खत्म क्यों कर दी ? M. Tech. वगैरह क्यों नहीं कर लिया ? इसी उम्र में जब तक उत्साह है, परिश्रम करने का सामर्थ्य हैं, जहाँ तक हो सके पढ़ाई पूरी करो। दो-एक वर्षों में M. Tech. कर लेने पर अच्छी तरह अपने मन के, अपनी इच्छा के अनुसार तुम्हें काम मिल जाएगा। अपने पिता से कहो। तुम्हारी बहन को भी कहो, वह भी M. Tech. वगैरह करने से पहले पढ़ाई न छोड़े। तुम्हारे पिता इतने दिनों तुम्हें सहारा देते रहे हैं, कुछ दिनों तक और देते रहेंगे, फिर सब का भला होगा।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए हमारे गुरुमहाराज श्रीश्रीठाकुर से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(२४२)

प्रिय ...,

तुम्हारी बगैर तारीख की चिट्ठी यहाँ ३० जुलाई को पहुँची। स्वामी विवेकानन्द महाराज के व्याख्यान, उनकी चिट्ठियाँ, उनके कथोपकथन, उनका संस्मरण, उनकी जीवनी आदि कौन कौन सी पुस्तकें तुम पढ़ चुके हो ? श्रीरामकृष्ण वचनामृत, श्रीश्रीठाकुर की जीवनी (लीलामृत), श्रीश्रीमाँ को लेकर लिखी हुई पुस्तकें, इनमें से कौन कौन सी पढ़ चुके हो ? स्वामीजी की पुस्तकों में पहले The Complete Works of Swami Vivekananda जो ८ खण्डों में उपलब्ध है, उन्हें अंग्रेजी में ही पढ़ो। अगर सोचते हो कि समझ नहीं पाओगे तो पहले हिन्दी में पढ़ लो फिर अंग्रेजी में पढ़ोगे। किसी एक लेक्चर, एक ही चिट्ठी आदि को पहले हिन्दी में पढ़ लो, फिर अंग्रेजी में पढ़ो। ऐसा न हो कि अंग्रेजी में कोई लेक्चर वगैरह पढ़ते पढ़ते बीच में अचानक उसे हिन्दी में पढ़ना शुरू करो। हिन्दी में पढ़ने के बाद जब अंग्रेजी मूल व्याख्यान आदि को पढ़ते हो तो अगर कहीं स्वामीजी की बातें समझ में नहीं आ रही हो तो पुनः पुनः अंग्रेजी में ही उसे पढ़ो। यह इसलिए कि हिन्दी में उन व्याख्यान वगैरह का अनुवाद औरों ने किया हैं लेकिन अंग्रेजी में पढ़ोगे तो स्वामीजी की बातों को सीधे समझ सकोगे। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो।

मैं नित्य ही उनसे तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ करता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

> जो व्याकुल होकर उन्हें पुकारेगा, उसी को उनके दर्शन प्राप्त होंगे।
> –श्रीमाँ सारदा देवी

(२४३)

१० सितंबर २००४

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ अगस्त की डाकमुहर लगी चिट्ठी यहाँ १४ अगस्त को पहुँच गई। तुम्हें हिन्दी में ही चिट्ठी लिखवाकर भिजवा रहा हूँ। क्योंकि मराठी में लिखवाकर भिजवाने में विलम्ब होगा। हिन्दी तो समझ ही जाओगे।

तुम्हारी आयु कितनी हो गई ? तुम्हारे स्वास्थ्य को क्या हो गया ? मेरा तो स्वास्थ्य ठीक ही है। तुमने मन की बात लिखी है, मन जब तक है उसका तो काम ही है संकल्प करना फिर उसका विकल्प एक और संकल्प करना, फिर उसका भी विकल्प, इस प्रकार चलना ही मन का स्वभाव है। प्रभु का नाम जपने में पहले-पहले मन नहीं लगता है। लेकिन लगातार विधिवत बैठते रहने से मन से संकल्प-विकल्प करने का क्रम घटने लगता है और मन भी जप में लगने लगता है, इस तरह मन शुद्ध होने लगता है। संसार के संस्कारों को छोड़कर चिन्ताशून्य होने लगता है। फिर ऐसे शुद्ध मन में प्रभु के लिए जगह बनती है। मरने की जरूरत नहीं है, दीक्षामन्त्र को जपते रहने की जरूरत है। हर घड़ी जपने की कोशिश करते रहो, प्रभु से अपनी मुश्किलों के लिए प्रार्थनाएँ करो।

मैं उन्ही से तुम्हारी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२४४)

प्रिय बेटी ...,

२ अगस्त की तुम्हारी चिट्ठी ७ अगस्त को यहाँ पहुँची। लड़का B.H.U. में भर्ती हो गया है, ठीक है। B.Sc. करते करते Medical के लिए तैयारियाँ करना मुश्किल काम है। दो बार तो इसने इम्तिहान दिए हैं, उससे पूछ सकती हो कि क्या वह सोचता है कि फिर से Medical के लिए Exams में बैठने से results पहले से अच्छे होंगे ? Chemistry, Biology, Geology तो अच्छे disciplines हैं, BHU से ही आराम से M.Sc. वगैरह कर सकता है।

कभी कभी अ... जो कुछ करता है समझो वह स्वयं ही स्वयं से लड़ रहा है और कुछ दिनों में जीत उसी की होगी। तुम निश्चन्त रहो।

मैं सदा तुम लोगों के कल्याण के लिए हमारे प्रभु से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२४५)

प्रिय बेटी ...,

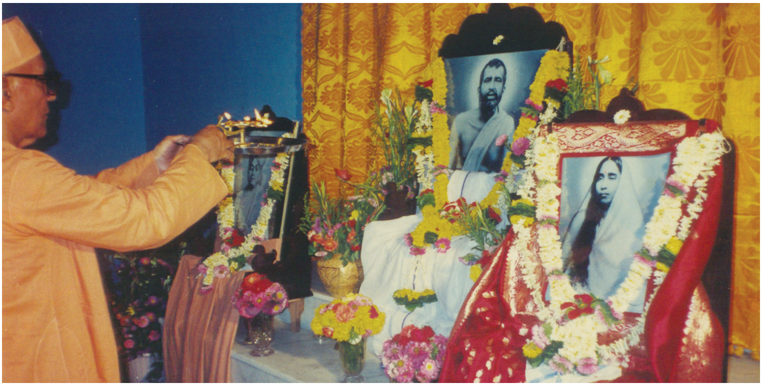
तुम्हारा १० जुलाई का पत्र यहाँ १० अगस्त को पहुँचा।

अभी तुम्हें मार्गदर्शन वगैरह की आवश्यकता नहीं है। उपासना-पद्धति में जो कुछ लिखा है उसी के अनुसार उपासना, ध्यान, जप आदि करते रहने की कोशिश करती रहो। तब तक पढ़ाई में मन अधिक लगाकर ५-६ वर्षों में पढ़ाई का सिलसिला खत्म कर लो। अवसर मिलने पर श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, तथा स्वामी विवेकानन्द महाराज तथा उनके गुरुभाइयों की जीवनियाँ, उनके उपदेश, व्याख्यान, तथा चिट्ठियाँ आदि पढ़ती रहो। रामकृष्ण मठ, सारदा मठ के केन्द्रों में जाकर संन्यासी महाराज गण तथा प्रव्राजिका माताओं से मिलती रहो, मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो। रू... तथा म... तो काफी वर्षों से आध्यात्मिक जीवन ही बिता रही हैं, उन दोनों से भी बातें करो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीमाँ तथा श्रीश्रीठाकुर से नित्य प्रार्थनाएं करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२४६)

१० सितंबर २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १८ अगस्त की चिट्ठी यहाँ १३ अगस्त को पहुँच गई थी।

ऐसी चिट्ठी तुम श्रीश्रीठाकुर को क्यों नहीं लिखती ? क्या करोगी, तुम्हें उनका पता तो मालूम ही नहीं ! एक काम कर सकती हो तुम अपने ध्यान, जप, उपासना, घर के लोगों की सेवा आदि करती हुई जो चिट्ठियाँ मुझे लिखती हो उन्हें डाक में देने के पहले श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ को सुनाकर मुझे भेजा करो। फिर वे ही तुम्हारे मन के माध्यम से तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दे देंगे, समस्याओं का समाधान कर देंगे। फिर देखोगी कि तुम्हारे मन में कोई प्रश्न नहीं उठेगा, सन्देह न होगा। समस्याएँ न होंगी और तुम्हारा मन शुद्ध हो जायगा फिर जो भी कर्म करोगी मन लगाकर करोगी।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएं करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२४७)

प्रिय बेटी ...,

१८ अगस्त की तुम्हारी चिट्ठी २४ अगस्त को यहाँ पहुँची।

अपने जीवन को सीधा-सादा बना डालो। अगर सुबह नींद खुल गई तो हाथ-मुँह धोकर कपड़े बदल कर श्रीश्रीठाकुर के पास बैठ कर ध्यान-जप करो। इसे लेकर परेशान न हो। समझो तुम कुछ भी नहीं कर रही हो, वे ही तुमसे करा रहे हैं। वे हमेशा तुम्हारे साथ हैं, याद रखो। यह भी याद रखो कि अगर तुम मानती हो कि वे तुम्हारे साथ हैं, अगर संशय होता है तो वे नहीं मिलेंगे। इसलिए यह तुम्हारी बुद्धि पर ही निर्भर है। यहाँ तक के तुम्हारे गुरु के कहने पर भी तुम मान नहीं पाओगी कि वे तुम्हें चला रहे हैं। इसलिए हर घड़ी उनका नाम लेती रहो, हर बात उनसे सलाह लेकर करो, उनके चित्र को एकटक देखती रहो, यही रास्ता है।

मैं अपने हाथों से तो लिख नहीं पाता, साधुओं से लिखवाता हूँ, वैसे दस्तखत तो करता ही हूँ। मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ कि वे तुम्हें उनके दर्शन करने के योग्य बनावें।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२४८)

प्रिय ...,

तुम्हारी १६ अगस्त की चिट्ठी यहाँ २५ अगस्त को पहुँच गई।

तुमसे किसने कहा कि पढ़ाई करना गलत है या प्रथम श्रेणी में विशेष योग्यता पाने को लक्ष्य बनाना गलत है ? हो सकता है तुम्हारे समझने में गलती हुई है। पढ़ाई करने का लक्ष्य पढ़ाई करना है, पूरे लगन के साथ। अगर इसमें से अधिकांश लगन रिजल्ट पर ही केन्द्रित हो जावे तो फिर तुम्हारा मन शंका, सन्देह आदि से भर का दुर्बल हो जाएगा। पहाड़ी पर चढ़नेवाले अपनी नजर पहाड़ के शिखर पर नहीं रखते, अपने पाँवों पर रखते हैं और इस तरह सावधानी से चढ़ाई चढ़ते हैं। भय, सन्देह आदि को मन में जगह मत दो। जब भी पढ़ने बैठो श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ से प्रार्थना कर लो तुम्हारा मन पढ़ाई छोड़कर और कहीं भटक न जावे। भटक भी जाता है तो फिर उनका स्मरण करो, उनसे प्रार्थना करो।

मैं तुम्हारे लिए उनसे निरन्तर प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(२४६)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २८ जुलाई की चिट्ठी ८ अगस्त को यहाँ पहुँची।

प्रभु की महिमा समझने लगी हो, अब इसी समझ को और दृढ़ करना है। फिर देखोगी कि तुम कुछ भी नहीं करती, सब ही कुछ हो रहा है, तुम्हारे द्वारा ही हो रहा है लेकिन करानेवाले श्रीश्रीठाकुर हैं। हमारे पूज्यपाद हरि महाराज (स्वामी तुरीयानन्दजी महाराज) ने शायद किसी चिट्ठी में किसी को लिखा था, श्रीश्रीठाकुर तुम्हें करने के लिए कोई काम देंगे। उसे मन-प्राण लगाकर करो। वह काम जब सम्पन्न हो जाय तो श्रीश्रीठाकुर तुम्हें एक और काम देंगे। उसे भी मनप्राण लगाकर यानी जी-जान से करो। वह काम भी जब सम्पन्न हो जावे तो श्रीश्रीठाकुर एक और कोई काम देंगे। उसे भी जी-जान से करो। फिर श्रीश्रीठाकुर तुम्हें और कोई काम नहीं देंगे। पूज्यपाद हरि महाराज की पत्रावली तुमने शायद नहीं पढ़ी होगी। उसे भी पढ़ लो। बात यह है कि कर्म मन को विशुद्ध करता है। आचार्य शंकर भगवत्पाद ने बृहदारण्यकोपनिषद् के भाष्य में लिखा है, कर्मभिः संस्कृता हि विशुद्धात्मानः शक्नुवन्त्यात्मानमुपनिषत्प्रकाशितमप्रतिबन्धेन वेदितुम। तथा ह्याथर्वणे "विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः" इति। स्मृतिश्च ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां क्षयातपापस्य कर्मणः इत्यादि (३-३-११)।।

मैं तुम सभी के कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(२५०)

प्रिय ...,

तुम्हारी १५ अगस्त की चिट्ठी यहाँ ५ सितंबर को पहुँची।

तुम अब तक ठीक हो गए होंगे। ... भी ठीक हो जावेगी, इलाज कराते रहो। उसकी दीक्षा हो गई है क्या ? उसने श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ी है या नहीं। मुझे खुशी है कि क..., नी... तथा उसके पति, कृ..., र... सभी स्वस्थ हैं, खुश हैं। मैंने इनके बारे में पूछा था कि अगर ये सब स्वस्थ रहेंगे, खुश रहेंगे तो श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के के प्रति मन लगाने में तुम्हें कठिनाई नहीं होगी। आराम से उनका नाम ले सकोगे।

मैं उनसे उ... के आरोग्य के लिए तथा तुम्हारी मानसिक शान्ति के लिए बराबर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(२५१)

प्रिय ...,

तुम्हारी १० जुलाई की चिट्ठी यहाँ १७ जुलाई को पहुँची। ... ठीक हो गई, अच्छा हुआ। तुम्हारे पास समय किस काम के लिए कम है ? तुम्हें कैसे मालूम ? तुम्हें तो केवल देखते रहना है कि हमारे प्रभु किस प्रकार अपनी इच्छा के अनुसार हम लोगों से हमारे हृदय के अन्तर्प्रकोष्ठ में बैठकर हमसे खिलवाड़ कर रहे हैं। मतलब यह हुआ कि हमें नहीं खेलना है, हम उनके हाथों के खिलौने हैं। हम घड़ियाँ हैं, battery वे हैं। वे चलाते हैं हम चलते हैं। श्रीश्रीठाकुर हर बात पर काली माँ की दुहाई देते थे। श्रीश्रीमाँ सारदा देवी, स्वामीजी महाराज वगैरह सभी श्रीश्रीठाकुर की दुहाई देते थे। उनका अनुभव था कि श्रीश्रीठाकुर ही स्वरूपतः परमात्मा हैं जिनकी उपस्थिति में वे जगत् के हित में लगे हैं। वैसे हमें भी समझना है। जैसे जैसे हमारी यह समझ पक्की होती जावे, वैसे ही हम उनके निकट से निकट होते जाएँगे। उनके पहले तुम कहाँ जाओगे ? इसी में तुम्हारा सारा समय जावेगा फिर जब उनके करीब हो गए तो काल, अकाल, काली, अकाली, सबसे बाहर हो जाओगे, आत्माराम के आश्रित हो जाओगे।

मैं तुम्हारे लिए उन्हीं से प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२५२)

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी के लिफाफे पर लगी डाकमुहर से लगता है कि तुम्हारी चिट्ठी अहमदनगर से अगस्त के प्रारम्भिक दिनों में रवाना हुई और यहाँ ८ अगस्त को पहुँची। चिट्ठियाँ लिखने में जल्दबाजी न करो और लिख डालने के बाद दुबारा उसे पढ़ा करो तथा तारीख, अपना पूरा पता, पिन कोड आदि हरेक चिट्ठी में अवश्य लिखा करो (अंग्रेजी में)।

प्रसाद तो बड़े भाग्य से मिला करता है। देखो न, तुमने प्रसाद खाया तो तुम्हारा मन इतना स्वच्छ हो गया कि तुम्हारे मन में सवाल उठा कि यह काम शायद ठीक नहीं हुआ। सपने भी आए। ठीक है अब से श्रीश्रीठाकुर जैसा अपने जीवन में किया करते थे, जैसा तुमने 'श्रीरामकृष्ण वचनामृत' में पढ़ा है – कुछ भी खाओ तो पहले प्रभु को अपने इष्टदेवता का स्मरण करो फिर खाओ। क्रमशः इसे अपने प्रत्येक कार्य के साथ करो। कुछ भी करना हो तो अपने हृदयस्थ श्रीश्रीठाकुर से स्पष्ट आज्ञा लेकर करो, जैसे श्रीश्रीठाकुर श्रीश्रीकालीमाता से बात किये बिना कुछ भी नहीं करते थे।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए उनसे प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(२५३)

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ अगस्त की चिट्ठी १६ अगस्त को यहाँ पहुँची।

एक ६-८ महीने के बच्चे को २५, ५० पैसों के या एक, दो रुपयों के सिक्के दे दो और फिर ५०० रुपयों के दो-एक नोट दे दो। देखोगे कि वह कागज के नोटों को जल्दी ही फाड़ देगा और सिक्कों से खेलना पसन्द करेगा। इसका कारण यही है कि उसे सिक्के तथा नोटों के मूल्यों का पता नहीं। इसी प्रकार अपने बारे में समझो। तुम्हारे मन को श्रीश्रीठाकुर सभाँल सभाँल कर रखेंगे, सिक्कों की उन्हें परवाह न होगी। इसलिए अपनी समझ की शुद्धि के लिए लगातार दीर्घकाल तक, श्रद्धा के साथ श्रीश्रीठाकुर का नाम जपने की प्रक्रिया को विधिपूर्वक करते रहो। तुमने अपने काम-क्रोध आदि को इतना अधिक महत्व दे दिया है कि उनके चले जाने के बाद भी तुम उन्हें याद करते रहते हो कि 'काम आया था, क्रोध आया था' और फिर मुझे भी लिख डालते हो कि उपाय बताइए।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२५४)

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ अगस्त की चिट्ठी यहाँ १२ अगस्त को पहुँची।

मेरी चिट्ठी, जिसकी तुमने फोटोकॉपी कराके भेजी है, उसे फिर से पढ़ो। उसमें मैंने तुम्हें तुम्हारे हृदयस्थ श्रीश्रीठाकुर के हाथों में एक यन्त्र की तरह काम करने को तैयार हो जाने के लिए लिखा है फिलहाल तुम्हारे बड़े लोग तुमसे जो कुछ कहें उनका पालन भर करते हुए चलो। फिर जब स्वयं ही बड़े हो जावोगे तब तक तुम्हारे हृदयस्थ श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारा परिचय हो जावेगा, तब उन्हीं के आदेशों का पालन करते हुए चलोगे, जैसे स्वामीजी महाराज वगैरह किया करते थे। शान्ति, आनन्द वगैरह की बातें न करो, सिर्फ आज्ञापालन की बात करो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(२५५)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १३ अगस्त की चिट्ठी २१ अगस्त को यहाँ पहुँची।

क्या तुमने श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, तथा स्वामी विवेकानन्द महाराज की पुस्तकें पढी हैं ? अगर हो सके तो श्रीश्रीरामकृष्ण-वचनामृत हर रोज १०-१५ मिनटों के लिए ही सही, पढ़ा करो। बंगला पढ़ लेती हो तो बंगला में ही पढ़ो। और अगर अंग्रेजी पढ़ लेती हो तो स्वामीजी की The Complete Works of Swami Vivekananda पुस्तक पढ़ो। मुझे जल्दी लिखो तुम क्या पढ़ चुकी हो, क्या पढ़ रही हो आदि।

इतना ध्यान में रखो कि अगर तुम सोचती हो संसार मायाजाल का पुलिन्दा है तो तुम्हारे लिए वह मायाजाल का पुलिन्दा ही रह जायगा। अगर तुम सोचती हो कि तुम्हें कोई बाँध नहीं सकता, तुम सदा ही मुक्त हो, तो फिर जैसे श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, स्वामीजी महाराज की तरह तुम अपने पूरे मन, प्राण लगाकर इसी मायाजाल के पुलिन्दे की सेवा करने लग जाओगी, अपने बारे में सोचना छोड़कर, जैसे उन्होंने किया, जैसा श्रीकृष्ण ने, गौतम बुद्ध ने किया।

मैं तुम्हारे लिए उनसे निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२५६)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २७ जुलाई की चिट्ठी ५ अगस्त को यहाँ पहुँची। शत् शत् प्रणाम न लिखो, शत शत प्रणाम लिखो। शत् में तीन अक्षर होते हैं जैसे श्+अ+त लेकिन शत में चार अक्षर होते हैं, श्+अ+त्+अ (जैसे s+a+t+a)।

वहाँ तुम्हारे दोस्तों की आवश्यकता नहीं है। मुझे चिट्ठियाँ लिखा करो और श्रीश्रीठाकुर से, श्रीश्रीमाँ से अकेले में बातें करती रहो। तुम्हारे घर में कितने कमरे हैं ? तुम्हारा कोई अपना कमरा है या नहीं ? ध्यान-जप आदि कहाँ करती हो ? तुम्हारा मकान दोमंजिला है या तिमंजिला ? अपने बारे में लिखो। कहाँ पढ़ती हो, सोती कहाँ हो ? आदि।

मैं तुम्हारे लिए निरन्तर श्रीश्रीठाकुर तहत श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(२५७)

१० सितंबर २००४

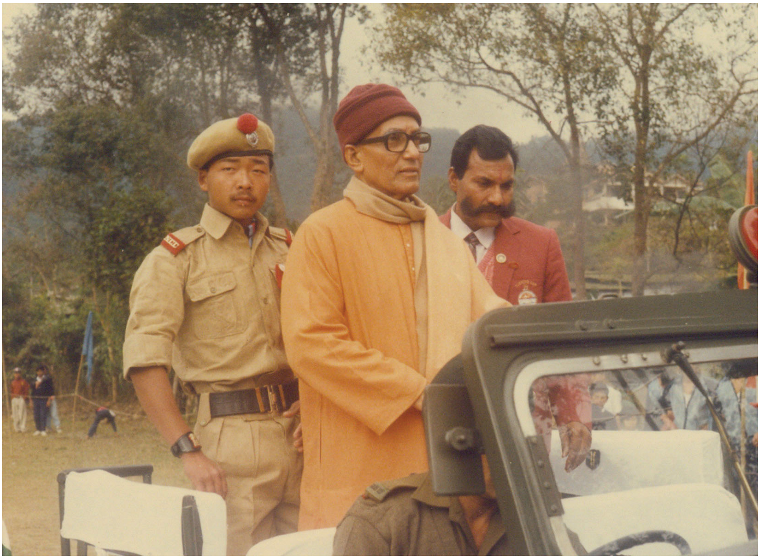
प्रिय ...,

तुम्हारी १० अगस्त की चिट्ठी १८ अगस्त को यहाँ पहुँची। मेरी सलाह मानो तो तुम्हें अनन्त वगैरह को समझने की जरूरत नहीं है न ही अपनी पत्नी और अपने माँ के झगड़े को निबटाना है। ऐसा समझो कि तुम्हारा काम अपने मातापिता, अपनी पत्नी, बच्चों की सेवा करते रहना है। लेकिन तुम इस काम को इतना मुश्किल समझते हो कि इसे समझने के लिए तुम्हें अपने गुरु को लिखना पड़ रहा है। बात तो यही है कि अपने कर्त्तव्य को तुम कठिन समझोगे तो वह कठिन होगा, आसान समझोगे तो आसान होगा। यह तुम्हारे मन की स्थिति पर निर्भर है। अगर संसार में तुम आसक्त नहीं हो तो तुम निरासक्त होकर संसार की सेवा कर सकते हो। लेकिन संसार से अगर तुम प्रेम, भक्ति, श्रद्धा, सेवा वगैरह मिलने की आशा रखते हो तो समझो तुम्हारी आसक्ति गई नहीं। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, स्वामीजी महाराज, श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि सभी ने संसार से किसी बात की अपेक्षा नहीं की, केवल लोगों की सेवा करते है। हमारे मठ के साधु भी ऐसी ही सेवा करते रहते हैं। यही आदर्श जीवन है। समझ गए होंगे।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(२५८)

प्रिय ...,

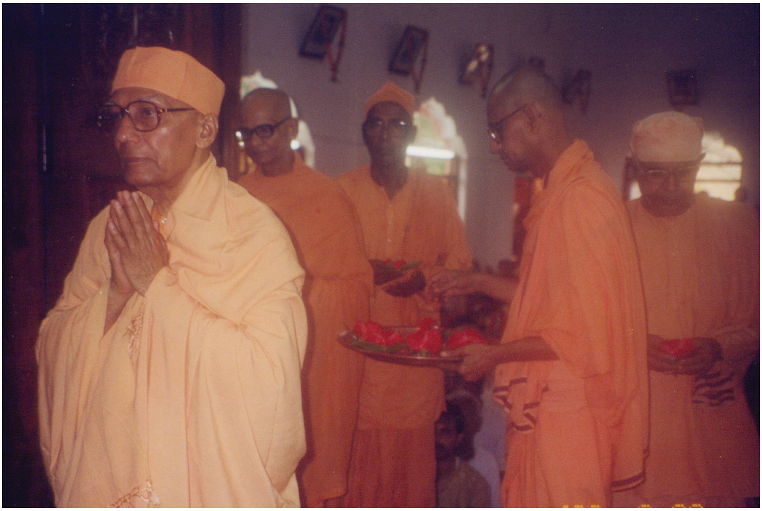
तुम्हारी २० जुलाई की चिट्ठी २८ जुलाई को यहाँ पहुँची।

अभ्यास पुस्तिका में मन्त्र को लिखना ठीक नहीं। तुम देखोगे कि तुम्हारा आधा प्रयास तो लिखने में ही लगा रहेगा और फिर आधा उसे पढ़ने में। जल्दी किसी बात की नहीं है। धैर्य के साथ काम करो। जहाँ तक हो सके हर घड़ी उसे जपते रहने का अभ्यास करते रहो। फिर देखोगे कि तुम्हारे प्रयास के बगैर ही तुम्हारा मन जप करने में लगा हुआ है। कोई विपत्ति आती है, मुश्किलों में फँसते हो तो मन अपने आप ही जप करने लगता है, देखा नहीं तुमने ? वैसा ही हर घड़ी करो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से हरघड़ी प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२५६)

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ अगस्त की चिट्ठी १८ अगस्त को यहाँ पहुँची।

महाराज से सलाह और सम्मति लेकर तुम लोगों के पास जाकर अपील कर सकते हो कि वे अपना पैसा सीधे रामकृष्ण मठ (योगोद्यान) के नीचे लिखे पते पर "रामकृष्ण मठ (योगोद्यान) विस्तार योजना कोष" लिखकर भेजें या उनसे मिले पैसे स्वामी भौमानन्द महाराज "रामकृष्ण मठ" पुणे में जमा करवा सकते हो जिसकी सूचना मिलने पर हम यहाँ से उनके लिए प्राप्ति-स्वीकार की रसीद भिजवा देंगे।

स्वामी भौमानन्द महाराज से बातें करो और वे जैसा कहें वैसा ही करो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द



(२६०)

प्रिय बेटी ...,

गुरुपूर्णिमा के अवसर पर लिखी तुम्हारी २ जुलाई की चिट्ठी पता नहीं क्यों ३१ को यहाँ पहुँची ?

तुम्हारे हृदयस्थ श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ तुमसे तुम्हारे हाथ पकड़कर सारे कर्म करा रहे हैं, इस बुद्धि के साथ कर्म करो। स्वयं को उनके हाथों की पुतली समझो। पुतली खेलती नहीं है उसे लेकर बच्चे खेलते हैं। वैसे ही हमारे प्रभु, हमारी माँ तुम्हें लेकर, मुझे लेकर खेलते हैं, ऐसा समझो और निश्चिन्त रहो। ज्यों ज्यों इस बात की समझ पक्की होती जायगी, त्यों त्यों तुम्हारा मन स्वच्छ होता जायगा, जो तुम चाहती हो।

मैं उनसे नित्य ही तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२६१)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १४ जुलाई की चिट्ठी २० को ही यहाँ पहुँच गई थी।

लगता है तुमने अभी तक हमारे स्वामीजी विवेकानन्द महाराज की किताबों में उनके व्याख्यान एवं पत्रों को पढ़ा नहीं। अपने छोटे से जीवन की परिधि से जितनी जल्दी हो सके निकलो। तुम्हारी दीक्षा के साथ साथ, हमारे प्रभु का नाम लेने का अधिकार तुम्हें मिलने के बाद से तुम्हारी जिन्दगी में एक नया मोड़ आया है। सुख या दुःख की बातों को भूल जाओ, भूल ही जाओगी, ज्यों ज्यों हमारे प्रभु अपनी इच्छानुसार तुम्हारी जिन्दगी को उनके ही चुने हुए पथ पर आगे लेकर चलेंगे फिर देखोगी कि सब कुछ होता जा रहा है और तुम कुछ भी नहीं कर रही हो, जैसे डेढ़-दो साल के बच्चे को जैसे उसकी माँ नहलाती है, खाना खिलाती है, और वह सिर घुमा-घुमा कर अपनी माँ की हरकतों को देखता रहता है। चिंता न करो। मुझे लिखती रहो। प्रभु का हाथ तुम्हारे सिर पर है। मैं उन्हीं से तुम्हारे लिए हर घड़ी प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(२६२)

प्रिय ...,

तुम्हारी २२ जुलाई की चिट्ठी ८ अगस्त को यहाँ पहुँच गई है।

रोग की जब पहचान हो जाती है तो उसके आराम होने में देर नहीं लगती। तुमने जो बातें गिनाई हैं कि ये तुम्हारे दोष हैं, तो तुम्ही ने तो पहचान लिया है कि रोग क्या है। तो फिर चिन्ता किस बात की है ? बात इतनी ही सी है कि रोग पुराना है, आराम होने में समय लगेगा। इसलिए इनके बारे में सोचना बन्द कर दो।

एएमआईई की परीक्षा के लिए तैयारियां करो। तुम्हारे पिता का व्यवसाय अच्छे मुकाम तक पहुँच जायगा निश्चिन्त रहो। रामकृष्ण मठ में लड़को के साधु बनने के लिए २५ वर्ष के अधिक उम्र के लड़कों के लिए स्नात्तक होना आवश्यक है, और २५ वर्ष से कम उम्र के लड़कों के लिए हायर सैकण्डरी के बाद भी प्रवेश हो सकता है। तुम्हें संन्यास लेने की जरूरत क्यों पड़ी ? मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो।

मै तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

विकास ही जीवन और संकुचन ही मृत्यु। प्रेम ही विकास और स्वार्थपरता संकुचन है। इसलिए प्रेम ही जीवन का मूलमन्त्र है। प्रेम करनेवाला ही जीता है और स्वार्थी मरता रहता है। इसलिए प्रेम ही के लिए प्रेम करो ।

– स्वामी विवेकानन्द



(२६३)

१८ फरवरी २००५

प्रिय ...,

डाक-मुहर लगी २६ जनवरी की तुम्हारी चिट्ठी यहाँ उसी दिन पहुँची लेकिन तुमने कब भेजा पता नहीं चल पाया।

तुम्हें इतना अफसोस करने की कोई जरूरत नहीं है। श्रीश्रीठाकुर ने तुम्हें उनका नाम जपने के काबिल बनाया है, तभी तो तुम उनका नाम जप कर रहे हो। पढ़ने-लिखने का एक वक्त होता है जब लोग पढ़ाई-लिखाई करते हैं। तुम मुझे चिट्ठियाँ बराबर लिखते रहो और अपने घरवालों से कहो कि तुम्हें लिखी मेरी चिट्ठियों को कोई और न पढ़े। चिट्ठियाँ लिखना हो तो सभी मुझे लिखे, लेकिन तुम्हारी चिट्ठियों को कोई भी और न पढ़ें। भूत से डरने की क्या बात है ? वे तो तुम्हारे मन के भय का ही बाहरी रूप हैं। उनसे न डरो। तथा तुम श्रीश्रीठाकुर के आश्रित हो, वे तुम्हारा कुछ बिगड़ नहीं सकते।

मैं उनसे सदा तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२६४)

१८ फरवरी २००५

प्रिय ...,

तुम्हारी २२ जनवरी की चिट्ठी ७ फरवरी को यहाँ पहुँच गई।

क्या मैंने तुम्हें तुम्हारा मन्त्र एक छोटे से कागज के पुर्जे पर लिख भेजा था ? अगर ऐसा है तो जब तुम्हें संतोष हो जाये ये की कागज के बगैर ही मन्त्र का उच्चारण ठीक-ठीक कर रहे हो

तो फिर उस कागज के छोटे-छोटे टुकड़े कर के नष्ट कर डालो, यानी जला डालो, जमीन में गाड़ दो, नदी, तालाब वगैरह में बहा दो। लेकिन जब तक भूल होने की सम्भावना हो तब तक उसे सुरक्षित रखो।

श्रीश्रीरामकृष्णदेव - जिन्हें श्रीश्रीमाँ सारदादेवीजी, 'श्रीश्रीठाकुर' कहा करती थी, और उनकी देखादेखी हमारे मठ के साधु व सभी लोग श्रीश्रीठाकुर ही कहकर उल्लेख किया करते हैं, उन्हें ही श्रीगुरुमहाराज भी कहा जाता है। रामकृष्ण मठ के साधु-भक्तों के लिए श्रीगुरुमहाराज केवल श्रीश्रीठाकुर ही हैं। तुमने पढ़ा होगा श्रीश्रीठाकुर को इस बात से नफरत थी कि लोग उन्हें 'गुरु' 'बाबा' या फिर 'कर्ता' कह कर पुकारें। वे कहते थे कि गुरु केवल सच्चिदानन्द ही है। श्रीश्रीठाकुर की इस शिक्षा के अनुसार ही हम सब अन्तर्यामी आत्मा को ही गुरु जानते हैं, और श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के चित्र में जैसे उन्हीं अन्तर्यामी आत्मा का आविर्भाव देखते हैं, अपने दीक्षा-गुरु में भी उसी अन्तर्यामी आत्मा का सशरीर आविर्भाव देखते हैं। अपने इष्टदेव का नाम लगातार हर घड़ी मन में जपते रहने की कोशिश करते रहो। दीक्षा के नियमों का पालन करने के बाद भी नाम जपते रहो। ऐसे जप में गिनतियाँ रखने की जरूरत नहीं। मैं उनसे तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी
स्वामी गहनानन्द

भगवान् के प्रति किस प्रकार का आकर्षण होना चाहिए ? सती का पति की ओर, कृपण का धन की ओर तथा विषयी का विषय की ओर जो आकर्षण होता है, उन तीनों को एकत्र मिलाने पर जितना आकर्षण होता है उतना यदि भगवान् के प्रति हो तो उनका लाभ होता है।

- श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(२६५)

१८ फरवरी २००५

प्रिय ...,

तुम्हारी १५ दिसंबर की लिखी चिट्ठी ३० दिसंबर को यहाँ पहुँच गई।

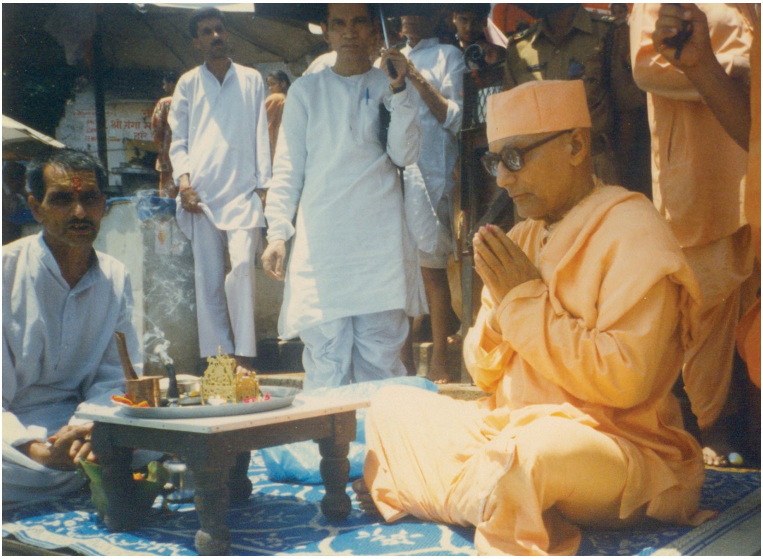
तुम्हारी चिट्ठी से ही तुम्हारी मनोदशा का परिचय मिल जाता है। अगर चिट्ठी को मेरे पास भेजने से पहले उसे पढ़े होते तो तुम्हें भी अपने मन की अवस्था का अहसास हो जाता। अब से अपनी चिट्ठियों की फोटोकॉपी अपने पास रखकर और तीन-चार दिनों के बाद उन्हें फिर से पढ़कर व ठीक लगने पर लिखने की इच्छा हुई, अगर ठीक मालूम हो तभी भेजा करो। चिट्ठी लिखने की इच्छा हुई - कलम उठाई, लिख दिया, ऐसा न करो।

याद रखो, श्रीश्रीठाकुर की कोई इच्छा नहीं है, इच्छा अगर है तो तुम्हारी है। लेकिन तुम्हारी इच्छा तो तुम्हारे पत्र के अनुसार संसार के मायाजाल से मुक्त होने की है ! और फिर तुमने लिखा है कि चूँकि घरवालों को तुमसे पैसों की अपेक्षा है, इसलिए तुम्हें नौकरी चाहिए लेकिन नौकरी मिल नहीं रही है। फिर पाप लगने की भी तुमने बात लिखी है ! लिखा है कि मुझे नौकरी, पैसों का कोई मोह नहीं ... आदि।

इस दुविधा से बाहर निकलो। निश्चय कर लो कि तुम्हें अपने घरवालों के लिए ही सही, जी-जान लगाकर नौकरी करनी ही है। तुम्हें ऐसी निश्चयात्मिका बुद्धि की आवश्यकता है। यह बुद्धि जितनी दृढ़ होगी, नौकरी खोजने की इच्छा भी उसी अनुपात में तीव्र होगी और वैसी ही तीव्रता के साथ तुम नौकरी खोजने के लिए प्रयत्न करोगे। जैसे पहले बात दिमाग में आती है कि बाथरूम जाना है। लेकिन तुम जाते नहीं हो। कुछ देर बाद बुद्धि तीव्र हो जाती है और साथ ही साथ बाथरूम जाने की इच्छा भी उसी अनुपात में तीव्र से तीव्रतर होती जाती है और अन्त में उस तीव्र इच्छा का परिवर्तन तीव्र प्रयत्न में होता हैं और तुम बाथरूम पहुँच जाते हो। पहला काम पहले करो। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२६६)

१८ फरवरी २००५

प्रिय श ...,

तुम्हारी २७ दिसम्बर की चिट्ठी ८ जनवरी को यहाँ पहुँच गई।

तुमने अपने आप को पतित भला क्यों लिखा ? तुम्हें पतितपावन ने स्वयं अपना नाम जपने का अधिकार सौंपा है, अगर तुम पतित होते तो यह कैसे सम्भव होता ? अपने अधिकार को आजमाना, उसका प्रयोग करना, उसका आनन्द उठाना ही तुम्हारा काम है, उस अधिकार की रक्षा के लिए तुम्हारे कर्तव्यों का पालन करते रहना तुम्हारा काम है, आगे चलकर तुम सही में मुहम्मद श... बन जाओगे, जब आजाद बन जाओगे।

मैं हमारे प्रभु से तुम्हारी भलाई के लिए हर घड़ी प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ, मेरा यही कर्तव्य है।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२६७)

श्रीरंगम के श्री अरिवझगन की सहायता से तमिल पत्रों का हिन्दी में अनुवाद किया गया है।

प्रिय बेटी ...,

३ जुलाई को पत्र पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

श्रीश्रीगुरुमहाराजजी की शरण में जाने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। सब प्रकार की आध्यात्मिक सम्पदा उन्हीं से मिलती है। अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उन्हें प्रसन्न करो। अधिक से अधिक जितना सम्भव हो सके उतने जप के द्वारा अपने जीवन का लक्ष्य उनको प्रसन्न करना ही है।

हम जिस वस्तु की इच्छा करते हैं वह हमें तभी प्राप्त होती है जब हमें वे (ईश्वर) प्राप्त होते हैं। उनके बिना कुछ भी सम्भव नहीं है। उनके ऊपर पूर्ण विश्वास रखो। आध्यात्मिक जीवन में बहुत ही बाधाएँ आती है किन्तु तुम उनसे भयभीत न होओ। अपनी मानसिक शक्ति को बढ़ाओ। तुम्हें अपने जीवन में आने वाले दुःखों से, उबरने के लिए शक्ति मिलेगी। उनके प्रति तुम्हारा प्यार बढ़ने से शान्ति भी प्राप्त होगी।

मैं तुम्हें इसके लिए आशीर्वाद प्रदान करता हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(२६८)

२८ जून, २००४

प्रिय बेटी नि ...,

तुम्हारी २६ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ ५ मई और ७ जून की १६ जून को पहुँची थी। मैं १६ मई से १६ जून तक तो बैंगलोर, कालड़ी (केरल) इत्यादि स्थानों पर गया हुआ था। इसी लिए तुम्हारी चिट्ठियों पर हस्ताक्षर कैसे करता ?

जिसे तुम तकलीफ समझ रही हो, वही तुम्हारी तपस्या है और किस तरह से तपस्या करोगी ? दुनिया का चेहरा तो देख लिया तुमने, अब इन्हीं आंखों को श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के दर्शन के लिए तपस्या से शुद्ध, पवित्र बनाओ यही तुम्हारी तपस्या है। पैसे की चिन्ता न करो। वही समय प्रभु का नाम लेने में बिताओ।

तुमने पढ़ा होगा श्रीश्रीमाँ ने कहा है, श्रीश्रीठाकुर अद्वैत है वही अद्वैत तुम्हारे शिव भगवान भी है। स्वामी विवेकानन्द अक्सर 'शिव, शिव' कहा करते थे। मारूतिनन्दन भी शिवावतार ही है। गायत्री उपासना स्वयं ठाकुर की ही उपासना है। श्रीश्रीठाकुर ने कभी सूर्य भगवान को दिखाकर कहा था, उसके साथ यहाँ का सम्बन्ध है। इसलिए जैसी करती हो करती रहो।

भजन सुनती हो ठीक है, लेकिन उन पदों को विशेषतः सरूदास, तुलसीदास, कबीरदास, और मीरा के भजन कण्ठस्थ करो और उन्हें अकेले में गुनगुनाया करो, प्रभु को सुनाती रहो, केवल श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्री माँ को ही भजन सुनाया करो किसी और को नहीं।

मैं उनसे हमेशा की तरह तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ करता हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(२६९)

मूल पत्र तमिल में है जिसका हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत है।

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारा पत्र प्राप्त होने से बड़ी प्रसन्नता हुई, मनुष्य जीवन का उद्देश्य ईश्वर दर्शन ही है। यह भक्ति के द्वारा बड़ी आसानी से प्राप्त होता है। ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। भक्तों से ईश्वर प्रसन्न होते हैं। ईश्वर ही गुरु महाराज के रूप में आये हैं, आध्यात्मिक जीवन में तुम्हारा दीक्षित होना तुम्हारा सौभाग्य ही मानो। एक अच्छे तरीके से अध्यात्म जीवन जीने के लिए शारीरिक और मानसिक शक्ति दोनों का होना आवश्यक है। गुरु महाराज जी से इसके लिए प्रार्थना करो। जीवन के सभी कार्यों को करते रहते हुए भी ईश्वर का दर्शन ही जीवन का उद्देश्य है, तुम अध्यात्म जीवन में आगे से आगे उन्नति करो यही मेरा आशीर्वाद है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२७०)

प्रिय ...,

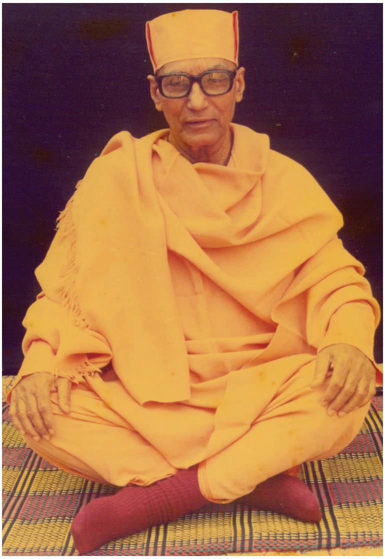
शुभकामनाओं सहित २ जनवरी का लिखा तुम्हारा पोस्टकार्ड ११ जनवरी को यहाँ पहुँचा।

वह जो सर्वभूतान्तरात्मा, सर्वभूतेषु, गूढ़, सर्वव्यापी, साक्षी, चेता, सर्वभूताधिवास, कर्माध्यक्ष होकर भी एक ही देव हैं, निर्गुण हैं, हम हमारे श्रीश्रीठाकुर को उसी का मानव-स्वरूप जानकर उनकी पूजादि करते हैं।

मैं उन्हीं से तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२७१)

१८ फरवरी २००५

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी लिखी ३० दिसम्बर तथा ३ फरवरी की दो चिट्ठियाँ यहाँ ५ जनवरी तथा ७ फरवरी को पहुँची।

ठीक ही तो है। श्रीश्रीठाकुर को तुम्हारे बारे में सब कुछ पता है। इसलिए तुम्हें अपने आध्यात्मिक जीवन के बारे में सोचने की आवश्यकता नहीं है। वे ही तुम्हें मेरे पास अपना नाम सुनाने के लिए लाये, इस बात को अगर मानती हो तो फिर बाकी जो कुछ जब जब करना होगा तुम्हीं से करवा लेंगे। मरीज हो, डाक्टर पर अपना इलाज छोड़ दो। उसी पर भरोसा रखो। श्रीश्रीठाकुर ही भवरोग वैद्य हैं, जानती तो हो।

मैं तुम्हारे लिए उनसे हर घड़ी प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२७२)

१७ फरवरी २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २५ दिसम्बर की लिखी चिट्ठी तुम्हारे greeting card के साथ मुझे १५ जनवरी को मिल गई।

यह paralysis कहाँ से जुटाया तुमने ? Office से छुट्टी लेने के लिए ? या श्रीश्रीठाकुर का एकान्त में जप करने के लिए ? कितने दिनों की छुट्टी ली है ? इलाज करा लो और फिर काम में लग जाओ।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२७३)

१२ जून २०००

प्रिय ...,

तुम्हारी ८ अप्रैल की चिट्ठी १७ अप्रैल को यहाँ पहुँच गई थी।

एलएलबी ही नहीं, वह तो पास करना आसान काम है, तुम एल.एल.एम. की परीक्षा देने के लिए अभी से तैयार हो जाओ। एल.एल.एम. उत्तीर्ण करने के बाद मठ में आओगे। अभी मार्गदर्शन और कुछ नहीं करना। अभी केवल पढाई करो और एलएलबी तथा एल.एल.एम. उत्तीर्ण करने की सोचो। मुझे लगातार चिट्ठियाँ लिखते रहो।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रभु को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी
स्वामी गहनानन्द



(२७४)

१७ फरवरी २००५

प्रिय ...,

तुम्हारी जनवरी की चिट्ठी १२ जनवरी को यहाँ पहुँची। तुम्हें मालूम होगा कि बेलूड़ के हमारे रामकृष्ण मठ में जो उत्सव मनाए जाते हैं वे सभी कोलकाता से निकलने वाले पंचाग 'विशुद्ध सिद्धान्त पंजिका' के अनुसार मनाए जाते हैं। इस बार नए साल की शुरुआत १५ अप्रैल को होती है। अगर तुम काशी के अद्वैत आश्रम या सेवाश्रम के दफ्तर के साधुओं से मिलोगे तो शायद वे हमारे मठों में मनाए जाने वाले उत्सवों की एक सूची तुम्हें दे सकेंगे। अगर उनके पास सूचियाँ अधिक संख्या में न हो तो उनके पास से एक सूची मांगकर फोटोकॉपी करवा सकते हो। उसी सूचि से तुम्हें वर्षभर की तिथियों का ज्ञान हो जायेगा।

अपनी बेटी से कहो गीत लिखना जारी रखे। इससे श्रीश्रीठाकुर के प्रति उसका लगाव बढ़ेगा।

मैं उनसे तुम्हारी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(२७५)

१७ फरवरी २००५

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १८ दिसंबर की चिट्ठी ५ जनवरी को यहाँ पहुँची। तुमने चिट्ठी में अपनी मूर्खता का जो परिचय दिया है उसके बाद मेरे लिए तुम्हें चिट्ठी लिखवाना कठिन काम था। फिर भी लिखवा रहा हूँ।

मेरा कहना तुमसे यही है कि जैसे जीवमात्र ही स्वरूपतः ब्रह्म है, परमात्मा है इसलिए वह पूरी तरह स्वतन्त्र भी है। लेकिन 'स्वतन्त्र' शब्द में 'स्व' शब्द का अर्थ ही आत्मा है, परमात्मा है, ब्रह्म है और 'तन्त्र' का मतलब अधीनत्व है, यानी स्वतन्त्र का अर्थ अपने हृदयस्थ आत्मा के अनुशासन के अधीन होना है। तुम भी इसी तरह स्वतन्त्र हो, पूर्ण हो, निर्मल हो !

लेकिन यही तुम्हारा भ्रम है कि तुम किसी व्यक्ति विशेष पर निर्भर हो और उसके कारण आत्महत्या करने की बात भी लिखती हो। यही तुम्हारी निरी मूर्खता है और यह भी बात है कि तुम्हारी मूर्खता तुम्हें पसन्द है, अगर नहीं होती तो तुम उसे दूर कर सकती थी। इसे ही भ्रम कहते हैं। तुम्हें नहीं मालूम यह संसार स्वतः ही एक स्वप्नस्वरूप है और तुम उसमें और नए-नए स्वप्न

देख रही हो व उन्हें साकार करने की इच्छा रखती हो। याद रखो, इच्छा करती हो तो वह इच्छा पूरी भी हो जावेगी, अगर प्रबल हुई तो। इसके लिए प्रार्थनाओं, आशीर्वचनों की आवश्यकता नहीं है। मुझे लगता है अपने शोक, आदि को तुम enjoy कर रही हो। अब तक तुम्हें पता चल गया होगा कि दीक्षा की सारी व्यवस्था हो जाने के बाद भी तुम लखनऊ नहीं पहुँच सकी इसका कारण यही था कि तुम तैयार नहीं थी। तुम्हें नहीं मालूम कि जैसे इम्तहान में फेल होने पर परीक्षार्थियों को फिर से परीक्षा में बैठना पड़ता है वैसे ही आत्महत्या करने वालों को पुनः पुनः अपने नए-नए जन्मों में उन्हीं कारणों का सामना करना पड़ता है जिनके लिए वे आत्महत्या करते हैं।

मुझे नहीं मालूम अपनी चिट्ठियों को अगर वे उपलब्ध हों तथा मेरे उत्तर-पत्रों को पढ़ोगी तो समझोगी कि किस तरह तुम्हारी चिट्ठियाँ पढ़कर मैंने तुम्हें दीक्षा लेने के लिए कहा था और तुम तैयार भी थी। लेकिन तुम्हारे मन में कुछ और ही था। मुझे और कुछ नहीं लिखना। हमारे शास्त्र कहते हैं, "मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः। बन्धाय विषयासंगो मुक्त्यै निर्विषयं मनः"।

मनुष्य का मन ही उसके बन्धन या मोक्ष का कारण है। जब वह सांसारिक विषयों में संलग्न होता है तो वह संसार के बन्धन में पड़ता है और फिर वही मन जब विषयरहित होता है तो वह मुक्ति के योग्य बन जाता है।

इसलिए हो सके तो अपने मन को देखो, अपनी इच्छाओं से परिचित हो जाओ। मैं तुम्हें आत्महत्या करने के लिए नहीं कहता और मुझे मालूम है तुम करोगी भी नहीं।

मैं यथापूर्व श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएं कर रहा हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(२७६)

६ मार्च २००५

प्रिय ...,

तुम्हारी न जाने कब की लिखी चिट्ठी ६ जनवरी को यहाँ पहुँच गई।

किसी राही को जब उसे राह के बारे में संशय होता है तो वह चलते लोगों से या राह के किनारे पर कहीं बैठे हुए किसी से पूछ लेता है। वे उन्हें बताते हैं, तुम्हारी राह ठीक है, परेशान न हो, कुछ दूर का रास्ता है, चलते रहो, पहुँच जाओगे। तुम्हारे मन की दुविधाएँ ऐसे ही हैं समझो। इतना समझो कि जैसे दृढ़ता तुम्हारे ही मन की अवस्था है, वैसे ही संशय भी है, सत्य केवल श्रीश्रीठाकुर हैं। जैसे पर्दा ही सत्य है, उस पर पड़ने वाले चित्र, आलोकचित्र ही हैं, फिल्म के प्रोजेक्शन ही हैं। इसलिए जब संशय की स्थिति में मन हो तो उस स्थिति को भी आजमाते रहो कि देखो ठाकुर, तुम मेरे आत्मस्वरूप हो फिर भी यह संशय मेरे मन को खाए जा रहा है। संशय को पहचानो, वह भाग जाएगा।

विवाह के लिए माता-पिता पर भी निर्भर करो। वही जो निर्णय लें उसे ही श्रीश्रीठाकुर, तथा तुम्हारे गुरु की इच्छा समझो। अपनी बुद्धि का प्रयोग न करो, इसी में तुम्हारा कल्याण समझो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए उनसे प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२७७)

१० फरवरी २००५

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २१ जनवरी की चिट्ठी २४ जनवरी को यहाँ पहुँच गई थी।

ठीक है बेटी, प्रभु का नाम ही जपती रहो वैसे भी जहाँ तक सुविधा हो हर घड़ी हर काम के बीच में प्रभु का नाम लेती रहने की आदत डालो। श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से अपने सम्बन्ध को और निकट बना लो जैसे अपने पति के साथ तुम्हारा सम्बन्ध है। आगे चल कर उनसे तुम्हारा सम्बन्ध क्रमशः निकट होता जावेगा। उन्हीं पर भरोसा रखो। उन्होंने तुम्हें उनका नाम लेने कि अधिकारिणी बनाया है, तुम्हारा कर्त्तव्य है कि अपने इस अधिकार का पालन करो।

मैं उनसे तुम्हारे कल्याण के लिए हर घड़ी प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२७८)

१० मार्च २००५

प्रिय बेटी,

तुम्हारी ४ फरवरी की चिट्ठी ५ फरवरी को यहाँ पहुँच गई।

Psoriasis तथा Arthritis वगैरह के लिए तुम किसी अच्छे Homeopathic Doctor से इलाज करा सकती हो।

तुमने श्रीश्रीठाकुर के नाम लेना बन्द कर दिया और इस वजह से श्रीश्रीठाकुर नाराज हो गए, फिर घर में झगड़ा शुरू हुआ, तुम बीमार पड़े, तुम्हारा रोजगार कम हुआ, ऐसी कोई बात नहीं है। तुमने confusion की बात लिखी है, यही एक बात तुमने ठीक लिखी।

तुम श्रीश्रीठाकुर का नाम इसलिए नहीं जपती कि श्रीश्रीठाकुर श्रीश्रीदुर्गादेवी से या महेश्वर शिव से बड़े या छोटे हैं। लगता यही है कि तुमने श्रीश्रीठाकुर के बारे में अध्ययन नहीं किया। स्वामी विवेकानन्द महाराज ने किसी समय अपने एक मित्र को एक मंत्र सुनाकर उससे कहा था कि तुम्हें इसे जपने की अभी आवश्यकता नहीं है। कुछ ही दिनों में तुम इसे भूल भी जाओगे। लेकिन जब तुम इसके योग्य बन जाओगे, तब फिर तुम्हें यह स्मरण हो आयेगा और फिर तुम इसका निरन्तर जप करते रहोगे। हुआ भी ऐसा था।

फिलहाल तुम 'उपासना-पद्धति' के अनुसार अपने जप-ध्यान उपासना का कार्यक्रम आरम्भ करो। यह क्रम पूरा कर लो, फिर श्रीश्रीदुर्गा का मन्त्र या शिवमन्त्र यथाशक्ति जपना, इसमें कोई हानि नहीं। स्वप्न की बातों को या कल्पना को अधिक महत्व न दो। अपने profession के लिए जो कुछ professional integrity के खिलाफ न हो, लोगों के हित में हो, करती रहो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(२७६)

१० मार्च २००५

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २० जनवरी की चिट्ठी २५ जनवरी को यहाँ पहुँच गई। तुम्हें हो क्या गया ? बड़ी अच्छी चिट्ठी लिख रही हो ?

१) श्रीश्रीमाँ का नाम अलग से जपने की जरूरत नहीं, क्या वे अलग थे ? श्रीश्रीठाकुर को ही अपनी सारदा-माँ समझो। श्रीश्रीमाँ को भी आनन्द होगा जब वह देखेंगी कि तुम एकनिष्ठ होकर श्रीश्रीठाकुर ही का नाम जप रही हो।

२) माला के लिए स्वामी आत्मनिष्ठानन्द (Swami Atamanishthananda Maharaj) को नीचे छपे पते पर लिखो। वे नई माला का मुझसे शोधन करवा लेने के बाद तुम्हें रजिस्ट्री डाक से भिजवा देंगे। माला में जप करने का नियम समझने के लिए मठ के किसी अनुभवी संन्यासी महाराज से मिलो और उन्हें पूछो। लीमड़ी के आदिभवानन्द महाराज (प्रागजी महाराज) से भी पूछ सकती हो।

३) बेलूड़ मठ में रहने के लिए स्वामी प्रमेयानन्द महाराज के नाम चिट्ठी लिखो। बेलूड़ मठ से हमारे योगोद्यान मठ में पहुँच सकती हो, अगर मैं यहाँ रहा तो मिल भी सकती हो। राजकोट वगैरह में मेरे कार्यक्रम के बारे में तुम उन्हीं आश्रमों से पता लगा सकती हो। मेरी तबीयत ठीक है। मैं यहाँ योगोद्यान मठ में कम ही रहता हूँ, देशभर में दीक्षा का काम लेकर घूमना पड़ता है। श्रीश्रीठाकुर से तुम जो चाहती हो, जिस तरह चाहती हो, वे तुम्हें सब कुछ प्रदान करें, तुम्हारा कल्याण करें, यही मेरी उनसे तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थना है।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२८०)

१० मार्च २००५

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १७ जनवरी की चिट्ठी २५ जनवरी को यहाँ पहुँची।

बालासाहेब चले गए लेकिन उनका आशीर्वाद तुम्हें मिला, वे तुम्हारे शारदा संगीत अकादमी में पहुंचे, बच्चों को आशीर्वाद दिया, वही तुम्हें बहुत आगे बढ़ाएगा। अभी केवल अभ्यास करती रहो। श्रीश्रीठाकुर को मारवा राग सुनाई तुमने, भजन सुनाया, वैसे ही हर रोज उन्हें सुनाओ।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२८१)

२८ फरवरी २००७

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १ दिसंबर की चिट्ठी यहाँ १६ दिसंबर को पहुँच गई।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ सारदादेवी से प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ कि वे तुम्हें तुम्हारे पुत्र के वियोग का शोक सहने की शक्ति दें। पुत्रवियोग का शोक बड़ा भयानक होता है। श्रीश्रीठाकुर के परिवार में एक बार बात ऐसी हुई कि अक्षय नाम का लड़का एकाएक मर गया। कई दिन बीतने के बाद श्रीश्रीठाकुर ने देखा कि शोक तो उन्हें हुआ नहीं लेकिन एक इच्छा हुई कि संसार में लोग स्वजन-वियोग को किस तरह झेलते हैं। फिर उन्होंने देखा कि उनके हृदय में गीले कपड़े से पानी निकालने के लिए जिस प्रकार उस कपड़े को निचोड़ते हैं वैसी ही वेदना हो रही थी मानो कोई उनके हृदय को ही निचोड़ रहा हो। तो देखो, श्रीश्रीठाकुर समझते हैं पुत्रवियोग पर माँ की व्यथा, वे ही तुम्हें सम्हालेंगे।

तुम्हारा ही नित्य हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(२८२)

१० मार्च २००५

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १७ जनवरी की चिट्ठी १५ जनवरी को यहाँ पहुँची।

अच्छा हुआ बालासाहेब चले गए, कष्ट बहुत हो रहा रहा था। उनके पास जाकर अधिक नहीं सीख पाई ठीक है, पर उनका आशीर्वाद मिला, अपने आप को उनकी शिष्या समझती हो, यही सबसे बड़ी बात है। अभी केवल अभ्यास में मन लगाना है।

... मुझे चिट्ठियाँ लिखता रहता है।

मैं तुम लोगों की भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२८३)

२८ फरवरी २००५

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १७ नवम्बर की चिट्ठी यहाँ २३ नवम्बर को पहुँची।

तुम जब १५-१६ साल की थी जरा सोचो तो कि किन बातों से परेशान होती थी। और फिर उन दिनों से अपने आज के जीवन को देखो, कहाँ गई वे परेशानियाँ ? कैसे गई ? तुम्हें नहीं मालूम, एक दो-तीन साल के बच्चे को देखो, क्या उसे किसी तरह की परेशानियाँ होती हैं? उसे तो केवल भोजन से और सोने से मतलब रहता है। उसे तुम्हारी तरह 'क्या होगा' 'क्या होगा', हे प्रभु रक्षा करो, मंगल करो, ऐसे बातों से सम्बन्ध नहीं रहता। वह देखता सुनता सब कुछ है लेकिन चिन्ता उसे किसी भी बात की नहीं होती। ऐसे ही अपने जीवन को बना लो। जीवन की गति उसकी अपनी गति है, उसे चलने दो अपनी चाल से, जैसे ड्राइवर गाड़ी चलाता है तुम उस पर पूरी तरह निर्भर रहती हो, जानती हो कि पुराना ड्राइवर है। इसी तरह ड्राइवर को गाड़ी चलाने दो, अपने मुकाम पर पहुँच जाओगी।

मैं तुम सभी के कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

(२८४)

२८ फरवरी २००७

प्रिय ...,

तुम्हारी ११ अक्तूबर, २७ नवम्बर तथा ३ जनवरी की तीन चिट्ठियाँ मेरे पास समय पर पहुँची थी। अ... की चिट्ठियों का मैं जवाब भिजवा चुका हूँ।

अपने बारे में या अपनी पत्नी या अपने बच्चों के बारे में चिन्ता न करो। समझो तुम्हारें हृदय में अवस्थित तुम्हारे अति निकट, तुम्हारे आत्मीय, तुम्हारी परमात्मा, तुम्हारा अन्तर्यामी हर घड़ी तुम्हारे हरेक कार्य को, सोच पर नजर लगाए है, उनका नियन्त्रण करते हैं। इसलिए समझ लो कि जो कुछ करते हो वही तुमसे कराते तो हैं लेकिन चूँकि तुम उनकी भाषा, उनके स्वभाव आदि से परिचित नहीं हो इसलिए कभी कभी वो कहते कुछ और है और तुम करते कुछ और हो। उनसे सम्बन्ध बढ़ाओ, उन्हीं को श्रीश्रीठाकुर समझो। श्रीश्रीठाकुर को ही अपना अंतर्यामी समझो और उनसे इसी तरह का व्यवहार करो, जैसे एक बच्चा अपनी माँ से करता है। अगर हर घड़ी न भी कर पाओ, तो कम से कम जब भी उनकी याद आवे, उनसे सम्बन्ध बनाओ और व्यवहार करो। वही तुम्हें तुम्हारे स्वरूप के बारे में भी कहेंगे आगे चल कर।

मैं उन्हीं से तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा ही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

जिसने स्त्रीसुख का त्याग किया है, उसने तो जगत्-सुख का त्याग किया है। वास्तविक ही ईश्वर इसके अत्यंत निकट है।

– श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(२८५)

१२ जून २०००

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २४ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ ४ मई को ही पहुँच गई थी।

तुम्हें जप करने में कठिनाई क्यों होने लगी ? हृदय में उनका दर्शन नहीं होता तो वे जहाँ तुम्हें दर्शन देते हैं क्या वहीं दर्शन नहीं कर सकती ? जप करते समय तुम्हारी आंखों के सम्मुख जो कुछ भी हो रहा हो, तुम जप करती रहो। वैसे भी हर काम करती-करती मन ही मन इष्ट मन्त्र को जप करते रहने का अभ्यास करती रहो।

मै तुम्हारी भलाई के लिए निरन्तर प्रभु से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२८६)

१ मार्च २००७

प्रिय ...,

सितम्बर और अक्तूबर की दो चिट्ठियाँ यहाँ यथासमय पहुँच गई थी पर मैं यथासमय जवाब नहीं भिजवा सका।

मैंने तुम्हें श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ के हवाले कर दिया है जो कि तुम्हारे हृदय में ही विराजमान हैं, उन्हीं से सम्पर्क बनाओ तो तुम्हारा जीवन सार्थक हो जावेगा। यह तो ठीक ही है कि आज तक की तुम्हारी कामनाएँ पूरी हुए बगैर तुम्हारी छुट्टी नहीं होगी, लेकिन तुम्हारे अन्तर्यामी अनुभवी वैद्य की भाँति जानते हैं कि किस मरीज को कैसी दवा कब देनी है। इसलिए यथासमय तुम्हारी कामनाएँ पूरी होंगी, अगर तुम ही उनका त्याग न कर देते हो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा ही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२८७)

१ मार्च २००७

प्रिय ...,

तुम्हारी २ नवम्बर की चिट्ठी ४ नवम्बर को यहाँ पहुँची थी।

श्मसानवासिनी काली आदि के चित्र तुमने मुझे पूछ कर तो नहीं रखे ! अब क्या करोगे ? हर रोज इन चित्रों के सामने एक लाल या पीला फूल चढ़ाओ और उन्हें साफ करो सम्भव हुआ तो धूपबत्ती भी जला सकते हो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(२८८)

१ मार्च १९९६

प्रिय ...,

तुम्हारी १६ दिसम्बर की चिट्ठी यहाँ १२ जनवरी को पहुँची।

जो कुछ तुम्हारे पर बीता उसे बीत जाने दो, उसे लेकर माथापच्ची न करो लेकिन अच्छा है अपने आध्यात्मिक जीवन की बातें केवल श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से जो तुम्हारे हृदयनिवासी ही हैं, उन्हीं से करो। यदि तुम औरों से कहती हो तो मुझे इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना। नियमित रूप से ध्यानजप करने का अभ्यास डालो।

मैं तुम्हारे आध्यात्मिक कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ को नित्य ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा ही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(२८६)

२ मार्च १९९६

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी चिट्ठियाँ यहाँ पहुँच गई लेकिन दोनों में से किसी पर भी तारीख का नामो निशान न था।

तुम जो कुछ श्रीश्रीठाकुर से अब माँग रही हो उन्हें जुटाने के लिए उन्हें समय तो दोगी। लेकिन इतने वर्षों तक को कुछ तुमने उनसे माँगा है उनका क्या होगा ? अभी जो तुम्हारा जीवन है वह तुम्हारी पूर्व कामनाओं का ही फल है। हम अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार कामना करते हैं। इसीलिए तुम अपनी बुद्धि के अनुसार अपने भविष्य को गढ़ना चाहती हो, लेकिन जब वहाँ पहुँचोगी तो तब तक तुम्हारी बुद्धि और निर्मल, साफ हो चुकी होगी। उस वक्त सोचोगी कि यह सब मैंने श्रीश्रीठाकुरजी से क्या-कुछ माँगा था। इसीलिए श्रीश्रीठाकुर ने काम-कांचन का त्याग करने को कहा। कामनाओं का त्याग हो जाने पर नई कामनाओं के अभाव में तुम्हारा हृदय उत्तरोत्तर श्रीश्रीठाकुर के लिए जगह बनाता है लेकिन संसार में रहकर अपनी पुरानी कामनाओं का फल तुम्हें भोगना पड़ता है। इसलिए कुछ मांगो नहीं। उन्हें ही हृदय में बिठाओ।

मैं उनसे तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा ही हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(२६०)

२ मार्च २००७

प्रिय ...,

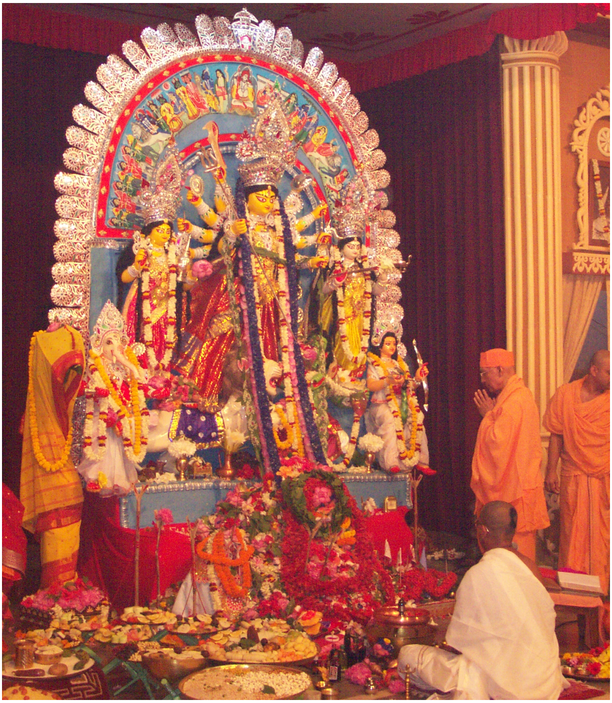
तुम्हारी २५ नवम्बर की चिट्ठी ७ दिसम्बर को यहाँ पहुँची।

अपने स्वप्न को ऐसे समझो जैसे भिन्न-भिन्न पुस्तकों से पन्ने निकाल कर एक छोटा बच्चा अपनी मनमानी पुस्तक बना लेता है। स्वप्न की घटनाओं को अपने जाग्रत अवस्था से जोड़कर देखो तो मेरी बात समझ जाओगे कि इनका कोई महत्व नहीं है।

तुम्हारे मन्त्र का अर्थ पूछने से पहले सोचो कि तुम्हारे नाम शब्द के अर्थ से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? तुम्हारे नाम के संसार में अनेक है पर क्या तुम्हारे नाम का जो ऑडिटर कॉलोनी में रहता है वह एक ही है और वह तुम ही हो इसलिए तुम्हारे मन्त्र का अर्थ तुम्हारे इष्टदेवता ही हैं। उनका नाम लेना उनका स्मरण ही करना है और हरेक स्मरण तुम्हारे मन से सांसारिक वृत्तियों का एक-एक करके निवारण करता है, तुम्हें निर्मल बनाता है, शुद्ध करता है। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो। मैं श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा ही हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(२६१)

१३ दिसंबर २००७

प्रिय ...,

तुम्हारी ४ सितंबर की चिट्ठी ८ सितंबर को यहाँ पहुँच गई। मुझे समझ में नहीं आया कि अपनी बेटी के पुनर्विवाह को लेकर इतनी चिन्ता क्यों है ? ठीक है चिन्ता करो लेकिन मुझसे इस सम्बन्ध में सलाह लेने की जरुरत नहीं है। मैं इस विषय में तुमसे कोई पत्राचार नहीं करना चाहता।

मैं श्रीभगवान् से तुम्हारी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
स्वामी गहनानन्द



(२६२)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ५ अक्तूबर की चिट्ठी यहाँ २७ अक्तूबर को पहुँच गई।

बेटी, तुम्हारी यह सोच ठीक नहीं है कि तुम अपने माता पिता के सपनों को साकार रूप देने के लिए अपना जीवन जी रही हो। सपने तो सपने ही होते हैं, लेकिन स्वप्नावस्था में ही वे सत्य होते हैं। स्वप्नावस्था में तुम्हें इस बात का ध्यान नहीं रहता कि तुम सपने देख रही हो तो वह तो जागने पर ही तुम्हें बोध होता है।

ध्यान के लिए सुबह अधिक समय नहीं मिल पाता तो जब भी समय मिले अवश्य ही ध्यान में बैठ सकती हो। लेकिन मुझे बराबर चिट्ठियाँ लिखती रहो। किस क्लास में पढ़ रही हो वगैरह मुझे अपनी अगली चिट्ठी में लिखो।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ कि वे तुम्हें उनके अपने लायक, अपनी रूचि के अनुसार गढ़ लें।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(२६३)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी चिट्ठी दि ... की चिट्ठी के साथ जो उसने ५ अक्तूबर को लिखी थी, यहाँ २७ अक्तूबर को पहुँची।

निश्चिन्त रहो। अपनी बेटियों को पढ़ लिख लेने दो और फिर तुम आराम से पूरे मन से श्रीश्रीठाकुर का नाम लेती रहोगी। श्रीश्रीठाकुर की असीम कृपा तो तुम्हारे परिवार पर है ही ! बता सकती हो कानपुर शहर में कितने लोग हैं जिन पर श्रीश्रीठाकुर की, श्रीश्रीमाँ की कृपा है, कितने लोग उनका नाम लेते हैं, या कितने उनका नाम जानते ही हैं।

अन्याय करने वाले लोगों की चिन्ता तुम न करो। श्रीश्रीमाँ ने कहा है, किसी के दोष मत देखो। माँ ने भला ऐसा क्यों कहा। वह इसलिए कि दोष दर्शन करते रहने से दोष दर्शन करने वाले के मन में दोष का एक ऐसा संस्कार पड़ जाता है कि वह संस्कार उसे वैसा ही दोषपूर्ण कर्म करने को बाध्य करता है, वह इससे बच नहीं सकता। दोष करने वाले की सजा उसे अपने आप ही, अपने कर्म संस्कार के फल के रुप में मिल जाती है। लोग आमतौर पर इन बातों को मानते नहीं हैं, न मानें। लेकिन जो लोग संसार में अपने संसार के विषयों में लगे रहते हैं, जिनका मन अपने परिवार, अपना रोजगार, अपने मान-सम्मान आदि को लेकर व्यस्त रहता है, उस मन से वे औरो के मन की गतिविधियों को नहीं समझ सकते। इसलिए उनके लिए इन बातों को मान ना पाना स्वाभाविक है। लेकिन हमारे शास्त्रों के मन्त्रों के द्रष्टा ऋषियों का जीवन और ही तरह का हुआ करता था। उनका मन भी बिलकुल शुद्ध और निर्मल। वैसे लोगों के ही लिए धर्म सत्य है, ईश्वर सत्य हैं।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा सतत स्नेही

स्वामी गहनानन्द





(२६४)

दिसम्बर १३, २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १३ अक्तूबर की चिट्ठी यहाँ २७ अक्तूबर को पहुँच गई। किससे भिजवाई थी चिट्ठी ?

मन्त्र लिखने में तुमने 'गुरु' शब्द को 'गुरू' लिखा है।
गुरुर्ब्रह्मा (ब्रम्हा) नहीं, ब्रह्मा, परब्रम्ह नहीं (परब्रह्म)।

तुमने प्रयत्न करने की बात लिखी है। लेकिन प्रयत्न के पीछे इच्छा होती है, इच्छा के पीछे बुद्धि। मान लो तुमने अभी अभी लंच खाया है, इतने में कोई ५०० ग्राम मिठाई लाकर तुम्हें खाने के लिए कहता है। क्या तुम उन्हें खाने के लिए प्रयत्न कर सकोगी? क्या तुम्हारी खाने की इच्छा होगी ? क्या तुम्हारी बुद्धि तुम्हें खाने के लिए कहेगी ? नहीं। लेकिन फिर मान लो वह व्यक्ति उस व्यक्ति से टेलीफोन मिलाता है जिसने तुम्हें मिठाईयां भेजी हैं और टेलीफोन पर स्वामी गहनानन्द महाराज तुमसे उन मिठाइयों

को तुरन्त खाने के लिए कहते हैं। तुम्हारी बुद्धि क्या कहेगी ? कहेगी, तुरन्त खा लो। फिर इच्छा भी होगी और प्रयत्न की बात तो करने की जरूरत ही नहीं।

ऐसे ही निरन्तर प्रभु का नाम करते रहने से प्रभु उनके प्रति तुम्हारे लगाव को समझेंगे और तभी मन की बुरी भावनाएँ चली जायेंगी, सद्भावनाएँ पूरी हो जायेंगी और तुम्हारा मन प्रभु के निवास के लायक एक साफ-सुथरा मन्दिर-सा बन जायेगा।

अपनी अगली चिट्ठी में अपने घर के लोगों के बारे में लिखो- अपने बारे में भी।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(२६५)

दिसम्बर १३, २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २२ अक्तूबर की चिट्ठी यहाँ पहुँच गई। मुझे इसी तरह बराबर चिट्ठियाँ लिखती रहो। अपनी अगली चिट्ठी में अपने घर के लोगों के बारे में मुझे लिखो कि कौन क्या करता है आदि।

कठिनाइयाँ तुम्हें इसलिए महसूस होती है क्योंकि तुम सोचती हो कि यह सब तुम कर रही हो। देखो, बिस्तर पर लेटी रहना तुम्हारा काम है, लेकिन नींद पर तुम्हारा बस नहीं चलता। वह आ भी सकती है, नहीं भी आ सकती। ठीक है ? इस अवस्था में तुम कहती हो कि नींद से जागने में तुम्हें कठिनाइयाँ होती है। लोग भी कहा करते हैं, करता तो हूँ, होता नहीं है। हमारे शास्त्र मन को संकल्प-विकल्पात्मक कहते हैं। वह अभी कुछ सोचता हैं, फिर कभी कुछ और एक संकल्प करता है फिर उसका एक विकल्प, विरुद्ध संकल्प, विरुद्ध पक्ष, विरुद्ध चिन्ता करता है। वहाँ उसकी बुद्धि जिसको निश्चयात्मिकता कहते हैं आखिरी फैसला करती है। बुद्धि अर्थ है बोध का भाव, बोध की उपस्थिति, बोध का होना। बोध को ही ज्ञान भी कहते हैं।

तुम्हारा काम केवल प्रभु का नाम लेते रहना है। जैसे नियमपूर्वक तुम्हें बताया गया है उसके अलावा भी, जहाँ तक कर सको हर घड़ी मन में प्रभु का नाम जपो, जब भी मन में इधर-उधर की बातें उभरें या जब कभी श्रीश्रीठाकुर या श्रीश्रीमाँ की तस्वीरों पर नजर चली जावे तो प्रभु का नाम लगातार जपती रहो। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो।

मैं तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ती के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ को सदा ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२६६)

प्रिय ...,

तुम्हारी २१ अक्तूबर की चिट्ठी यहाँ ११ नवम्बर को पहुँच गई।

ध्यान में और विधिवत् पूजा में कोई फर्क नहीं है। जब ध्यान करते हो तब ध्यान की अवस्था में मन ही मन विधियों का पालन करते हुए पूजा करो और जब विधिवत पूजा करने बैठते हो तो ध्यान की ऐसी एकाग्रता से ही पूजा करो। जहाँ तक हो सके, मन में हर घड़ी हर काम करते रहते हुए प्रभु के नाम जपते रहो। आध्यात्मिक जीवन बिताने के लिए साधु बनने की आवश्यकता नहीं है। प्रभु से अपनी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ करते रहो। मैं भी उनसे तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द

(२६७)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १५ सितम्बर की चिट्ठी यहाँ २४ सितम्बर को पहुँच गई। लेकिन देखो मुझे 'गुरुबाबा' ऐसा सम्बोधन न करो। हमारे मठों में साधुओं को केवल 'महाराज' कहने की ही परम्परा है। जैसे श्रीश्रीठाकुर को 'श्रीश्रीगुरुमहाराज' कहते हैं क्योंकि वे ही तुम्हारे, हमारे, सभी के गुरुमहाराज हैं। स्वामी विवेकनन्द महाराज को इसी तरह स्वामीजी महाराज कहते हैं। स्वामी ब्रह्मानन्दजी को राखाल महाराज, रामकृष्णानन्दजी को शशि महाराज, अद्भूतानन्दजी को लाटू महाराज, तुरियानन्दजी को हरि महाराज इस तरह कहा जाता है। मुझे भी केवल महाराज कहा करो और स्वामी गहनानन्दजी महाराज लिखा करो।

तुम्हारी पूजा विधि ठीक ही है। घृणि ही सूर्य भगवान् का नाम है घृंणि नहीं। इसे सुधार लो। गणेष न लिखो, गणेश लिखो। दुर्गा-सप्तसती तुम्हारे पास नहीं है क्या ? गीताप्रेस की दुकान से खरीद लो। वहाँ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्रर्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते आदि मन्त्र और उनके अर्थ भी मिल जावेंगे। इसी प्रकार या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः इन मन्त्रों में 'दया रुपेन' न लिखकर या पढ़कर 'दयारूपेण' इस तरह एक साथ पढ़ो। ये मन्त्र भी दुर्गासप्तसती चण्डी के हैं। चारबाग स्टेशन पर शायद गीताप्रेस की दुकान हो।

शिवपंचाक्षरस्तोत्र को इस प्रकार पढ़ो :

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय-भस्मांङ्गरागाय महेश्वराय
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय-तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।१।।
मंदाकिनीसलील चंदनचर्चिताय-नन्दीश्वर प्रमथनाथमहेश्वराय
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय-तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।२।।

शिवाय गौरीवदनाब्जबालसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय।।३।।
वसिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य-मुनीन्द्र देवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्क वैश्वानरलोचनाय तस्मै व-काराय नमः शिवाय।।४।।
यज्ञस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय-तस्मै य-काराय नमः शिवाय।।५।।
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।६।।

और जो कुछ भी तुमने लिखा ठीक ही है। इस बात का ध्यान रखो तुम्हारे हृदय के मध्य तुम्हारे इष्टदेवता बैठकर दिनभर, रातभर, हर घड़ी, तुम्हारी हरेक हरकत पर नजर रखे हुए हैं और ऐसा समझो उनकी सहमति उनकी सम्मति के अलावा तुम कुछ भी नहीं कर सकती। कहीं गाड़ी से जाना चाहती हो तब अगर प्रभु की सम्मति न हो तो देखोगी, रवाना होने से पहले गाड़ी खराब हो जाती है। इसीलिए दिनभर रातभर कभी भी मौका मिले श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ की तस्वीरों पर नजर पड़े, या मन में कोई उल्टी सीधी बात सता रही हो, तब मन ही मन प्रभु का नाम जपना शुरू कर दो। जब भी प्रभु का स्मरण हो नाम जप करो, इष्टमन्त्र का मन में जप करो, गिनतियाँ रखने की जरूरत नहीं।

मुझे चिट्ठियाँ लिखा करो। मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द

> हृदय के भीतर भक्तिभाव रखो, कपट-चतुराई छोड़ दो। जो सांसारिक कर्म करते हैं, दफ्तर में काम करते हैं, उन्हें भी सत्यनिष्ठ होना चाहिए। सच बोलना कलियुग की तपस्या है।
>
> – श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(२९८)

दिसम्बर १३, २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ५ नवम्बर की चिट्ठी यहाँ ११ नवम्बर को पहुँच गई थी।

श्रीश्रीमाँ ने विश्वास न करने की जो बात कही है उसमें तुम्हें प्रत्यय नहीं हो रहा है। इसी को संसार कहते हैं। तुम्हें माँ की बातों पर प्रत्यय लेने के लिए ठोकरें खाने की आवश्यकता है। जिस वस्तु की प्राप्ति के लिए हम जितना अधिक त्याग करते हैं या मेहनत करते हैं, दःुख सहते हैं वह वस्तु उतना ही हमारे लिए कीमती होती है, महंगी होती है, मूल्यवान होती है। माँ की बातें तुमने पढ़ा, बस नकार दिया। अब कुछ दिन धैर्य धरो, कष्ट सहो, हानि, नुकसान उठाओ, पीड़ा सहो फिर माँ की बातों का मूल्य समझोगी।

जो तुमने लिखा है कि तुम्हें अपने स्वयं पर भी पूरा विश्वास नहीं है, इसके सम्बन्ध में तो मैं समझता हूँ तुम्हें मालूम ही नहीं तुम क्या लिख गई हो। ८-१० वर्षों के बाद अगर अपनी इस चिट्ठी को पढ़ोगी तो समझोगी क्या लिख गई हो।

किसी व्यक्ति के साथ तुम्हारे विवाह के सम्बन्ध में मैं कुछ भी नहीं बता सकता, न ही श्रीश्रीठाकुर या श्रीश्रीमाँ इस विषय पर

तुम्हारी सहायता कर सकते हैं। मनुष्य अपने किए संस्कारों को लेकर जन्म लेता है, एक एक जन्म में उसे नए नए अनुभव होते हैं जो संस्कार के रूप में उसके मन को नया नया रूप देते रहते हैं और वह हर जन्म में सुख और दुःख रूपी फल भोगता रहता है। यही हमारे देश के कर्म का सिद्धान्त है। जहाँ तक तुम्हारी अवस्था मैं देख रहा हूँ तुम्हारे मन में उस व्यक्ति के प्रति जो धारणा है वह तुम्हें उससे विवाह करने की इच्छा में परिणत हो चुकी है। अब इससे निकल पाना तुम्हारे लिए मुश्किल है, तुमने अपने संस्कार इस तरह बना लिए हैं। क्या करोगी। क्रोध उन्हीं लोगों को अधिक आता है जो अधिक भावुक होते हैं। लेकिन अपनी भावनाओं को विवेक बुद्धि के सहारे अपने नियंत्रण में करने का काम ज्यादातर लोग नहीं कर पाते। ऐसे लोगों को भोगना पड़ता है। वह भी जब तक कारण नहीं देख लेते। बातें बहुत हैं। वैसे विवाह के बाद तो औचित्य देख ही लोगी इसमें सन्देह नहीं लेकिन अनुभवों के सिवाय शायद तुम कारण नहीं देख पाओगी।

अपनी अन्तरात्मा से सम्पर्क करो। वह जैसे बताएँ करती रहो। उन्हीं की सहायता से बच सकती हो अगर बचना चाहती हो। मुझे लिखो मैं तुम्हें आगे बढ़ने की राह बताऊंगा। लेकिन शर्त यह है कि तुम उस व्यक्ति से या किसी भी और व्यक्ति से मैं जो कुछ लिखूंगा उसे लेकर चर्चा नहीं करोगी और मुझे भी नहीं लिखोगी कि किसी से चर्चा करने से क्या हो जायेगा। तुम्हारे स्वभाव में गहराई का बहुत ही अभाव है। बहुत चंचल हो। फिर भी अगर सुधरना चाहती हो तो मुझे लिखो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से नित्य ही प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा ही नित्य शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(२६६)

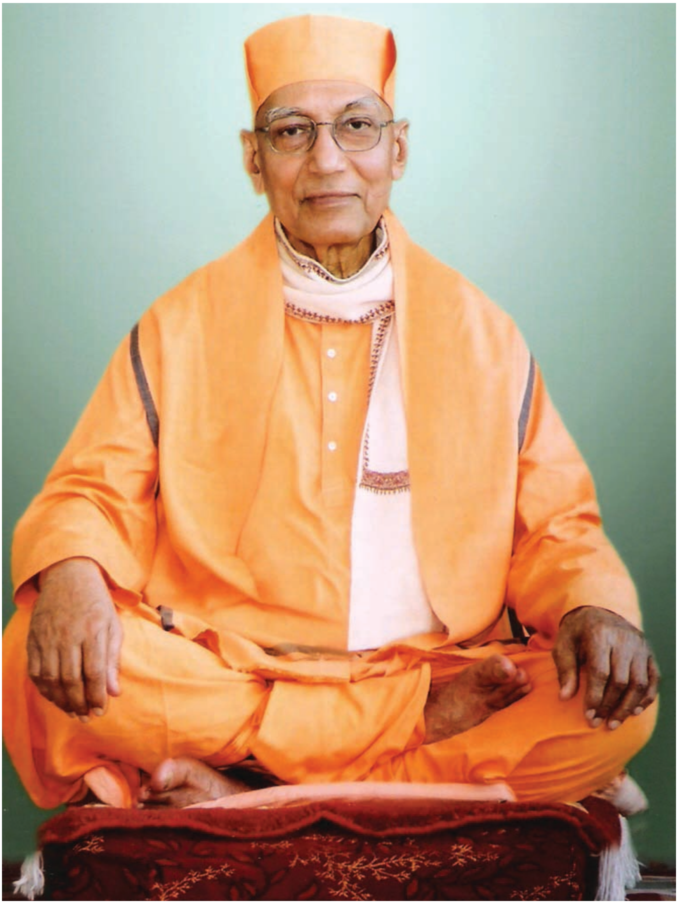
दिसम्बर १३, २००३

प्रिय ...,

दीपावली की तुम्हारी शुभकामनाओं के साथ तुम्हारा मुद्रित बधाई पत्र यहाँ पर २७ अक्तूबर को पहुँच चुका था। मेरे आशीर्वचनों पर भरोसा न करो। अपने हृदय में बैठे अपनी अन्तरात्मा, अपने इष्टदेव, हमारे श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ से अनुक्षण सम्पर्क बनाए रखो, वे जब जैसे तुम्हें चलाएँ चलते रहो। जीवन में स्थिरता कहाँ ? जीवन तो गति है। जब तक तुम्हारी वैयक्तिक सत्ता का तुम्हें बोध है तब तक तो चलते ही रहना है। स्वामीजी महाराज को पढ़ो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी
स्वामी गहनानन्द



(३००)

दिसम्बर १३, २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी तीन चिट्ठियाँ २५ अगस्त, ५ नवम्बर, तथा तारीख रहित एक चिट्ठी यहाँ ६ सितंबर, १८ नवम्बर तथा १ नवम्बर को पहुँची। १ नवम्बर को पहुँचने वाली चिट्ठी के साथ ही तुम्हारा दीपावली का कार्ड भी था। तुमने दिपावली क्यों लिखा हैं ? फिर "कृपाभिलाषी" लिखा है, लिखना था "कृपाभिलाषिणी !"

चलो ठीक है। फिर भूल जाओगी। फिर दिपावली लिखोगी कृपाभिलाषी लिखोगी। कोई बात नहीं। तानपुरा नहीं है और गाना सीख रही हो किसे सुनाओगी तुम्हारे गाने ? श्रीश्रीठाकुर को स्वामीजी तम्बूरे पर ही गाना सुनाया करते थे। तुम किसे सुनाओगी ? गुरुजी के पास सीखने भी नहीं जाती। तुम्हारे पिता ने बड़ा अच्छा काम किया है। लेकिन बताओ तो तानपुरा तो उन्होंने तुम्हारे लिए नहीं खरीदा, काला कोट खरीदा या बनवा दिया है तुम्हारे लिए ? उसे पहन कर कॉलेज जाती हो ?

अंग्रेजी को लेकर घबराने की जरूरत नहीं है। अंग्रेजी अखबार, पत्रिकाएँ, उपन्यास, जासूसी उपन्यास हर रोज पढ़ना शुरू करो। समझो, न समझो पढ़ना जारी रखो। पुरानी किताबों की दुकानों से किताबें खरीदो। पुस्तकालयों से लेकर पढो। टी.वी. में अंग्रेजी कार्यक्रम देखो। अंग्रेजी समाचार बराबर सुनती रहो। सालभर में ही काफी सुधार आएगा।

भारतवर्ष को धर्मक्षेत्र कहा गया है। सत्ययुग का उल्लेख हमारे शास्त्रों में ही मिलता है। त्रेतायुग में श्रीरामचन्द्र अवतीर्ण हुए, द्वापर युग में श्रीकृष्ण भगवान्। फिर कलियुग में ही गौतम बुद्ध, फिर मुहम्मद और ईसामसीह फिर श्रीचैतन्य। कलियुग के अन्त में श्रीश्रीठाकुर ने सत्ययुग का प्रारम्भ किया। श्रीभगवान् उन देशों में जन्म नहीं लेते, जहाँ के लोग संसार को ही चाहते हैं, प्रहलाद, धुव्र या नरेन्द्रनाथ आदि की तरह श्रीभगवान् लाभ करने के लिए व्याकुलता उनमें नहीं है। लेकिन श्रीश्रीठाकुर की महिमा का प्रचार वे स्वयं शुरू से ही उन देशों में भी करते रहे हैं जिसके फलस्वरूप बेलूड़ मठ की अनेक शाखाएँ उन देशों में स्थापित हो चुकी हैं, वहाँ के लोगों में से बहुतों ने संन्यास भी लिया है। ठीक है तीन साल की अवधि में वकालत की पढ़ाई पूरी कर लो।

तुम्हारी उम्र अभी कितनी है ? म... को तो शायद सारदा मठ की संन्यासिनियों ने प्रवेश के लिए मना कर दिया है, तुमने अपने

बारे में उनसे पूछा नहीं ? संन्यास का मतलब खास कुछ नहीं है। संन्यास सम् (सम् का अर्थ सम्यक, अच्छी तरह) नि (नितरां अर्थात् पूरी तरह) और अस् (फेंकना, दूर करना), इसके बाद प्रत्यय लगाकर बनता है, इसका मतलब त्याग है तुम जानती हो और फिर तुम यह भी जानती हो कि त्याग किया नहीं जाता, त्याग हो जाता है। संसार को आज तक तुमने एक तरह से देखा है, अभी एक और तरह से देख रही हो, अब तुम्हें नए नए अनुभव हो रहे हैं, भले भी, बुरे भी। इनसे जब ऊब जाओगी, विरक्त हो जाओगी, तब त्याग होने लगेगा। त्याग तो मन की बात है। मठ के संन्यासी, संन्यासिनी लोग मठ में प्रवेश करते हैं जिससे लोगों की सेवा करें (जगद् हिताय) और साथ ही साथ ध्यान-जप-उपासना आदि के माध्यम से मन में नए आध्यात्मिक संस्कार डालकर उसे शुद्ध बनावें जिससे मन समाधि के लिए योग्य बन जावे। स्वामी विवेकानन्द की पुस्तकें पढ़ती रहो। उन्हें पढ़ना बहुत ही आवश्यक है लेकिन लोग पढ़ते ही नहीं। पहले मराठी में पढो, फिर अंग्रेजी में भी।

यह जो तुम्हारे मन में लड़ाई चल रही है और तुम संजय की तरह मुझे वर्णन कर रही हो, इसका मतलब यही है कि तुम्हें दिव्य दृष्टि मिल गई है। तुम रणक्षेत्र में मौजूद रहकर भी लड़ाई से अलग रहकर लड़ाई देख रही हो। इसी तरह कुछ काल और देखती रहो, लड़ाई रुक जाएगी, शत्रु का विनाश, दुष्कर्मियों का विनाश होगा, धर्म का यानी श्रीभगवान की संस्थापना होगी। लोगों की बातों पर ध्यान न दो, लोग अक्सर बड़े दुखी होते हैं, कहाँ तुम उन्हें हँसकर संभालोगी, और कहाँ खुद ही रोने लगती हो। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो। मैं तुम्हारे लिए नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(३०१)

१४ अगस्त २००३

प्रिय बेटी रा ...,

तुम्हारा १३ जुलाई का पत्र यहाँ २१ जुलाई को पहुँच गया था।

तुमने अपने मन के बारे में क्या उलटा-सीधा सब कुछ लिखा है ? मन तुम्हारा शुद्ध ही है जैसे किसी नोट बुक या अभ्यास पुस्तिका का कोरा पन्ना होता है जब तक तुम उस पर अच्छा-बुरा कुछ लिख नहीं डालती। वैसे ही मन में तुम्हारी भावनाएँ। वैसे ही मन में तुम्हारी भावनाएँ अच्छी-बुरी आती जाती रहती हैं, उनमें से कुछ-एक से तुम्हारा लगाव हो जाता है, यही तुम्हारी मुसीबत है। लेकिन लगाव होने से पहले सैकड़ों बार तुम्हारा मन ही तुम्हें मना जो करता रहता है, सावधान करता रहता है तुम उसे सुनती ही नहीं।

सुबह नींद खुलते ही मन कहता है, उठो, लेकिन क्या तुम तुरन्त उठा जाती हो ? या सुस्ताती रहती हो ? मन की सुनोगी तो तुरन्त बिस्तर छोड़ देना पड़ेगा। ऐसे ही हर बात पर मन की सुननी पड़ेगी। यदि मन की बातों का तुम पालन नहीं कर सकती हो तो भी उसी को एकान्त में व्याकुलता के साथ कहनी पड़ेगी और वह अपने खाते में इस बात को दर्ज कर लेगा कि तुमने उसकी बात नहीं मानी, यह तुम्हारी एक कमी थी, एक दुर्बलता थी क्योंकि दुर्बलता की पहचान के बगैर उससे छुटकारा कैसे मिलेगा ? रोग की पहचान के बगैर उसका इलाज कैसे होगा ? मन की बातों को सुनने का अभ्यास डालो फिर वह तुम्हारी सहायता करेगा, जैसे पिता पुत्र का हाथ पकड़कर ले जाता है। मुझे लिखती रहो।

मैं तुम्हारे लिय प्रभु को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३०२)

१३ दिसम्बर २००३

प्रिय ...,

तुम्हारा ५ नवम्बर का पत्र यहाँ २१ नवम्बर को पहुँच गया था।

देखो जैसे श्रीश्रीठाकुर ने कहा है कि किसी प्रदीप के प्रकाश में कोई एक व्यक्ति किसी धर्मग्रन्थ का पाठ कर सकता है और एक दूसरा व्यक्ति जाली नोट बनाने का धन्धा कर सकता है, वैसे ही संसार में दो तरह के लोग हैं। एक तो श्रीभगवान के शरण में रहकर धर्म का अनुसरण करते हुए जीवन बिताते है और दूसरे,

धर्म का, रीति-नीतियों का उल्लंघन करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं, लेकिन दुःख का अभाव दोनों के जीवन में बिलकुल नहीं होता। यह बात तो तुम्हें मालूम ही है, इसलिए ऐसे समझो की दुःख ही हमें धर्म की ओर श्रीभगवान के श्रीचरणों की ओर ले जाता है। भगवती सीता, कुन्ती, द्रौपदी, श्रीश्रीमाँ सारदा, विदुर, दुर्योधन और पाण्डवों के जीवन के दुःख की तरफ नजर करोगे तो देखोगे कि दुःख सहते रहना ही, श्रीभगवान का लाभ करना है। स्वामी विवेकानन्द के जीवन के दुःख के अनुभवों को देखो, लेकिन वे उन दुःखों के बावजूद जगत की, श्रीश्रीठाकुर की सेवा करते रहने से विमुख कभी न हुए, दुःख को रहने दो, गरीबी को रहने दो। अपना ध्यान अपने इष्टदेवता पर रखो, संसार के झमेलों में भी उनकी उपस्थिति, उनकी सहायता का अनुभव करो, प्रार्थनापूर्ण जीवन बिताओ, वे तुम्हारे हृदय में सदा ही विराजमान हैं। निश्चिन्त रहो।

मैं उन्हीं से तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा सदा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द





(३०३)

१३ दिसम्बर २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारा ४ अक्तूबर का पत्र यहाँ १७ अक्तूबर को १०० रुपयों के साथ पहुँच गया।

पहले तुम्हारे प्रश्न का उत्तर, तुम्हारे पत्र यहाँ मेरे पास पहुँचने से पहले यहाँ के दफ्तर के साधु महाराज लोग खोलते हैं, फिर उसे पढ़कर जवाब लिखते हैं, फिर मेरे यहाँ रहने पर मेरी सुविधानुसार मुझे सुनाकर मेरा हस्ताक्षर करा लेते हैं। योगोद्यान मठ के साधुओं में हिन्दी पढ़ने वाले साधुओं की कमी है इसलिए हमें तुम्हारे पत्र को और तमिल, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, मराठी, गुजराती में लिखे पत्रों को पढ़वाने और उनके उत्तर लिखवाने में अक्सर बेलूड़ मठ के साधु-ब्रह्मचारियों से काम लेना पड़ता है। यही हमारे मठ की रीति है, ऐसा समझो।

अपनी माता के सोच को पहचानो, उसके जीवन को देखो, उसके जीवन के बारे में सोचो, तभी तुम समझोगी कि क्यों वह तुम्हारे विवाह के लिए आतुर है, वह अपने कष्टों को तुम्हारे जीवन में दुहराते देखना नहीं चाहती, लेकिन वह तुम्हारे अकेले रहने कि बात सोच भी नहीं सकती। वह तो अपनी अधूरी आशा-आकांक्षाओं को तुम्हारे जीवन में पूरी होती देखना चाहती है। बात इतनी ही भर है। तुम्हें इस बारे में बहुत अधिक सोच-पड़ताल करने की आवश्यकता नहीं है। प्रभु का नाम जपती रहो और अपना काम करती रहो। एम.बी.ए. वगैरह करने की इच्छा न हो तो न करो लेकिन पढ़ाई कुछ और कर लेती तो कुछ और पैसे कमा सकती थी, और कुछ नहीं। लेकिन सोच लो, मन को अच्छी तरह टटोल कर देख लो कि शादी-विवाह की इच्छा तुम्हारे मन में थोड़ी सी भी है या नहीं ? अगर तुम्हारा मन कमजोर है, पूर्ण वैराग्य उसमें नहीं है, कोई कठोर निर्णय तुम नहीं ले सकती, तो तुम तुम्हारे अपने लोगों का सामना नहीं कर पाओगी। सोच लो, हृदय को कठोर करो, प्रभु से, माँ से प्रार्थनाएँ गिड़गिड़ाकर करती रहो, वे ही तुम्हें संकट से उबार सकते हैं। मैं भी उनसे तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३०४)

श्रीश्रीदुर्गापूजा, विजय-दशमी, कालीपूजा, तथा दीपावली की शुभेच्छाएँ।

प्रिय ...,

श्रीश्रीदुर्गापूजा, विजय-दशमी, कालीपूजा, तथा दीपावली के पुनीत अवसरों पर मैं तुम सभी के सामूहिक कल्याण के लिए श्रीश्रीमहामाया से निरन्तर प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ। तुम सभी लोग मन लगाकर यथाविधि हमारे प्रभु का नाम जपने में लगे होंगे, यही मेरी तुमसे आशा है।

यहाँ बेलूड़ मठ स्थित रामकृष्ण मठ में श्रीश्रीदुर्गा देवी तथा महालक्ष्मी देवी की पूजा यथाविधि सम्पन्न हो चुकी है। हमारे यहाँ के रामकृष्ण मठ (योगोद्यान) में भी महानवमी के दिन श्रीश्रीठाकुर की षोडशोपचार सहित विशेष पूजा तथा हवनादि अनुष्ठित हुए। तुम्हें मालूम होगा, इस वर्ष १६ दिसम्बर को हमारी श्रीश्रीमाँ सारदा देवी के शुभ आविर्भाव के १५० वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस उपलक्ष में हमारे देशभर में तथा अन्य देशों में भी श्रीश्रीमाँ के स्मरण में सभाओं, उत्सवों, समारोहों के आयोजन किए जा रहे हैं। मैं आशा करता हूँ की तुम लोग इन समारोहों में हाथ बटाँते रहने के, इनमें भाग लेते रहने के साथ ही साथ अपने जीवन की निर्जनता में श्रीश्रीमाँ की अनुक्षण आराधना करते रहोगे।

हमारे श्रीश्रीठाकुर, हमारी श्रीश्रीमाँ, हमारे स्वामीजी महाराज, तथा स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज उनके प्रमुख गुरुभाइयों से मैं तुम सभी के कल्याण के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा ही नित्य शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३०५)

७ मार्च २००३

प्रिय ...,

तुम्हारी चिट्ठी मुझे मिल गई। पहले की कोई चिट्ठी तो यहाँ पहुँची नहीं, मैं तो हर चिट्ठी का ही जवाब भिजवाया करता हूँ।

श्रीश्रीठाकुर तुम्हारी परीक्षा तो ले ही रहे हैं। मैं तुम्हें इतना तो कह ही सकता हूँ कि अगर तुम अपने ध्येय पर, अपने संकल्प पर दृढ़ रहोगे तो तुम्हें सफलता ही सफलता मिलेगी। अविवाहित रहो, प्रभु का नाम लेते रहो और सांसारिक विषयों को लेकर अपने इष्टदेवता जैसे तुमसे कुछ करा लेते हैं वैसा ही करते रहो। मुझे पत्र क्यों नहीं लिखते ?

मैं तुम्हारे सामूहिक कल्याण के लिए हमारे प्रभु से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३०६)

७ मार्च २००३

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ६ जनवरी की चिट्ठी यहाँ २४ जनवरी को पहुँची।

पी.एम.टी. परीक्षाओं की तैयारी करना न भूलो। तुम्हें तुम्हारे क्लास की लड़कियों को सुधारना नहीं है। अपने जीवन को उनके सामने रखना है जैसे एक दुकानदार अपने सामान ग्राहकों के लिए फैला देता हैं और ग्राहक अपनी रुचि, अपनी बुद्धि, अपने सामर्थ्य के अनुसार अपना माल खरीदता है, और तुम्हें मालूम ही है कि सौदा जितना कीमती होता है, उसके ग्राहक भी कम होते हैं। वैसे यहाँ भी समझो। हीरे के व्यापारी को महीने दो महीने में शायद एक ग्राहक मिलता है, इसलिए अपने क्लास या कॉलेज के लोगों से परेशान न होओ। उनकी चिन्ता करने की जगह पर श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के जीवन के बारे में सोचो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ तथा स्वामीजी महाराज से प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी
स्वामी गहनानन्द



(३०७)

७ मार्च २००३

प्रिय ...,

तुम्हारी ११ दिसम्बर की चिट्ठी १४ जनवरी को यहाँ पहुँची।

मेरी तुमसे सलाह यही है कि 'उपासना-पद्धति' में बताई गई विधियों का पालन यथासम्भव करते हुए जप-ध्यान की चेष्टा करते हुए जिस पथ पर चल रहे हो उसी पर चलते रहो। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ तथा स्वामीजी महाराज की पुस्तकों का सुविधानुसार अध्ययन करते रहोगे तो कुछ वर्षों में तुम्हें तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर मिल जाएँगे। संसार को त्यागने के लिए सांसारिक अनुभव बहुत ही आवश्यक है, वरना त्याग नहीं हो पाता।

मैं तुम्हारे सामूहिक कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(३०८)

७ मार्च २००३

प्रिय ...,

तुम्हारी १८ दिसंबर की चिट्ठी ६ जनवरी को, १ जनवरी की ८ जनवरी को, २८ दिसंबर की १३ जनवरी को, २१ जनवरी की २५ जनवरी को, १६ जनवरी की ३१ जनवरी को, २६ जनवरी की १३ फरवरी को, ८ फरवरी की २१ फरवरी को तथा २० फरवरी की २८ फरवरी को यहाँ पहुँची।

स्वामी विवेकानन्द महाराज ने रोने से मना तो किया था लेकिन स्वयं बहुत रोते थे तुम्हें मालूम ही होगा। प्रश्न तो सन्दर्भ का है, किसे किस अवस्था में रोने के लिए कहा, किसे न रोने के लिए कहा इस बात का भी विचार करना पड़ेगा, ये आचार्य त्रिकालज्ञ महापुरुषों की बातें बड़ी उच्चकोटि की हुआ करती हैं, इन्हें समझने के लिए दूसरे त्रिकालज्ञ महापुरुषों की आवश्यकता होती है। देखो न, स्वामीजी महाराज को श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ के सिवाय किसने समझा ? गुरुभाइयों में राजा महाराज, शरत

महाराज, हरि महाराज, अखंडानन्दजी आदि उन्हें कुछ हद तक समझते थे। इसलिए स्वामीजी महाराज ने स्वयं ही कहा था, मैं तो आचार्य ठहरा, मुझे भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के लिए तरह-तरह की बातें करनी पड़ती है, तुम मुझे समझ सकते हो ! फिर अपने गुरुभाइयों को दिखाकर कहा था, तुम इनमें से किसी के पास जाओ, इन लोगों में से हरेक ने श्रीश्रीठाकुर के जीवन की १६ कलाओं में एक-एक कला की साधना में जीवन व्यतीत किया है।

जहाँ तक रोने, न रोने का सवाल है, श्रीश्रीमाँ ने भी आँसूओं को रोकने को कहा है। कहा है कि भावावेग को बुद्धि के प्रयोग से रोको। किसी ने पूछा कि अगर भावावेग इतना तीव्र हो कि रोकना मुश्किल हो, तो माँ ने कहा था कि जिसका भावावेग जितना तीव्र होगा उसे रोकने की शक्ति भी उसी के पास उतनी ही तीव्र होगी।

बात तो यही है कि प्रभु के लिए मैं रोया, इस भावना में आत्मतुष्टि की एक भावना छिपी रहती है। यदि साधक को यह बात मालूम नहीं है तो उसे 'मैं प्रभु के लिए रोता हूँ' ऐसी भावना बड़ी सुखद होगी। लेकिन चित्तशुद्धि के लिए उसे आत्मतुष्टि से मुक्त होना अति आवश्यक है। जब बहुत रोना आता है तो प्रभु को मनाओ कि वे तुम्हें सम्हालें।

अपने आप को श्रीश्रीठाकुर के हाथों का यंत्र समझो, फिर अपना जीवन सार्थक रहा या व्यर्थ, इन बातों की चिन्ता तुम्हें नहीं होगी। कहो, मैं तो तुम्हरो दास, जनम जनम को।

मैं तुम्हारे तथा तुम्हारी लड़की के कल्याण के लिए सदा ही प्रभु को मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(३०६)

७ मार्च २००३

प्रिय ...,

तुम्हारी २५ जनवरी की चिट्ठी ३० जनवरी को यहाँ पहुँच गई थी।

तुम्हें किसी बात को लेकर परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, स्वामीजी महाराज जैसे आश्रम के मन्दिर में है, वैसे ही उनका पूर्ण अधिकार तुम्हारे हृदय पर भी है, ऐसा समझो। इस बात को, इस सत्य को गहराई के साथ समझ पाना ही साधुओं की साधुता है ऐसा समझो और इस सत्य की गहराइयों में ज्यों ज्यों उतरोगे त्यों त्यों तुम्हारे चरित्र में बुद्धि का प्रकाश होगा जिसके फलस्वरूप श्रीश्रीठाकुर के हाथों में तुम एक यन्त्र के समान काम करोगे।

मैं श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ कि वे तुम्हें इसके लायक बनावें।

तुम्हारा एकान्त स्नेही
स्वामी गहनानन्द



(३१०)

२५ जुलाई २०००

प्रिय बेटी ...,

अपनी चिट्ठी में तुमने तारीख नहीं डाली और यह बात भी गलत है कि तुमने लिफाफे में पैसे भेजे। मजे की बात है कि तुम्हारी चिट्ठी पर १२ जुलाई की डाकमुहर लगी हुई है और १५ जुलाई को ही यहाँ पहुँची है लेकिन इस बीच लोगों ने लिफाफे को खोलकर पैसे निकालकर धागे से उसे अच्छी तरह बाँध करके योगोद्यान मठ में पहुँचाया। इस तरह पैसे न भेजो, इससे पोस्ट-आफिस के लोगों को चोरी करने में सहायता करना होता है अगर तुम मनीआर्डर के जरिए पैसे भेजती और जो शुल्क तुम्हें मनिआर्डर का चुकाना पड़ता वह पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ डिपार्टमेन्ट को भी मिलता और वह मनीआर्डर सुरक्षित पहुँचता।

लेकिन तुमने जो गुरुप्रणामी भेजने का संकल्प किया था मुझे उसी वक्त तुम्हारा प्रणाम मिल गया ऐसा समझो। रूपए तुमने किसको दिए, इस पर उसके उचित स्थान पर पहुँचना न पहुँचना निर्भर करता है, इसलिए इन बातों का भी ध्यान रखा करो। सूक्ष्म तथा स्थूल जगत् में यही फर्क है। सूक्ष्म में जो निवास करते हैं उन्हें स्थूल का त्याग करना ही पड़ता है अगर तुमने पैसे भेजने का संकल्प किया, देखो संकल्प शब्द का अर्थ ही यह है 'सम्यक् कल्पना', लेकिन अंग्रेजों से तुमने सीखा है 'कल्पना' का अर्थ

'imagination' 'fancy' है, ख्याल है, मगर कल्पना का मतलब 'सामर्थ्य' है, शक्ति है – imagination वगैरह नहीं, तुमने पढ़ा होगा – 'and God said' 'Let there be light' – and There was light संकल्प इसी प्रकार का होता है। इसलिए सचमुच ही तुमने ज्यों ही पैसे भेजने का संकल्प किये, मुझे तुरन्त ही पैसे मिल ही गए समझो। लेकिन स्थूल पैसे भेजने हों तो उनका पहले शोधन करना चाहिए।

आसन पर बैठकर १०,००० जाप करती हो, ठीक है, संख्या को एकाएक नहीं बढ़ाओ। तुम्हें श्रीश्रीठाकुर के दर्शन किस प्रकार से होते हैं, स्वप्न में, ध्यान में, या कैसे, हर बार एक ही रूप से दर्शन होते हैं या तरह-तरह के, कोई और बात होती है, या केवल रूपदर्शन ही, माँ के दर्शन कैसे होते हैं, स्वामीजी महाराज के भी कैसे, जहाँ तक हो सके विस्तार से लिखना। यहाँ तुम्हारी चिट्ठियाँ कोई पढ़ नहीं पाता क्योंकि अधिकतर लोगों को देवनागरी लिपि तक की पहचान नहीं है, हिन्दी का ज्ञान तो दूर रहा। मैं चिट्ठियाँ एक संन्यासी से लिखवाता हूँ, वही केवल तुम्हारी चिट्ठियाँ पढ़कर मुझे सुनाता है, चूँकि मैं हर व्यक्ति की लिखावट पढ़ नहीं पाता।

मुझे आगे चिट्ठी लिखती हो तो मुझे तुम अपने बारे में, अपने घर के तथा घरवालों के बारे में लिखकर बताओ कि तुम्हारी आयु क्या है, अब पढ़ाई कर रही तो या क्या कर रही हो, क्या तुम्हारा विवाह हुआ है या नहीं ? (वैसे तुमने कुमारी ... लिखा है जिससे साफ है कि शादी तुमने अभी नहीं की है), तुम्हारे भाई-बहन माता-पिता, संसार का खर्च कैसे चलता है, जहाँ तक हो सके लिखो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए हमारे प्रभु को हर रोज हर घड़ी मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(३११)

२४ जुलाई २००२

प्रिय ...,

८ जुलाई का तुम्हारा पत्र यहाँ १३ को पहुँच चुका था।

तुम लोगों के साथ मुसीबत यही है कि पुस्तकों का नाम लेते ही तुम पुस्तकालय बनाने की बात करने लग जाते हो। स्वामी विवेकानन्द को तो तुम पढ़ोगे नहीं, तुम्हारी परमहंस योगानन्द में ही अधिक रुची है। शुद्ध जीवन, सीधा सादा जीवन तुम्हें पसंद नहीं, पता नहीं कब तुम्हारी बुद्धि शुद्ध होने लगेगी कि श्रीश्रीठाकुर के जीवन के प्रति तुम्हारी रुचि होगी ! भारत बड़ा पुराना देश है, यहाँ की परम्पराएँ भी पुरानी हैं। आज से पांच साढ़े पांच से छः हजार वर्षों पूर्व द्वापर युग के अंत में भगवान् बादरायण व्यास ने वेद का विभाजन किया था, मीमांसा-सूत्रों की रचना की थी, १८ पुराणों की महाभारत की रचना की थी, वे सभी आज भी उपलब्ध हैं, लेकिन पुस्तकालयों में रखने के लिए कुछ लोग उन्हें खरीद भी लेते हैं तो पढ़ते कभी नहीं। त्रेतायुग में जब मनुष्य में अधर्म का

प्रादुर्भाव होने लगा तभी यज्ञनारायण का भी प्रादुर्भाव हुआ, यही परम्परा भारत की परम्परा है। पहले इससे परिचित हो जाओ, श्रीमद् भगवद् गीता के अध्ययन से भगवान श्रीकृष्ण से परिचित हो जाओ, तब कहीं तुम्हें श्रीश्रीठाकुर के जीवन की शुद्धि का कुछ अंदाज हो पाएगा। जब तक पारिवारिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए इस उम्र में भी श्रीश्रीठाकुर से निवेदन करते रहोगे, जैसे कोई बच्चा परीक्षा पास करने के लिए उनसे निवेदन करता है, अभी तक तुमने रामकृष्ण-विवेकानन्द साहित्य का सार्थक अध्ययन नहीं किया है। ठीक है फिलहाल जैसा चल रहा है वैसे ही चलने दो। प्रभु का नाम जपने का अधिकार तुम्हें मिला है नाम जपते रहो, देखोगे क्रमशः उसमें रुचि आवेगी, नाम जपने में रुचि आवेगी फिर नाम जपने के अलावा और किसी भी वस्तु या विषय में रुचि बाकी नहीं रह जायेगी, केवल दिन-रात हरघड़ी प्रभु का, अपने इष्टदेवता का नाम जपते रहोगे। क्या करोगे ? तुम्हारे हृदय के अभ्यन्तर बैठे तुम्हारे इष्टदेवता, तुम्हारी इच्छा को, रुचि को, बुद्धि को परिचालित करते रहे हैं, उन्हें चलाने दो।

मैं प्रभु से तुम्हारी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द





(३१२)

२५ जुलाई २००२

प्रिय ...,

३० मई की चिट्ठी गदरपुर से २८ जून को यहाँ पहुँची। लगता है तुम्हारी चिट्ठी पर गदरपुर डाकखाने का २१ जून की डाकमुहर लगी है।

बेलूड़ के श्रीरामकृष्ण मठ, दक्षिणेश्वर के भवतारिणी काली का मन्दिर देखने के लिए आने में बाधाएँ कौनसी है ? अगर यहाँ रामकृष्ण मठ (बेलूड़ मठ) के अतिथि-निवास में रहकर वहाँ से दर्शनादि करना चाहते हो तो पहले 'मठ' के मैनेजर महाराज, स्वामी प्रमेयानन्द महाराज (रामकृष्ण मठ, बेलूड़ मठ, हावड़ा, पिन ७११२०२) को पत्र लिखकर वहाँ अपना स्थान सुरक्षित करा लो। उन्हें साफ-साफ लिख कर बताओ कि कितने लोग आना चाहते हो, कब से कब तक रहना चाहते हो, आदि । उनसे उत्तर मिलने के बाद जब अतिथि निवास में रहने की तारीख मालूम हो जावे तो रेलगाड़ी के स्थान आरक्षित कराओ और कामारपुकुर तथा जयरामबाटी के महन्तों (मठों के अध्यक्ष) को चिट्ठी लिखो।

अभी तुम्हारी दीक्षा हुई है, फिलहाल 'उपासना-पद्धति' के नियमों का पालन करते रहना ही तुम्हारा काम है। अभी इन नियमों के पालन के साथ साथ अपने दैनन्दिन कर्म भी करते रहो और यह समझो कि तुम अपने पूर्व पुण्यों के फलस्वरूप ही प्रभु का नाम जपने का अधिकारी बन पाये हो। अब इस अधिकार का उपयोग भी तुम कर्तव्य बोध से नहीं करोगे जैसे अपने आज तक के अनुभवों के लिए तुमने जानबूझकर कुछ भी नहीं किया। तुम्हें मालूम है कि सोने की इच्छा से बिस्तर पर तो लेट जाते हो लेकिन नींद आने न आने पर तुम्हारा कोई नियन्त्रण नहीं है। इसी प्रकार करना तो हम बहुत कुछ चाहते हैं लेकिन होता नहीं है, तुमने पढ़ा भी होगा, 'होई वही जो रचि राम राखा।' इसलिए फिलहाल नामजप ही विधिवत करते रहो, मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो, कामकाज करते रहो।

मैं तुम्हारे तथा तुम्हारी स्त्री के कल्याण के लिए हमारे प्रभु को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३१३)

गुरुपूर्णिमा,२४ जुलाई २००२/१ अगस्त २००१

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १८ जून की चिट्ठी यहाँ ८ जुलाई को पहुँची। अपनी आध्यात्मिक उन्नति चाहती हो लेकिन तुम्हारा कर्तव्य फिलहाल अपनी दो बेटियों की अत्यन्त धैर्य के साथ सेवा करते रहना है। तुम्हारे सारे तनाव अभी श्रीश्रीठाकुर के पास जमा कर दो। वे तुम्हें जिस तरह परिचालित करें उसके लिए ही उनका आभार मानों, फिर वे आगे जैसे करवाएँगे, वैसे ही करोगी। तनाव किस बात का ? प्रभु पर निर्भर नहीं करती हो क्या ? अगर करती हो तो तनाव क्यों हो ?

मैं तुम्हारी बेटियों तथा तुम्हारे लिए प्रभु को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी,

स्वामी गहनानन्द



(३१४)

गुरुपूर्णिमा, २४ जुलाई २००२

मेरी प्यारी बेटी ...,

तुम्हारी ८ जुलाई की चिट्ठी यहाँ १३ जुलाई को पहुँची।

तुम्हारे बच्चों के दांतों को श्रेणीबद्ध (alignment) क्यों करवाने पड़े भला ? उनसे क्या तकलीफ थी ? तुमने दन्त चिकित्सक को पहले पैसे क्यों दिए ? आश्रम के सचिव महाराज से सलाह ली क्या ? लखनऊ के हमारे मठ के विवेकानन्द क्लीनिक में जाने पर उनका इलाज हो सकता है या नहीं, उनसे पता करो या टेलीफोन पर भी लखनऊ से पता कर सकती हो। देहरादून के दन्त चिकित्सक जिसके पास तुम जाती हो, जाने से पहले उससे दूरभाष पर मिलने का समय क्यों नहीं ले लेती ? क्या फैसला करती हो मुझे लिखो ?

श्रीश्रीठाकुर तुम्हारे हृदय के अभ्यन्तर में बैठकर तुम्हें परिचालित करते रहे हैं, इसलिए तुम्हें बराबर शान्ति मिलती रही है लेकिन तुम नादान उसे समझ नहीं पा रही हो, अब कुछ कुछ समझने लगी हो, आगे और भी अच्छी तरह समझने लगोगी।

मैं उनसे निरन्तर यही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ कि वे तुम्हें ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करें।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३१५)

६ नवम्बर २००४

प्रिय म ...,

तुम्हारी १० अक्टूबर की चिट्ठी १४ अक्टूबर को यहाँ पहुँची।

मई २००५ तक या जब तक तुम्हारी परीक्षा समाप्त न हो जाये तब तक तुम नियमित रूप से प्रातः-सन्ध्या जप-ध्यान के लिए समय नहीं निकाल सको तो कोई बात नहीं। पाठ्यक्रम के १० विषय तो क्या तुम चाहो तो ४० विषयों को भी तैयार कर सकते हो। निश्चित समझो। जीवन को अनुशासित बनाने के लिए तुम्हें कुछ भी नहीं करना है। यह काल श्रीश्रीठाकुर-माँ- स्वामीजी का है निश्चिन्त रहो। अपनी परीक्षा को ही जीवन का लक्ष्य न बनाओ। जो कुछ भी तुम्हारे चारों ओर होता रहता है उसे देखते रहो और जो कुछ भी कर रहे होते हो तो उन्हें समझो कि तुम्हारी अन्तरात्मा में, श्रीश्रीठाकुर की अपनी इच्छा से तुमसे कराये जा रहे हैं।

मैं श्रीश्रीमाँ तथा श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएं कर रहा हूँ कि वे तुम्हें इस बात को समझने की बुद्धि प्रदान करें।

तुम्हारा सतत शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द



(३१६)

६ नवम्बर २००४

प्रिय गि ...,

तुम्हारी ५ अक्टूबर को चिट्ठी श्रीरामकृष्णदेव के पूणे स्थित सर्व धर्म मन्दिर के उद्‌घाटन के उपलक्ष में निकाले गये डाक-विभाग के विशेष आवरण लिफाफे में यहाँ पहुँची।

मुझे प्रतीत होता है कि श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ की कृपा को तुम समझने लगे हो कि वे प्रत्येक क्षण तुम्हारे साथ रहकर तुम्हें तुम्हारी दिनचर्या में सहायता कर रहे हैं। उन्हीं पर निर्भर रहो, प्रार्थनाएँ भी उन्हीं से करो, वे जैसे कहे वैसे ही करो। मुझे भी चिट्ठियाँ लिखते रहो। जो कुछ भी कर रहे हो, वे ही तुमसे करा रहे हैं। इस बात को अभी पूरी तरह समझना है। वह भी होता रहेगा।

मैं उन्हीं से तुम्हारे सामूहिक कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३१७)

६ नवम्बर २००४

प्रिय बेटी रू ...,

तुम्हारी १ नवम्बर की चिट्ठी मुझे मिल गई।

मार्ग दिखाने वाले श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ है जो कि तुम्हारे हृदय में निवास करते हैं और प्रत्येक क्षण तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें अपनी ओर ले जा रहे हैं। जैसे एक सोते हुए बच्चे को माता-पिता एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं या श्रीश्रीठाकुर की भाषा में कहे तो जैसे एक बिल्ली अपने बच्चे को दांतो से पकड़ कर एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है। इन बातों को समझो। उनसे प्रार्थनाएँ करो, बातें करो, उनका आदेश, उपदेश सुनो, उनके उपदेशों के अनुसार ही प्रत्येक कार्य करो। जो भी कार्य करो उनसे पूछ कर, उनकी सलाह लेकर करो। गलत काम करो तो भी उन्हें बताओ। घबराने की कोई बात नहीं है, फिर भी हम घबराते रहते हैं। इसी को माया कहते हैं। इन्हें ही श्रीश्री माँ भी कहते हैं, वे ही मायाधीश्वरी, श्रीश्रीठाकुर ही मायाधीश हैं, बिल्कुल निश्चिन्त हो जाओ। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो।

मैं श्रीश्रीमाँ तथा श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारे लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३१८)

६ नवम्बर २००४

प्रिय रा ...,

तुम्हारी छः चिट्ठियाँ यहाँ ५ सितम्बर से ३० अक्टूबर तक पहुँच गई। तुम्हारी सातवीं ६ नवम्बर को पहुँची।

तुमने उ... के सन्दर्भ में मास्टर महाशय की बात लिखी है। लेकिन तुमसे मास्टर महाशय वाली ही भूल हो गई। पत्नी पति की ही सहायिका है। वैयाकरण तुम्हें बताएँगे कि 'पति' शब्द के उपरान्त न कार लगाया जाता है और फिर दीर्घ ई कार (चूंकि पत्नी शब्द एक स्त्रीलिंग शब्द है) और इस तरह पत्नी शब्द बनता है जिसका अर्थ है कि देवपूजा, उनसे मिलन तथा उनके लिए दान, पति के इन कर्मों में जो सहचरी हो। तुम जो श्रीश्रीठाकुर-श्रीश्रीमाँ और अपने गुरु के पास पहुँचे हो इसमें तुम्हारी सिर्फ पत्नी होने के ही नाते वह भी तुम्हारा साथ देती रही है, ऐसा समझो। वह अज्ञानी नहीं है। हम सब मंचित नाटक में अपने अपने अभिनय प्रस्तुत कर रहे हैं। श्रीश्रीठाकुर ने ही कहा है, ''काको निन्दों, काको बन्दों, दोनों पलड़ा भारी।''

मैं तुम दोनों के तथा तुम्हारे परिवार के सभी परिजनों के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द



(३१९)

२५ अप्रैल २००५

प्रिय भा ...,

तुम्हारी ३१ मार्च की चिट्ठी यहाँ ७ अप्रैल को पहुँची।

तुमने लिखा कि मई तक तुम्हारे परिणाम मिल जायेंगे। परिणाम मिलते ही मुझे बतलाओ और यहाँ हमारे रामकृष्ण मठ (योगोद्यान) में पहुँचने की तैयारियाँ करो। अच्छा होगा कि परिणाम मिलने के बाद मुझे चिट्ठी लिखो फिर मेरा जबाब मिलने पर यहाँ पहुँचो। तुम सौभाग्यवान हो कि तुम्हारी माँ ने मठ की सेवा के लिए तुम्हें छोड़ने का मन बना लिया है। तुम्हारे चले आने पर तुम्हारे पिता की अनुपस्थिति में तुम्हारी माँ की देखभाल कैसे होगी, कौन करेगा, क्या व्यवस्था रहेगी ?

तुम्हारा नित्य शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३२०)

२५ अप्रैल २००५

प्रिय श ...,

बिना तारीख की तुम्हारी चिट्ठी यहाँ १३ अप्रैल को पहुँची।

अपने मन्त्र के अन्त में विसर्ग(:) न लगाओ–और सब ठीक है। क्रोध, तम्बाखू आदि छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। तुम अपना कर्तापन हटा लो तो वे स्वतः छूट जायेंगे। प्रभु का नाम लेने में मन लगाओ। जैसे छोटा बच्चा जब 'अ' 'आ'–आदि लिखना सीख रहा होता है, फिर वह पूरे मन से उन अक्षरों को लिखने लगता है और कुछ दिनों में अनायास लिख लेता है वैसे ही प्रभु का नाम लेने में पूरा मन लगाओ, उनसे मन लग गया तो समझो जगत ही छूट जायेगा।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से नित्य प्रार्थना करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक
स्वामी गहनानन्द



(३२१)

२४ अप्रैल २००५

प्रिय बी ...,

तुम्हारा ७ अप्रैल का पोस्ट कार्ड १६ को यहाँ पहुँचा।

अपनी चिट्ठियों में अपने संक्षिप्त नाम के स्थान पर अपना पूरा नाम लिखा करो। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

निश्चिन्त रहो कि मुझसे तुम्हारी मिलने की इच्छा जब तीव्रतर हो जायेगी तब वही तीव्र इच्छा ही तुम्हें मेरे पास पहुँचायेगी। तब तक श्रीश्रीठाकुर का नाम मन ही मन हर घड़ी जपते रहो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए उनसे निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३२२)

१३ दिसम्बर २००३

प्रिय बेटी नी ...,

तुम्हारी १७ नवम्बर की चिट्ठी २२ नवम्बर को यहाँ पहुँची।

तुम तो अपनी परेशानियों को लेकर परेशान हो लेकिन मुझे लगता है तुमने कभी प्रभु से ऐसे ही एक जीवन के लिए प्रार्थना की होगी। पाण्डवों की माता कुन्ती की तरह, हे प्रभु चाहे कितना ही कष्ट हो, परेशानियाँ हो, मैं घबराती नहीं, बस आप साथ रहना। देखो न, प्रभु तो तुम्हारे साथ ही हैं, हर घड़ी श्रीश्रीमाँ भी हैं। मुझे इस बात पर कोई सन्देह नहीं। लड़ती रहो फिर घर लौट कर प्रभु के, माँ के पास रोती रहो। तुम्हारे दिमाग की परेशानी का नाम वैराग्य है और जहाँ वैराग्य होता है वहीं उसमें वृद्धि भी होती है। यह वैराग्य ही तुम्हें हर घड़ी प्रभु के निकट से और निकटतर ले जाता है। तुम्हें मालूम ही नहीं पड़ता। अपनी कन्याओं से मुझे पत्र लिखने के लिए क्यों नहीं कहती ?

मैं श्रीश्री ठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे सामूहिक कल्याण के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३२३)

१० नवम्बर २००४

प्रिय बेटी उप ...,

तुम्हारा २२ अगस्त का लिखा पत्र तुम्हारी भेजी हुई राखी के साथ १ सितम्बर को यहाँ पहुँच गया।

तुम्हारे नानाजी की तबीयत अब कैसी है ? अच्छा हुआ तुम्हें ८८ प्रतिशत अंक मिल गए। लेकिन ८वीं क्लास में और अधिक पढ़ना पड़ता है और उसके बाद स्नातक पाठ्यक्रम तक तो परिश्रम ही करते रहना है। ६/१० वर्ष अभी तुम्हें बहुत पढ़ना है। फिर दो तीन वर्ष और पढ़ लोगी तो लोग तुम्हें लोग डाक्टर उ... जी कह कर पुकारेंगे। इसलिए शिमला वगैरह घूमने की अधिक आवश्यकता नहीं, ऐसे सैर सपाटों से मन का संयम घटता रहता है। यह संसार मौज के लिए नहीं है। यहाँ अपना जीवन दूसरों को अपना समझ कर उनकी सेवा में बिताना है। इसलिए फिलहाल अपने आप को तैयार करो। अधिकांश लोगों से जप-ध्यान नियमित रूप से होता तो नहीं है, फिर भी नियम का ही पालन करते हैं। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ पर निर्भर रहो।

मैं तुम्हारे माता-पिता और तुम्हारे लिए उनसे प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३२४)

१० नवम्बर २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी २३ सितम्बर की चिट्ठी यहाँ १ अक्टूबर को पहुँच गई थी।

मेरे साथ या स्वामी विरजानन्द के साथ समय बिताने की इच्छा क्या श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के साथ अधिकाधिक समय बिताने की इच्छा से अधिक अच्छी है जो तुम्हें सदा उपलब्ध है, तुम्हारे हृदय में सदा विराजमान है, तुम्हें हरघड़ी हाथ पकड़कर संसार के सारे अनुभवों से गुजरने में सहायता कर रहे हैं ? ऐसी भूल न करो। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ पर ही पूरी तरह निर्भर रहो। वृक्ष के मूल पर ही पानी देने से उस वृक्ष की पुष्टि होती है, उसकी डालियों, पत्तियों को सींचने से नहीं। मूल श्रीश्रीठाकुर है, उन्हीं पर मन को केन्द्रित करो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए हमेशा उन्हीं से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा शुभचिन्तक
स्वामी गहनानन्द



(३२५)

१० नवम्बर २००४

प्रिय ध ...,

तुम्हारी १८ सितम्बर की चिट्ठी यहाँ २४ सितम्बर को पहुँची।

तुमने अपनी पत्नी के साथ अपने इष्ट मन्त्र के जप करने के बाद जो 'श्रीराम' मन्त्र का जप करना शुरू किया है वह तुम्हें कहाँ कैसे, तथा किससे मिला, अगले पत्र में मुझे लिखो कि वह मन्त्र क्या है ? मन्त्र का उच्चारण सही, शुद्ध ढंग से करना है।

मैं श्रीश्री ठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे लिए तथा तुम्हारें दिसम्बर में जन्म लेनेवाले पुत्र के सामूहिक कल्याण के लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३२६)

१४ अगस्त २००३

प्रिय पी ...,

तुम्हारा १३ जुलाई का पत्र २८ जुलाई को यहाँ पहुँच गया था।

मान लो तुम अपने कमरे में बैठकर कुछ पढ़ रहे हो, इतने में बाहर से कोई तुम्हें पुकारता है और तुरन्त तुम अपने कमरे से बाहर निकलने लगते हो और तभी तुम्हारे मन की आवाज आती है कि भाई पंखा तो बन्द कर दो, लाइट को भी बन्द कर दो। लेकिन तुम उसकी अनसुनी करते हो, मन को ही जैसे कहते हो, अभी तो वापिस आ रहा हूँ और कमरे से बाहर निकल पड़ते हो, पंखा घूमता ही रहता है और बल्ब जलते ही रहते हैं। तुम जब लौटते हो तो ४० मिनट बीत चुके होते है और फिर तुम्हारा मन तुम्हें टोकता है, यह तुमने क्या किया ? लेकिन तुम पहले ही की तरह कहते हो, हो क्या गया ? ऐसा तो आम होता रहता है ?

अब एक काम करो। सोचो, तुम पढ़ रहे हो, कोई तुम्हें बुलाता है, तुम कमरे से निकलने वाले होते हो और मैं वहीं बैठा

हूँ और तुमसे कहता हूँ, बेटा, लाइट-पंखा तो बन्द करते जाओ। लेकिन तुम कहते हो, अभी तो आ रहा हूँ। चालीस मिनट बाद तुम्हारे लौटने पर मैं ही तुमसे फिर कहता हूँ, यह तुमने क्या किया ? तुम्हारा जबाब पहले की तरह होता है, हो क्या गया इसमें, यह तो होता ही रहता है ?

अब सोचा तुम्हारे ऐसे व्यवहार से मुझे चोट पहुँचेगी क्या ? देखो तो अपने मन के साथ इस तरह के व्यवहार से उसे कितनी चोटें पहुँचाते हो। तुम ! दिनभर में कितनी बार भला ऐसा व्यवहार अपने मन के साथ करते हो, ऐसा न करो।

तुम्हें मालूम नहीं, तुम्हारे इस तरह के व्यवहार से तुम्हारे मन को कितनी व्यथा पहुँचती है। मैं तो तुम्हारा दीक्षा गुरु ही ठहरा लेकिन तुम्हारा मन तो तुम्हारी आत्मा है, तुम्हारा स्वरूप है, तुम्हारा अपना हो के, इस तरह के व्यवहार से तुम्हारा मन कुढ़ता जाता है, संकुचित हो जाता है, मन के संस्कार जो तुम्हे परेशान करते हैं उन पर वह विजय नहीं पा सकता। लेकिन अगर तुम इस बात का अभ्यास करो कि मन जब जो कहे तुरन्त उसका पालन करो तभी तुम्हारा मन तुम्हारा साथ देगा, जैसे बाप बच्चे का हाथ पकड़कर ले जाता है उसी तरह तुम्हें अपने मन का सहारा मिलता रहेगा। इसी बात को श्री भगवान ने कहा है - 'उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादेयत्। आत्मैव ह्यात्म्नो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।।'

जब रोने की बारी आती है, किसी के दुर्व्यवहार से पीड़ित होकर अपने कमरे में चादर औढ़कर मुहँ छिपाकर रोते हो तो किसके पास होते हो ? किसे अपना दुःखड़ा सुनाते हो ? लेकिन जिसे जीवन भर अपने दुःखड़े सुनाते रहे हो, तुमने उसकी कभी नहीं सुनी। बचपन से दुनिया भर के लोगों की आज्ञाओं का पालन करते आये हो। यातायात पुलिस हाथ उठाता है, गाड़ी रोक देते हो, जब हाथ हिलाता है, तभी गाड़ी चलाते हो। वकील कहता है

यहाँ हस्ताक्षर करो, करते हो, डाक्टर कहता चार चार घन्टों पर दवा खाओ, वैसा ही करते हो, सब की बात सुनते आए हो, सोच लो, लेकिन अपने मन की नहीं सुनते हो। स्वामी विवेकानन्द महाराज कहते हैं तुम पर भी संसार का बोझ है। हो सकता है कि हर मन की बात तुम पालन नहीं कर सकते हो। ऐसे अवसरों पर उसकी बातों की अनसुनी न करो। उसकी बातो को यथोपयुक्त गम्भीरता से ग्रहण करो और हो सके तो बाथरूम में या और एकान्त में रो रो कर, हाँ, रो रो कर अपने मन से क्षमा मांगो और कहो, मुझमें ऐसी शक्ति नहीं है कि तुम्हारी बातों का पालन कर सकूं। मैं जानता हूँ मैं मानता हूँ कि यह मेरी दुर्बलता है। हाँ, बेटा अपनी दुर्बलता को स्वीकार करो। रोग की पहचान के बगैर उसका इलाज कैसे हो पाएगा।

अब से संकल्प करो अपने मन की हर बात को मान कर चलोगे। यही धर्म है। अपने मन की बातों को सुनकर उसके अनुसार जो चलता है वह धार्मिक है, मन से जो युक्त है वह योगी है। श्रीश्रीठाकुर हर बात माँ काली से पूछते थे, तुम्हें मालूम होगा। मन की बातों को सुनते हुए, उनका पालन करते हुए तुम भी देखोगें कि वही तुम्हारी आत्मा है, तुम्हारा इष्ट देवता है, तुम्हारे श्रीश्रीठाकुर हैं। इस सम्बन्ध में मुझे और कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है। जैसा मैंनें लिखा है करना, अगर कर पाते हो तो तुम्हारा मन ही तुम्हारे लिए सब कुछ करेगा। सिर्फ इतना ही कहूंगा कि इन बातों को भी किसी को भी कहने की आवश्यकता नहीं है। पहले अपने मन के साथ सम्बन्ध पक्का करो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए हमारे प्रभु को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा ही सतत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(३२७)

११ नवम्बर २००४

प्रिय बेटी मी ...,

तुम्हारी १६ अक्टूबर की चिट्ठी यहाँ ३ नवम्बर को पहुँची।

तुम्हारे भविष्य के लिए कोई रास्ता या पथ पहले से तय किया हुआ नहीं हैं। B.Sc. Third year में हो, लेकिन फिर से PMT के लिए तैयारी में लगो। यह तुम्हारी बुद्धि, समझ ही है जो तुम्हें तुम्हारी समस्याओं से उबारेगी। रात को पढ़ती रहती हो तो दिमाग में बात आती है कि तुम्हें नींद आ रही है, सो जाना चाहिए। लेकिन तुम उस बात को अनसुनी करती रहती हो। फिर थोड़ी देर में वही बुद्धि प्रबल होती रहती है और इसके फलस्वरूप सोने की इच्छा भी प्रबल होती रहती है और जैसे जैसे इच्छा प्रबल होती जाती है वह तुम्हें सोने की तैयारियाँ करने में मजबूर करती है। फिर तुम सो जाती हो। ऐसे ही तुम्हारी बुद्धि तुम्हें कहेगी PMT Clear करना है, फिर उसकी तैयारियाँ करने की इच्छा होगी फिर तुम जी तोड़ परिश्रम करोगी और उसे Clear कर लोगी। ज्ञान, इच्छा, प्रयत्न यही क्रम है पहले वस्तुस्थिति का ज्ञान होता है फिर इच्छा होती है, फिर प्रयत्न करने के बाद फल का लाभ होता है। संन्यास आदि की बातें अभी रहने दो। B.Sc pass करने के बाद Medical के लिए तैयारियों में लगो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्री माँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३२८)

६ जुलाई २००२

प्रिय कि ...,

तुम्हारी ३ जून की चिट्ठी यहाँ ११ जून को पहुँची। अपनी अगली चिट्ठी में तुम मुझे अपने बारे में लिख भेजना। साथ ही इस चिट्ठी की Photocopy भी भेजो कि तुम्हारी आयु क्या है, तुम्हारे घर पर कौन कौन है, क्या करते हैं, तुम दिन भर क्या करते हो, अपने मन पर नजर रखते हो या नहीं, मन जो कुछ कहता है उसके अनुसार चलते हो या नहीं ? हर घड़ी अगर मन ही मन अपने इष्ट देवता का नाम जपने का अभ्यास कर लोगे तो तुम्हारे मन पर भी तुम्हारा नियन्त्रण आता रहेगा। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो। मैं फिर लिखूगां ।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर को निरन्तर मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(३२६)

२६ जुलाई २००४

प्रिय बेटी सु ...,

तुम्हारे पूर्वजों में सप्तशती पाठ करने की परम्परा नहीं है पहले जब कभी पाठ का आयोजन किया गया है आदि जो कुछ तुमने लिखा है उसमें सोचना पड़ेगा कि सप्तशती का पाठ किसने तथा किन लोगों ने किया था, किस उद्देश्य के साथ किया था आदि। मान लो देवी स्वतःप्रवृत्त होकर तुम्हारे घर पहुँचती है, तो क्या तुम उनका आदर-सत्कार करोगी या पूर्वजों की दुहाई कर उनकी विदाई कर दोगी ? यहाँ सोचना यही है कि सप्तशती का पाठ सीखने में हानि तो नहीं है लेकिन विधिवत पाठ का आयोजन करने से पहले देखना उचित है कि लोगों में दैवी के प्रति सच्ची श्रद्धा है या नहीं। अश्रद्धा के साथ करना हानिकर हो सकता है।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३३०)

२५ जून २००४

प्रिय बेटी वृ ...,

तुम्हारी २० अप्रैल की चिट्ठी यहाँ २८ अप्रैल को पहुँच गई।

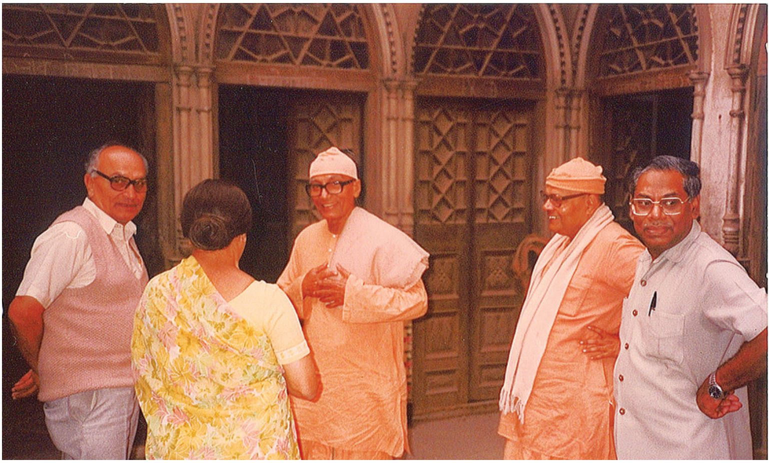
अपने जीवन के प्रारम्भ से अब तक की जीवन की घटनाओं को उनसे अलग होकर देखो जैसे कोई फिल्म देखती हो। फिल्मस्टार को रोती देखने के लिए तो तुम पैसे लगाकर टिकट कटाकर सिनेमा-हॉल में प्रवेश करती हो। फिल्म देख कर लौटने के बाद कहती हो कि कैसा सुन्दर अभिनय किया है। लेकिन अपने जीवन की कहानी को उसी तरह क्यों नहीं देख पाती हो ? इसमें तुम्हारा क्या अभिनय है ? घटनाएँ तो घटती रहती है केवल फिल्म अभिनेत्री की जगह तुम होती हो। फिल्म का अन्त यदि वियोग से होता है तब भी तुम सिनेमाहॉल में जाकर उसे देखती हो, नायक-नायिकाओं के साथ हंसती-रोती हो, और वह सब नाटक देखकर तुम्हें खुशी भी होती है और तुम दूसरों को वह फिल्म देखने के लिए भी कहती हो।

लेकिन अपने जीवन की घटनाओं का अवलम्बन तुम्हारी आत्मा है, जिनका नाम श्रीश्रीठाकुर है, श्रीश्रीमाँ हैं। समझती क्यों नहीं ?

मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो। मैं उनसे तुम्हारे लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(३३१)

२३ दिसम्बर २००४

प्रिय बेटी रू ...,

तुम्हारी २४ नवम्बर की चिट्ठी यहाँ १ दिसम्बर को पहुँच गई थी।

संगीत सीख रही जो तो सीखती रहो। उसमें गलतियाँ होती है तो छोड़ देने की बात क्यों करती हो ? यही तुम्हारी कमजोरी है कि तुम बहुत जल्दी सफलता चाहती हो। तुम जानती तो हो कि कर्म में ही तुम्हारा अधिकार है, तुम कर्म ही कर सकती हो और उनके विधिपूर्वक अनुष्ठान कर सकती हो, लेकिन उस कर्म के फल में तुम्हारा कभी भी अधिकार नहीं है और ये बातें तुम श्रीमद्‌भगवतगीता में पढ़ चुकी होगी - कर्मण्यावाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे कल्याण के लिए प्रार्थनाएं करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभचिन्तक
स्वामी गहनानन्द



(३३२)

३० दिसम्बर २००४

प्रिय स ...,

तुम्हारी बगैर तारीख की चिट्ठी मिली।

क्या तुम अपने मन से परिचित हो ? अगर नहीं तो तुम कैसे कह सकते हो कि तुम्हारा मन चंचल है ? तुम्हारा मन तो उसके अपने स्वभाव से ही स्वच्छ है, साफ है, निर्मल है, शुद्ध है, सच्चिदानन्द स्वरूप है। यह तो तुम्हारी सोच ही है कि तुम सोचते हो कि तुम्हारा मन चंचल है। आज ही उस सोच को बदल डालो और फिर देखा कि श्रीश्रीठाकुर क्या तुम्हारे मन को तुम्हारे इष्ट मन्त्र को जपते रहने के योग्य समझते है, अगर उन्हें मालूम होता कि तुम्हारा मन चंचल है ? ऐसा न सोचो। श्रीश्रीठाकुर के बारे में सोचो, वहीं तुम्हें तुम्हारे मन के शुद्ध रूप से तुम्हें परिचित करायेगा। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो। जब तुम मुझे अपनी चिट्ठी लिखो तो अपनी चिट्ठी की फोटोकॉपी अपने पास रख कर यानी मूल पत्र को मुझे भेजो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३३३)

२३ अगस्त २००३

प्रिय डी ...,

तुम्हारा ५ अगस्त का पत्र यहाँ १२ अगस्त को इन्...., हे...., तथा हि... के पत्रों के साथ पहुँचा।

मेरी सलाह यही है कि तुम स्वामी विवेकानन्द महाराज के व्याख्यान, पत्रों तथा लेखों के संकलन (The Complete Works of Swami Vivekananda) को हर रोज पढ़ा करो। वहीं तुम्हें तुम्हारी समस्याओं का समाधान मिल जाएगा। इधर उधर की पुस्तके पढ़ने से समस्याएँ बढ़ जाती है। समझो कि यह केवल एक कहानी ही नहीं है कि श्रीश्रीठाकुर ने स्वामीजी महाराज को अपने काम के लिए नियोजित किया था। मेरी बात मान कर चलोगे तो तुम्हारा कल्याण होगा। मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३३४)

२३ दिसम्बर २००४

प्रिय बेटी नि ...,

तुम्हारी २३ नवम्बर की चिट्ठी यहाँ ८ दिसम्बर को पहुँच गई थी।

कोई ओर नौकरी नहीं मिल सकेगी क्या तुम्हें ? लन्दन से जब तक पक्की खबर नहीं आती, अपनी माँ को अपने रोजगार से कुछ सहारा तो दे ही सकती हो ! काम करती रहोगी तो मूड भी ठीक रहेगा।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीमाँ तथा श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३३५)

२३ दिसम्बर २००४

प्रिय आ ...,

तुम्हारी २० तथा २४ नवम्बर की चिट्ठी यहाँ ३ दिसम्बर को पहुँची।

तुम्हारा संकल्प तो ठीक ही है। अब केवल पूरा मन लगाकर पढ़ने लिखने में लगाओ। अगर एक बार परिणाम मनोनुकूल नहीं हो तो फिर से पढ़कर परीक्षा के लिए बैठो। उदासी से क्या होता है ? लोगों के घृणा करने से भी कुछ नहीं होता है। तुम्हारी लगन जरूरी है। पहले से तुम्हारी मनोदशा में उन्नति हुई है। अब मुझे यही कहना है कि पढ़ाई छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। डट कर पढ़ो। तुम्हें अवश्य ही मनोनुकूल फल मिलेगें।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से नित्य ही प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३३६)

३० दिसम्बर २००४

प्रिय अ एवं न ...,

तुम्हारी ७ नवम्बर की चिट्ठी २० को यहाँ पहुँची।

तुमने अपनी चिट्ठी में जो बातें लिखी है ऐसा समझो की श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ ही ने तुमसे ऐसा लिखवाया हैं। बात तो तुम्हारे मन में ही छिपी हुई थी और उसका न तुम्हें पता था न किसी और को। तुम तो निश्चित ही हो कि अपने बच्चों की सेवा कर लेने के उपरान्त तुम्हारा मन श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ की ध्यान-धारणाओं में लगा रहता है। मुझे सुविधानुसार चिट्ठियाँ लिखते रहो।

मैं हमारे श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्री माँ से तुम्हारी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३३७)

१० जुलाई २००४

प्रिय र ...,

तुम्हारी २६ जून की चिट्ठी ५ जुलाई को यहाँ पहुँची।

तुम्हें मानसिक कष्ट होने के कोई कारण नहीं। सम्भवतः तुम चाहते हो कि रातों रात तुम्हें अपने आध्यात्मिक जीवन में सफलता मिले। फलकामना से रहित होना ही आध्यात्मिक जीवन बिताना है। इसलिए ध्यान में कैसी मूर्तियाँ देखते हो यह बड़ी बात नहीं है, बात तो यह है कि तुम्हारे व्यवहार में, तुम्हारे आचरणों में क्या परिवर्तन आता है। स्वामीजी ने यही कहा है।

मन्त्र का अर्थ हिन्दी या अंग्रेजी में बताने पर क्या समझोगें ? 'अर्थ' शब्द का अर्थ यहाँ प्रयोजन समझो, प्रयोजन का मतलब प्र+योजन - प्रकट रूप से जोड़ना या जुड़ा होना, सम्बद्ध होना। मन्त्र का अर्थ हमारे श्रीश्रीठाकुर है उनका जीवन है, उनके उपदेश है, उनके आचरण है। वहीं तुम्हारे हृदय में समासीन तुम्हारे इष्ट देवता है जिन्हें मन्त्र के उच्चारण के माध्यम से तुम पुकार रहे हो,

जैसे सोयी हुई माँ को बच्चा जगाता है। माँ तो जागी हुई ही है उसकी रक्षा हर घड़ी कर रही है पर जैसे बच्चे की सोच है वैसे ही तुम्हारी भी, मन्त्र का अर्थ जानना चाहते हो। प्रत्येक क्षण जहाँ तक हो सके जब भी प्रभु का नाम स्मरण आए, चलते फिरते, प्रत्येक कार्य करते हुए, प्रभु का नाम जपते रहो। नदी को समुद्र का अर्थ नहीं मालूम होता, लेकिन वह वहाँ पहुँच ही जाती है, समुद्र ही बन जाती है। प्रत्येक क्षण जप करने में गणना करने की जरूरत नहीं है।

मैं तुम्हारे लिए हमारे प्रभु, हमारी माँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। मेरी चिट्ठीयों को लोगो को पढ़ने के लिए न दिया करो।

तुम्हारा ही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द





(३३८)

३० दिसम्बर २००४

प्रिय बेटी स्वा ...,

तुम्हारी १८ दिसम्बर की चिट्ठी और व‌ट.... की चिट्ठी यहाँ २४ दिसम्बर को नये वर्ष के बधाई पत्र के साथ पहुँची।

अभी अभी तुमने श्रीश्रीठाकुर का नाम लेना प्रारम्भ किया है इसलिए समस्याओं को समस्यायें न समझो। वे तो तुम्हारी प्रतीतियाँ है। श्रीश्रीठाकुर ने अपना नाम जपने के लिए तुम्हें योग्य समझा है यही सबसे बड़ी बात है। अपनी साधना इत्यादि के सम्बन्ध में गुरु के अतिरिक्त किसी से भी चर्चा न करो। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो।

तुम्हारे कल्याण के लिए मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नित्य शुभांकाक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३३६)

१५ जुलाई २००४

प्रिय पी ...,

तुम्हारी २४ मार्च की चिट्ठी तुम्हारे ५०० रूपये के ड्राफ्ट के साथ ३० मार्च को यहाँ पहुँच गई थी। तुम्हें जबाब लिखवाने में विलम्ब हो गया। मई-जून के महीने में मैं एक से डेढ़ माह के लिए दक्षिण भारत की यात्रा पर गया था। अभी जुलाई १८ को योरोप के लिए रवाना हो रहा हूँ। अगस्त के अन्त तक वापस आ पाऊँगा।

श्रीश्रीठाकुर को ही तुम भिन्न-भिन्न रूपों में देखते हो और उन सभी रूपों को तुम तुम्हारी ही अरूप आत्मा के रूप समझो। ध्यान-जप आदि करते रहते हुए क्रमशः समझने लगोगे। निश्चिन्त रहो। राह पर निकल पड़े हो तो लक्ष्य पर पहुँच ही जाओगे।

मैं तुम सभी के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(३४०)

३० जून २००४

प्रिय त ...,

तुम्हारी २७ मार्च की चिट्ठी और बिना तारीख की एक चिट्ठी २४ अप्रैल तथा २५ फरवरी को यहाँ पहुँची थी। निराकार ब्रह्म के ही साकार रूप श्रीश्रीठाकुर है, सच है। जैसे सिनेमा हॉल में जिस पर्दे पर फिल्म प्रसारित की जाती है। वह पर्दा ही सच है, फिल्में बदलती रहती है। वैसे ही त... अपने आप को जो कुछ

सोच समझ रहा है वह बदलता रहता है, जो कुछ देखता है, सुनता है इत्यादि सभी परिवर्तनशील है। अपने जन्म-जन्मान्तरों में तुमने असंख्य शरीरों में जन्म लेकर जीवन के भिन्न भिन्न रूपों का अनुभव किया है। जैसे कोई डरावना सपना देखकर नींद खुल जाने पर भी वह व्यक्ति काँपता रहता है। वैसे ही पूर्व पूर्व जन्मों के संस्कार हमारे इस जीवन की बुद्धि को प्रभावित करते रहते हैं। श्रीश्रीठाकुर के, श्रीश्रीमाँ के जीवन-चरित्र के बारे में जितना अधिक हम चिन्तन/ध्यान करने में समर्थ होते हैं उतना ही हमारा मन शुद्ध और पवित्र होता रहता है। श्रीश्रीमाँ, श्रीश्रीठाकुर हमारे आदर्श हैं और आदर्श दर्पण को भी कहते है। जिसे देखकर हम अपने चेहरे को देखते हैं और साफ करते रहते है या यूँ कहे कि चेहरा साफ होता रहता है। चूंकि इन मैलो कों (गन्दगियों को) बढ़े चाव से दिनों, महिनों, सालों, जन्मों से एकत्रित करते रहे हैं। इसीलिए इन्हें दूर करने में देर लगती है शायद इनसे हमारा लगाव भी हो गया है। अतः तुम अपने मन के इन चिन्तनों को और घटनाओं को भी देखते रहो। मुझे चिट्ठीयाँ भी लिखते रहो।

मैं श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से तुम्हारे लिय प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी
स्वामी गहनानन्द



(३४१)

१६ जुलाई २००४

प्रिय बेटी रा ...,

तुम्हारी २ जुलाई को लिखी चिट्ठी कल ही मुझे मिली। तुमने ठीक ही लिखा कि ठीक जप करें तो वहीं सबसे बड़ी सेवा है। आन्तरिकता के बोध होने की बात तुमने लिखी है, लेकिन सोचो भी तो कि तुम्हारी निद्रा तो बहुत आन्तरिक ही हुआ करती है, लेकिन उसका तुम्हें बोध होता है क्या ? बोध के चक्कर में न पड़ो। इसीलिए स्वामीजी महाराज ने कर्मयोग की बात कही है। कर्मयोग का मतलब है कि मन छोटे बड़े किसी भी यथा प्राप्त कर्म को - जैसे बच्चियाँ तुम्हारे पास आती है, उनसे तुम्हारा कोई लगाव नहीं होता है फिर भी तुम उनकी सेवा में किसी तरह की लापरवाही तो नहीं करती, नारायण ज्ञान से शिवज्ञान से ही तो उनकी सेवा करती हो। इसी प्रकार छोटे बड़े किसी भी कर्म के प्रति उसी मनोयोग, इसी श्रद्धा के भाव को बनाये रखना। ऐसे भाव को जब कोई कर्म करो, उसी में पूरी लगन लगा दो। मजे की बात है कि स्वामीजी ने जहाँ पूरे लगन लगाने की बात की है वहीं आवश्यकता होने पर सर्वस्व त्याग के लिए भी तत्पर रहने के लिए कहा है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है, मैं १८ जुलाई से ११ अगस्त तक योरोप, इग्लेण्ड जर्मनी, फ्रांस और स्विट्जेरलेण्ड देशों के लिए १८ जुलाई को प्रस्थान कर रहा हूँ।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा हितैषी
स्वामी गहनानन्द

(३४२)

२३ जून २००४

प्रिय बेटी सं ...,

तुम्हारी १० मई की चिट्ठी २५ मई को यहाँ पहुँच गई थी। अपने पति से सलाह करो और अभी अपनी जीवन बीमा निगम की किस्तें जमा कराना रोक दो और अपनी पॉलिसी को समर्पित कर दो। इससे कम से कम तुम्हें १०५० रूपये हर महीने चुकाने नहीं पड़ेगें और जो थोड़े से पैसे पॉलिसी को समर्पित करने से मिलेंगे उसे अपने ऋण के भुगतान में लगा सकती हो। इस तरह सन २००५ के अन्त तक तुम्हारे पति का ऋण समाप्त हो जायेगा। तब तक तुम अपनी पढ़ाई की पुस्तकों को पढ़ती रहो और २००६ में परीक्षा देने की तैयारी करती रहो। अपने पति के भाई इत्यादि क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे, तुम्हारी सास क्या कहेगी, इन बातों पर अधिक ध्यान न दो ? वे तुम्हारी भलाई के लिए तो कुछ कर पाते नहीं केवल इधर-उधर की बातें करते रहते हैं। तुम्हें अपनी सास के बारे में सोचना पड़ रहा है कि तुम्हारे अतिरिक्त उन्हें कौन देखेगा ? लेकिन वह तुम्हारे बारें में नहीं सोचती। जब तुम काम पर निकलती हो तो बच्चों की देखभाल नहीं कर पाती। क्यों ? झगड़े की जरूरत नहीं है। अपना काम पति-पत्नी मिल कर करो। यदि वह पूछताछ अधिक करती है, तो तुम उनसे बातें न करो। अपने पति से कहो कि वे उन्हें समझाएँ। वर्ष भर की तुम्हें परेशानियाँ और उठानी है। निश्चिन्त रहो फिर बी एस सी उतीर्ण करने के पश्चात ही काम में लगोगी।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी
स्वामी गहनानन्द



(३४३)

२३ जून २००४

प्रिय बेटी नी ...,

तुम्हारी ६ मई की चिट्ठी यहाँ २४ मई को पहुँच गई। स्वप्न और भाव समाधि में अन्तर तो इतना ही है कि स्वप्न में तुम्हारे हृदय में भले-बुरे दोनों संस्कार होते हैं और भाव समाधि में केवल शुद्ध ही। जैसे गन्दे पानी को छोड़ देने पर उसका मैल नीचे बैठ जाता है और ऊपर का पानी शुद्ध दिखाई पड़ता है। मन की ऐसी अवस्था में भाव समाधि लगती है लेकिन वे खतरे से खाली नहीं होती। इसलिए तुमने स्वप्न में गुरुदर्शन किया है, ठीक है लेकिन यथार्थ दर्शन दूसरा होता है। प्रभु पर माँ पर भरोसा रखो, जीवन भर जिन पर भरोसा करती आई हो, वे ही तुम्हारी बाकी इच्छाएँ पूरी करेंगे।

मैं तुम्हारे लिए उनसे प्रार्थनाएँ करता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३४४)

२८ जून २००४

प्रिय बेटी अ ...,

तुम्हारी १२ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ १६ अप्रैल को पहुँच गई थी। इसी बीच १५ मई से १६ जून तक बैंगलोर, कालड़ी (केरल) के लिए गया हुआ था। १७ जून को ही लौटा हूँ। अ... ने मुझे एक चिट्ठी लिखी है। उसका जबाब लिखवा चुका हूँ। सम्भवतः तुम्हारी चिट्ठी के साथ ही एक ही डाक में यहाँ से निकले। तुम्हारे बच्चों की दीक्षा हो गई। अब कुछ दिनों तक बच्चों को नियमपूर्वक जप-ध्यान के लिए बैठाया करो। उनसे कहो कि जप-ध्यान नियमित रूप से करने के लिए कोई आसन पर एकाध घण्टे या घण्टे बैठे रहने का अभ्यास डाले तो मन क्रमशः एकाग्र होने लगता है। बच्चों का तो कहना ही क्या ?

मैं तुम सभी के कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(३४५)

प्रिय बेटी खू ...,

तुम्हारी २२ अप्रैल की चिट्ठी यहाँ २७ अप्रैल को पहुँची। मैं पिछले महीने ही बैंगलोर होकर कालड़ी (केरल) गया था। अभी १७ जून को ही लौटा हूँ।

हमारी श्रीश्रीमाँ ने कृपा का अर्थ लगाया है – 'करने के बाद जो मिले' – यानि कर्मफल। इस तरह से कृपा तो तुम्हें मिल सकती है जब कर्म करती रहो। प्रत्येक क्षण जब भी अवसर मिले, जब भी तुम्हारा मन इधर-उधर की बातों में फंसा हो, जब तुम भी लोगों के साथ हुल्लड़ मचा रही हो, प्रत्येक काम के बीच, प्रभु का नाम जप करती रहो। ऐसे जप में गिनती रखने की जरूरत नहीं है। ऐसे जप करने का अभ्यास डालोगी तो फिर तुम्हारा मन साफ होता जायेगा, शुद्ध होता जायेगा। मठ वगैरह जाती हो ठीक है लेकिन वहाँ भी प्रभु का मन लगाकर हर घड़ी मन-ही-मन जप करती रहो। आनन्दसागर क्या होता है, तुम्हें तभी पता चलेगा जब ऐसा अभ्यास कर लोगी और देखोगी कि तुम्हारे प्रयास के बिना ही तुम्हारा मन श्रीश्रीठाकुर का नाम जप कर रहा है।

अधिस्नातक पाठ्यक्रम, पूरा कर लो पिता पर तो बोझ पड़ ही रहा है, उसकी चिन्ता न करो। कड़ी मेहनत करो और अधिस्नातक की उपाधि प्राप्त कर लो। श्रीश्रीठाकुर की इच्छा से नहीं तुम्हारी अपनी बुद्धि, अपनी इच्छा, अपने प्रयास, और कठोर परिश्रम से तुम्हें प्रथम श्रेणी मिलेगी। श्रीश्रीठाकुर को भी तुम फेल करोगी तो भी वह मंजूर है। है या नहीं ?

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३४६)

२८ जून २००४

प्रिय बेटी रा ...,

तुम्हारी २० फरवरी की चिट्ठी यहाँ ४ मार्च को तथा इसी चिट्ठी की नकल (१२ मई की) यहाँ २२ मई को पहुँची।

मेरे २६ दिसम्बर २००३ का पत्र को मुझे नहीं लगता कि तुमने ध्यान से पढ़ा हो। मेरी सलाह है कि तुम उसे हर रोज सुबह-शाम पढ़ा करो। केवल मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहने और मुझसे लिखवाते रहने से कोई लाभ नहीं। मुझे नहीं लगता तुम्हें कोई रोग है। यह तुम्हारा ख्याल है, तुम्हारी एक धारणा है जो बिल्कुल ही निराधार है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि तुम मेरी बातों को समझ पाओगे। जैसे मेरी पहली चिट्ठी को कोई असर तुम्हारे ऊपर पड़ा ही नहीं। अगर वही चिट्ठी तुम्हारे पास से खो नहीं गयी है तो उसे पढ़ते रहो और फिर अगर चाहो तो सितम्बर महीने में मुझे फिर लिखो। मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्री ठाकुर से प्रार्थनाएँ करता हूँ।

तुम्हारा सदा हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(३४७)

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ११ जून की चिट्ठी यहाँ १६ जून को पहुँच गई।

अपने संसार के लोगों की सेवा करना ही अपनी तपस्या, अपनी साधना समझो। संसार के लोग ही तुम्हारे लिए नारायण-स्वरूप है। तुम तो समझती ही हो कि इन जीते-जागते नारायणों की सेवा में थोड़ी सी भी कमी हो जाने पर ये कितने बिगड़ जाते हैं। इसलिए इनकी सेवा बहुत सावधान होकर करो। इसी से मन एकाग्र होता जायेगा। श्रीश्रीठाकुर का, श्रीश्रीमाँ का तुम पर जो प्रेम है उसकी तुलना में उनसे तुम्हारे प्रेम की तुलना हो सकती है क्या ? वे तुम्हारे लिए जितना व्याकुल हैं, उसके आगे तुम्हारी व्याकुलता को क्या व्याकुलता कहोगी ? माँ अपने बच्चे के लिए जितना व्याकुल होती है, बच्चे में वैसी व्याकुलता कहाँ ? वह तो अपनी माँ पर पूरी तरह निर्भर रहता है। वैसे ही अपने साथ समझो। उन्हीं पर निर्भर रहो। वे ही जब जैसे चाहे तुमसे करा लें। वचनामृत का पाठ करती रहो।

तुम्हारी न तो अंग्रेजी में और न ही हिन्दी में कोई दोष है, हिन्दी में ही लिखा करो। मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(३४८)

२८ जून २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी ३ मार्च की चिट्ठी यहाँ १० मार्च को पहुँची। स्वामी गीतात्मानन्द ने तुम्हें जो कुछ कहा है वह ठीक ही है और तुमने जो पढ़ा है वह भी ठीक है। औंकार तथा माँ के अतिरिक्त भी उनके और भी असंख्य नाम है - जैसे सच्चिदानन्द, शिव, नारायण आदि। लेकिन सवाल तो यह है कि तुम्हें किस नाम की आवश्यकता है। इसका निर्णय कौन करेगा ? किताबें करेंगी ? कौन करेगा ? किताबों से अगर तुम्हारा काम चल जाता तो फिर दीक्षा लेने की आवश्यकता ही क्या थी ? इन सब बातों को लेकर 'बहुत देर तक' लोगों से बातें न करो। बातें करनी है तो जब बिल्कुल अकेली हो, या रात को जब लोग सो रहे हों तो श्रीश्रीठाकुर से, श्रीश्रीमाँ से रो-रो कर व्याकुलता के साथ प्रार्थनाएँ करो। इसके अतिरिक्त श्रीश्रीठाकुर का नाम हर घड़ी मन ही-मन जप करती रहो, गिनती रखने की जरूरत नहीं हैं, स्मरण रखो जप करते समय होठों को न हिलाओ। किताब घर पर छोड़ आई हो, यह गलत है, लापरवाही है, जल्दबाजी है। जैसे तुम सोचती हो कि रातो रात अंग्रेजी सीख जाओगी। जल्दबाजी न करो। प्रभु का नाम जपो, हस्पताल का काम करो, और नहाने, धोने आदि में समय लगाने के बाद का समय जो बचे उसे पढ़ने-लिखने में लगाओ। अपनी अगली चिट्ठी में क्षमा आदि मांगने की जरूरत नहीं है। अपने को सुधारो, यही जरूरी है। मैं तुम्हें एक 'उपासना पद्धति' की प्रति भिजवा रहा हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३४६)

२६ जून, २००४

प्रिय कृ ...,

तुम्हारी २६ फरवरी की चिट्ठी ८ मार्च को यहाँ पहुँच गई थी।

तुम्हारे लिए एकाहार करना ठीक नहीं हैं। रात को एक बार खाना खाने का अभ्यास डालो। दूध अगर वायुकारक है तो पनीर और दो एक रोटियाँ सब्जी के साथ जरूर खाओ। दो महीने तक खाने के बाद मुझे लिखो। श्रीअमरनाथ जाने की इच्छा हुई है, जाओ। आध्यात्मिक जीवन के लिए शारीरिक श्रम की आवश्यकता नहीं है। जिस किसी तरह तुम्हारा मन श्रीश्रीठाकुर में लगा रहे, वही साधना है। इसके अतिरिक्त 'साधना करोगे' ऐसी बुद्धि भी ठीक नहीं हैं। साधना तो तुम्हारें संस्कारों के अनुसार होती रहेगी। तुम्हारा प्रत्यके दिन का जीवन बीतना, इन दिनों की सुख-दुःख की घटनाओं को देखते, सहते रहना यही तपस्या है। लेकिन तुम्हें ख्याल ही नहीं है।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए हमारे प्रभु को नित्य ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा ही हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(३५०)

२३ जून २००४

प्रिय महे ...,

तुम्हारी चिट्ठी में कहीं तारीख का नामोनिशान नहीं है जिससे पता लगे कि तुमने कब पत्र लिखा और कब यहाँ पहुँचा।

तुमने लिखा है कि तुम्हारी गम्भीरतापूर्वक पढ़ाई करने की बहुत ही इच्छा है, लेकिन मुझे लगता है कि पढ़ने की इच्छा का ही तुम्हारे में अभाव है। इच्छा हो और वह पूरी न हो यह नहीं हो सकता है। पहले किसी को किसी बात का ज्ञान होता है कि यह बात जरूरी है जैसे किसी को सुबह तीन बजे बिस्तर छोड़ना है तो उसे पहले इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि तीन बजे उठना जरूरी है। यह ज्ञान जितना पक्का होगा, उतनी पक्की उसकी इच्छा होगी, फिर वही उस इच्छा के बल से वह बिस्तर छोड़ पावेगा। इसी प्रकार तुम जब समझोगे कि परीक्षा देना और उसमें उत्तीर्ण होना तुम्हारे लिए जरूरी है तो तुम्हारी यह समझ

जैसे जैसे दृढ़ होगी, वैसी दृढ़ इच्छा ही तुम्हें पढ़ने में लगाएगी, फिर तुम उसे उत्तीर्ण भी कर लोगे। इसलिए अगर तुम सोचते हो कि बार बार असफल होते रहने पर भी लोग क्या कहेंगे इसकी तुम्हें परवाह ही नहीं होगी। इसका मतलब तो यही निकलेगा की पढ़ने की इच्छा ही तुम्हारे मन में नहीं है। तुम पढ़ने को, पास करने को जरूरी नहीं समझते हो। जब भी इसे अत्यावश्यक समझोंगे, तुरन्त ही उत्तीर्ण हो जाओगे। लेकिन १७ मई को प्रारम्भ हुई परीक्षा तो अब तक समाप्त हो गई होगी। अपनी बुराईयों की चर्चा न करो। स्वामीजी महाराज ने भी मना किया है। यदि अपना भला चाहो तो बुराईयों का भी चिन्तन न करो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द





(३५१)

२८ जून २००४

प्रिय र ...,

तुम्हारी २६ जून की चिट्ठी यहाँ पहुँच गई। गुरु दक्षिणा यहाँ पहुँच जाने पर तुम्हें रसीद मिल जाएगी।

मुझे कोई शक नहीं कि तुम्हारे बच्चे प्र... एवं रू... दोनों होशियार, बुद्धिमान हैं, भक्तिमान हैं। तुम्हारी माँ की तो तुलना ही नहीं, इतनी अच्छी है। तुम्हें तथा कौ... को तो श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ ने अपना लिया है, तुम्हें किस बात की चिन्ता ? श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के अन्तरंग लोग उनसे अपने जीवन के लिए सुख, शान्ति, समाधान कुछ नहीं चाहते हैं वे तो केवल प्रभु, माँ के नाम जपने में ही सुखी रहते हैं। तुम भी जहाँ तक हो सके, हर घड़ी मन ही मन बिना होंठ हिलाये, बिना गिनती रखे, प्रभु का नाम जपते रहो। कुछ मांगों नहीं उन्हें सब मालूम है, समयानुसार, तुम्हारी माँगों को पूरी करेंगे। निश्चिन्त होकर जप ही करते रहो।

मैं उनसे प्रार्थनाएँ करता हूँ कि वे तुम्हें तथा कौ... को हर घड़ी नाम लेते रहने की शक्ति दें।

तुम्हारा सदा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३५२)

२३ जून २००४

प्रिय बेटी उ ...,

तुम्हारी ११ मई की दो चिट्ठियाँ यहाँ २० मई को पहुँची। इस चिट्ठी को किसी ओर को पढ़ने न देना। अब मान लो कि स्नानघर में बेसिन पर खड़ी तुम दाँत साफ कर रही हो या मुँह धो रही हो और टेलीफोन बजता है और तुम उसे ज्योंहि उठाने के लिए भागने लगती हो तो तुम्हारा मन तुमसे पानी बन्द करने के लिए कहता है। तुम उसकी अनसुनी कर देती हो, कहती हो 'अभी तो वापिस आ रही हूँ।' लेकिन लौटती कब हो, मान लो ४० मिनिट बाद। तुम्हारा मन फिर तुम्हें टोकता है, यह क्या किया तुमने ? लेकिन तुम्हें उसकी परवाह नहीं, कहती हो तो क्या हो गया ? ऐसा तो होता ही रहता है। अब मान लो दृश्य वही है, वही बेसिन है, तुम खड़ी हो, टेलीफोन आता है, तुम भागने लगती हो लेकिन वहाँ मैं बैठा होता हूँ और तुम्हें कहता हूँ, पानी बन्द कर दो फिर जाओ। लेकिन अपनी आदत से मजबूर तुम मुझे कहती हो, 'अभी तो आ रही हूँ, महाराज और वही ४० मिनट के बाद लौटती हो और मेरे फिर टोकने पर कहती हो, तो यह कौन सी बड़ी बात हो गई ? क्या तुम्हारे व्यवहार से मुझे चोट नहीं पहुँचेगी ? जैसे एक अकेले में नाचती-गाती छोटी बच्ची तुम्हें देखकर खुश होकर तुमसे लिपटना चाहती हो और तुम्हें उसी समय याद आ जाये कि उसने रात को कुछ तोड़-फोड़ किया और तुम उसकी पिटाई शुरू करो तो उसके चेहरे पर जो कष्ट दिखता है, वही कष्ट मुझे तुम्हारे व्यवहार से हुआ। लेकिन जो बात

अधिक महत्वपूर्ण है कि तुम अपने मन के साथ दिन भर में सैंकड़ों हजारों बार इस तरह के व्यवहार करती रहती हो। स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि ऐसा न करो।

बात इतनी सी है कि जब भी तुम्हारा मन तुम्हें कहे, ऐसा करो, तुरन्त उसे करो, जब मना करता हो तो न करो। इस प्रकार अपने मन के साथ एक सम्बन्ध जोड़ो। फिर उसके चमत्कार देखती रहो। स्वामीजी ने यह भी कहा है कि तुम संसार में हो, ऐसी अवसर आ सकते हैं जब तुम अपने मन की बात को मान कर वैसा आचरण नहीं कर सकती। स्वामीजी कहते हैं कि वैसे क्षणों में तुम कहीं बॉथरूम वगैरह में जाकर अकेली अपने मन को रो-रो कर समझाओ कि तुम उसकी बात नहीं मान सकती और भविष्य के लिए शक्ति की प्रार्थना करो कि जिससे ऐसे अवसरों पर उसकी बातों का पालन कर सको। इसके अतिरिक्त, जैसे लोग डायरी आदि में लिखते है, वैसे ही तुम अपने मन में नोट करो कि तुम्हारी यह कमी थी, दुर्बलता थी कि तुम अपने मन की बात का पालन नहीं कर सकी।

श्रीश्रीठाकुर ने कहा है कि तुम उनकी ओर एक कदम बढ़ोगी वे तुम्हारी ओर दस कदम बढ़ेंगे-तुम्हें याद होगा। अपने मन से इस तरह का व्यवहार आज से शुरू कर दो, फिर देखो भगवान तुम्हारी ओर दस कदम कैसे बढ़ आते हैं। मुझे पत्र लिखती रहो। इन बातों को किसी ओर को न कहो, अपने तक ही सीमित रखो। सालभर बाद, जब अपने मन के साथ के सम्बन्ध को पक्का कर लोगी तो देखने लगोगी कि उसने तुम्हारा सारा भार अपने सिर पर ले लिया है और हर घड़ी तुम्हें चला रहा है। फिर इच्छा हो तो गिने चुने लोगों को कह सकती हो। मैं तुम्हारें लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

(३५३)

२४ जून २००४

प्रिय बेटी छ ...,

तुम्हारी २१ मई की चिट्ठी यहाँ २५ मई को पहुँची। तुमने दंडत्व प्रणाम लिखा है उसे दंडवत प्रणाम लिखा करो। 'दंड' का अर्थ है डंडा या लाठी, और दण्डवत् या दंडवत् का अर्थ है लाठी की तरह। खड़ी लाठी को छोड़ देने पर वह जैसे सीधे गिर पड़ती है उसी तरह गुरुजनों के पैरों पर प्रणाम करते समय जो लोग गिर कर प्रणाम करते हैं उसे दण्डवत् प्रणाम कहते हैं।

मुझे तो तुम लोगों के दुःखी होने का कोई कारण नहीं दिख रहा है। तुम्हारी दीक्षा हो चुकी है, श्रीश्रीठाकुर तुम्हारे हृदय के अन्तःपुर में आसन जमा कर बैठे हुए तुम्हें चला रहे हैं, तुम्हें उनका हर घड़ी नाम लेते रहने का अधिकार मिला है, फिर दुःख किस बात का ? मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो। जीवन से हार मानना भला क्या होता है ? ये बाते तुमने कहाँ से सीखी ? अपनी पढ़ाई मन लगाकर करती रहो, ली..., जि..., चे..., ज... और अपनी माँ सभी को प्रभु का नाम लेने के लिए कहो। दीक्षा किसी की अगर नहीं हुई हो तो भी श्रीश्रीठाकुर का नाम मन में ही लेने के लिए कहो। भले ही वह नाम गलत हो। किसी से पूछने की जरूरत नहीं है फिर दीक्षा के समय दीक्षागुरु को कहकर उसे ठीक कर लेने के लिए कहो। उनकी जब भी इच्छा हो मुझे चिट्ठियाँ लिखने के लिए कहो और लगन के साथ पढ़ाई करो। मैं तुम्हारे परिवार के लिए सभी के कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही

स्वामी गहनानन्द



(३५४)

२६ जून २००४

प्रिय अ ...,

तुम्हारा पत्र १० मई का यहाँ १७ मई को पहुँचा।

मुझसे किसी बात के लिए क्षमा मांगने की जरूरत नहीं है। तुमने अपनी बीमारी का निदान कर लिया है तब और क्या करोगे ? इसी तरह यह संसार भी एक रोग है। जिसका दवा इसकी पहचान भर है और यह संसार भी तुम्हारी ही सृष्टि है। इस बात को ज्यों ज्यो समझोगे त्यों त्यों संसार से अब अपनी सच्चाई का, अपने स्वरूप की खोज में लगोगे। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक श्रीश्रीठाकुर, स्वामीजी महाराज की पुस्तकें पढ़ने में मन लगाओ। मुझे चिट्ठियाँ लिखते रहो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से सदा प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा ही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(३५५)

२८ जून २००४

प्रिय ...,

तुम्हारी १० जून की चिट्ठी १५ जून को यहाँ पहुँची। मैं इस पत्र के साथ तुम्हारे लिए एक अलग कागज पर मन्त्र लिखवाकर भिजवा रहा हूँ, उसे अकेले में, जहाँ कोई दूसरा व्यक्ति न हो, समय लगाकर पढ़ो और जब जिस तरह लिखा गया हैं उसी तरह उच्चारण हो रहा हो तो धीरे धीरे जप करना प्रारम्भ करो। १०-१२ दिनों तक नियमानुसार जप करते रहो और देखो कि मन्त्र कण्ठस्थ हो गया हैं या नहीं। यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो मन्त्रों के साथ लापरवाही मत करो। तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर कोई भी समझ जायगा कि कोई भी काम तुम मन लगाकर अधिक दिनों तक नहीं कर पाते हो। यह तुम्हारी अस्थिरमति का ही लक्षण है। मन्त्र का उच्चारण एक ही बार करो लेकिन पूरा मन लगाकर करो, यदि तुम्हें सन्तोष न हो कि उच्चारण सही ढंग से नहीं हुआ है तब तक आगे न बढ़ो। मुझे नहीं लगता कि तुम्हें कोई बीमारी है अगर है भी तो यही है कि तुम अपने आपको जरूरत से ज्यादा बुद्धिमान समझते हो। तुम्हें अपनी अगली चिट्ठी में क्षमा वगैरह मांगने की जरूरत नहीं है। यथाविधि जप करने के बाद सितम्बर के महीने में मुझे लिखो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी
स्वामी गहनानन्द

> पवित्रता, धैर्य और अध्यवसाय, इन्हीं तीनों गुणों से सफलता मिलती है, और सर्वोपरि है प्रेम।
>
> – स्वामी विवेकानन्द



(३५६)

२ मई १६६७

प्रिय सो ...,

तुम्हारा २७ मार्च का पत्र यहाँ ६ अप्रैल को पहुँचा।

चार्टर्ड एकाउन्टेन्सी तुमने पढ़ना शुरू किया है, अब कुछ वर्षों तक उसी में मन लगाओ। केवल 'उपासना पद्धति' की छोटी सी पुस्तिका जो तुम्हें दीक्षा के समय दी गई थी उसमें बताई गई विधियों का निमयपूर्वक पालन करते हुए प्रातः, सन्ध्या तथा मध्याह्न भोजन से पहले, स्नान करने के बाद, इस प्रकार तीन बार ध्यान-जप का क्रम चलाओ।

अभी कुछ वर्षो तक जब तुम ध्यान करने बैठोगे तब तुम्हारे मन में सांसारिक बातें ही आती रहेगी जैसे कि जब तुम तीस

साल तक बन्द रखा गया कमरा खोलकर उसकी सफाई में लगते हो तो पहले कुछ दिनों तक तुम्हें गन्दगी ही गन्दगी का सामना करना पड़ता है और उसके बावजूद अगर तुम उसे साफ करने में लगे रहते हो तो कुछ और दिनों में वह कमरा सम्भवतः तुम्हारे उपयोग करने लायक बन जाता है। अपने मन के बारे में भी ऐसे ही समझो। तुम्हें मालूम नहीं, अब तुम्हारी दीक्षा हुई, इसका मतलब यही है कि तुमने अपने मन की सफाई करना शुरू किया है, लेकिन यह काम बहुत ही धैर्य के साथ करो, जल्दबाजी न करो, नहीं तो बीमार पड़ सकते हो ।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक प्रगति के लिए भगवान श्रीरामकृष्ण देव से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा ही सतत शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द





(३५७)

१० नवम्बर २००४

प्रिय बेटी ...,

तुम्हारी १ नवम्बर की चिट्ठी यहाँ पहुँच गई है।

तुम्हारे मन्त्र के अर्थ जानने से पहले मन्त्र शब्द का अर्थ जानना तुम्हारे लिए जरूरी है। मन्त्र वही है जिसका मनन करने से, बारम्बार मन-ही-मन जिसकी आवृत्ति करने से मन से सांसारिक वृत्तियाँ चली जाय, मन शुद्ध हो, शान्त हो, काम-क्रोधादि अवस्थाओं से मुक्त हो। तुमने चूँकि श्रीश्रीठाकुर के बारे में पढ़ा है तथा उनके जीवन को तुम अपने जीवन का आदर्श मानते हो और समझते हो कि उनका नाम जपते रहने से तुम्हारा मन क्रमशः निर्मल हो जायगा इसलिए वे तुम्हारे इष्टदेवता है और इसीलिए तुम उनका नाम जपती हो जिसे तुम्हारे श्रीगुरु ने तुम्हें विधिवत प्रदान किया है। मन्त्र, देवता के नाम ही हैं।

जो विषय उतीर्ण होना बाकी है उसके लिए तैयारियाँ करती रहो। ध्यान-जप विधिपूर्वक नहीं कर सकती हो तो कोई बात नहीं। पढ़ाई पूरी करो। एम.टेक कर लोगी तो मुझे खुशी होगी।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए श्रीश्रीठाकुर से बराबर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा नियत शुभाकांक्षी,

स्वामी गहनानन्द



(३५८)

२३ जून २००४

प्रिय वी ...,

तुम्हारा २४ मई का पत्र यहाँ ३० मई को पहुँचा।

खुशी की बात है कि तुम एक आश्रम बनाने में लगे हो। अपनी तपस्या के फलस्वरूप तुम्हें आश्रम के लिए जगह मिल गई है तो नलकूप के लिए तुम किस सोच में पड़े हो। वह भी तुम्हारी तपस्या के फलस्वरूप ही तुम्हें मिलना चाहिए। मुझे तुम पर भरोसा है कि तुम्हें किसी की मदद की जरूरत नहीं पड़ेगी और मेरे लिए तो यह कभी भी सम्भव नहीं है कि मैं तुम्हारे लिए किसी से कहूँ।

वैसे मैं तुम्हारे लिए हमारे श्रीश्रीठाकुर से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभचिन्तक
स्वामी गहनानन्द



(३५६)

२६ जून २००४

प्रिय दी ...,

तुम्हारा २४ अप्रैल का पत्र यहाँ १२ मई को पहुँचा।

मुझे तो नहीं लगता कि तुम्हें किसी प्रकार के मार्गदर्शन की आवश्यकता है। किसी फिल्म प्रोजेक्ट्र में फिल्म डालकर उसे चलाने पर पर्दे पर जैसे उसी फिल्म के चित्रों, दृश्यों को देखते हो, वैसे ही अपने आपको, अपने परिवेश को, जगत को तुम वैसे ही देखते हो जैसे देखने के लिए तुमने अपने मन, बुद्धि, इच्छाओं, संस्कारों को पूर्व-पूर्व जन्मों से तैयार किया है। किसी पुस्तकालय में जैसे तुम शायद जहाँ हिन्दी या अंग्रेजी पुस्तकें रखी होती हैं वही जाते हो, जिनको पढ़ने के लिए अपने मन, बुद्धि, संस्कार आदि को तैयार किया है। जिधर मराठी या तमिल पुस्तकें रखी होती है उधर नहीं जाते और वह इसलिए कि तुमने हिन्दी या अंगेजी पुस्तकों को पढ़ने के लिए अपने मन, बुद्ध, संस्कार आदि

को तैयार किया है, तमिल आदि पुस्तकों के लिए नहीं। वस्तुतः तमिल आदि भाषाओं में लिखी पुस्तकों का तुम्हारे लिए कोई अर्थ है ही नहीं। वैसे ही जो हत्या की कहानियों पढ़ना चाहेगा यदि जिसकी रूचि ऐसी पुस्तकों के पढ़ने की है तो उसके लिए दर्शन शास्त्र की पुस्तकें निरर्थक प्रतीत होती है। वैसे ही यह जो अपने सम्बन्ध में तुम्हने लिखा है उसे तुम्हारी अपनी रचना, अपनी सृष्टि ही समझो और जब तुम अच्छी तरह इस बात को समझ लोगे तो फिर यह भी समझने लगोगे कि इनको बदलना भी तुम्हारा ही काम है, तुम्हारी बुद्धि का, समझ का काम है। पूर्व को जाने वाला व्यक्ति जब समझता है कि वह पश्चिम की ओर बढ़ रहा है पूर्व की ओर नहीं, तो उसका पहला काम उस समझ को दृढ़ बनाना है निःसंशित बनाना है, निश्चयात्मक बनाना है, फिर वही बुद्धि उसे पूर्व की ओर ले जायेगी। मुझे लिखते रहो। मैं श्रीश्रीठाकुर से तुम्हारे लिए प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ।

तुम्हारा सदा शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द





(३६०)

२५ जून २००४

प्रिय बेटी अ ...,

तुम्हारी १० मई की चिट्ठी २० मई को यहाँ पहुँची। इधर मैं पिछले महीने बैंगलोर होकर कालड़ी (केरल) गया हुआ था। अभी १० जून को ही लौटा हूँ। मेरा स्वास्थ्य ठीक ही है।

बाते इतनी जटिल नहीं है जितनी तुम सोचती हो, शायद सभी सोचते हैं। इसकी वजह यही है कि लोग इन बातों को समझने के लिए तैयार ही नहीं होते और वह इसलिए कि ऐसे लोग खुद को सक्रिय मानते हैं। मान लो कि तुमने चीनी पाक कला, चीनी खाद्यान के बारे में कभी कुछ जानकारी हासिल कर ली, पुस्तकें पढ़ली, लेकिन कभी वैसा खाना तुम्हें मिला नहीं। फिर कभी कहीं एक चाइनीज रेस्टोरेंट में गई, वहा वेटर ने मीनू लाकर दिया जिस पर एक तरफ तो चीनी भाषा में आईटमों के नाम थे तो दूसरी और रोमन अक्षरों में। किसी तरह वहाँ खाना खाकर वहाँ से निकली और फिर किसी सहेली से इस आप बीती का बयान

किया। वह तो इस विषय में प्रवीण थी, इसलिए उसे कष्ट हुआ कि तुम्हारे अनाड़ीपन की वजह से तुम्हे शर्मिन्दा होना पड़ा। उसने तबसे तुम्हें २-३ वर्षो में दिल्ली वगैरह शहरों के रेस्तरां में ले जाकर चीनी भोजन से परिचय करवाया फिर तुम कभी सिंगापुर, होंगकांग, ताईपे और कभी बिजिंग गई तो हर जगह तुम्हारी रूचि की प्रशंसा होती, वहाँ के घरों की औरतें भी तुम्हारी प्रशंसा करती है। लेकिन देखो बेटी यहीं पर ध्यान देने की बात आती है। तुम्हें चीनी भोजन का अन्दाज तो हो गया है, दुनिया भी मान रही है लेकिन तुम्हारे स्वयं में ही एक विरोध है जो चीनी खाने को सराहने में तुम्हारा बाधक बनता है। यह विरोध यही है कि तुम स्वयं चीनी नहीं हो और चीनी भोजन तो चीनी माँ के कोख में जन्में लोगों के लिए है और इसलिए यहाँ तुम्हारी भारतीयता ही बाधक है।

वैसे ही लोग सोचते हैं कि यह आध्यात्मिक जगत और है, और मेरा जगत और है। जगत से हम गतिशीलता समझते है जैसे संसार से संसरण या संसृति। यहाँ स्थिरता कहीं भी नहीं है और जिसे इस अस्थिरता का ज्ञान होता जाता है, जब वह इस अस्थिरता से अलग होकर इस अस्थिरता का अवलोकन करने लगता है तो उसे अपने आपकी स्थिरता का भी बोध होने लगता है कठोपनिषद् कहता है (५.१३)

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहुनां यो विदधति कामान्।

तमात्मस्थं येऽअनुपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम्।

'वहीं व्यक्ति जो कि विनाशशील वस्तुओं में वहीं एक अविनाशी आत्मा को देखता है, जो जानता है कि जैसे पानी से हाथ जलने का निमित्त पानी नहीं, अग्नि के सान्निध्य से प्राप्त उस पानी की उष्णता है वैसे ही ब्रह्मादि जगत स्रष्टाओं का चैतन्यकर्तृत्त्व आत्मचैतन्य का ही चैतन्यकर्तृत्त्व है, जो सर्वज्ञ है, सर्वेश्वर है और इस प्रकार जो एक होकर भी बहुतों को उनके सांसारिक पूर्व

जन्मार्जित संस्कारों के अनुरूप कर्मफल प्रदान करते हैं। उन्हें आत्मस्थ होकर जो धीर-स्थिर लोग दर्शन करते हैं उन्हें ही शाश्वत शान्ति मिलती है, औरों को नहीं।

यही आध्यात्मिक अनुभव है जिसे तुम चाहती हो। अध्यात्म का अर्थ 'अधि' जिसका मतलब अधिकरण यानि अधिकार होगा अर्थात रहने की जगह और आत्मा तो तुम्हीं हो। तो यह तुम्हारा शरीर ही अध्यात्म कहलाता है और इसके अवलम्बन हुए अनुभवों को आध्यात्मिक अनुभव कहते है। 'अनु' का अर्थ 'पीछे' है, 'भव' का मतलब होना, रहना आदि। किसी फिल्म, फोटोग्राफ, चित्र को देखने के लिए, किसी दृश्य को देखने के लिए तुम पीछे हटकर देखती हो, उसी तरह अपने शरीर में, अपने घट में घटती घटनाओं को तुम अपनी बुद्धि को शरीर से हटाकर, शरीर, मन आदि को (objectify) मूर्त रूप में व्यक्त करने को ही अनुभव करती हो। यही अध्यात्म का अनुभव है। नायक-नायिकाओं के सुख दुःख को देखकर रोने हंसने के लिए तुम पैसे लगाकर टिकट कटवाकर ढ़ाई-तीन घन्टे तक सिनेमा हॉल में बैठी रहती हो लेकिन अपने जीवन की घटनाओं के कारण रोना पड़े तो ऊब जाती हो। अपने जीवन को उससे अलग होकर देखो। श्रीश्रीठाकुर का कहना है, 'जब यह शरीर और यह जगत वास्तविक रूप से ही मिथ्या है वस्तुत ही अलीक है, स्वप्नवत है, तुच्छ है,' जैसा अनुभव इन्द्रियों के कारण हो रहा है वैसा वस्तुतः नहीं है, वास्तविक चैतन्य ही है, ऐसा ज्ञान होता है, बोध होता है तो आत्मा समाधिस्थ हो जाती है।

लेकिन इसके लिए तुम्हें करना कुछ भी नहीं है, केवल जो कुछ घटता है उसे देखते रहना है। देखती देखती समझने लगोगी कि तुम्हारे सिवाय, तुम्हारे आत्मचैतन्य के सिवाय सब बेकार है, लेकिन जब तक इस ज्ञान का उदय नहीं हो जाता तब तक तुम्हें उसकी यानि उस परमात्मा की, तुम्हारे हृदयस्थ परमेश्वर,

अन्तर्यामी की, जिन्हें हम हमारे श्रीश्रीठाकुर कहते है, श्रीश्रीमाँ कहते है, उनकी बातों का समझना पड़ेगा, उनकी बातों के अनुसार हर काम करना पड़ेगा, करोगी भी। जैसे जैसे यह बोध पक्का होता जाएगा, वैसे वैसे तुम उन्हीं पर अधिक से अधिक निर्भर होती जाओगी। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ के आविर्भाव को ही ब्रह्मकुण्डलिनी का जागरण कहा गया है। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ को आविर्भाव के पूर्व यह ज्ञान, आत्मज्ञान, बहुत ही थोड़े से गिनती के लोगों को उपलब्ध था। उनके आने के बाद इस ज्ञान की उपलब्धि के लिए कम से कम प्रयास तो कर ही रहे है। मुझे चिट्ठियाँ लिखती रहो। मैं तुम्हारे कल्याण के लिए उनसे प्रार्थनाएँ कर रहा हूँ। फोटोग्राफ के लिए मैं यहाँ साधुओं से कह रहा हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक
स्वामी गहनानन्द



(३६१)

२४ जून २००४

प्रिय बेटी व ...,

तुम्हारी २२ अप्रैल की चिट्ठी में तुमने लिखा है कि यह तुम्हारा पहला पत्र है। तुम नित्य जप करती हो लेकिन मन में दूसरे विचार आते है। २००३ में एमएससी (जूलोजी) किया है। पढ़ने में ध्यान नहीं लग रहा। शादी की भी बातचीत हो रही है। तुम मोटी हो इसलिए अड़चनें आ रही हैं। तुम्हारी उम्र २३ वर्ष है। तुम नित्य भगवान से बातें करती हो। पता नहीं उनका ध्यान है या नहीं। अशान्ति महसूस होती है। क्या करोगी समझ नहीं पाती। तुम्हें लगता है भगवान सुखी को दुःखी और दुःखी को सुखी बनाते हैं। १३-१४ वर्ष की उम्र से ही परेशानियाँ तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ती, मार्गदर्शन करने के लिए लिखा है।

तो यह रही तुम्हारी चिट्ठी। तुमने इसे डाक में डालने से पहले पढ़ा नहीं होगा। जप करते समय दूसरे विचार कैसे आयेंगे अगर तुम जप करती रहोगी तो? आराम से एक-एक शब्द का उच्चारण करोगी तो मन उसमें लगेगा, मन लगेगा तो दूसरे विचार नहीं आयेंगे। यह तो तुम्हारा पहला पत्र है अन्तिम तो है नहीं। इसलिए आगे भी इन बातों को लेकर चर्चा हो सकती है। शादी, मोटापा आदि को लेकर परेशान न हो। अपने भगवान से सम्बन्ध को लेकर मुझे लिखो, उनसे कैसी बातें करती हो आदि। अशान्ति किस बात को लेकर है ? १३-१४ वर्ष की आयु से कैसी परेशानियाँ झेलती रही हो, मुझे लिखो।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर तथा माँ से निरन्तर प्रार्थनाऐ करता रहता हूँ।

तुम्हारा स्नेही शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द

(३६२)

२८ जून २००४

प्रिय प्रे ...,

तुम्हारी १० जून की चिट्ठी १५ जून को यहाँ पहुँची। मैं इस पत्र के साथ तुम्हारे लिए एक अलग कागज पर मन्त्र लिखवाकर भिजवा रहा हूँ उसे अकेले में, जहाँ कोई दूसरा व्यक्ति न हो, उस समय मन लगाकर पढ़ो और जब जिस तरह लिखा गया है उसी तरह उच्चारण हो रहा हो तो धीरे धीरे जप करना प्रारम्भ करो। १०-१२ दिन दिनों तक तक नियमानुसार जप करते रहो और देखो कि मन्त्र कण्ठस्थ हो गया है या नहीं। अगर अपना कल्याण चाहते हो तो मन्त्रों के साथ लापरवाही मत करो। तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर कोई भी समझ जायेगा कि कोई भी काम तुम मन लगाकर अधिक दिनो तक नहीं करते। यह तुम्हारी अस्थिरमति का ही लक्षण है। मन्त्र का उच्चारण एक ही बार करो लेकिन पूरा मन लगाकर करो जब तक तुम्हे सन्तोष न हो कि उच्चारण सही ढंग नहीं हुआ है, तब तक आगे न बढ़ो। मुझे नहीं लगता कि तुम्हे कोई बीमारी है। अगर है भी तो यही है कि तुम अपने आपको जरूरत से ज्यादा बुद्धिमान समझते हो। तुम्हें अपनी अगली चिट्ठी में क्षमा इत्यादि मांगने की जरूरत नहीं है। यथाविधि जप करने के बाद सितम्बर के महीने में मुझे लिखो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीठाकुरँ से प्रार्थनाएं करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द

> जो सरल भक्ति-विश्वास के साथ प्रभु के चरणों में सर्वस्व समर्पण कर देता है, उसे बहुत जल्दी ईश्वरप्राप्ति होती है।
>
> - श्रीश्रीरामकृष्णदेव



(३६३)

२६ जून २००४

प्रिय अ ...,

तुम्हारा ३ मई का पोस्टकार्ड १३ मई को यहाँ पहुँचा। मैं अभी १७ जून को बैंगलोर, कालडी (केरल) इत्यादि स्थानों की यात्रा करते हुए वापिस लौटा हूँ। मुझे खुशी है कि ६ मई को तुम्हारा उपनयन संस्कार हो चुका है। दीक्षा की विधियों का पालन करते हुए 'उपासना पद्धति' के अनुसार ध्यान-जप की प्रक्रिया समाप्त करने के बाद ही श्रीश्रीगायत्री मन्त्र का यथाशक्ति जप करो।

मैं तुम्हारे कल्याण के लिए श्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३६४)

१४ अगस्त २००३

प्रिय बेटी स ...,

तुम्हारा ७ जुलाई का पत्र यहाँ १७ जुलाई को पहुँचा।

मैं दीक्षा के कार्य से वर्ष भर में अधिकांशतः देश भर के आश्रमों में आना जाना करता रहता हूँ अतः पत्र लिखवाने का काम नियमपूर्वक नहीं कर पाता जिसकी वजह से जबाब भिजवाने में देरी होती है।

डा०... के बारे में अपने अगले पत्र में मुझे लिखो, उन्होंने तुमसे कहीं जाने की बात तो नहीं की थी।

श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ को अभेद ही समझो, वे भिन्न नहीं है। उनकी जीवनियों को आगे ज्यों ज्यों पढ़ोगी, अध्यात्म के पथ पर त्यों त्यों बढ़ती रहोगी, वैसे वैसे तुम्हें इस बात का अनुभव होता रहेगा। बात जो सचमुच यह है कि उनमें और तुम्हारे में भी कोई भेद नहीं है, लेकिन इस बात को तुम अभी नहीं समझ सकोगी। लेकिन वह दिन भी बहुत दूर नहीं है कि जब तुम अपने मन की गहराईयों में इस बात को भी समझने लगोगी।

तुम इस मन्त्र को इस प्रकार पढ़ों -

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

गीता प्रेस की किसी दुकान से 'श्रीश्रीदुर्गासप्तशती' मंगवा लो और उसे पढ़ा करो, श्रीश्रीमाँ की तस्वीर सामने रखकर एक आसन पर बैठकर पढ़ती रहो और मन ही मन माँ को पाठ सुनने के लिए कहती रहो। तुम्हारा मन ही तुम्हें बतायेगा कि माँ सुन रही है, और किसी नियम की पालन करने की आवश्यकता नहीं है। केवल पुस्तक प्रारम्भ से शुरू करो जहाँ तक पढ़ सको पढ़ती रहो, या फिर जहाँ कोई अध्याय समाप्त होता हो वहाँ पढ़ना बन्द कर सकती हो लेकिन श्रीश्रीमाँ को कहने के बाद ही बन्द करो।

श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से ही अपनी प्रार्थनाएँ सुनाओं और बहुत ही रो-रोकर व्याकुलता के साथ कहोगी तो वे अवश्य ही सुनेंगी, निशंक रहो।

मैं तुम्हारी भलाई के लिए उन्हें नित्य ही मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त स्नेही
स्वामी गहनानन्द





(३६५)

२० जुलाई २००३

प्रिय बेटी रा ...,

तुम्हारा ७ मई का पत्र यहाँ १६ मई को पहुँचा। तुम्हारे भेजे हुए पैसों की प्राप्ति सम्भवतः तुम्हें मिल गयी होगी, यहाँ के साधुओं से पता करके लिखूंगा। जब भी पैसे भेजा करो तो साफ-साफ लिखा करो कि तुम्हारे पैसे किस मद में जमा होंगे, श्रीश्रीठाकुर की सेवा, साधु सेवा, या गुरुप्रणामी आदि।

निश्चिन्त रहो कि तुम्हारा जीवन जिस प्रकार व्यतीत हो रहा है इस पर श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ की पूरी निगरानी है। यह तुम्हारा सौभाग्य है और तुम्हारे पूर्व जन्म के संस्कारों के फल हैं कि तुम्हें ऐसे माता-पिता मिले हैं, ऐसे इष्ट देवता मिले है, ऐसी सारदा माँ मिली है। निश्चिन्त रहो, वे ही तुमसे जो कुछ आवश्यक समझेंगे, करा लेंगे।

मैं तुम्हारे लिए उनसे निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ, बंगला दो एक वर्षो में अच्छी तरह सीख जाओगी। अभी उम्र ही क्या है?

तुम्हारा ही सस्नेह शुभचिन्तक

स्वामी गहनानन्द



(३६६)

२२ अगस्त २००३

प्रिय बेटी नी ...,

तुम्हारा ११ जुलाई का पत्र यहाँ १७ जुलाई को यहाँ पहुँचा।

तुम घबराती क्यों हो ? तुम्हें प्रवचन सुनने के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ ने तुमसे इतना सारा काम बचपन में ही करा लिया है, तुम्हारे पति, तुम्हारे पुत्र और पुत्रियों का, सारे संसार का दायित्व तुम पर छोड़कर चले गये, लेकिन श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ तुम्हारे साथ बराबर रहकर तुम्हे सहयोग देते रहे हैं, समझती क्यों नहीं। ध्यान-जप तुम्हें बंधा बंधाया काम लगता है, ऐसा तो लगना ही है। बिना नियमित हुए कैसे चलेगा। क्या संसार भी नियमित कार्यक्रम नहीं है ? सूरज का हर रोज उदय होना और अस्त होना क्या नियमित नहीं है ?

मुझे तुम पत्र लिखती हो, मैं प्रत्येक पत्र का जबाब भिजवता ही हूँ देर होती है, वह अलग बात है, यह तो तुम जानती ही हो। मुझे लिखती रहो। मैं तुम्हारे तथा तुम्हारे बच्चों के कल्याण के लिए प्रभु से, माँ से हमेशा प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३६७)

१६ मार्च १६६८

प्रिय सो ...,

तुम्हारा १४ जनवरी का लिखा पत्र मुझे मिल चुका था।

तुम्हें अभी २ वर्षो का तक एकदम शान्त होकर पठन-पाठन, जप-ध्यान आदि की प्रक्रियाओं को निरन्तर चलाना पड़ेगा। जो समय तुम 'क्या होगा, मुझे क्या होगा, मैं पागल हो नहीं जाऊँगा क्या ?', इस तरह की निरर्थक चिन्ताओं में व्यय करते हो, उसे तुम जप-ध्यान, प्रार्थना आदि में लगाओ। यह तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है।

मैं तुम्हारी सार्विक भलाई के लिए श्रीभगवान से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ ।

तुम्हारा एकान्त शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द



(३६८)

२५ अप्रैल १९९८

प्रिय सो ...,

तुम्हारा ७ अप्रैल का लिखा पत्र मुझे मिल चुका था।

तुम्हारे मन में जब भी बुरे विचार आने लगे तो मन ही मन इष्टमन्त्र का लगन के साथ जप करना प्रारम्भ करो। अपने मन को दो-ढाई साल की उम्र का एक छोटा बच्चा समझो और दिन रात हर घड़ी उसके साथ रहने का अभ्यास करो। जहाँ कहीं भी तुम जाओ उसे अपने साथ रखो और जहाँ कहीं भी वह जाना चाहे उसे जाने दो, पर हमेशा तुम उसके साथ जाओ। कभी उसे अकेला न छोड़ो, तुम भी उसे लिए बगैर कहीं न जाओ। उसे करने के लिए काम दिया करो। सोते समय उससे कहो कि सुबह तुम्हें कितने बजे उठना है वह तुम्हें उठावेगा। लेकिन ध्यान रहे, उसके उठाते ही तुम तुरन्त नींद छोड़कर उठ बैठो और बिस्तर छोड़ दो। उसकी बातों का पालन करो। इसी तरह तुम्हारे अपने

मन के साथ तुम्हारी आत्मीयता हो जाएगी। कोई भी बात जो किसी को कह नहीं सकते उससे कहो और वह जैसे कहे बिल्कुल वैसा ही करो। दो-तीन महीनों तक इस प्रकार का अभ्यास करो, फिर मुझे लिखो। जब जप करने बैठो, अपने एक-एक जप को उसे सुनाओ और ख्याल रखो कि वह सुनता है या कहीं चला जाता है। अगर कहीं चला जाता है तो उसके साथ जाओ। जब पढ़ने बैठते हो तो उसे भी पाठ्य विषय को सुनाया करो। अगर तुम्हारा मन समझ जाएगा कि तुम उसका साथ कभी नहीं छोड़ोगे, तो फिर वह भी तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ेगा। तुम्हारे मन की ऐसी अवस्था होने पर तुम्हारा मन एकदम स्वच्छ, निर्मल हो जाएगा।

मैं तुम्हारे लिए श्रीश्रीठाकुर से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभाध्यायी
स्वामी गहनानन्द





(३६६)

६ सितम्बर १६६८

प्रिय सो ...,

तुम्हारा ६ जुलाई का लिखा पत्र यहाँ १७ जुलाई को पहुँचा।

रामकृष्ण आश्रम, बीकानेर के भवन निर्माण आदि के लिए ६० लाख रूपये जुटाने में लगे हो, लेकिन मेरी धारणा है कि धीरज धरो और रामकृष्ण मण्डल में काम करने की प्रक्रिया से परिचित हो जाओगे तो देखोगे किस प्रकार कहाँ-कहाँ से रुपया-पैसा आता है।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए श्रीश्रीठाकुर तथा श्रीश्रीमाँ से निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३७०)

१७ सितम्बर १९९८

प्रिय सो ...,

तुम्हारा २० जुलाई का लिखा पत्र यहाँ पर समय पर ही पहुँच गया था। मुझे पत्र लिखवाने में देर हो गई।

तुम एकदम निश्चत रहो। श्रीश्रीरामकृष्णदेव के नाम का मन्त्र तुम्हें मिल चुका है, उसी पर पूरा भरोसा करो। किसी अभी और बात की, प्रश्नों की, पत्राचार की आवश्यकता नहीं है, ऐसा समझो। मेरे कहने से समझो, फिर जप-ध्यान करते करते स्वानुभव से भी समझने लगोगे।

पढ़ाई-लिखाई का क्रम जैसा चल रहा है वैसे ही चलाओ। याद रखो कि तुम्हारे अन्तर्यामी परमात्मा ही श्रीराकृष्णदेव हैं, उन्हीं से प्रार्थनाएं भी करते रहो।

मैं तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए श्रीभगवान से नियमित रूप से हर रोज प्रार्थनाएँ किया करता हूँ।

तुम्हारा सतत शुभानुध्यायी

स्वामी गहनानन्द



(३७१)

५ मार्च २००३

प्रिय बेटी पु ...,

तुम्हारा १० फरवरी का लिखा पत्र यहाँ १४ फरवरी को पहुँच गया था।

अभी तक तुम समझ रही हो कि आगे बढ़ने के लिए तुम प्रयास कर रही हो, जप का समय बढ़ाने की इच्छा रखती हो, लेकिन फिर थोड़े ही दिनों में देखने लगोगी कि तुम्हारी श्रीश्रीमाँ, तुम्हारे श्रीश्रीठाकुर ही तुम्हारे पीछे पड़कर तुमसे सब कुछ करा रहे हैं। देखोगी कि जो कुछ तुमने सोचा भी नहीं, जिन बातो की कल्पना भी कभी नहीं की थी, वही सब उनकी इच्छा से तुम्हारे जीवन में घट रहा है। इसलिए अपने लिए कोई इच्छाएँ न रखो। केवल उन्हीं की इच्छाएँ पूरी होती देखो। तुम जप नहीं करती, वे तुमसे जप करवा लेते हैं, यह तो तुम जानती भी हो। निश्चिन्त होकर जैसा करावें वैसा करती रहो।

फिलहाल मैं तुम्हारे लिए निरन्तर प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द



(३७२)

२५ जुलाई २००२

प्रिय बेटी पु ...,

तुम्हारा १७ जुलाई का लिखा पत्र यहाँ १८ जुलाई को पहुँच गया था। जैसे तुमने अपनी दिनचर्या लिखी है वैसे ही चलाती चलो।

ज्यों ज्यों प्रभु के नाम जपने में तुम्हारी रूचि बढ़ेगी त्यों त्यों तुम्हारे हृदय के सिंहासन पर विराजमान प्रभु के कानों तक तुम्हारे नामोच्चारण की ध्वनि पहुँचेगी और उनका रुख तुम्हारी ओर होने लगेगा फिर तुम उनकी आँखों की भाषा समझने लगोगी, फिर उनसे बातें भी करोगी, यही तुम्हारे जीवन की अवस्था है, तुम्हारी दिनचर्या का यही फल होने जा रहा है। क्रमशः तुम्हारा मन रातदिन मन ही मन प्रभु की सेवा में बीतता रहेगा, जैसे तुमने श्रीश्रीठाकुर के जीवन चरित में गोपाल की माँ यानि 'कामारहाटी की ब्राह्मणी' के सम्बन्ध में पढ़ा होगा कि कैसे वह 'गोपाल' ही के नाम जपने में सारा दिन, सारी रात बिताया करती थी, क्या तुम्हें उस पावन, अनोखे जीवन को दोहराने की इच्छा नहीं है ?

मैं प्रभु को मनाता हूँ कि वे तुम्हें अनुक्षण पवित्र करें और उनके नाम लेने की शक्ति में वृद्धि करें, तुम्हें स्वस्थ रखें।

तुम्हारा एकान्त हितैषी

स्वामी गहनानन्द



(३७३)

२ जून २००२

प्रिय बेटी पु ...,

तुम्हारा १० मई का लिखा पत्र यहाँ १५ मई को पहुँच गया था।

हर काम करती हुई प्रभु के नाम का स्मरण हर घड़ी मन ही मन करो। मन में और किसी भी बात को स्थान न दो, इस प्रकार से अपने शुद्ध मन को पहचानो। तुम्हारा मन ही शुद्ध चैतन्य है, जो कि श्रीश्रीठाकुर का, श्रीश्रीमाँ का स्वरूप है, उसी शुद्ध चैतन्य स्वरूप को तुम कहती हो कमियाँ है, बुद्धिहीन है, आदि। समझती तो हो नहीं, लिखती जाती हो। ठीक है, पत्र जरूर लिखा करो, लेकिन प्रभु का नाम भी हर घड़ी जरूर लेती रहो। आसन पर बैठकर 'उपासना पद्धति' के नियमों का पालन करती हुई, सुबह-शाम जब नामजप-ध्यान उपासना करती हो उन अवसरों को छोड़कर जब मन ही मन लगातार जप करो तो गिनती रखने की आवश्यकता नहीं है। जब भी तुम्हें प्रभु याद पड़े उनका नाम जपा करो। मैं तुम्हारे लिये उन्हें मनाता रहता हूँ।

तुम्हारा सदा शुभाकांक्षी

स्वामी गहनानन्द



(३७४)

२ जून २००२

प्रिय क ...,

तुम्हारा १० मई का लिखा पत्र यहाँ १५ मई को पहुँच गया था। मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।

मनुष्य का भविष्य कब अन्धकारमय होने लगा ? मनुष्य ही तो देवता बनता है, ब्रह्मस्वरूप बन जाता है, यही क्या उसका भविष्य

नहीं है ? भले ही इसी जीवन में न हो ? जन्म भला क्या है ? यह तो जीवन का एक पहलू ही है। जीवन ही तो मृत्यु का अभाव है, अमृत है। जीवन ही का एक पहलू मौत है, फिर जैसे हम पुराना मकान छोड़ कर नये मकान में जाते हैं, पुराने वस्त्रों की जगह नये वस्त्र पहनते हैं, वैसे ही जीवन के एक पहलू को छोड़कर अगले पहलू में जाते हैं। जब तक हमारी बुद्धि संसार के असार स्वरूप को समझ नहीं लेती तब तक वह अमृत के स्वरूप को समझ नहीं पाती और इसलिए अमृत स्वरूप हो ही नहीं पाती। श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ, स्वामीजी महाराज तथा उनके गुरुभाईयों के जीवन तथा उनके उपदेशों से हम इन्हीं बातों को समझते हैं। इस धरती पर उनका आगमन हमें इन्हीं बातों को अपने जीवन के जीते-जागते दृष्टांत से समझाने के लिए हुआ था और अगर समझ पाते हो तो समझ लो कि अभी भी और भविष्य में भी हमारे चित्त्स्वरूप में जो चित्त्स्वरूपता है वह श्रीरामकृष्ण ही हैं, श्रीश्रीमाँ ही हैं, स्वामीजी ही हैं, उनके गुरु भाई ही हैं। प्रभु का नाम लेते रहो। अपने लड़के की चिन्ता करने की जगह प्रभु का चिन्तन करो। इससे जो कल्याण होगा उससे सारे जगत का कल्याण होगा, तुम्हारे बच्चे के क्या कहने !

मुझे पत्र लिखते रहो, अपनी पत्नी से भी लिखने के लिए कहो, सु... जो कुछ करता है उसे करने दो और कहो कि yellow light तथा कुण्डलिनी जागरण इत्यादि बेकार की बातें हैं।

मैं तुम सब के कल्याण के लिए श्रीश्री ठाकुर, श्रीश्रीमाँ तथा स्वामीजी महाराज तथा उनके गुरुभाईयों से प्रार्थनाएँ करता रहता हूँ। तुम रामकृष्ण मठ की विभिन्न शाखाओं से प्रकाशित पुस्तकें आदि पढ़ते रहने का अभ्यास बनाओ।

तुम्हारा एकान्त शुभार्थी

स्वामी गहनानन्द